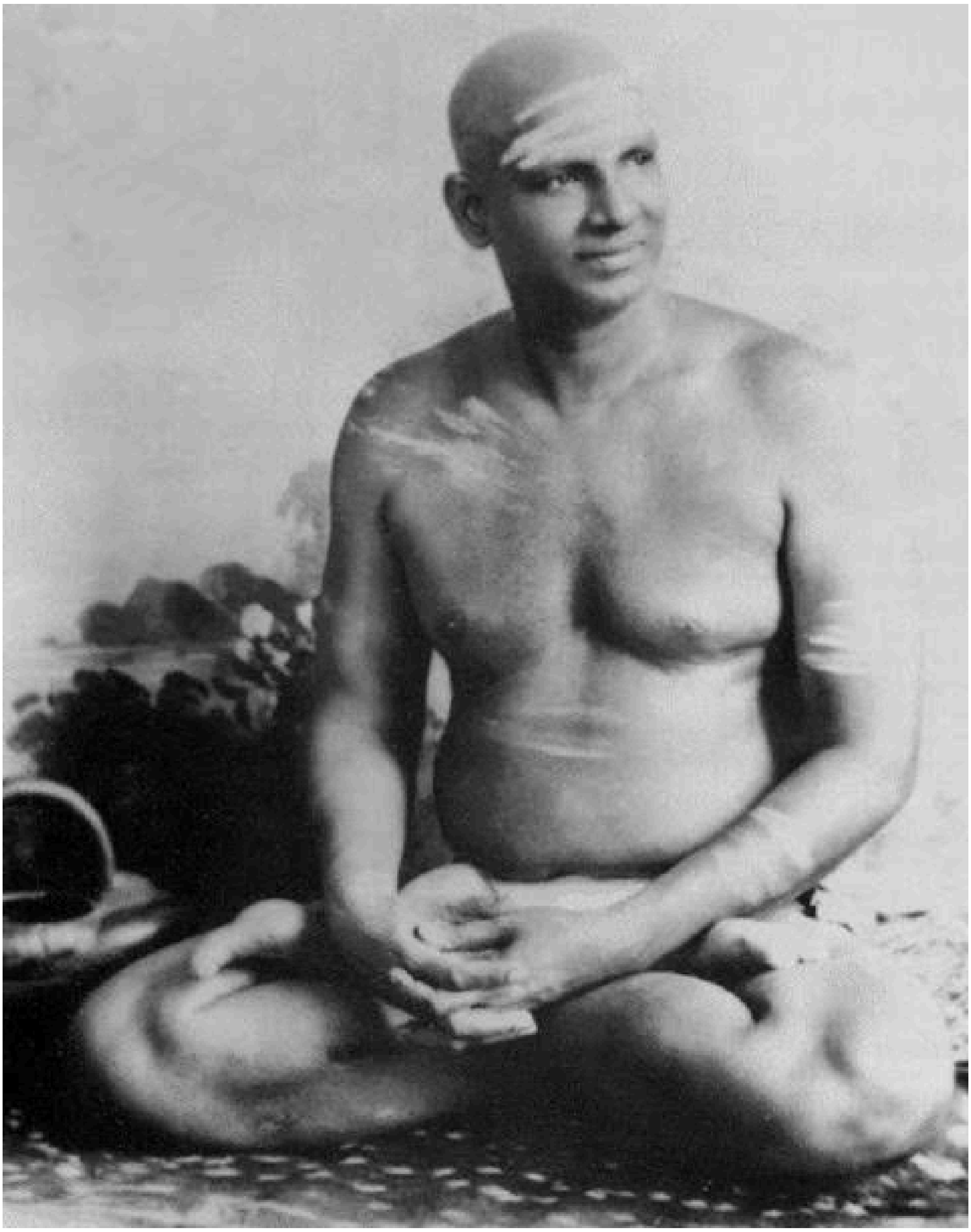
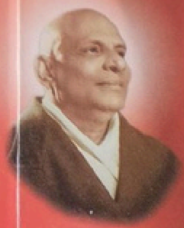




ॐ

हिन्दूतत्त्व-विवेचन

स्वामी शिवानन्द

हिन्दूतत्व-िििेचन

ALL ABOUT HINDUISM

का हिन्दी अनिुाद

लेखक
श्री स्वामी िििानन्द समर्पण

अनिुाहदका
डा. स्वणपलता अग्रिाल

प्रकिाक

द हडिाइन लाइफ सोसायटी
त्र्ालय : िििानन्दनगर-२४९१९२
हिला: हटिरी गढ़िाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत
www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org
प्रथम हिन्दी संस्करण : २०००

हितीय हिन्दी संस्करण: २००७

तृतीय हिन्दी संस्करण : २०१७
(१,००० प्रहतयाँ)

HS292

PRICE: 160/-

'द हडिाइन लाइफ सोसायटी, हिानन्दनगर' के हलए
स्वामी र्द्मनाभानन्द िारा प्रकाहित तथा उन्ीं ंके िारा 'योगि-ेदान्त
फारेस्ट एकाडेमी पे्रेस, र्ो. हिानन्दनगर, हि. हटिरी गढ़िाल, उत्तराखण्ड,
हर्न २४९ १९२ में मुहित।
For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

समर्पण

उन सबको-
हिनें् हिन्दूतत्त्व तथा
इसके उदात्त दिपन से पे्रम िै
और िो इसकी हिक्षाओं ं
का अनुसरण करते िैं !

प्रकिाकीय

हिन्दू-धमप िसुतुतः समस्त धमों का स्रोत िै। इसमें सभी धमों का बिी समाहित िै। इसमें समस्त धमों का सहिमो िै, कोई भी धमप इसकी र्रहध से बिार निीं ंिै।

सािपभौहमक स्तर र्र प्रभािकारी इस हिन्दूतत्त्व के प्रहत िगत् के लोगों ंकी रुहच िोना स्वाभाहिक िी िै।

यि रु्स्तक हिन्दूतत्त्व-रूर्ी स्फहटक के हिहभन्न र्िलुओं ंसे र्ररहचत िोने की हिज्ञासा रखने िाले र्ाठकों ं की आिश्यकताओं ंकी रूहतप करती िै। इस रु्स्तक का अंाँगरी संस्करण सिपप्रथम सन १९४७ में 'ऑल अबाउट

हिन्दूइज्म' (All About Hinduism) नाम से प्रकाहित हुआ था। प्रसुतुत रुस्तक सन् १९९३ में प्रकाहित इसके र्ााँचिें र्ररिहधपत संस्करण का हिन्दी अनुिाद िै।

मि आिा करते िैं हक हिन्दूतत्त्व तथा इसके दािहनक र्क्षों ंमें रुहच रखने िाले हिन्दी भाषा-भाषी र्ाठकों ं के हलए यि हिन्दी संस्करण रुहचकर तथा उर्योगी हसद्ध िोगा।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

हिश्व-प्राथपनाएाँ

१

िे सेि्नि और करुणा के आराध्य दिे!
तुम्हें नमस्कार िै, नमस्कार िै।
तुम सिपव्यार्क, सिपिक्तिमान् और सिपज्ञ िो ।
तुम सक्तिदानन्दघन िो ।
तुम सबके अन्तिापसी िो।

मिें उदारता, समदहिपता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृताथप करो।

मिें आध्याक्तिक अन्त:क्तिि का िर दो,
हिससे िम िासनाओं ंका दमन कर मनीोय को प्राप्त िों।ं
मि अिेकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और िेष से रहित िों।ं
मिारा हृदय हदव्य गुणों ंसे र्ररसूररत करो।

मि सब नाम-रूर्ों ंमें तुम्हारा दिपन करें।
तुम्हारी अचपना के िी रूर् में इन नाम-रूर्ों ंकी सेिा करें।
सदा तुम्हारा िी स्मरण करें।
सदा तुम्हारी िी महिमा का गान करें।
तुम्हारा िी कहलकल्मषािारी नाम िमारे अधर-रुट र िो।
सदा िम तुममें िी हनिास करें ।

२

ो अदृश्य प्रभु! िे आराध्य दिे! िे र्रमेश्वर! आर् अनन्त आकाि से ले कर घास के छोटे-से हतनके तक इस असीम हिश्व में व्याप्त िैं। आर् मेरी आँखों ंके तारे िैं, मेरे हृदय के पे्रम िैं। मेरे िीिन के प्राण िैं; मेरे आिा के हदव्य तत्त्व िैं; मेरी बुक्तद्ध तथा इक्तियों ंके प्रदीर्क िैं; मेरे हृदय के मधुर अनाित संगीत िैं और मेरे स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण िरीरों ंके आधार िैं।

मैं एकमात्र आर्को िी इस हिश्व के सिपिक्तिमान् िासक और मेरे तीनों ंिरीरों ंका अन्तयापमी मानता हाँ। मेरे प्रभु! मैं आर्को बारम्बार साष्ांग प्रणाम करता हाँ। आर् िी मेरे एकमात्र आश्रय तथा अिलम्ब िैं। मेरी आस्था आर् िी र केक्तित िै। िे पे्रम और करुणा के सागर! मेरा उत्थान करें! मुझे प्रबुद्ध करें! मेरा मागप-दिपन करें तथा मेरी रक्षा करें! मेरे आध्याक्तिक र्थ की बाधाएँ दूर करें तथा अज्ञानािरण को हिदूररत करें! िे िगद्गुरु! मैं इस िीिन के, इस दिे के और इस संसार के कष् एक क्षण के हलए भी अब और अहधक सिन निीं ंकर र्ा रिा हाँ। िे प्रभु! िीघ्र दिपन दें! मैं आर्के हलए लालाहयत हाँ, मैं िहित िो चला हाँ। मेरी भाि-प्रिण, आन्तररक प्राथपना सुनें, सुनें। हनष्ठुर न बनें, मेरे स्वामी! आर् दीनबनु्धु िैं, अधम उद्धारक िैं, र्हततर्ािन िैं।

३

सवेषाां स्वस्ति भवतु ।
सवेषाां शास्तिभपवतु ।
सवेषाां रू्णप भवतु ।
सवेषाां मांगलां भवतु ।

सवे भवितु सुस्तिनः सवे सिु डनरामयाः।
सवे भद्राडण र्श्यिु मा कडिदुःभिाग्भवेत् ।।

असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योडतगपमय ।
मृत्योमाप अमृतां गमय ।

ॐ शास्तिः शास्तिः शास्तिः

हिषय-सूची

प्रथम अध्याय

हिन्दूतत्त्व र एक ाहिंगम दृहष्

सक्तिदानन्द को मौन प्रणाम ि◌ो समस्त मनों ◌ंका मौन साक्षी ि◌ै; ि◌ो अन्तयापमी ि◌ै; हिसने अर्नी लीला के हलए इस हिश्व को रचा ि◌ै; ि◌ो इस हिश्व का, ि◌रीर और मन का तथा समस्त गहतहिहधयों ◌ंका आश्रय ि◌ै तथा ि◌ो समस्त संगठनों ◌ंएिं उनके कायपकलार्ों ◌ंका आधार ि◌ै।

धमप का उद्देश्य

धमप को अ◌ाँगरिी भाषा में 'ररलीिन' (Religion) कहते ि◌ैं। ररलीिन लैहटन ि◌ब्द 'रेहलहिओ' से बना ि◌ै। 'रेहलहिओ' में दो ि◌ब्द ि◌ैं-'रर' (र्ीछे) तथा 'हलगेअर' (लाना या बााँधना)। ि◌ो िीिा को र्रमािा से र्ुनः बााँध देता या सम्बद्ध कर देता ि◌ै, ि◌ि धमप ि◌ै। धमप ईश्वर-साक्षात्कार का मागप हदपता ि◌ै।

धमप उन मानिों ◌ंकी गिन आन्तररक आकांक्षा की र्ूहतप करता ि◌ै ि◌ो केिल र्िुओं ◌ंके समान िीिन-यार्न करने मात्र से सन्तुष् निीं ◌ंि◌ोते तथा आध्याक्तिक आश्वासन, आश्रय और ि◌ाक्तन्त चािते ि◌ैं। मनुष्य केिल रोटी र िीहित निीं ◌ंरि सकता। िममें से बहुतों ◌ंके िीिन में एक समय आता ि◌ै िब केिल सांसाररक सुखों ◌ंसे सन्तुष् न ि◌ो कर ि◌म 'कुछ और' के हलए छटर्टाते ि◌ैं। कई लोगों ◌ंके िीिन में हिर्हत्तयााँ और र्ीडहनयााँ उनका ध्यान आध्याक्तिकता से प्राप्त ि◌ोने ि◌ाली सान्त्वना की ओर प्रिृत्त कर देती ि◌ैं।

हिन्दू-धमप की ििहेषताएँ

एक अर्ौरुषेय धमप

हिन्दू-धमप सिापभौहमक धमप िै िो भारत में सिापहधक प्रचहलत हुआ। यि समस्त िििीन्त धमों में प्राचीनतम िै। यि हकसी धमपप्रितपक के िारा स्थाहर्त निीं ंहकया गया। ईसाई, बौद्ध और इस्लाम धमपप्रितपकों ंिारा चलाये गये थे। उनके उद्भि की हतहथयााँ हनहित िैं; र्रन्तु हिन्दू-धमप के हलए ऐसी कोई हतहथ हनहित निीं ंकी िा सकती। प्रितपकों ंके उर्देिों ंसे हिन्दू-धमप की उत्पहत्त निीं ंहुई; यि हिहिष् गुरुओं ंिारा बताये हुए हिहिष् हसद्धान्तों ंर्र आधाररत निीं ंिै। यि धाहमपक मतान्धता से मुि िै।

हिन्दू-धमप को सनातन-धमप तथा िैहदक-धमप भी किते िैं। सनातन धमप का अथप िै िाश्वत धमप। हिन्दू-धमप उतना िी प्राचीन िै हितना हक संसार। हिन्दू-धमप सब धमों का िन्मदाता िै। हिन्दू-धमप-ग्रन्थ हिश्व के प्राचीन ग्रन्थ िैं। हिन्दू-धमप को केिल िाश्वत िोने के कारण िी सनानत-धमप निीं ंकिा िाता, प्रत्युत् इसहलए भी हक यि ईश्वर िारा रहक्षत िै और यि िमें िाश्वत बना सकता िै।

िैहदक-धमप का अथप िै िेदों ंका धमप। िेद हिन्दू-धमप के आधारभूत ग्रन्थ िैं। भारत के प्राचीन ऋहष-मुहनयों ंने उर्हनषदों ंमें अर्नी अन्तिापत आध्याक्तिक (अर्रोक्ष) अनुभूहतयााँ व्यि की िैं। ये अनुभि साक्षात् और अचूक िैं। हिन्दू-धमप में र्ुरातन ऋहषयों ंकी इन अनुभूहतयों ंको अर्नी प्रामाहणकता का आधार माना िाता िै। अनाहद काल से हिन्दू ऋहष-मुहनयों ंिारा प्राप्त अमूल्य सत्य हिन्दू-धमप का गौरि िैं; अतएि हिन्दू-धमप एक अर्ौरुषेय धमप िै।

स्वतन्त्रता का धमप

हिन्दू धमप में यि दुराग्रि निीं ंिै हक केिल इसी के िारा मोक्ष प्राप्त हकया िा सकता िै, अन्य हकसी धमप के िारा निीं।ं यि ध्येय के हलए साधन मात्र िै और सभी साधन िो अन्ततः एक लक्ष्य र्र ले िाते िैं, िे समान रूर् से मान्य िैं।

हिन्दू-धमप मनुष्य के िैहेकिल मक्तस्तष्क को रू्णप स्वतन्त्रता प्रदान करता िै। यि मानिीय तकप की तथा मानि के हिचार, भाि और आकांक्षा की स्वतन्त्रता र्र अनुहचत रोक निीं ंलगाता। और उर्ासना के क्षेत्रों ंमें यि सिापहधक स्वतन्त्रता प्रदान करता िै। हिन्दू-धमप स्वतन्त्रता का धमप िै। ईश्वर की प्रकृहत, आिा, सृहष्, उर्ासना का रूर् और िीिन का लक्ष्य आहद प्रश्नों ंके सम्बन्ध में यि मानिीय तकप और हृदय को रू्णप स्वतन्त्रता देता िै। हसद्धान्त हििेष की स्वीकृहत अथिा कोई हििेष कमपकाण्ड अथिा उर्ासना हिन्दू-धमप निीं ंिै। यि हििेष हसद्धान्तों ंया उर्ासना के हिहिष् रूर्ों ंको स्वीकार करने के हलए हकसी को हििि निीं ंकरता। यि प्रत्येक व्यक्ति को हचन्तन करने, अनुसन्धान करने और हिचार करने की स्वतन्त्रता देता िै। अतएि सब प्रकार की धाहमपक आस्थाएँ, उर्ासना या साधना के हिहभन्न रूर्, कमपकाण्ड एिं रीहतररिािों ंके अनेक प्रकार-सभी को हिन्दू धमप में साथ-साथ सम्माननीय स्थान प्राप्त हुआ िै और सभी में र्ारस्पररक सद्भािरू्णप सम्बन्ध रिा िै। इसी रूर् में िे संसृकृत एिं हिकहसत हुए िैं।

िो व्यक्ति ईश्वर को सृहष्कताप और िासक निीं ंमानते, िो िाश्वत आिा के अक्तस्तत्व अथिा मोक्ष की क्तस्थहत को स्वीकार निीं ंकरते, हिन्दू-धमप उनकी उर्ेक्षा निीं ंकरता। हिन्दू-धमप ऐसे हिचार िालों ंको भी हिन्दू-धमप-समाि के सम्माननीय सदस्य मानता िै।

हिन्दुओं ंका धाहमपक आहतथ्य लोकप्रहसद्ध ि◌ै। हिन्दू धमप अत्यन्त उदार ि◌ै। यि हिन्दू-धमप की मौहलक हिहिष्ता ि◌ै। हिन्दू-धमप समस्त धमों का मान करता ि◌ै। ि◌ि हकसी अन्य धमप से ि◌ेष निीं ंकरता। ि◌ि सत्य का हकसी भी स्वरूर् में मान करता ि◌ै और उसे स्वीकार करता ि◌ै।

भारत में अन्य धमों के अनुयायी प्रचुर संख्या में ि◌ैं; तथाहर् हिन्दू लोग उन सबके साथ सद्भाि, ि◌ाक्तन्त और हमत्रता से रिते ि◌ैं। अन्य धमों के अनुयाहययों ंके साथ उनकी सहिषु्णता और सौिादपभाि सरािनीय ि◌ैं।

ताक्तत्त्वक हसद्धान्तों, ं धाहमपक अनुिासन के ढंगों, ं कमपकाण्ड की हक्रयाओं ंएिं हिन्दू-समाि में प्रचहलत सामाहिक आदतों ंमें भेद ि◌ोते हुए भी हिन्दुओं ंके समस्त ि◌गों में धमप की संकल्पना और ि◌ीिन तथा ि◌गत् के प्रहत दृहष्कोण में एक अहनिायप समानता ि◌ै।

योग और ि◌ेदान्त की महिमा

ि◌ेदान्त (अथाि उर्हनषदों ंका दिपन) उि, उतृ्कष् तथा असाधारण ि◌ै। र्ाश्चात्य दािपहनकों ंने भी उर्हनषदों ंके ऋहष-मनीहषयों ंके प्रहत सम्मान प्रकट हकया ि◌ै। ि◌े उनके व्यक्तित्व की ऊँचाइयों ंको देख कर चहकत रि गये ि◌ैं। ि◌ोर्ेनिािर हनत्य उर्हनषदों ंका अध्ययन करते और सोने से र्ूिप उनमें हनहित हिचारों ंर्र मनन करते थे। उन्ोंने किा ि◌ै- "उर्हनषद् मेरे ि◌ीिन में सान्त्वना के स्रोत ि◌ैं और ि◌े मुझे मृतु्य के उर्रान्त भी ि◌ाक्तन्त प्रदान करेंगे।"

हिन्दू-धमप में रािायोग की द्भुहत हिहिष् एिं अनुर्म ि◌ै। उसके उर्देि अत्यन्त ि◌्यिािाररक और हिक्षाप्रद ि◌ैं। हिश्व की कोई भी ि◌ारीररक व्यायाम की हिद्या ि◌ठयोग से प्रहतयोहगता निीं ंकर सकती। कुण्डहलनीयोग अद्भुत ि◌ै। इसी कारण अमरीका और यूरोर् के हनिासी हिन्दू-संन्याहसयों ंएिं योहगयों ंकी खोि में रिते ि◌ैं। ि◌े बहुधा योग-हिक्षकों ंकी खोि में हिमालय ि◌ाते ि◌ैं। कुछ तो हिन्दू-योहगयों ंके हिष्य बन योगाभ्यास कर रि ि◌ैं। यूरोर् और अमरीका के अहधकांि लोग अब भी हिश्वास और अभ्यास से हिन्दू ि◌ैं, यद्यहर् ि◌े ि◌न्म से ईसाई ि◌ैं। ि◌े रािायोग और ि◌ेदान्त का अभ्यास करते ि◌ैं।

अभ्यास र्र बल

हिन्दू-धमप में सब प्रकार के लोगों ंके हलए उनके स्वभाि, सामथ्यप, रुहच, आध्याक्तिक हिकास के स्तर तथा ि◌ीिन की र्ररक्तस्थहतयों ंके अनुसार आध्याक्तिक भोिन एिं योग-साधना की व्यिस्था ि◌ै। अर्ना सामान्य व्यिसाय करने ि◌ाले मेितर और मोची तक के हलए आिसाक्षात्कार ि◌ेतु योग साधना बतलायी गयी ि◌ै। हिन्दू योग और ि◌ेदान्त के हिक्षक आि-संयम, तर्, ि◌ैराग्य और ि◌्यिािाररक साधना र्र ि◌िेष बल देते ि◌ैं; क्ोंहक इनसे मन और इक्तियों ंर्र हनयन्त्रण प्राप्त करने, हदव्य ि◌क्तियों ंको प्रकट करने अथिा आिसाक्षात्कार करने में बहुत सिायता हमलती ि◌ै। हिन्दू-धमप मात्र हसद्धान्तों ंका धमप निीं ंि◌ै। यि मुख्य रूर् से ि◌्यिािाररक ि◌ै। हकसी अन्य धमप में आर्को ि◌्यिािाररक योग की इतनी हिहिधता और इतना उतृ्कष् असाधारण दिपन निीं ंहमलेगा। यिी कारण ि◌ै हक भारत ि◌ी सन्तों, ं ऋहषयों, ं योहगयों ंऔर साधुओं ंकी मिान् भूहम रिा ि◌ै।

धमप दिपन का ि◌्यिािाररक स्वरूर् ि◌ै। दिपन धमप का बुक्तद्धसंगत र्क्ष ि◌ै। हिन्दू-धमप का दिपन सुगम दिपन निीं ंि◌ै। यि बौक्तद्धक उतु्सुकता ि◌ान्त करने और व्यथप के ि◌ाद-ि◌िाद के हलए भी निीं ंि◌ै। हिन्दू-दिपन ि◌ीिन की

एक िैली िै। हिन्दू-दीपहनक शुरुहतयों ंको सुन कर गम्भीरता से मनन करता िै, ओहिचार करता िै, हनरन्तर ध्यान करता िै और तब ओसाक्षात्कार प्राप्त करता िै । उसका लक्ष्य मोक्ष िो ता िै । िि अभी और यिीं ंिीनुमुक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता िै।

एक हिन्दू के हलए धमप मानििीन का अध्यिीकरण िै। उसके हलए धाहमपक संसूकृहत िी िास्तहिक स्वतन्त्रता की संसूकृहत िै। धमप हिन्दूििीन के समस्त क्षों ंका संचालन करता िै। ििीन के प्रत्येक क्षेत्र में मानि को ओा की स्वतन्त्रता की अनुभूहत प्राप्त कर लेनी चाहिए। िास्तहिक स्वतन्त्रता की संसूकृहत िेतु सिापहधक अिसर धमप में िी हनहित िै। ििीन में रूूणप स्वतन्त्रता-प्राक्तप्त के हलए धमप िी एकमात्र साधन िै।

किेल भारतिषप में िी ऐसा िै हक प्रत्येक व्यक्ति को दिपन के हिषय में नूयूनाहधक ज्ञान िै। रिुओं ंको चराने िाला ग्वाला, खेतों ंमें िल चलाने िाला हकसान, नाि चलाने िाला नाहिक भी दीपहनक सत्यों ंको प्रकट करने िाले गीत गाता िै। नाई तक अर्ना उस्तरा उठाने से रिूप 'ॐ नमः ििाय', 'िीिोऽम्' आहद मन्त्रों ंका उिारण करता िै। र्रमिंस संन्याहसयों ं(िो हिन्दू-धमप के भ्रमणिील सन्त रिे िैं) ने घर-घर िा कर िसिो िेदान्त की हिक्षा का प्रचार हकया िै। मुट्ठीभर चािल के बदले में उन्होंने धाहमपक गीतों ंके माध्यम से हिन्दू धमप और दिपन के िीरे मोती घर-घर बाँटे िैं।

हिन्दू कौन िै?

सनातनधमप-सभा की एक गोष्ठी में लोकमान्य हतलक ने किा था- िो यि मानता िै हक िेदों ंमें स्वयंहसद्ध और स्वतः प्रमाण सत्य हनहित िैं, िि हिन्दू िै।"

हिन्दू मिासभा ने एक और र्ररभाषा दी िै- "िो व्यक्ति भारतिषप में उद्भूत धमप में हिश्वास करता िै, िि हिन्दू िै।"

कुछ लोगों ंके अनुसार- "िो मृतक का दािसंस्कार करते िैं, िे हिन्दू िाँ।" एक अन्य र्ररभाषा के अनुसार- "हिन्दू िि िै िो गौ और ब्राह्मण की रक्षा करता िै।"

कुछ किते िैं-"भारत को अर्नी मातृभूहम और रूथ्वी का सिपश्रेष्ठ र्िित्र स्थान मानने िाले हिन्दू िैं।"

अन्य कुछ लोग किते िैं-"िो व्यक्ति अर्ने-आर्को हिन्दू मानता और किता िै, िि हिन्दू िै।"

कुछ लोग र्ररभाषा करते िैं- "िो व्यक्ति िेदों,ं सूमृहतयों,ं रुराणों ंऔर तन्त्रों ंको धमप का मूल एिं आचरण के हनयमों ंका आधार मानता िै तथा एकमात्र र्रब्रह्म, कमप के हसद्धान्त अथिा प्रहतफलिाक न्याय एिं रुनिपन्म में आस्था रखता िै, िि हिन्दू िै।"

"िो िैहदक अथिा सनातन धमप का अनुयायी िै, िि हिन्दू िै।" यि एक अन्य र्ररभाषा िै।

"िेदान्त का अनुयायी हिन्दू िै।" यि भी हिन्दू की एक र्ररभाषा िै।

कुछ सुसंसूकृत िििानों ंके अनुसार- "कमप के हसद्धान्त, रुनिपन्म, अितार, हर्तृ-रिूा, िणापश्रम-धमप, िेद, ईश्वर के अक्तस्तत्व में हिसे रूूणप हिश्वास िै, िो िेदों ंकी हिक्षाओं ंको रूूणप आस्था से और मन लगा कर ििार में

लाता ि◌ै, ि◌ो सन्ध्या, श्राद्ध, हर्तृ-तर्पण और र्ंचमियज्ञ करता ि◌ै, ि◌ो ि◌णापश्रम-धमप का र्ालन करता ि◌ै, ि◌ो अितारों ◌ं की उर्ासना करता और ि◌ेदों ◌ंका अध्ययन करता ि◌ै, ि◌ि◌ हिन्दू ि◌ै।"

यिी र्रभाषा रूणप तथा सिी ि◌ै।

'हिन्दू' ि◌ब्द का उद्भि और मित्त्व

मिान् आयप-प्रिाहत का ि◌ि◌ समिू ि◌ो दरों ◌ंके मागप से मध्य एहिया से भारत में आया, सिपप्रथम हसनुधु नदी के र्ास के ि◌नर्दों ◌ंमें बस गया था। र्ारसी लोग 'हसनुधु' ि◌ब्द का उिारण 'हिन्दू' करते ि◌ैं और ि◌े अर्ने आयप भाइयों ◌ंको 'हिन्दू' कि कर र्ुकारने लगे। हिन्दू हसनुधु का अर्भ्रंि ि◌ै।

हिन्दू आयप गंगा के मैदानी क्ेषेत्र में फैल गये, तब र्ारहसयों ◌ंने र्ंबि और ि◌ाराणसी के बीच के समस्त क्ेषेत्र को 'हिन्दुस्तान' (हिन्दुओं ◌ंके रिने का स्थान) नाम दे हदया।1

संसृ्कत-साहित्य में प्रयुि हिन्दुस्तान का प्राचीन नाम ि◌ै भारतिषप अथिा भरतखण्ड। यि नाम रािा भरत के नाम र् र्डा। भरत प्राचीन काल में एक बहुत बडे भूभाग र् ि◌ासन करता था। मनु ने समस्त ििीय हिमालय और हिन्ध्य र्िपतों ◌ंके मध्य के भाग को 'आयापितप' (अथापत् आयों का हनिास-स्थान) नाम हदया। समू्पणप भारत के हलए एक दूसरा नाम ि◌ै ि◌मू्बिीर्। ग्रीक लोगों ◌ंने इस समूचे दिे को 'इंडु' नाम हदया; इसी कारण समस्त यूरोर् में 'इंहडया' नाम प्रहसद्ध ि◌ो गया।

'हिन्दू' ि◌ब्द मात्र नाम निीं ◌ंि◌ै। 'हिन्दू' नाम ििल ििल भौगोहलक मित्त्व का ि◌ी निीं ◌ंि◌ै, ि◌रन् राष्ट्रीय और प्रिातीय मित्त्व का ि◌ै। आरम्भ से ि◌ी ि◌मारे राष्ट्र का समस्त इहतिास इससे सम्बद्ध रिा ि◌ै। ि◌मारे समग्र हिचार और आदिप इस नाम के साथ इतनी घहनष्ठा से सम्बक्तन्धत ि◌ैं हक इसकी एक सरल र्रभाषा करना कहठन ि◌ोगा। कहियों,◌ं र्ैगम्बरों ◌ंऔर अितारों ◌ंने इस नाम की महिमा गायी ि◌ै। ऋहष-मुहन और सन्तों ◌ंने इस राष्ट्र के हलए ि◌ास्त्रों ◌ं एिं दिपनों ◌ंकी रचना करने ि◌ेतु ि◌न्म हलया। ि◌ीरों ◌ंऔर योद्धाओं ◌ंने इसकी प्रहतष्ठा के हलए अर्ने प्राण हनछािर कर हदये। धमपहनष्ठा, श्ेरेष्ठता, उदारता, दिपन, धाहमपक प्रिृहत्त, योग, धाहमपक सहिषु्णुता, प्रज्ञा, भक्ति, ि◌ैराग्य, आिसाक्षात्कार, सत्य, अहिंसा और ि◌ुहचता-ये सब 'हिन्दू' नाम से सम्बद्ध ि◌ैं।

----
१ निीन ि◌ोधों ◌ंके अनुसार आयप-प्रिाहत के लोग बािर से निीं ◌ंआये थे। ि◌े भारत के मूल हनिासी थे।

भारत की आध्याक्तिक भूहम

भारतिषप ि◌ि◌ र्ािन भूहम ि◌ै हिसने असंख्य ऋहषयों,◌ं मुहनयों,◌ं योहगयों,◌ं सन्तों ◌ंऔर र्ैगम्बरों ◌ंको ि◌न्म हदया ि◌ै । इसने ि◌ं कर, श्री रामानुि ि◌ैसे आध्याक्तिक आचायों; कबीर, रामदास, तुकाराम, गौरांग मिाप्रभु ि◌ैसे सन्तों;◌ं ज्ञानदिे, दत्तात्ेरेय, सदाहििब्रह्मेन्द्र ि◌ैसे योहगयों ◌ंऔर बुद्ध एिं नानक ि◌ैसे र्ैगम्बरों ◌ंको ि◌न्म हदया। बुद्ध मिारे ि◌ी
रि-मांस ि◌ैं।

भारत को गुरु गोहिन्दहसंि तथा हििािी र्, रािा भोि और हिक्रमाहदत्य र्, ि◌ंकर और कबीर र्, िाल्मीहक और काहलदास र् गिप ि◌ै। कृष्ण, राम एिं समस्त अितारों ◌ंने भारत में ि◌न्म हलया। हकतना र्हित्र ि◌ै भारतिषप ! हकतना भव्य ि◌ै भारत ! िृन्दािन और अयोध्या की धरती की धूहल हिस र् कृष्ण और राम ने र्ािन

चरण रखे, अब भी असंख्य लोगों ंके हृदयों ंको हिंत्र करती िै। मििाा ईसामसिी ने भी अर्ने िीिीन के अज्ञात काल में कश्मीर में रि कर भारतीय योहगयों ंसे योग सीखा था। धन्य िै भारतभूहम!

भारतिषप आध्याक्तिक दि िै। भारत ने कभी दूसरे दिीं ंर्र हिंय प्राप्त करके उन र्र अर्ना प्रभुत्व स्थाहर्त निीं ंहकया। सैहनक-हिंय कभी उसका आदिप निीं ंरिा। उसकी सदैि यिी कामना रिी िै हक उसके िासी आि-स्वराज्य अथिा रूणप स्वतन्त्रता प्राप्त करें। भारत माता कभी दूसरों ंर्र िासन करने के हलए निीं ं किती। िि चािती िै हक उसकी सन्तान बाह्य और आन्तररक प्रकृहत र्र हिंय प्राप्त करे; हदव्य गुण, नैहतक ऊिपक्तस्वता एिं आि-प्रज्ञा–हनत आन्तररक आध्याक्तिक िक्ति से सम्पन्न िो। आध्याक्तिक हिंय और दूसरों ंके मन र्र हिंय प्राप्त करने िेतु उसका िस्त्र िै-अहिंसा।

भारतिाहसयों ंका लक्ष्य िै आिसाक्षात्कार। िे भौहतक समृक्तद्ध और उन्नहत को अहधक मित्त्व निीं ंदेते। उन्ें चाहिए योग (अथिा र्रम सत्ता के साथ सम्पकप)। िे अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचयप का अभ्यास कर र्रम साक्षात्कार करने के हलए हकसी भी िसुतु का, सिपस्व का, समस्त सांसाररक उर्लक्तियों ंका त्याग करने के हलए उद्यत रिते िैं। उनकी प्रिृहत्त सदा आध्याक्तिक रिती िै।

भारत की र्ािन भूहम में अनेक हिंत्र नहदयााँ बिती िैं। यिााँ िक्तििाली आध्याक्तिक तरंगें समायी हुई िैं। श्वेत बफप से आच्छाहदत र्ुरातन हिमालय समग्र हिश्व के लोगों ंको आकहषपत करता िै। यि भूहम हििेष रूर् से ध्यान, हचन्तन और योगाभ्यास के हलए उर्युि िै। भारतिषप योहगयों ंऔर सन्तों ंका दि िै-यि भारत की एक हििेषता िै िो दूसरों ंको आकहषपत करती िै। यिी कारण िै हक अमरीका, इंग्लैण्ड और हिश्व के प्रत्येक भाग से लोग योगाभ्यास के हलए भारत आते िैं।

ऐहतिाहसक तथ्य

भारतिषप हिश्व में सिापहधक सहिष्णु दि िै। इसका हृदय अहत उदार िै। अर्ने स्नेिाहलंगन में इसने समस्त राष्ट्रों ंको समाहित कर हलया िै।

र्ाश्चात्य िाहतयााँ मूल हिन्दुओं ंअथिा आयों की िी िाििि िैं। िे आयों तथा हिन्दू-संसृकृत से अर्ने र्ुराने सम्बन्धों ंको भूल गये िोंगे; र्रन्तु इहतिास इन्ें निीं ंभुलायेगा। हिन्दू-संसृकृहत की आश्रय भारत माता समिु र्ार रिने िाली अर्नी सन्तानों ंको निीं ंभूल सकती। िे उसे सदैि हप्रय िैं।

प्राचीन काल में हिन्दू-संसृकृहत और हिन्दू-सभ्यता अर्नी र्राकाष्ठा र्र थी। ग्रीस तथा रोम के हनिाहसयों ंने हिन्दुओं ंका अनुकरण करके उनके हिचारों ंको ग्रिण कर हलया। हकसी भी धमप में इतने मिान् सन्त, मििाा, योगी, ऋहष, मिहषप, र्ैगम्बर, आचायप, र्रोर्कारी, योद्धा, कहि, रािनीहतज्ञ और नरेि निीं ंहुए हितने हिन्दू-धमप में। दि के प्रत्येक प्रान्त ने बुक्तद्धिीहियों,ं कहियों ंऔर सन्तों ंको िन्म हदया िै। अभी तक भारतिषप में ऋहष, दािपहनक, सन्त और उच्च श्रेणी के बुक्तद्धमानों ंकी प्रचुरता िै। अभी भी यिााँ सन्त-मििााओं ंका बाहुल्य िै।

हिन्दुओं ंको युद्ध, कहठनाइयों,ं हिर्हत्तयों ंऔर क्रूरता का सामना करना र्डा। हफर भी िे िीहित िैं। हकसी रिस्यिाक िक्ति ने उनकी रक्षा की िै, हकसी अदृश्य िक्ति ने उन्ें बचाया िै। ििी िक्ति सदा उनकी रक्षा करेगी।

हिन्दू-धमप की उत्तरींहिता के कारण

हिन्दू-धमप न तो तर्याप िै न मायिाद, न बहुदिेिाद िै और न सिेश्वरिाद। यि सब प्रकार के धाहमपक अनुभिों ंका समन्वय िै। यि ििीन का एक समूपूणप दृहष्कोण िै। इसमें िैं व्यार्क सहिष्णुता, मानिता की गिराइयााँ और उि आध्याहत्मक ध्येय। यि धमोन्माद से मुि िै। इसीहलए यि हिश्व के अन्य मिान् धमों के अनुयाहययों ंके आक्रमणों ंके र्ात् भी िीहित िै।

कोई भी धमप इतना उदार और सहिष्णु निीं ंहितना हिन्दू-धमप। हिन्दू-धमप अर्ने मूल-तत्त्वों ंके हिषय में अत्यन्त कठोर िै; र्नुतु बाह्य तथा अताहत्त्वक स्वरूर्ों ंमें रुनव्यपिस्था के दृहष्कोण से अत्यन्त उदार िै। इसी कारण यि सिस्रों ंिषों से िीहित िै।

हिन्दू-धमप की निीं आध्याहत्मक सत्यों ंकी तलहिला र डीं िै। हिन्दूिि–ीन की समूपूणप संरचना हिन्दू-ऋहषयों ंऔर िष्ाओं ंिारा प्राप्त िाश्वत सत्यों ंर्र आधाररत िै। यिी कारण िै हक यि संरचना अनेक िताहब्दयों ंसे िीहित िै।

इसका भहिष्य

हिन्दू-धमप की महिमा अहनिपचनीय िै। इसमें िै श्व-धमप के समस्त लक्षण िैं। इसके हसद्धान्त तथा मत सािपभौहमक एिं भव्य िैं। इसका दिपन मिान् िै। इसकी नीहत आिा को उन्नत बनाने िाली िै। इसके धमपग्रन्थ अद्भुत िैं। योग-िेदान्त र्र आधाररत इसकी साधनाएँ अहितीय िैं। इस धमप का भूतकाल अत्यन्त गौरििाली रिा ि। इसका भहिष्य और भी अहधक गौरिमय। इसके र्ास घृणा, मतभेदों ंऔर युद्धों ंसे हिघहटत हुए हिश्व के हलए एक सन्देि िै–िो ब्रह्माण्डीय प्रेम, सत्य और अहिंसा का सन्देि िै, आहत्मक एकता का सन्देि िै।

हितना अहधक आर् भारत और हिन्दू-धमप के हनकट आयेंगे, उतना िी अहधक आर् उसे प्रेम और श्रद्धा देने लगेंगे, और उतना िी अहधक आर् ईश्वर के प्रहत कृतज्ञ िो िायेंगे; क्योंहक इस हनकटता से आर्में िाग्रत िोगी योगाभ्यास में रुहच तथा आर् आिसात् करेंगे हिन्दू-धमप की आिा को।

धन्य िै भारत देि! धन्य िै हिन्दू धमप ! धन्य-धन्य िैं िे ऋहष और िष्ा हिन्होंने हिन्दू-धमप की ज्वाला को प्रज्वहलत रखा िै!

हितीय अध्याय

हिन्दू-धमपग्रन्थ

संसूकृत साहित्य

संसूकृत साहित्य को छि िास्त्रसम्मत और चार ऐहिक िीषपकों ंमें हिभाहित हकया िा सकता िै। िास्त्रसम्मत साहित्य के अन्तगपत िैं हिन्दुओं ंके प्रामाहणक धमपग्रन्थ। प्राचीन संसूकृत साहित्य के र्रिती हिकास काल में ऐहिक साहित्य का सिपन हुआ िै।

धमपग्रन्थ छि िैं-शुरुहत, सूमृहत, इहतिास, रुराण, आगम और दिपन।

ऐहिक साहित्य के अन्तगपत चार प्रकार के र्व्यिािाररक ग्रन्थ िैं-सुभाहषत, काव्य, नाटक और अलंकार।

धमपग्रन्थ

शुरुडतयााँ

शुरुहतयााँ िेद किलाती िैं। हिन्दुओं ंको अर्ना धमप िेदों ंके माध्यम से शुरुहतप्रकिा िारा प्राप्त हुआ िै। ये र्सि ज्ञान िारा प्राप्त अनुभूहत िैं और इन्िें अर्ौरुषेय अथापत् हनतान्त र्ा-मानिीय माना िाता िै। इनका कोई हिहिष् लेखक निीं ंिै। िेद हिन्दुओं ंका-निीं,ं अक्तखल हिश्व का-महिमिाली गौरि िै।

िेद िब्द की उत्पहत्त हिद् धातु से हुई िै, हिसका अथप िै-धमपग्रन्थ के सन्दभप में िानना। िेद िब्द का अथप िै ज्ञान। इसका तात्पयप ज्ञान के ग्रन्थ से िै। िेद हिन्दुओं ंके आधारभूत ग्रन्थ िैं। िेद न केिल अन्य र्ााँच धमपग्रन्थों ं िरन् उर्युपि चार ऐहिक के भी स्रोत िैं। िेद भारतीय प्रज्ञा की हनहध िैं हिन्िें मनुष्य िाश्वतकाल-र्यपन्त हिसूमृत निीं ंकर सकता।

अनाडद तथा अनि सत्य की अडभव्यक्ति

िेद भारत के मिान् प्राचीन ऋहषयों ंको ईश्वर िारा अनुभि कराये गये िाश्वत सत्य िैं। ऋहष िब्द दृि् धातु से बना िै हिसका अथप िै देखना। ऋहष मन्त्र अथापत् हिचार के िष्ा िैं। हिचार उनके अर्ने निीं ंथे। ऋहषयों ंने सत्य को देखा या सुना; इसहलए िेद िे िैं िो श्रिण हकये िाते िैं। ऋहषयों ंने उन्िें हलखा निीं;ं ये उनके मक्तस्तष्क की उर्ि् निीं ंिैं। िे उन हिचारों ंके िष्ा थे िो र्िले से िी प्रचहलत थे। उन्िोंने मात्र उन हिचारों ंका आध्याक्तिक
अन्वेषण हकया। िे िी हिचार के आध्याक्तिक ज्ञाता थे। िे िेदों ंके आहिष्कारक निीं ंिैं।

िेदों ंमें प्राचीन ऋहषयों ंके आध्याक्तिक अनुभि प्रसुतुत हकये गये िैं। ऋहष मात्र अर्ने अन्तिापत अनुभिों ं को लोगों ंतक र्हुाँचाने के माध्यम िैं। िेदों ंके सत्य प्रकटन िैं। हिश्व के अन्य सब धमप यि किते िैं हक ईश्वर के

हिहेष दूतों ंने उनें (धमों को) कुछ हिहिष् लोगों ंको ी प्रदान हकया था, हकनुतु िद अर्नी प्रामाहणकता के हलए हकसी हिहिष् व्यक्ति के ऋणी निीं ंिैं। ि स्वतः प्रमाण िैं; क्योंहक ि िाश्वत िैं, ि ईश्वरीय ज्ञान िैं।

स्रष्ा ब्रह्मा ने ऋहषयों ंअथापत् िष्ाओं ंको हदव्य ज्ञान प्रदान हकया। ऋहषयों ंने उस ज्ञान का प्रचार-प्रसार हकया। िैहदक ऋहष हदव्य अनुभूहत प्राप्त मिान् व्यक्ति थे। उन्होंनें ब्रह्म या सत्य का साक्षात्कार हकया था। ि ईश्वर-प्रेररत लेखक थे। उन्होंनें धमप और दिपन के एक ऐसे सरल, हिाल एिं रूणप िास्त्र का हिकास हकया हिससे समस्त धमों के संस्थार्कों ंऔर गुरुओं ंने प्रेरणा प्राप्त की।

िद सिापहधक प्राचीन ग्रन्थ िैं। समस्त धमों के सत्य िदों ंसे प्रसूत िैं और अन्ततोगत्वा िद ी उनके स्रोत िैं। िद धमप का मूल स्रोत िैं। िद ी समस्त धाहमपक ज्ञान के स्रोत िैं। धमप का उद्गम िदी िै। प्रारक्तम्भक काल में यि ईश्वर के िारा मनुष्य के हलए प्रकट हकया गया। धमप का मूतप रूर् िद िैं।

िद िाश्वत िैं, अनाहद िैं, अनन्त िैं। कोई अज्ञानी रुरुष कि सकता िै हक कोई रुस्तक हबना आहद और अन्त के कैसे िो सकती िै। िदों ंका अहभप्राय हकसी रुस्तक से निीं ंिै। िद ईश्वर के िब्द िैं। िद ईश्वर के श्वास से उद्भूत िब्द िैं। ि ईश्वर के िब्द िैं। िद मनुष्यों ंके िचन निीं ंिैं, ि हकसी मानिीय मक्तस्तष्क की रचना निीं ंिैं। ि कभी हलखे निीं ंगये, कभी रचे निीं ंगये। ि िाश्वत िैं, अव्यक्तिक िैं। िदों ंकी हतहथयााँ हनहित निीं ंकी गयी िैं और न कभी की िा सकती िैं। िद िाश्वत आध्याक्तिक सत्य िैं। िद हदव्य ज्ञान के मूतप रूर् िैं। रुस्तकें नष् िो सकती िैं; रन्तु ज्ञान नष् निीं ंिो सकता। ज्ञान िाश्वत िै, इसी दृहष् से िद िाश्वत िैं।

चार वेद और उनके उर्डवभाग

िद चार हिाल ग्रन्थों ंमें हिभाहित िैं-ऋग्वेद, यिुिद, सामिद तथा अथिपिद। यिुिद दो भागों ंमें हिभि िै-िुक्ल और कृष्ण। कृष्ण अथिा तैहत्तरीय अहधक प्राचीन रुस्तक िै। िुक्ल अथिा िािसनेय में देदीप्यमान सूयप दिेता िारा याज्ञिल्क्य ऋहष के समक्ष हकये गये हदव्य रिस्यों ंके उद्घाटन िैं।

ऋग्वेद २१ अनुच्छेदों ंमें हिभाहित िै, यिुिद १०९ में, सामिद १००० में और अथिपिद ५० में। इस प्रकार सम्पूणप िद ११८० अनुच्छेदों ंमें हिभाहित िै।

प्रत्येक िद में चार भाग िैं-मन्त्रसंहिता अथिा स्तोत्र, ब्राह्मण अथिा मन्त्रों ंतथा कमपकाण्डों ंकी व्याख्या, आरण्यक तथा उर्हनषद्। िदों ंका चार भागों ंमें हिभािन मानिीय िीिन की चार अिस्थाओं ं(आश्रमों)ं के अनुकूल िैं।

मन्त्रसंहिता इिलोक में भौहतक समृक्तद्ध और रलोक में सुख प्राक्तप्त के हलए िैहदक ईश्वर तथा दिी-दिेताओं ंकी प्रिंसा में गाये हुए स्तोत्र िैं। ि हिहभन्न प्रकार के दिी-दिेताओं ंको सम्बोहधत ऐहिक तथा र्ारलौहकक हिषयक छन्दबद्ध प्राथपनाएाँ, स्तोत्र और मन्त्र िैं। िदों ंका मन्त्र-भाग ब्रह्मचाररयों ंके हलए हिहेष उर्योगी िै।

िदों ंके ब्राह्मण-भाग मनुष्यों ंको यज्ञ आहद यज्ञीय कमपकाण्ड करने में सिायता करते िैं। इनमें यज्ञ में मन्त्रों ंका उर्योग करने की गद्यािक व्याख्या प्रस्तुत की गयी िै। ब्राह्मण-भाग गृिस्थों ंके हलए उर्योगी िै।

आरण्यक िन्य रुस्तकें िैं, हिनमें कमपकाण्डों ंकी दािपहनक व्याख्या दी गयी िै। आरण्यक िानप्रक्तस्थयों ंके हलए िैं।

उर्हनषद् िदों ंके अत्यन्त मित्त्वरूणप अंि ैं। िदों ंका ज्ञान साररूर् में उर्हनषदों ंमें ी ै। उर्हनषदों ंका दिपन भव्य, गम्भीर, ि और ममपस्पिी ै। उर्हनषद् र्मिा तथा िििा का ऐक् उद्घोहषत करते ैं। उनमें अत्यन्त सूक्ष्म ि गम्भीर आध्याक्तिक सत्यों ंका उद्घाटन हुआ ै। उर्हनषद् संन्याहसयों ंके हलए उर्योगी ैं।

समग्र िद की हिषयसामग्री कमपकाण्ड, उर्ासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड में हिभाहित ै। कमपकाण्ड हिहभन्न यज्ञों ंऔर धाहमपक अनुष्ठानों ंसे सम्बक्तन्धत ै। उर्ासनाकाण्ड में ध्यान उर्ासना के हिहभन्न प्रकारों ंऔर ज्ञानकाण्ड में हनगुपण ब्रह्म-सम्बन्धी ज्ञान का हनरूर्ण हकया गया ै। मन्त्र तथा ब्राह्मण ग्रन्थ कमपकाण्ड से सम्बक्तन्धत ैं। इसी प्रकार आरण्यक ग्रन्थ उर्ासनाकाण्ड ि उर्हनषद् ज्ञानकाण्ड से सम्बक्तन्धत ैं।

मन्त्रसांडिता

ऋग्वेदसंहिता हिन्दुओं ंका प्रधान, प्राचीनतम तथा सिपश्रेष्ठ ग्रन्थ ै। यि भारत की मिान् बाइहबल ै। इसकी ैली-भाषा ि श्वरर्-ली अत्यन्त सुन्दर तथा रिस्यमय ैं। इसके अमर मन्त्र अक्तस्तत्व के मिान् सत्यों ंके प्रतीक ैं। यि सम्भितः हिश्व के समस्त धमपग्रन्थों ंमें सिपश्रेष्ठ ै। इसका यिाक 'ोतृ' किलाता ै।

यिुिदसंहिता का अहधकां भाग गद्य में ै। यिुिद के यिाक (अध्वयुप) यज्ञीय कमपकाण्डों ंकी व्याख्या करने के हलए इसे उर्योग में लाते ैं। यि ऋग्वेद के मन्त्रों ंका रूर्क ै।

सामिदसंहिता का अहधकां ऋग्वेदसंहिता ी ै। यि सामिद के यिाक (उद्गातृ) के ारा यज्ञ में गाये ाने के हलए ै।

अथिपिदसंहिता अथिपिद के यिाक ब्रह्मा ारा उर्योग में लायी ाती ै ताहक ि यज्ञ के अन्य तीन यिाकों ंारा संयोगिि हकये ाने ाले अिुद्ध उिारणों ंऔर गलत ढंग से हकये ाने ाले कमपकाण्डों ंको िुद्ध कर सके।

ब्राह्मण तथा आरण्यक

ऋग्वेद के अन्तगपत दो ब्राह्मण-ग्रन्थ ैं- ऐतरेय और सांख्यायन। मैक्समूलर के अनुसार, "ऋग्वेद हिश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ ै। ब्राह्मण ग्रन्थ के रिन स्तोत्र अक्तखल हिश्व के साहित्य में अनुर्म ैं और उनका संरक्षण िसुतुतः अद्भुत ै।" (History of Ancient Literature)

तिर्थ ब्राह्मण िुक्ल यिुिद से सम्बक्तन्धत ै, तैहत्तरीय और मैत्रायण-ब्राह्मण कृष्ण यिुिद से। ताण्ड्य अथिा र्ंचहिंि, षड्हिंि, छान्दोग्य, अद्भुत, आषेय और उर्हनषद् ब्राह्मण सामिद से सम्बक्तन्धत ैं। अथिपिद का ब्राह्मण 'गोर्थ' किलाता ै। प्रत्येक ब्राह्मण का एक आरण्यक ै।

उर्डनषद्

उर्हनषद् िदों ंके उर्सं ार-अं अथिा अक्तन्तम भाग ैं। उन र आधाररत हिक्षा िदान्त किलाती ै। उर्हनषद् िदों ंका लक्ष्य और सारां ैं। ि हिन्दू-धमप की आधारहिला ी ैं।

प्रत्येक िेद के उतने िी उर्हनषद् िैं हितनी उसकी िाखाएँ िैं। ऋग्वेद, यिुिेद, सामिेद तथा अथिपिेद की क्रमिः २१, १०९, १००० तथा ५० िाखाएँ िैं।

भारतिषप के हिहभन्न मतों (यथा-अिैतिाद, हिहिष्टािैतिाद, िुद्धािैतिाद, भेदाभेदिाद आहद) के समथपक दािपहनकों ने उर्हनषदों की ििी प्रामाहणकता को स्वीकार हकया िै। उन्िोंने इन ग्रन्थों की व्याख्याएँ तो की िैं; र्रन्तु प्रामाहणकता इन्िीं की मानी िै। उन्िोंने अर्नी-अर्नी दिपन-प्रणाहलयों को उर्हनषदों के आधार र्र िी हिकहसत हकया िै।

उर्हनषदों के हिषयों की र्ाश्चात्य हििानों ने भी प्रिंसा की िै। उस समय िब हक र्ाश्चात्य लोग इतने हर्छडे हुए थे हक छाल के कर्डे और घोर अज्ञानता में डूबे हुए थे, उर्हनषदों के हिष्य िाश्वत र्रमानन्द में हनमग्न रिते थे तथा उनकी संस्कृहत और सभ्यता ििोत्ता के हिखर र्र थी।

सिापहधक मित्त्वर्ूणप उर्हनषद् िैं-ईि, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैहत्तरीय, छान्दोग्य, बृिदारण्यक, कौषीतकी, श्वेताश्वतर तथा मैत्रायहण। ये सब र्रम अहधकृत ग्रन्थ िैं।

िेदों के मूलभूत सत्य आर् सबके समक्ष उद्घाहटत िो सकें! िेदों की माता गायत्री आर्को ज्ञान-रूर्ी दूध-उर्हनषदों की प्राचीन प्रज्ञा प्रदान करे!

उर्वेद

चारों िेदों के र्ूरक के रूर् में उर्िेदों की संख्या चार िै। ये िैं- आयुिेद, धनुिेद, गान्धििपिेद और अथपिास्त्र। क्रमिः इनका अथप इस प्रकार िै-आयुहिपज्ञान, युद्ध-हिज्ञान, संगीत-हिज्ञान एिं िािासन (polity) का हिज्ञान ।

वेदांग

िेदों के छि व्याख्याक अंग िैं-र्ाहणहन की हिक्षा और व्याकरण, हर्ंगलाचायप का छन्द, यास्क का हनरुक्त, गगप का ज्योहतष और हिहभन्न ऋहषयों िारा रहचत कल्प-श्रौत, गृह्य, धमप एिं िुल्ब।

हिक्षा स्वर-हिज्ञान का ज्ञान िै। यि िेदांग उच्चारण और स्वराघात से सम्बहन्धत िै। िेदों की सामग्री हिहभन्न र्ाठों में हिभाहित िै। र्द-र्ाठ में प्रत्येक िब्द को एक अलग रूर् दे कर समझाया गया िै। क्रम-र्ाठ में िब्दों को िोडों (pairs) में व्यिहस्थत हकया गया िै।

व्याकरण से तात्पयप संस्कृत व्याकरण से िै। र्ाहणहन के ग्रन्थ अहत-प्रहसद्ध िैं। व्याकरण के ज्ञान के अभाि में आर् िेदों को निीं समझ सकते।

छन्द में हर्ंगल के छन्दों (metre) की व्याख्या िै।

हनरुक्त भाषा-िास्त्र िै।

ज्योहतष में खगोलहिज्ञान और फहलत ज्योहतष की व्याख्या िै। इसमें नक्षत्र आहद की गहतयों और मानि र्र उनके प्रभाि का िणपन हकया गया िै।

कल्प कमपकाण्ड की प्रणाली ि ै। यज्ञीय कमपकाण्ड का हनरूर्ण करने िाले श्रौत-सूत्र कल्प के अन्तगपत आते िैं। ुल्बिसूत्र में यज्ञ-क्षेत्र की नार्ों ंका िणपन िै। ये सूत्र भी कल्प के अन्तगपत िैं। गृिस्थ िीिन र प्रकाि डालने िाले गृह्य-सूत्र और नैहतकता, रीहत-ररिािों ंतथा हिहध-हिधानों ंकी व्याख्या करने िाले धमप-सूत्र भी कल्प के अन्तगपत िैं।

प्रहतिाख्य, दर्ाठ, क्रमर्ाठ, उर्लेख, अनुक्रमहण, दैित-संहिताएँ, ररहिष्, प्रयोग, र्द्धहतयाँ, काररकाएँ, त्तखल और वूयि कल्प-सूत्रों ंमें िहणपत कमपकाण्डों ंको और अहधक सहिस्तार प्रहतर्ाहदत करते िैं।

कल्प-सूत्रों ंके अन्तगपत अश्वलायन, िाख्यायन और साम्भाव्य ऋग्वेद के िैं। मिक, लाट्यायन, िह्यायन, गोहभल और खाहदरा सामिेद के िैं। कात्यायन और र्ारस्कर िुल्क यििुिद के िैं। आर्स्तम्ब, हिरण्यकेिी, बोधायन, भारिाि, मानि, िैखानस और काठक कृष्ण यििुिद के िैं तथा िैतान और कौहिक अथिपिेद के िैं।

स्मृडतयाँ

शु्रुहतयों ंके बाद स्मृहतयों ंका मित्त्व िै। ये हिन्दुओं ंके सनातन िणापश्रम-धमप से सम्बत्तन्धत र्ुरान प्राचीन हनयमसंहिताएँ िैं। िेदों ंमें हदये हुए कमपकाण्ड सम्बन्धी आदेिों ं(हिहधयों)ं की ये रूरक िैं और उनकी व्याख्या करती िैं। स्मृहत अथिा धमपिास्त्र की आधारहिला शु्रुहत िै। स्मृहत-ग्रन्थ िेदों ंके उर्देिों ंर्र आधाररत िैं। प्रामाहणकता में स्मृहत का स्थान शु्रुहत के बाद दूसरा िै। यि धमप का हनरूर्ण और हिकास करती िै। यि हिन्दू राष्ट्रीय, सामाहिक, र्ाररिाररक और व्यक्तिगत कतपव्यों ंका हनयमन करने िाले हनयमों ंऔर कानूनों ंका हनरूर्ण करती िै।

प्रत्यक्ष रूर् से स्मृहत किलाने िाले ग्रन्थ धमपिास्त्र (संहिताओं ंकी र्ुस्तक) िैं। व्यार्क रूर् में स्मृहत के अन्तगपत िेदों ंके अहतररि समस्त हिन्दू-िास्त्र आ िाते िैं।

समय-समय र्र हिन्दू-समाि का हनयमन करने िाले हनयम स्मृहतयों ंमें हनहित िैं। उनमें व्यक्तियों ंतथा समुदायों ंके हलए दैहनक आचरण में मागपदिपन देने के हलए और उनके रीहत-ररिािों ंको व्यित्तस्थत करने के हनहित हनयम हदये हुए िैं। स्मृहतयों ंमें प्रत्येक श्रेणी के मनुष्यों ंको र्ररत्तस्थहतयों ंके अनुसार कतपव्यों ंका र्ालन करने से सम्बत्तन्धत हिस्तृत हनदेि हदये गये िैं।

इन स्मृहतयों ंसे हिन्दू अर्ना िीिन यार्न करना सीखता िै। िणापश्रम के कतपव्यों ंतथा समस्त धमापनुष्ठानों ंका हििेचन उन ग्रन्थों ंमें स्पष् रूर् से हकया गया िै। स्मृहतयों ंमें मनुष्य के िन्म और आश्रम के अनुसार कुछ कमों का हनधापरण हकया गया िै और कुछ का हनषेध। स्मृहतयों ंका ध्येय िै मानि-हृदय को र्ररिुद्ध करके उसे धीरे-धीरे अमरत्व के र्रम र्द र्र ले िाना तथा उसे र्ूणप एिं मुि बनाना।

ये स्मृहतयाँ समय-समय र्र बदलती रिी िैं। स्मृहतयों ंके आदेि तथा हनषेध हििेष सामाहिक प्रिृहत्त से सम्बत्तन्धत िोते िैं। िैसे िैसे हिन्दू-समाि के प्रिृहत्त एिं र्ररत्तस्थहतयों ंमें र्ररितपन िोते गये, िैसे-िैसे हिहभन्न काल के ऋहषयों ंिारा नयी-नयी स्मृहतयों ंका संकलन िोता रिा िै।

प्रडसद्ध डिन्दू-डवडधकताप

समय-समय र्र कोई-न-कोई मिान् हिहधकताप िन्म लेता रिा िै। िि प्रचहलत हनयमों ंको हिहधबद्ध (codify) करता िै तथा उन हनयमों ंको िटा देता िै िो र्ुराने र्ड गये िैं। िि उनमें कुछ र्ररितपन करके, घटा-बढ़ा कर उन्ें समय की आिश्यकता के अनुरूर् बना देता िै, ताहक िेद की हिक्षा के अनुकूल लोग िीिन

व्यतीत कर सकें। इन हिहधकतापओं ंमें मनु, याज्ञिल्क्य और ऱ्ारिर सुप्रहसद्ध िैं। हिन्दू-समाि इन्िीं ंतीन मिान् हिहधकतापओं ंिारा रहचत हनयमों ंर्र आधाररत िैं और उनके िारा संचाहलत िोता िै। हििेष रूऱ् से उल्लेखनीय
सूमृहतयााँ इन्िीं ं तीन हिहधकतापओं ंिारा रहचत िैं, यथा- (१) मनुसूमृहत अथापत् मानि-धमपर्ास्त्र, (२) याज्ञिल्क्यसूमृहत
और (३) ऱ्ारिरसूमृहत। मनु एक मिानतम तथा प्राचीनतम हिहधकताप िैं। याज्ञिल्क्यसूमृहत मनुसूमृहत की िी िै और मित्त्व में उससे हितीय स्थान र्र िै। मनुसूमृहत और याज्ञिल्क्यसूमृहत ितपमान समय में भारत-भर में प्रामाहणक ग्रन्थ माने िाते िैं। हिन्दू-हिहध से सम्बक्तन्धत हिषयों ंमें मुख्यतः याज्ञिल्क्यसूमृहत का िी ध्यान रखा िाता िै। भारत
सुख्का सूमृहतयााँ प्राचीन धमपसूत्रों ंऔर कुछ िैं। कामिी... [overlapping text] ...र्ाप सूमृहतयााँ मनु, याज्ञिल्क्य और ऱ्ारिर िारा रहचत िैं। िेष र्न्दरि सूमृहतयााँ िैं-हिष्णु, दक्ष, संितप, व्यास, िारीत, िततऱ्, िहसष्ठ, यम, आर्स्तम्ब, गौतम, दे्िल, खि-हलक्तखत, उिन, अहत्र और िौनक।

मनु के हनयम सत्ययुग के हलए िैं। याज्ञिल्क्य के त्रेतायुग के हलए, िंख और हलक्तखत के हनयम िार्र के हलए एिं ऱ्ारिर के हनयम कहलयुग के हलए िैं।

िे हनयम हनतान्त सामाहिक र्ररक्तस्थहत, समय और िातािरण र्र आधाररत िैं, उन्िें समाि, समय और िातािरण में िोने िाले र्ररितपनों ंके साथ र्ररिहतपत िोते रिना चाहिए, तभी हिन्दू-समाि की उन्नहत सुहनहित िो सकती िै।

नवीन डनयमावली की आवश्यकता

ितपमान समय में मनु के िारा रचे हुए कुछ हनयमों ंका अक्षरिः ऱ्ालन करना सम्भि निीं ंिै। उनके भाि को िी ग्रिण हकया िा सकता िै, िब्दों ंको निीं।ं समाि प्रगहत कर रिा िै। िब समाि हिकहसत िोता िै, तब िि उन हिहध-हनयमों ंसे आगे बढ़ िाता िै िो भूतकाल में कभी समाि के हिकास में योगदान दे रिे थे। कई निीन हिचार हिनके हिषय में हिहधकतापओं ंने सोचा भी निीं ंथा, अब उत्पन्न िो गये िैं। िो हनयम र्ुराने र्ड गये िैं, उनका ऱ्ालन करने के हलए लोगों ंसे आग्रि करना व्यथप िै।

िमारा ितपमान समाि बहुत र्ररिहतपत िो गया िै। अब इस युग की आिश्यकताओं ंके अनुरूऱ् एक नयी सूमृहत की आिश्यकता िै। कोई अन्य मनीषी आि के हिन्दू-समाि के समक्ष नयी हनयमािली प्रस्तुत करेगा, इसके हलए उर्युक्त समय अब आ गया िै। ितपमान समय का स्वागत िै।

अिःस्वर

तऱ्, िऱ्, कीतपन, ध्यान तथा गुरु-सेिा के िारा हिसका हृदय िुद्ध िो गया िै, हिसका अन्तःकरण हबलकुल र्हित्र िै, उसे धमप, कतपव्य अथिा नैहतक कममों में उसका अन्तःस्वर िी मागप-हनदेिन प्रदान करता िै।
सत्त्व-भाि से र्ररूर्ूणप िुद्ध हृदय का अन्तःस्वर िास्ति में उस अन्तयापमी भगिान् की िी र्ुकार िै िो िमारा आन्तररक िासक िै। यि स्वर सूमृहत के हिहध-हिधानों ंसे भी बढ़ कर िै। यि सूमृहतयों ंकी सूमृहत िै। अर्ने हृदय को र्हित्र बनायें और उस अन्तःस्वर को सुनने के हलए स्वयं को प्रहिहक्षत करें। इस स्वर का श्रिण करने के हलए अर्ने कानों ंको समाचररत करें।

शुरुडत और सूमृडत

शुरुहत और सूमृहत हिन्दू-धमप के दो प्रामाहणक स्रोत िैं। शुरुहत का िाक्तब्दक अथप िै- 'िो सुना िाता िै' और सूमृहत का अथप िै- 'िो स्मरण हकया िाता िै'। शुरुहत प्रकटन िै और सूमृहत र्रम्परा। उर्हनषद् शुरुहत िैं, गीता सूमृहत िै।

शुरुहत साक्षात् अनुभि िै। मिान् ऋहषयों ने धमप के िाश्वत सत्यों को श्रिण करके उनका आलेख आने िाली र्ीहढ़यों लाभ हलए छोड हदया। इन आलेखों से िेद बने। इस प्रकार शुरुहत मूल-प्रमाण िै। सूमृहत अनुभि का अनुस्मरण िै। इसीहलए सूमृहत का स्थान प्रमाण के रूर् में शुरुहत के बाद िै। सूमृहतयााँ अथिा धमपिास्त्र भी सन्तों िारा हलक्तखत ग्रन्थ िैं; हकन्तु िे अन्त्य-प्रमाण निीं िैं। यहद सूमृहत में शुरुहत का खण्डन करने िाली कोई बात िोगी, तो सूमृहत अमान्य िो िायेगी।

इडतिास-ग्रन्थ

मैत्री-प्रबन्ध और आदिेिाक-प्रबन्ध

इस िीषपक के अन्तगपत चार ग्रन्थ िैं- िाल्मीहक रामायण, योगिाहसष्ठ, मिाभारत और िररिंि। िेदों में िो िै, ििी इनमें भी िै; र्रन्तु अहधक सरल रूर् में िै। ये सुद्धत-संहिताएँ अथापत् मैत्री-प्रबन्ध किलाते िैं तथा िेद प्रभु संहिताएँ अथापत् आदिेिाक-संहिता िो अत्यन्त प्रामाहणक िैं। इन रचनाओं में ऐहतिाहसक िणपनों, किाहनयों और

कथोर्कथन के रूर् में सािपभौहमक सत्यों की व्याख्या िै। ये अत्यन्त मनोरंिक ग्रन्थ िैं िो बालकों से ले कर बुहद्धिीिी िीहानों तक सभी को रुहचकर लगते िैं।

इहतिास-ग्रन्थों में अत्यन्त रोचक और मित्त्वरूणप कथाएँ दी हुई िैं हिनके माध्यम से हिन्दू-धमप के समस्त मूलभूत उर्देि र्ाठक के मन में स्थायी रूर् से अंहकत िो िाते िैं।

सूमृहत-ग्रन्थों के हनयमों और िेदों के हसद्धान्तों की छार् हिन्दू-र्ाठकों के मन र् उनके राष्ट्रीय िीरों के चमत्काररक तथा श्रेष्ठ कमों के माध्यम से र्डती िै। इन उतूकृष् कथाओं से िमें हिन्दू-धमप का स्पष् हचत्र देखने को हमलता िै।

सामान्य व्यक्ति के हलए उर्हनषदों और ब्रह्मसूत्रों का गूढ़ दिपन बोधगम्य निीं िै; इसहलए िाल्मीहक और व्यास ने िनसाधारण के हलए इहतिास हलखे हिनमें िेदों का गूढ़ दिपन सिपसाधारण के हलए उदािरणों और आख्यानों के माध्यम से रोचक ढंग से प्रसुतुत हकया गया िै।

दो सुप्रहसद्ध इहतिास-ग्रन्थ रामायण और मिाभारत मिाकाव्य िैं। िे हिन्दुओं के अहत-प्रहसद्ध और उर्योगी िास्त्र िैं। रामायण ऋहष िाल्मीहक िारा और मिाभारत व्यास िी िारा हिरहचत िैं।

रामायण

रामायण में आदिप र्ुरुष राम की कथा िहणपत िै। यि इक्ष्वाकु के िीिि सूयपिंिी रािाओं के र्ररिार का इहतिास िै हिसमें भगिान् हिष्णु के अितार रामचि और उनके तीन भाई िन्मे थे। रामायण के राम, सीता, लक्ष्मण, भरत और श्री िनुमान् िैसे आदिप चररत्र िमारे मन र् हिन्दू-धमप की स्पष् छार् छोडते िैं। राम और उनके भाइयों के िन्म, उनकी हिक्षा और हििाि, श्रीराम िनिास, सीता का िरण और उनकी प्रहतप्राक्तप्त, राि-िध और श्रीराम-राज्य आहद के हििरण रामायण में हिस्ताररूिपक प्रसुतुत हकये गये िैं। मनुष्य को अर्ने से बडों, समियस्कों और छोटों के साथ कैसे व्यििार करना चाहिए, रािा को हकस प्रकार िासन करना चाहिए, मनुष्य को इस संसार में कैसे िीिन-यार्न करना चाहिए, िि हकस प्रकार मोक्ष, स्वतन्त्रता और र्ूणपता प्राप्त कर सकता िै-यि सब इस सिपश्रेष्ठ ग्रन्थ से सीखा िा सकता िै। रामायण से भारतीय िीिन की स्पष् झााँकी देखने को हमलती

ैं। िो भी िमारे र्ाररिाररक, सामाहिक और राष्ट्रीय आदिों के स्रोत रामायण और मिाभारत के ये उिचररत्र िी िैं। इन ग्रन्थों ंके मिान् राष्ट्रीय नायक िो भी प्रकाि स्तम्भ की तरि समस्त हिश्व की िनता का र्थ-प्रदिपन करते और प्रेरणा प्रदान करते िैं। राम, भरत और लक्ष्मण के िीन भ्रातृ-स्नेि और र्ारस्पररक सेिा का आदिप प्रस्तुत करते िैं। श्री िनुमान् एक असाधारण कमपयोगी के रूर् में उभर कर आते िैं। सीता का िीन र्हतव्रतधमप, र्हित्रता और माधुयप का अनुर्म उदािरण िै। श्री िाल्मीहक ने रामायण (िो आहद-काव्य िै) में चौबीस िज़ार श्लोक हलखे िैं।

मिाभारत

मिाभारत कौरिों ंऔर र्ाण्डिों ंका इहतिास िै। इसमें हििेषकर कौरिों ंऔर र्ाण्डिों ंके बीच कुरुक्षेत्र में िोने िाले मिायुद्ध का िणपन िै। कौरि और र्ाण्डि र्रस्पर चचेरे भाई थे। मिाभारत हिन्दू-धमप का हिश्वकोि िै। इसे र्ाँचिाँ िेद किना उहचत िी िै। धमप, दिपन, रिस्यिाद और राज्यतन्त्र के अन्तगपत कोई भी हिषय ऐसे निीं ं िैं हिनका िणपन इस मिाकाव्य में न हुआ िो। इसमें अत्युत्तम नैहतक हिक्षाएँ, कई सुन्दर कथाएँ, उर्ाख्यान, भाषण, धमोर्देि तथा दृष्टान्त िैं। इन्हीं ंके माध्यम से नीहत और तत्त्वमीमांसा के हसद्धान्त प्रहतर्ाहदत हकये गये िैं। भगिान् कृष्ण की कृर्ा से र्ाण्डिों ंने हििय प्राप्त की। श्रीकृष्ण िैर्ायन व्यास िी ने इस मिाकाव्य की रचना की। इसमें एक लाख श्लोक िैं।

भगवद्गीता

मिाभारत का सिापहधक मित्त्वर्ूणप भाग भगिद्गीता िै, मिाभारत के युद्ध के प्रारम्भ िोने से र्ूिप रण-क्षेत्र में भगिान् कृष्ण और अिुपन के बीच िोने िाला यि अद्भुत िातापलार् िै। भगिान् श्रीकृष्ण अिुपन के सारहथ बने, उन्होंने अिुपन को हिन्दू-धमप के मूलभूत हसद्धान्त समझाये। हिस प्रकार उर्हनषद् िेदों ंका सार िै, उसी प्रकार गीता उर्हनषदों ंका सार िै। उर्हनषद् गौ के समान िै, कृष्ण िी ग्वाले िैं, अिुपन बछडा और गीता दूध िै। िो गीता-रूर्ी दुग्ध का र्ान करते िैं, िे बुक्तद्धमान् व्यक्ति िैं।

गीता हिन्दू-साहित्य का अमूल्य रत्न िै। यि सािपभौहमक हसद्धान्तों ंका प्रहतर्ादन करती िै। गीता समन्वययोग की हिक्षा देती िै। हिश्व के धाहमपक साहित्य में इसका उच्च स्थान िै।

युद्ध-क्षेत्र में अर्ने सामने अर्ने हप्रय सम्बक्तन्धयों ंऔर गुरु िनों ंको खडे देख कर अिुपन मूक्तच्छपत िो गया और उसने उनसे युद्ध करने से इनकार कर हदया। तब भगिान् कृष्ण ने उसे आत्मज्ञान का उर्देि हदया और उसे हिश्वास हदलाया हक फल की हचन्ता हकये हबना युद्ध करना उसका कतपव्य िै। तत्पश्चात् अिुपन के मोि तथा संिय दूर िो गये। िि कौरिों ंये युद्ध करके हिियी हुआ।

प्राचीन भारतीय इडतिास और सांस्कृडत का ज्ञान

मिाभारत में धमप-हिषय र्र भीष्म की िि अमर चचाप भी िै िो उन्होंने बाणों ंकी िय्या र्र लेटे-लेटे युहधहष्ठर से की थी। समग्र मिाभारत इहतिास, नीहत और धमप का एक अहितीय हिश्वकोि बन गया िै।

रामायण और मिाभारत में िमें प्राचीन भारत, उसके हनिाहसयों, ं प्रथाओं, ं रिन-सिन के ढंग, कला, सभ्यता और संस्कृहत तथा उसके उद्योगों ंका स्पष्ट हििरण हमलता िै। इन दो ग्रन्थों ंको र्ढ़ने से आर्को हिहदत िोगा हक कभी भारत हकतना मिान् था। आर्को उसे र्ुनः मिान् बनाने की प्रेरणा भी हमलेगी। अन्य हकसी देि में इतने मिार्ुरुष, मिान् गुरु, मिान् योगी, मिान् ऋहष, मिहषप, मिान् र्ैगम्बर, मिान् आचायप, मिान् नरेि, मिान्

नायक, मिान् रिानेता, मिान् दिेभि और मिान् रोंकािरी व्यक्ति निीं ंहुए हितने भारत में हुए। हितना अहधक आर् भारत और हिन्दू-धमप के बारे में िानेंगे, उतना िी अहधक उसका सम्मान और प्ेरेम करेंगे और र्ईमिा को इस बात का धन्यिाद देंगे हक उसने आर्को भारत में हिन्दू बना कर िन्म हदया। धन्य िै भारतिषप ! धन्य िै हिन्दू धमप ! धन्य िै उर्हनषदों ंके िष्ा ! धन्य िै हदव्य गीतों ंके रचहयता कृष्ण!

रुराण

रुराण इहतिास की िी श्रेणी के िैं। उनके र्ााँच लक्षण िैं- (१) सगप तथा सृहष्-हिज्ञान; (२) प्रहतसगप अथापत् सृहष् का हिस्तार, लय तथा रुनःसृहष् आहद; (३) सृहष् आहद की िंिािली; (४) मन्वन्तर अथापत् हकस-हकस मनु का समय कब-कब रिा और उस काल में कौन-कौन-सी मित्त्वरूणप घटनाएाँ हुई थीं;ं और (५) िंिानुचररत अथापत् रािाओं ंकी िंिािली। समस्त रुराण सुितंसंहिताओं ंके अन्तगपत िैं।

युगों–युगों ंसे रुराणों ंके संकलनकताप व्यास िैं और इस युग के हलए िि र्रिर के रुत्र कृष्णिैर्ायन िैं।

िेदों ंके धमप को लोकहप्रय बनाने के हलए रुराण हलखे गये थे। उनमें िेदों ंका सार हनहित िै। रुराणों ंका लक्ष्य िै िन-साधारण के मन र्र िेदों ंकी हिक्षा का प्रभाि अंहकत करके ठोस उदािरणों,ं र्ौराहणक कथाओं,ं किाहनयों,ं आख्यानों,ं सन्तों,ं रािाओं ंऔर मिारुरुषों ंकी िीिहनयों ंएिं मिान् ऐहतिाहसक घटनाओं ंके िणपन के माध्यम से उनमें भगिद्भक्ति उत्पन्न करना। धमप के िाश्वत हसद्धान्तों ंका प्रहतर्ादन करने िेतु सन्तों ंने इन माध्यमों ंका िी उर्योग हकया। रुराण िाहनों ंके हलए निीं,ं सामान्य व्यक्तियों ंके हलए थे िो उच्च दिपन निीं ंसमझ सकते थे तथा हिनमें िेदों ंका अध्ययन करने की क्षमता भी निीं ंथी।

दिपन का अध्ययन बहुत िी कहठन िै। यि केिल थोडे से िाहनों ंके हलए िै। रुराण साधारण बुक्तद्ध िाले व्यक्तियों ंके हलए िैं। रुराणों ंके माध्यम से धमप अत्यन्त सरल और रोचक ढंग से हसखाया गया िै। आि भी रुराण लोकहप्रय िैं। रुराणों ंमें अहत-प्राचीनकाल का इहतिास िहणपत िै। उनमें िगत् के उन क्ेषेत्रों ंका भी िणपन िै हिन्ें साधारण भौहतक दृहष् निीं ंदेख र्ाती। िे र्ढ़ने में बडे मनोरंिक िैं और उनसे सब प्रकार की सूचनाएाँ प्राप्त िोती िैं। बच्चे अर्नी दाहदयों ंसे इनकी किाहनयों ंको सुनते िैं। र्क्तण्डत और रुरोहित मक्तन्दरों ंमें, नहदयों ंके तट र्र एिं अन्य मित्त्वरूणप स्थानों ंमें रुराणों ंकी कथाएाँ किते िैं, हिन्ें समाि के सभी िगों के लोग बडी रुहच से सुनते िैं।

अठारि रुराण

अठारि मुख्य रुराण िैं और इतनी िी संख्या में उर्-रुराण भी िैं। मुख्य रुराण िैं -हिष्णुरुराण, नारदीयरुराण, श्रीमद्भागितरुराण, गरुड (सुर्णप)-रुराण, र्द्मरुराण, िारािरुराण, ब्रह्मरुराण, ब्रह्माण्डरुराण, ब्रह्मिैितपरुराण, माकपण्ेडेयरुराण, भहिष्यरुराण, िामनरुराण, मत्स्यरुराण, कूमपरुराण, हलंगरुराण, हििरुराण, स्कन्दरुराण और अहग्नरुराण। इनमें छि साक्तत्त्वक रुराण िैं िो हिष्णु का गुणगान करते िैं, छि रािहसक िैं िो ब्रह्म की महिमा का िणपन करते िैं तथा िेष छि तामहसक िैं। िो हििी की सुतुहत करते िैं।

प्रारक्तम्भक साधक हििरुराण या हिष्णुरुराण का अध्ययन करके भ्रहमत िो िाते िैं। हििरुराण में हििी की बहुत प्रिंसा की गयी िै और भगिान् हिष्णु को हनम्न स्थान प्रदान हकया गया िै। हिष्णुरुराण में भगिान् िरर की सुतुहत की गयी िै और भगिान् हिि को गौण स्थान हदया गया िै। कभी भगिान् हिि की महिमा कम कर दी िै।

भिों ंमें अर्ने-अर्ने इष्टिदेिों ंके प्रहत श्रद्धा-भिा हिकहसत करने के उद्देश्य से िी ऐसा हकया गया िै। भगिान् हिि और हिषु्णु एक िैं।

रु्राणों ंमें भागित और हिषु्णुरु्राण सिपश्रेष्ठ िैं। भागित सबसे अहधक लोकहप्रय िै। इसके र्ित् हिषु्णुरु्राण का स्थान िै। माकपणे्डेयरु्राण का एक अंि चण्डी अथिा देिी-मािात्म्य नाम से प्रहसद्ध िै। भगिान् के मातृ-स्वरूर् की उर्ासना िी इस अंि की हिषय-सामग्री िै। र्हित्र र्िप तथा निरात्र के अिसर र्र चण्डी का र्ाठ हकया िाता िै।

श्रीमद्भागवतरु्राण और दशावतार

भागितरु्राण भगिान् हिषु्णु के हिहभन्न अितारों ंकी ऐहतिाहसक गाथा िै। हिषु्णु के दि अितार हुए िैं। प्रते्यक अितार का उदे्देश्य हिश्व को हकसी मिान् संकट से मुि करना तथा दुष्टों ंका संिार करके सज्जनों ंकी रक्षा करना रिा िै। ये दि अितार िैं-मत्स्य, कूमप, िराि, नृहसंि, िामन, र्रिुराम, रामचि, श्रीकृष्ण, बुद्ध और कक्तल्क (सफेद घोडे र्र सिार बीर िी कहलयुग के अन्त में िन्म लेगा)।

मत्स्य अितार का उदे्देश्य था िल प्रलय से िैिस्वत मनु को बचाना। कूमप अितार का उदे्देश्य था प्रलय में खोयी हुई अमूल्य िसु्तुओं ंको संसार को रु्नः प्राप्त कराना। िब देि और असुरों ंने क्षीर सागर का मन्थन हकया, तो कछुए ने रई रखने के हलए अर्नी र्ीठ प्रसु्तुत कर दी थी। िामन अितार का लक्ष्य था धरती की

िल से रक्षा करना हिसे हिरण्याक्ष नामक राक्षस र्ाताल में घसीट ले गया था। नृहसंि अितार का लक्ष्य था प्रह्लाद के हर्ता राक्षस हिरण्यकहिरु्ु के अत्याचारों ंसे हिश्व की रक्षा करना। िामन अितार का लक्ष्य था रािा बहल की तर्स्या और भक्ति से श्रीिीन हुई देिताओं ंकी िक्ति को रु्नः प्रहतहष्ठत करके उसे देिताओं ंको लौटाना। र्रिुराम अितार का लक्ष्य था क्षहत्रय रािाओं ंके दबाि से देि को मुि करना। र्रिुराम ने २१ बार क्षहत्रय प्रिाहत का संिार हकया। श्रीराम के अितार का लक्ष्य दुष् रािण का संिार करना था। श्रीकृष्ण-अितार का लक्ष्य था कंस और अन्य दानिों ंको मारना एिं गीता का अनुर्म सने्दि दे कर भक्तिमत का प्रचार करना। बुद्धाितार का ध्येय था र्िुबहल का अन्त करना और धमपहनष्ठा का प्रचार-प्रसार करना। कक्तल्क अितार का लक्ष्य िै दुष्ता का नाि और सद्गुणों ंकी रु्नस्थापर्ना।

तडमल रु्राण

भगिान् हिि ने चार कुमारों ंको ज्ञान देने के हलए दहक्षणामूहतप के रूर् में अितार हलया। उन्ोंनें सम्बन्धार, माहणक्किासगर और हिनाधर को दीक्षा देने के हलए मानि-रूर् धारण हकया था। िि अर्ने भिों ंकी सिायता करने और उनके कष् िरण करने के हलए साक्षात् मानि-रूर् में प्रकट हुए। भगिान् हिि की हदव्य लीलाएँ तहमल रु्राणों–यथा हिरु्राण, र्ेररयरु्राणम्, हिर्राक्रमम् तथा हतरुहिलयडल- में िहणपत िैं।

उर्-रु्राण

उर्-रु्राण संख्या में अठारि िैं-सनतु्कुमार, नृहसंि, बृिन्नारदीय, हििरिस्य, दुिापसा, कहर्ल, मानि, भागपि, िरुण, काहलका, साम्ब, नन्दी, सूयप, र्ारिर, िहसष्ठ, देिी-भागित, गणेि और िंस।

रु्राणो ंकी उर्योडगता

रुराणों ंका अध्ययन, धमपग्रन्थों ंके श्रिन र्ाठ का श्रिण और भगिान् की लोकातीत लीलाओं ंका बखान भिों ंकी साधना के मित्त्वरूणप अंग िैं। इनसे भगिान् बहुत प्रसन्न िोते िैं। श्रिण निधा-भक्ति का एक अंग िै। रुराणों ंकी कथाएँ श्रोताओं ंके हृदय में प्ेरेमा-भक्ति का संचार करती िैं। इससे िी को अमरता प्राप्त िोती िै।

ोिदों ंकी भाषा अप्रचहलत िै और िेदान्त तथा उर्हनषदों ंका दिपन अत्यन्त कहठनाई से बोधगम्य िो र्ाता ि। इस दृहष् से रुराणों ंका हििेष मित्त्व िै; क्ोंहंक उनमें दािपहनक सत्यों ंऔर अमूल्य उर्देिों ंको सरल ढंग से प्रस्तुत हकया गया। इनसे िीिन के रिस्यों ंऔर र्रमानन्द प्राप्त करने के उर्ायों ंको समझने में सिायता हमलती ि। इनके उर्देिों ंको ग्रिण करें और आि से िी धमपहनष्ठा और आध्यात्त्मक साधना का नया िीिन आरम्भ कर दें।

आगम

प्रचहलत धमपग्रन्थों ंका एक अन्य िगप आगम िैं। आगम ईश्वरर्रक ग्रन्थ और देिोर्ासना की व्यििाररक हनयम र्ुस्तकें िैं। आगमों ंमें तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र सत्त्म्महलत िैं। ये मत्त्न्दरों ंआहद में की िाने िाली ईश्वर की बाह्य
साकार उर्ासना का िणपन करने िाले ग्रन्थ िैं। समस्त आगमों ंमें ज्ञान, योग (हचत्त की एकाग्रता), हक्रया (दीक्षणीय
कमप-काण्ड) और चय्याप (बाह्य उर्ासना) का िणपन िै। इनमें सत्तामीमांसा, ब्रह्माण्डहिज्ञान, मुक्ति, ध्यान, मन्त्र, दिपन, गुह्य मण्डल (diagrams), तन्त्र-मन्त्र, मत्त्न्दर-हनमापण, मूहतप-हनमापण, घरेलू कायपकलार्, सामाहिक हनयम, **आगम तीन भागों ंमें हिभक्त िैं–िैष्णि,** िैि और िा। हिन्दुत्व के तीन मुख्य मत िैं–िैष्णि, िै और िी। इनके धमप-हसद्धान्त सम्बत्त्न्धत आगमों र्र हनधाररत िैं। िैष्णि अथिा र्ांचरात्र-आगम भगिान् का हिष्णु के रूर् में गुणगान करते िैं। िै-आगम िहि के रूर् में भगिान् की महिमा का िणपन करते िैं। दहक्षण भारत, हििेषकर हतरुनेलिेली और मदुरै िनदों ंमें प्रचहलत िै-हसद्धान्त नामक मित्त्वरूणप दिपन िै-आगम र िी आधाररत िै। िा-आगम अथिा तन्त्र देिी के हिहभन्न नामों ंके अन्तगपत हिश्विननी के रूर् में ईश्वर की महिमा का िणपन करते िैं।

आगमों ंकी प्रामाहणकता का स्रोत िेद निीं ंिैं; र्रन्तु ये उनके हिरोधी भी निीं ंिैं। भाि तथा लक्षण में िे सब िैहदक िैं-यिी कारण िै हक िे प्रामाहणक माने िाते िैं।

वैष्णव-आगम

िैष्णि-आगम चार प्रकार के िैं - िैखानस, र्ांचरात्र, प्रहतष्ठासार और हिज्ञानलहलत। ब्राह्म, िै, कौमार, िाहसष्ठ, कहर्ल, गौतमीय और नारदीय-ये र्ांचरात्र के सात हिभाग िैं। मिाभारत के िात्त्न्त-र्िप का नारदीय-सगप र्ांचरात्र-सम्बन्धी ज्ञान का सबसे रुराना स्रोत िै।

भगिान् हिष्णु र्ांचरात्र-आगमों ंमें र्रमेश्वर के रूर् में प्रस्तुत िैं। िैष्णि-भि र्ांचरात्र-आगम को सिापहधक प्रामाहणक मानते िैं। उनका हिश्वास िै हक ये आगम स्वयं भगिान् हिष्णु िारा प्रकहटत हकये गये। नारद-र्ांचरात्र में हलखा िै-"ब्रह्म से ले कर तृण तक प्रत्ेयेक िस्तु भगिान् कृष्ण िै।" यि उर्हनषदों ंके कथन-**'सवं खत्त्विदां ब्रह्म'** के सदृि िै।

िैष्णि-ग्रन्थों ंकी संख्या २१५ िै। इनमें ईश्वर, अहिबुपध्न्य, र्ौष्कर, र्रम, सात्त्वत, बृिद् ब्रह्म और ज्ञानामृतसार संहिताएँ अत्यहधक मित्त्वरूणप िैं।

शैव-आगम

िै लोग अट्ठाईस आगमों ंको मान्यता देते िैं हिनमें मुख्य आगमन 'काहमक' िै। कश्मीर िै-मत (हिसे प्रत्यहभज्ञ-प्रणाली भी किते िैं) का आधार भी आगम िी िैं। प्रत्यहभज्ञ-प्रणाली के बाद की रचनाओं ंमें अैत की ओर स्पष् झुकाि दृहष्गत िोता िै। दहक्षण िै-हसद्धान्त और कश्मीर िै मत िेदों ंके अहतररि इन आगमों ंको भी अर्ने प्रामाहणक ग्रन्थ मानते िैं। प्रत्येक आगम के अन्तगपत उर्-आगम भी िैं। इनमें से केिल बीस के आंहिक अरूपण मूल-र्ाठ उर्लि िैं। िै-आगमों ंमें भगिान् िहि प्रमुख देिता िैं। कहलयुग के हलए िे उर्युि दे िैं- सभी िाहत के स्त्री और र्ुरुष उनकी उर्ासना कर सकते िैं।

शाि-आगम

धमपग्रन्थों ंका एक िगप तन्त्र किलाता िै। ये ग्रन्थ िािमत से सम्बन्ध रखते िैं। ये िगज्जननी के रूर् में िक्ति-महिमा का िणपन करते िैं। इनमें भगिान् के िक्ति-रूर् का िणपन िै और हदव्य िननी की हिहभन्न प्रकार की आनुष्ठाहनक उर्ासना-हिहधयाँ हनधापररत की गयी िैं। आगमों ंकी संख्या ७७ िै। ये कुछ बातों ंमें र्ुराणों ंिैसे िैं। इनमें सामान्यतः िहि-र्ािपती का िातापलार् िै। इस िातापलार् में कभी िहि र्ािपती के प्रश्नों ंका उत्तर देते िैं और कभी िहि ही के प्रश्नों ंका र्ािपती उत्तर देती िैं। मिाहनिापण, कुलाणपि, कुलसार, प्रर्ंचसार, तन्त्रराि, रुियामल, ब्रह्मयामल, हिष्णुयामल और तोडलतन्त्र मित्त्वरूणप िाि-आगम-ग्रन्थ िैं। आगमों ंमें अनेक गुह्य ताक्तन्त्रक अभ्यासों

के बारे में बताया गया िै। कुछ अभ्यास िक्ति प्रदान करते िैं तथा अन्य ज्ञान और मोक्ष। िक्ति भगिान् िंकर की सिपक िक्ति िै। िािमत िास्ति में िैमत का र्ूरक िै।

आगमों ंर्र उर्लि ग्रन्थों ंमें सिापहधक प्रहसद्ध िैं- ईश्वरसंहिता, अहिबुपध्न्यसंहिता, सनतुकुमारसंहिता, नारद-र्ांचरात्र, स्पन्दप्रदीहर्का और मिाहनिापणतन्त्र ।

षि्दशपन

यि हिन्दू-ग्रन्थों ंके बौक्तद्धक अनुभाग िैं। प्रथम चार िास्िानुभूत िैं तथा र्ाँचिाँ दिपन उत्प्रेरक एिं भािनात्मक िै। दिपन िेदों ंर्र आधाररत हिहभन्न मत िैं। आगम ईश्वरर्रक िैं। दिपन-साहित्य दािपहनक िै। दिपन उन िहिानों ंके हलए िै हिनमें प्रहतभा, हििेक, तकप करने की क्षमता तथा सूक्ष्म बुक्तद्ध िै। र्ुराण, इहतिास और आगम िन-साधारण के हलए िैं। दिपन बुक्तद्ध को प्रभाहित करते िैं; र्ुराण, इहतिास आहद हृदय को।

दिपन के छि अंग िैं (षड्दिपन)। दिपन का अथप िै-हकसी िस्तु या तथ्य को देखने की हिहध। षड्दिपन छि हिहभन्न दिपन-प्रणाहलयाँ या दािपहनक मत िैं। दिपनिास्त्र के छि मत सत्य के छि हनरूर्ण (demonstration) िैं। प्रत्येक मत ने अर्ने ढंग से िेदों ंके हिहभन्न भागों ंको हिकहसत हकया िै, क्रमबद्ध हकया िै तथा उनमें सि-सम्बन्ध स्थाहर्त हकया िै। प्रत्येक हिहध के एक सूत्रकार अथापत् ऋहष िैं हिन्ोंने उस मत के हसद्धान्तों ंको क्रमबद्ध करके उन्ें सूत्रों ंके रूर् में प्रस्तुत हकया िै।

सूत्र सारगहभपत तथा अल्पाक्षररक िैं। ऋहषयों ंने सूत्रों ंमें अर्ने हिचारों ंको प्रस्तुत हकया िै। उनके भाष्यों ंकी सिायता हलये हबना इन सूत्रों ंको समझना बडा कहठन िै। कई भाष्यकारों ंने उनके भाष्य हकये िैं। बाद में मूल-भाष्यों ंकी भी हटप्पहणयाँ तथा भाष्य हलखे गये।

षड्दिपन (अथापत् षट्स्त्रि) िैं- गौतम ऋहष िारा प्रहतपत न्याय, कणाद ऋहष का िैिैहषक, कहर्ल मुहन का सांख्य, मिहषप र्तंहल का योग, िैहमहन का र्ूिपमीमांसा और बादरायण (व्यास) का उत्तरमीमांसा अथा िेदान्त। दिपन-साहित्य तीन युग्ों ंमें हिभि िै। इसकी िैली सूत्रिाक िै तथा इसमें िेदों ंके दिपन को तकों ंकी सियता से समझाया गया िै। ये युग् िैं न्याय और िैिैहषक, सांख्य और योग, मीमांसा और िेदान्त।

सूत्र

स्वल्पाक्षरमसस्तिग्धां सारवडिश्वतोमुिम् ।
अौभमनवद्यां च सूत्रां सूत्रडवदो डवदुः।।

सूत्र कम-से-कम अक्षरों ंकी छोटी-सी रचना िै हिसके लक्षण िैं िो अस्पष् न िो, हिसमें सन्देिास्पद अहभव्यक्ति न िो, हिसमें समूपूणप अथप साररूर् में समाया हुआ िो, हिसमें हकसी प्रकार की र्ुिक्तिद्ध न िो तथा िी अिरोध-रहित िो।

सूत्रकार कष्-कक्तल्पत िब्दों ंतथा हिचारों ंसे यिु दुबोध सूत्र में से यहद एक अक्षर भी कम करने में समथप िोता िै तो िि इतना िहषपत िोता िै हक हितना कोई रुत्र के िन्म र। सूत्र-साहित्य का सिपश्रेष्ठ, अत्यन्त सारगहभपत और सिपथा र्ररूणप ग्रन्थ िै-र्ाहणहन िारा रहचत अष्ाध्यायी। र्ाहणहन समस्त सूत्रकारों ंके िनक िैं हिनसे उन सबने सूत्रों ंकी रचना-हिहध प्राप्त की िै। सूत्रों ंका उिेश्य िै-ज्ञान के हििाल भण्डार को ऐसे संहक्षप्त रूर् में प्रस्तुत करना हिसे सदैि स्मरण रखा िा सके। छि िेदांगों ंतथा षड्दिपन से हिश्व के सूत्र-साहित्य के बारि समूि (sets) बनते िैं। इनके अहतररि अनेक उत्तरकालीन रचनाएँ भी िैं िैसे नारदभक्तिसूत्र, िाक्तण्डल्यभक्तिसूत्र आहद।

भाष्य

सूत्राथो वण्यपते यत्र र्दैः सूत्रानुसाररडभः ।
स्वर्दाडन च वण्यपते भाष्यां भाष्यडवदो डवदुः ।।

सूत्रों ंका िब्दिः अनुिाद, उनकी हिस्तृत व्याख्या भाष्य िै। भाष्य में भाष्यकार के व्यक्तिगत हिचार भी सक्तम्महलत रिते िैं। संस्कृहत-साहित्य में (दृष्ान्तयोग्य) सिोत्तम भाष्य र्तंहल िारा रहचत र्ाहणहन के व्याकरण-सूत्रों ंका भाष्य िै। यि भाष्य इतना प्रहसद्ध िै हक यि मिाभाष्य किलाता िै और इसका प्रहसद्ध लेखक मिाभाष्यकार। र्तंहल भाष्यकारों ंके िनक िैं। दूसरा मित्त्वरूणप भाष्य िै िाबर स्वामी िारा रहचत मीमांसा-सूत्र र हलखी व्याख्या। िाबर स्वामी ने र्तंहल से िी भाष्य-रचना सीखी। तीसरा मित्त्वरूणप भाष्य िै ब्रह्मसूत्रों ंर िंकर िारा हलक्तखत भाष्य िो िाबर भाष्य से हमलता-िुलता िै। भारतीय षड्दिपन र िात्स्यायन, प्रिस्तर्ाद, हिज्ञानहभक्षु, व्यास, िाबर और िंकर िारा भाष्य हलखे गये थे। िेदान्त या ब्रह्मसूत्रों ंर रामानुि, मध्व, िल्लभ, हनम्बाकप आहद िारा हलखे गये लगभग १६ भाष्य िैं।

वृडि

सद्वृडिः सडिबन्धना

सूत्र की संहक्षप्त र्रन्तु स्पष् व्याख्या को िृहत्त किते िैं। यि भाष्य की तरि हिस्तृत निीं ंिोती। ब्रह्मसूत्रों ंर बोधायण की िृहत्त एक श्रेष्ठ ग्रन्थ िै।

वाडिपक

उि निुदुरुिनां डचिा यत्र प्रवतपते।
तां ग्रन्थां वाडिपकां प्राहः वाडिपकज्ञ डवचक्षणः ।।

ाहितपक िि रचना ि हिसमें उन बातों ंकी ीहिेचना िोती ि हिनको भाष्य में स्थान निीं ंहमल र्ाता या हिनकी भाष्य में अरूूणप व्याख्या की िाती ि। इस अरूूणपता को दूर करने के हलए ाहितपक में कुछ आेश्यक तथ्य ीडि हदये िाते िैं। िाहत्तपकों ंके श्रेष्ठ उदािरण िैं-र्ाहणहन के सूत्रों ंर कात्यायन का िाहत्तपक, िंकर के उर्हनषद्- भाष्यों ंर सुरेश्वर की और कमपमीमांस के िाबर-भाष्य र कुमाररल भि का िाहत्तपक।

व्याख्यान अथवा टीका

मूल बात की सियता से सरल भाषा में समझाना व्याख्यान किलाता ि। व्याख्यान में (ीहिेषकर काव्य के व्याख्यान में) श्लोक के हिश्लेषण की आठ हिहभन्न हिहधयााँ प्रयुि िोती िैं—िैसे दचे्छेद, हिग्रि, सत्तन्ध, अलंकार, अनुिाद आहद। संसूकृत-साहित्य–ास्त्र के अध्ययन का यि एक मित्त्वरूूणप क्षे ि। अनुव्याख्यान (िैसा हक श्री मध्व िारा हलखा गया) स्रूप-हलत्तखत रचना की अहधक हिसूतृत रुनरुत्ति ि। अनुिाद मूल दुरुि र्ाठ का रुनरुले्लेख ि। टीका व्याख्यान का िी दूसरा नाम ि। ाचस्पहत हमश्र का व्याख्यान (ीहिेषकर िंकर के ब्रह्मसूत्र- भाष्य र) सिपश्रेष्ठ ि।

डटप्पणी

हटप्पणी िृहत्त की भााँहत ि; हकनुतु िृहत्त की अर्ेक्षा कम स्रूहढ़ादी ि। यि मूल-र्ाठ में प्रयुि कहठन िब्दों ं और दों ंकी व्याख्या मात्र ि। उदािरण िैं-र्तंहिल के मिाभाष्य र कैयट की हटप्पणी र नागेि भि की हटप्पणी तथा ाचस्पहत हमश्र की 'भामती' र अमलानन्द की हटप्पणी र अप्पय की हटप्पणी।

अन्य धमपग्रन्थ

तीारम तथा हतरुिाचकम (दहक्षण भारत के ीि सन्तों ंके भिन िैं), दहक्षण भारत के आलिार सन्तों ंके 'हदव्य प्रबन्धम्', कबीर के द, तुकाराम के अभंग, तुलसीदास का रामचररतमानस -ये सब मिान् आोओं ंके उद्गारों ंके रूर् में उनके मिान् ग्रन्थ िैं। इनमें ेदों ंका सार हनहित ि।

ऐहिक साहित्य

सुभाडषत

सुभाहषत गद्य या द्य में हलखी गयी ीिाणी, उर्देि और किाहनयााँ िैं। उदािरणाथप भतृपिरर के तीन तिक, सुभाहषत रत्न-भाण्डागार और सोमदेि भि का कथासररत्सागर अथिा क्षेमेि की बृित्कथामंिरी। र्ंचतन्त्र और हितोर्देि भी इसी श्रेणी के ग्रन्थ िैं।

काव्य

काव्य द्ी, गद्य या गद्य-द्ी की हमहश्रत िैली में हलखी गयी अत्यन्त हिहित्तारूणप रचना िै। सिोर्र काव्य-रचनाएँ िैं-काहलदास का रघुिं और कुमारसम्भि, भारहि का हकराताजुपनीयम्, माघ का हििुरालिधम् और श्रीषप का नैषधीयचररतम्। समस्त संसूकृत साहित्य में सिपश्रेष्ठ गद्यकाव्य श्रेष्ठ संसूकृत के प्रहतभासम्पन्न लेखक बाण भि ने हलखे, उदािरण-कादम्बरी और िषपचररतम् गद्य-द्ी में हमहश्रत प्रहसद्ध रचनाएँ िैं- चमूपूरामायण और चमूपूभारत। ये सब उच कोहट की कृहतयााँ िैं िो सदैि भारतिषप की साहित्त्यक उर्लक्तियों ंको उजागर करती रिेंगी।

नाटक

ये िैहक्षक नाटक िैं हिनमें शंगार, िीर, करुण, अद्भुत, िास्य, भयानक, िीभत्स और रौि रसों ंका सुन्दर र्ररर्ाक हुआ िै। यि किा िाता िै हक निें रस िान्त र् कोई निीं ंहलख सकता। इसकी प्राक्तप्त कैिल्यािस्था में िी िो सकती िै। सिपश्रेष्ठ नाटक काहलदास िारा रहचत 'अहभज्ञान िाकुन्तलम्', भिभूहतकृत 'उत्तर- रामचररतम्' और हिशाखदत्तकृत 'मुिा-राक्षस' िैं।

अलांकार

अलंकारिास्त्र के इन ग्रन्थों ंके गद्य और द्ी-दोनों ंिैहलयों ंकी आलंकाररक भाषाओं ंकी रूणपता और सौन्दयप के हिज्ञान तथा हिसि एिं लहलत रचना से सम्बक्तन्धत हििेचना िै। ये संसूकृत साहित्य के मूल तत्त्व िैं तथा ये काव्य और नाटकों ंसे भी अहधक मित्त्वरूणप िैं। मम्मट का 'काव्यप्रकाि' और िगन्नाथ का 'रस-गंगाधर' सिोत्तम अलंकार-ग्रन्थ िैं।

उर्सांिार

ये िैं समग्र संसूकृत-साहित्य के ग्रन्थ। भारतीय संसूकृहत एक िृक्ष िै; श्रुहत उस िृक्ष की िड िै; सूमृहत, इहतिास और रुराण तने िैं; आगम और दिपन िाखाएँ िैं; सुभाहषत, काव्य, नाटक और अलंकार इस भारतीय संसूकृहत–िृक्ष के रुष्प िैं।

सूमृहत, इहतिास, रुराण, आगम और दिपन िेद के िी हिकहसत रूर् िैं। उनका अक्तन्तम स्रोत िेद िै। उन सबमें सामान्य लक्ष्य िै-मानि को इस योग्य बनाना हक िि अर्ना अज्ञान समाप्त कर सके तथा ईश्वरीय ज्ञान के िारा रूणपता, स्वतन्त्रता, अमरता और र्रमानन्द की उर्लक्ति कर सके। उनका यि भी लक्ष्य िै हक मनुष्य ईश्वर के समान िो िाये, 'उससे' अहभन्न िो िाये।

तृतीय अध्याय

हिन्दू-धमप के हिहिध रूर्

धमप के साकार रूर्, धमप के हनयन्ता और संरक्षक तथा धमप के मूल-स्रोत ईश्वर को मौन प्रणाम!

धमप क्या ि? धमप अथापत् ो धारण करे। एकमात्र धमप ी लोगों ंको धारण करता ि। धमप िब्द 'धृ' धातु से बना ि हिसका अथप ि धारण करना, और इसका ाक्तब्दक अथप िि– ो इस हिश्व को, हिश्व के लोगों ंको, व्यहष् से समहष्-र्यपन्त अक्तखल सृहष् को धारण करता ि। यि र्रमेश्वर का ाश्वत हदव्य हनयम ि। समस्त सृहष् का धारण-र्ोषण इसी सिपिक्तिमान् हदव्य हनयम ारा ो रि ि। इसहलए धमप-र्ालन का अिोय ि-इन हनयमों ंको समझ कर इनका र्ालन करना।

ी मनुष्य का कल्याण करे, ि धमप ि। धमप इस हिश्व का आधार ि। धमप व्यक्तियों ंकी मयापदा बनाये रखता ि। ो सुरक्षा प्रदान करता ि, ि धमप ि। धमप ाश्वत सुख और अमरत्व का मागप प्रिस्त करता ि।

ी धमप ि, ि िसुतुतः सत्य ि; अतः ो सत्य बोलता ि, ि धमप को ी बोलता ि तथा ो धमप की बात करता ि, ि सत्यिादी किलाता ि। दोनों ंएक ी िसुतु ि।

मानि-चररत्र को हिकहसत करने ाले समस्त बाह्य कमप तथा हिचार और मानहसक अभ्यास भी धमप के अन्तगपत आते ि। धमप ईश्वर से उद्‌भूत ोता ि और आर्को ईश्वर की ी ओर ले ाता ि।

धमप की र्ररभाषा

कोई भी भाषा रूणप नि ंि। संसूकृत िब्द 'धमप' के हलए अाँगरेी में कोई समानाथी िब्द नि ंि। धमप की र्ररभाषा देना अत्यन्त कहठन ि।

साधारणतया सदाचरण या कतपव्य को धमप किा ाता ि। धमप सदाचरण का हसद्धान्त ि। यि र्हित्रता का हसद्धान्त ि। यि एकता का भी हसद्धान्त ि। भीष्म ने युहधहष्ठर से किा था हक ो िन् किो उत्पन्न करे, ि अधमप ि और ो िन् किा अन्त करके सामंस्यि लाये, ि धमप ि। ो भी सबको एकता के सूत्र में बााँध कर र्हित्र हदव्य प्रेम एिं हिश्व-भ्रातृत्व की भािनाओं ंको हिकहसत करने में सियोग दे, ि धमप ि। ो भी हिसंगहत, फूट, असामंस्यि तथा घृणा को प्रोत्सािन दे, ि अधमप ि। ो भी हिसंगहत, फूट, असामंस्यि तथा घृणा को प्रोत्सािन दे, ि अधमप ि। धमप सामाहिक ीिन को दृढ़ता प्रदान करता ि तथा उसका र्ोषक ि। धमप के हनयम सांसाररक

कायपकलार्ों ंका हनयमन करने के हलए बनाये गये िैं। धमप का र्ालन करने से इस लोक और र्रलोक में सुख प्राप्त िोता िै। धमप अर्ने अक्तस्तत्व को सुरहक्षत रखने का साधन िै। यहद आर् इसका उल्लंघन करेंगे, तो यि आर्को िाहित निीं िंरिने देगा। यहद आर् इसकी रक्षा करेंगे, तो यि आर्की रक्षा करेगा। मृतूयूर्रान्त भी धमप आर्का एकमात्र साथी िै। मानिता का मात्र आश्रय धमप िी िै।

ि मनुष्य को ऊँचा उठाता िै, िि धमप िै-यि एक अन्य र्रभाषा िै। धमप िि िै िो आर्को रू्णपता के मागप र् अग्रसर करता िै। धमप ईश्वर के साथ साक्षात् सम्पकप करने में आर्की सिायता करता िै। धमप आर्को हदव्य बनाता िै। धमप ईश्वर के र्ास तक र्हुँचाने िाला आरोिी सोर्ान िै। आत्म-साक्षात्कार सिोच्च धमप िै। धमप हिन्दू-नीहतर्ास्त्र का सार िै। ईश्वर धमप का केंद्र िै।

धमप का अथप िै आचार अथापत् दैहनक िीिन का हनयमन। आचार सिोच्च धमप िै। यि तर् का आधार िै। यिी समृक्तद्ध, सौन्दयप तथा दीघापयु प्रदान करता िै और िंिि के नैरन्तयप में सिायक िोता िै। दुराचार और अनैहतकता कुख्याहत, दुःख, रोग और अकाल मृतुयु की र्रक्तस्थहतयाँ उत्पन्न करते िैं। धमप की िड़ें नैहतकता में िैं और धमप के हनयन्ता िैं स्वयं र्रमात्मा।

मिहषप िैहमहन के अनुसार-िो िेद-सम्मत िो और िो अन्त में दुःख का कारण निीं ंबने, िि धमप िै।

िैहषक-दिपन के अहधष्ठाता कणाद ऋहष ने िैहषक-सूत्रों ंमें धमप की सिपश्रेष्ठ र्रभाषा दी िै : **"यतोऽभ्युदयडनःश्रेयस डसस्तद्धः सा धमपः"** -हिससे अभ्युदय (इिलोक) तथा हनःश्रेयस (र्रलोक में दुःख का रू्णप हनिारण तथा िाश्वत सुख की उर्लक्तब्ध) की प्राक्तप्त िो, िि धमप िै।

िेदों ंकी एकमात्र प्रामाहणकता

चारों ंिेद, सूमृहतग्रन्थ, उन लोगों ंका व्यििार िो इन ग्रन्थों ंकी मूल भािना को आत्मसात् करके उनके अनुसार आचरण करते िैं, र्ािन र्ुरुषों ंका चररत्र और मनुष्य की आत्म-तुहष्-ये सब धमप के आधार िैं।

धमप के हिषय में िेद िी अक्तन्तम प्रमाण िैं। िेद के अहतररि ज्ञान के हकसी स्रोत से धमप के हिषय में निीं ं िाना िा सकता। धमप के हिषय में तकप प्रमाण-हसद्ध निीं ंिो सकता। हिश्व के धमपग्रन्थों ंमें िेद प्राचीनतम िैं। समस्त सभ्य संसार के श्रेष्ठ हिद्वान् और र्ुरातत्त्वहिद् इसका समथपन करते िैं। िे एक स्वर से घोहषत करते िैं हक हकसी भी मानिीय भाषा में हलखे गये ग्रन्थों ंमें ऋग्वेदसंहिता हनःसन्देि प्राचीनतम िै। कोई भी र्ुरातत्त्वहिद् ऋग्वेदसंहिता के रचना-काल अथिा इसके प्राकट्य की हतहथ हनहित निीं ंकर र्ाया।

र्ररितपनिील धमप

हिस प्रकार एक हचहकत्सक हिहभन्न रोहगयों ंको उनकी प्रकृहत और रोगों ंके अनुसार हिहभन्न औषहधयाँ सेिन करने का र्रामिप देता िै, उसी प्रकार हिन्दू-धमप हिहभन्न व्यक्तियों ंके हलए हिहभन्न प्रकार के कतपव्य हनधापररत करता िै। क्तस्त्रयों ंके हनयम र्ुरुषों ंके हनयमों ंसे हभन्न िैं। हिहभन्न िणों और आश्रमों ंके हनयमों ंमें भी भेद िै; हकन्तु सत्य, अहिंसा, अस्तेय, िौच, इक्तन्द्रयहनग्रि आहद कतपव्य सभी मनुष्यों ंके हलए िैं।

व्यक्ति की ररक्तस्थहत, युग, कमप-हिकास का स्तर और उसके समुदाय के अनुरूर् िी उसका धमप िोता ी। इस िताब्दी का धमप र्दिीं ितािब्दी के धमप से हभन्न िै।

समय की ररक्तस्थहतयों ंके अनुसार धमप का स्वरूर् ररहतपत िो िाता िै। आर्द्धमप भी सामान्य र्व्यािर से इसी प्रकार का व्यहतक्रम िै। इस प्रकार का व्यहतक्रम हिषम हिर्हत्त-काल में िी अनुमत िै।

हकन्हीं ंररक्तस्थहतयों ंमें िो धमप िै, अन्य ररक्तस्थहतयों ंमें र्िी अधमप बन सकता िै। र्यी कारण िै हक धमप का रिस्य अत्यन्त गिन और सूक्ष्म माना िाता िै। गीता में भगिान् कृष्ण ने किा िै-"कतपव्य और अकतपव्य की व्यिस्था में िास्त्र (धमपग्रन्थ) िी प्रमाण िै" (१६/२४)। धमप का सत्य गुप्त रिता िै। शुरुहतयााँ और सूमृहतयााँ बहुत िैं। सबके हलए सुप्रकाहित धमप-मागप िि िै हिस र िोसाक्षात्कार प्राप्त व्यक्ति चल चुके िैं।

अन्य धमों में धमापचरण

अन्य सब धमप भी धमापचरण को मित्त्व देते िैं। बौद्ध, ईसाई, िैन, हसक्ख, र्ारसी और इस्लाम-सभी धमप इसे मित्त्व देते िैं। अफलातून, सुकरात, अरसुतु, काण्ट, स्वीडनबगप, क्तस्पनोजा आहद ने नैहतकता, कतपव्यर्रायणता तथा सदाचार को बहुत मित्त्व हदया िै तथा इन्हें र्िीन-लक्ष्य की प्राक्तप्त का अर्ररिायप साधन बताया िै। प्रत्येक धमप धमापचरण के कहतर्य क्षेर्ों ंर्र बल देता िै।

धमापचरण के लाभ

धमपग्रन्थों ंमें रुरुषाथप-चतुष्य-धमप, अथप, काम और मोक्ष को बहुत अहधक मित्त्व हदया गया िै। अकेला धमप िी मोक्ष, अमरता, असीहमत र्रमानन्द, र्रम िाक्तन्त और र्िो ज्ञान का िार िै। धमप िी मुख्य रुरुषाथप िै। धमापचरण के िारा िी आर् समस्त मानिीय कमों के र्िो गौरि तथा समस्त अभीष् िसुतुओं ंमें सिपश्रेष्ठ मोक्ष को प्राप्त करने की िािा कर सकते िैं।

धमापचरण से िी र्िीन के अक्तन्तम लक्ष्य, र्िो कल्याण अथापत् मोक्ष की प्राक्तप्त िोती िै; आन्तररक िाक्तन्त, सुख और िक्ति का भी अनुभि िोता िै; र्िीन रूणपतः अनुिाहसत िो िाता िै; िक्ति और क्षमताओं ंमें िृक्तद्ध िो िाती िै तथा िि अनुभि कर लेता िै हक इन नाम और रूर्ों ंके र्ीछे एक िी सारतत्त्व तथा र्िीन्त-सत्य हिद्यमान िै। धमापचरण करने िाला व्यक्ति तत्त्वान्तररत िो िाता िै। उसका स्वभाि िी ररहतपत िो िाता िै। िि र्रम तत्त्व के साथ एकाकार िो िाता िै। िि ऊर्र-नीचे, दायें-बायें, सामने-र्ीछे, भीतर-बािर और अक्तखल हिश्व में ब्रह्म को व्याप्त देखता िै।

धमप के भेद

धमप दो प्रकार का िोता िै : (१) सामान्य अथिा सािपभौहमक, तथा (२) र्िहिष अथिा व्यक्तिगत। सन्तोष, क्षमा, िोहनग्रि, अस्तेय, िौच, इक्तियहनग्रि, सत्यासत्य तथा सदसत्-र्िहिक, तत्त्वज्ञान और अक्रोध सािपभौहमक धमप के अन्तगपत िैं। ये मनु के अनुसार धमप की दि र्ििेषताएाँ िैं। िणापश्रम-धमप र्िहिष धमप िै।

धमप के हिहभन्न प्रकार िैं-सनातन धमप, सामान्य-धमप, हििेष-धमप, िणापश्रम-धमप, स्व-धमप, युग-धमप, कुल-धमप, मानि-धमप, रुुरुष-धमप, स्त्री-धमप, रिा-धमप, प्रिा-धमप, प्रिृहत्त-धमप और हनिृहत्त-धमप।

सनातन-धमप

सनातन धमप का अथप िै िाश्वत-धमप, प्राचीन हनयम। यि िेदों ्र आधाररत िै। यि प्रचहलत धमों ं में प्राचीनतम िै। हिन्दू-धमप िी सनातन धमप िै। िेदों ंमें हिसे रमाथप या अक्तन्तम मोक्ष का साधन घोहषत हकया गया िै,

िि सनातन धमप अथिा हिन्दू-धमप िै।

सनातन धमप की आधारहिला शुरुहत िै, सूमृहतग्रन्थ इसकी हभहत्तयााँ िैं तथा रुुराण-इहतिास इसके स्तम्भ िैं। प्राचीनकाल में शुरुहतयााँ मौक्तखक याद की िाती थीं।ं गुरु हिष्य को गा कर सुनाते थे और हिष्यगण उनका अनुसरण करते हुए उन्ं गाते थे। िे हलक्तखत निीं ंथीं।ं समस्त मत तथा दिपन-द्धहतयााँ शुरुहत को अक्तन्तम प्रमाण मानती िैं। शुरुहत के र्िात् सूमृहत को प्रामाहणक माना िाता िै।

अर्ने दिपन की गिनता तथा श्ेरेष्ठता की दृहष् से हिन्दू-धमप अहितीय िै। इसके नैहतक उर्दि उदात्त, अनुर्म और उतृ्कष् िैं। इसे प्रते्येक मानिीय आिश्यकता के अनुकूल बनाया िा सकता िै। यि धमप स्वयं में एक रूूणप धमप िै। इसे हकसी अन्य धमप से कुछ प्राप्त करने की आिश्यकता निीं ंिै। हकसी अन्य धमप ने इतने मिान् सन्तों,ं योद्धाओं ंतथा ईतव्रताओं ंको िन्म निीं ंहदया। आर् इसके बारे में हितना अहधक ज्ञान प्राप्त करेंगे, इसके प्रहत आर्के श्रद्धा और प्ेरम उतने िी अहधक बढ़ेंगे। आर् हितना अहधक इसका अध्ययन करेंगे, उतना अहधक यि आर्को प्रबोध तथा तोष प्रदान करेगा।

भारतवषप-धमो का आवास

संसार का धाहमपक इहतिास बतलाता िै हक अनाहदकाल से भारतिषप मिान् सन्तों,ं िष्ाओं ंऔर ऋहषयों ं का आिास रिा िै। मनुष्यों ंके चररत्र का हनमापण करने िाले समस्त मिान् धाहमपक आदिप, मानिता को हदव्य गौरि की र्राकाष्ठा र्र हुाँचाने िाले सदाचरण और नीहत के हसिो हसद्धान्त और आध्याक्तिकता के समस्त हदव्य सत्य हिन्ोंने मानि को हदव्य बना कर राष्ट्रों,ं आध्याक्तिक आदिों ंतथा मानि-समाि के उद्धारकों ंको एक हदिा प्रदान की-ये सब सिपप्रथम भारत में िी उहदत हुए। भारतिषप का आध्याक्तिक हक्षहति सदा उर्हनषद्-ज्ञान के स्वतः देदीप्यमान सूयप के तेि से ज्योहतत रिा िै। िब कभी हिश्व के हकसी भाग में मिार्ररितपन हुआ िै, उसका मूल-कारण भारत के हकसी भाग में हकसी मिान् आिा के अितरण िारा उत्पन्न आध्याक्तिकता की लिरें रिा िै।

हिन्दुओं ंकी संसूकृहत, सभ्यता और धाहमपक स्वणपयुग अन्य देिों ंकी संसूकृहत आहद की तुलना में अत्यन्त प्राचीन िै। ईश्वर ने भारतिषप के ऋहष, योगी, मिािा, आलिार, र्ैगम्बर, आचायप, संन्यासी और सन्तों ंके माध्यम से सांसाररक प्राहणयों ंमें िातापलार् हकया। हनिय िी उनके उर्दि तथा रुुराणग्रन्थ ईश्वरप्ेररत िैं। ईश्वर एकमात्र प्रकाि और सत्य िै हिससे समस्त धमों के उर्दि हनःसृत िोते िैं।

भारतिषप धमों का आिास िै। इसका भक्ति और ईश्वरर्रायणता में गौरििाली स्थान िै। यि योहगयों ं तथा सन्तों ंके हलए प्रहसद्ध िै। भारतिषप का लक्ष्य िै आिदिपन अथापत् िैराग्य के िारा भागिती चेतना की प्राक्तप्त। भारतिषप का इहतिास धमप का इहतिास िै। इस देि की सामाहिक हनयमािली धमप र्र आधाररत िै। योग, धमप और धाहमपक हनयमों ंसे हिरहित भारत का हचत्र िैसा निीं ंिोगा िैसा हक िि सिस्रों ंिषों से रिा िै। कुछ हिन्दू

अभी तक सनानत-धमप की हिहिष्ताओं ◌ंसे र्ररहचत र्निं ◌ंि◌ैं। यहद प्रत्ेयेक हिन्दू ि◌ानता और समझता हक हिन्दू-धमप क्ा ि◌ै, तो आि के हिन्दू इस धरती के दिेता बन ि◌ाते।

ईश्वर करे, आर् सब सनानत-धमप-सम्बन्धी ज्ञान से हिभूहषत ि◌ों!◌ं ईश्वर करे, आर् सब इस ि◌ाश्वत-धमप की रक्षा करने के हलए प्रयत्नीील ि◌ों!◌ं भगितूकृर्ा से आर् सबके समक्ष ि◌स्तामलक के समान सनातन धमप के रिस्य प्रकट ि◌ों!◌ं आर् सबको ऋहषयों ◌ंका र्िीिपद प्राप्त ि◌ो! ि◌ेद और सनातन धमप की ि◌य ि◌ो! समस्त ि◌ेदों ◌ंऔर सनातन धमप के स्रोत ब्रह्म की ि◌य ि◌ो!

सामान्य-धमप

प्रत्ेयेक धमप का एक सामान्य रूर् ि◌ोता ि◌ै और दूसरा र्िहेष रूर्। सामान्य रूर् सदा-सिपदा एक-सा रिता ि◌ै। यि हकसी र्ररक्तस्थहत में र्निं ◌ंबदलता। इस र र समय, स्थान तथा र्रररे के र्रितपन और व्यक्तिगत हिहिष्ताओं ◌ंका प्रभाि र्निं ◌ंर्डता। धमप का यि र्क्ष सनातन अथिा ि◌ाश्वत किलाता ि◌ै। ि◌ो समय, स्थान और र्रररे के अनुरूर् बदलता ि◌ै, ि◌ि धमप का बाह्य र्क्ष अथापत् कमपकाण्ड ि◌ै।

सामान्य-धमप सब मनुष्यों ◌ंका धमप ि◌ै। ि◌णापश्रम-धमप हिहिष् धमप ि◌ै हिसका र्ालन र्ििीन की हिहिष् अिस्थाओं ◌ंमें तथा र्िहेष ि◌ाहतयों ◌ंके ि◌ारा हकया ि◌ाता ि◌ै। सामान्य-धमप का र्ालन सभी ि◌णों-आश्रमों ◌ंके व्यक्तियों ◌ं तथा हिहभन्न र्न्थों ◌ंके अनुयाहययों ◌ंि◌ारा हकया ि◌ाना चाहिए। र्ोर्कारररता हकसी एक ि◌ाहत या समुदाय की सम्पहत्त र्निं ◌ंि◌ै। प्रत्ेयेक मनुष्य के र्ास यि गुण ि◌ोना चाहिए।

धमप के मौडलक डसद्धा

डवष्णुसांडिता के अनुसार क्षमा, सत्य, मन का हनग्रि, ि◌ुहचता, दानिीलता, इक्तिय-हनग्रि, अहिंसा, गुरु-सेिा, तीथपयात्रा, दया, सरलता, अलोभ, दिे और ब्राह्मणों ◌ंकी उर्ासना और अिेष सामान्य-धमप के संघटक तथा सब मनुष्यों ◌ंि◌ारा र्ालन करने योग्य (धमप के) हनयम ि◌ैं।

मिाभारत के अनुसार श्रद्धा, तर्याप, सत्य, अक्रोध, एकर्त्नी-व्रत, ि◌ुहचता, हिद्या, अनसूया, आिज्ञान और सहिष्णुता धमप के मौहलक हसद्धान्त ि◌ैं।

र्द्मरुराण में किा गया ि◌ै हक इक्तिय-हनग्रि, सत्य, तर्, दान, आि-संयम, सहिष्णुता, र्हित्रता, अहिंसा, ि◌ाक्तिन्त और असे्तेय से धमप का प्रादुभापि ि◌ोता ि◌ै और ये दि गुण धमप की र्िचान ि◌ैं। इस र्ुराण के अनुसार योग्य व्यक्तियों ◌ंको उर्िार देना; भगिान् श्रीकृष्ण र अर्ने हिचारों ◌ंको संकेक्तित करना; माता-हर्ता की भक्ति करना, हनत्य के भोिन का अंि सिब र्िीिों ◌ंको देना और गौ को ग्रास देना-ये धमप के लक्षण ि◌ैं।

मत्स्यर्ुराण के अनुसार अिेष, अर्ररग्रि, इक्तिय-संयम, तर्, ब्रह्मचयप, करुणा, सत्य, सहिष्णुता और धैयप सनातन धमप के मौहलक मूल-तत्त्व ि◌ैं।

राजयोगदशपन के प्रहतर्ादक र्तंहिल मिहषप का कथन ि◌ै हक हनम्नांहकत दि गुणों ◌ंका र्ालन सभी को करना चाहिए। प्रथम र्ााँच ि◌ैं-अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचयप (हिचार, ि◌ाणी और कमप में), असे्तेय और अर्ररग्रि। ये यम ि◌ैं। अन्य र्ााँच गुण ि◌ैं–िौच (आन्तररक तथा बाह्य ि◌ुक्तद्ध), सन्तोष, तर्, स्वाध्याय तथा ईश्वरप्रहणधान। ये हनयम ि◌ैं।

गीता में हनम्नांहकत गुणों ंको दैंी सम्पदा की संज्ञा दी गयी ि-हनभपयता, अन्तःकरण की स्वच्छता, तत्त्वज्ञान के हलए ध्यानयोग में दृढ़ क्तस्थहत, दान, इक्तियों ंका दमन, यज्ञ, स्वाध्याय, तर्, िरीर-इक्तियों ंसहित अन्तःकरण की सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, कतृपत्व-अहभमान का त्याग, िाक्तन्त, हनन्दाहद न करना, ििीं ंके प्रहत दया, अलोलुर्ता, कोमलता, लोक और िास्त्र के हिरुद्ध आचरण में लज्जा, व्यथप चेष्ाओं ंका अभाि, तेि, क्षमा, धैयप, िुहचता, िौ तथा रूज्यता के अहभमान का अभाि, ये सब गुण इन चार मूलभूत गुणों ंकी अहभव्यक्ति ि- (१) सत्य, (२) अहिंसा, (३) िुहचता और (४) आिसंयम। बौद्धमत के अष्म-मागप तथा भगिान् यीिु के 'सरमन आन द माउण्ट' के सन्दभप में हिन गुणों ंकी चचाप की गयी ि, ि भी उर्युपि मूलभूत गुणों ंके िी अन्तगपत ि।

आिसाक्षात्कार प्राप्त करने के हलए गुणों ंको हिकहसत करना अर्ररिायप ि। ब्रह्म िुहचता ि। िाश्वत ब्रह्म िुहचता के अभाि में निीं ंप्राप्त िो सकता। ब्रह्म सत्य ि। िाश्वत ब्रह्म सत्य के अभ्यास के हबना प्राप्त निीं ंहकया िा सकता। ब्रह्म हनभपयता ि। िब तक आर् सिपथा हनभपय न िो िायें, आर् िाश्वत ब्रह्म को प्राप्त निीं ंकर सकते। रीर के प्रहत आसक्ति भय तथा दिेाध्यास को िन्म देती ि। यहद आर् हनभपय िो िायें, तो अर्ने को िरीर मान लेने का भाि समाप्त िो िायेगा।

लोभ, कृर्णता, कूरूरता और धृष्ता से आर्ने अर्ने हृदय को चकमक, लौि अथिा िीरे से भी अहधक कठोर बना हलया ि। दया, सिानुभूहत, दान, िदान्यता, उदारता, अनर्कार, सौम्यता, हनःस्वाथप कमप और दीन-दुःक्तखयों ंकी सेिा िारा आर् उसे कोमल बना सकते िैं। हमथ्याचार, असत्य और (हर्िुनता) चुगलखोरी िारा आर्ने अर्ने हृदय को कुहटल तथा संकीणप बना हलया ि। आिपि, सिाई, िुहचता, दान और अलोलुर्ता हृदय को हिकहसत कर सकते िैं। आर्ने कामुकता के कारण हृदय को अर्हित्र कर हदया ि। मन, िचन और कमप से ब्रह्मचयप के अभ्यास िारा उसे आर् र्ररिुद्ध कर सकते िैं।

अडिंसा

अहिंसा एक अत्यन्त मित्त्वरूूणप गुण ि। मिहषप र्तंहिल ने इसे यमों ंमें प्रथम स्थान हदया ि। अहिंसा का अभ्यास मन, िाणी और कमप से िोना चाहिए। अहिंसा का अभ्यास कायरता या दुबपलता निीं ंि। यि िसिो श्रेणी की िीरता ि। इसके अभ्यास के हलए असीम धैयप, सहिष्णुता, अनन्त आन्तरररक आध्याक्तिक िक्ति और प्रबल इच्छा–क्ति आिश्यक ि।

अहिंसा सत्य की िी अहभव्यक्ति अथिा उसका रूर्ान्तरण ि। सत्य और अहिंसा सदा साथ-साथ रिते िैं। िो अहिंसा में संक्तस्थत िो गया ि, िि हिश्व को हिला सकता ि। उसकी उर्क्तस्थहत में िैरभाि लुप्त िो िाता ि, िेर और गाय, सर्प और नेिला िाक्तन्तर्ूिपक साथ-साथ रिने लगते िैं।

हिन्दू, बौद्ध और िैन-मतों ंमें अहिंसा र्र बहुत बल हदया िाता ि। भगिान् यीिु ने 'िैलोर्दिे' (Sermon on the Mount) में अहिंसा र्र बहुत बल हदया ि। िि कहते िैं-"यहद कोई आर्के एक गाल र्र थप्पड मारे, तो दूसरा गाल भी उसके सामने कर दें।"

िो अहिंसा में भली प्रकार क्तस्थत ि, ििी आिसाक्षात्कार करने की आिा कर सकता ि। िो अहिंसा का अभ्यास करता ि, उसमें हदव्य हिश्व-प्रेम अत्यहधक हिकहसत िो िाता ि। अहिंसा का अभ्यास करने से अन्ततोगत्वा ब्रह्म से तादात्म्य भाि स्थाहर्त िो िाता ि। अहिंसक मनुष्य िी आिसंयम कर सकता ि। प्रहतिोध-खून का बदला खून-आसुरी प्रकृहत के व्यक्ति का हसद्धान्त ि। यि र्ािहिक प्रकृहत ि। र्रन्तु बुराई के बदले भलाई करना हदव्यता ि। अहिंसा के अभ्यासी को हनरन्तर िागरूक रिने की आिश्यकता ि। यहद हकंहचत् भी

असिाधानी िो गयी तो आर् स्िरूप के बुरे संस्कार और जिौगों ंके प्रभाि में आ िायेंगे तथा न चािते हुए भी हिंसा के प्रभाि में आ िायेंगे।

सत्य

ब्रह्म 'सत्' िै। सत्य का र्ालन मन, िाणी और कमप से करना चाहिए। यहद आर् सत्य में क्तस्थत िों,ं तो अन्य समस्त गुणों ंसे आर् स्वतः िी हिभूहषत िो िायेंगे। रािा िररिर ने सत्य के हलए अर्ना सिपस्व बहलदान कर हदया। इसी कारण िि अब भी अमर िैं। युहधहष्ठर भी सत्य के र्ुिारी थे। सत्य से बडा अन्य कोई गुण निीं ंिै। सत्य और अहिंसा नैहतक िीिन का मुकुट और गौरि िैं। तैहत्तरीय उर्हनषद् में गुरु अर्ने दीक्षान्त-भाषण में हिष्यों ंसे किता िै- "सत्यं िद" अथापत् सत्य बोलो। संसार की िडें सत्य में िैं। धमप की िडें सत्य में िैं। समस्त धमों की िडें भी सत्य में िैं। ईमानदारी, न्यायहप्रयता, जिोपि तथा हनष्कर्टता सत्य की िी हिहभन्न अहभव्यक्तियााँ िैं।

िुडचता

िुहचता का तात्पयप िै बाह्य और आन्तररक अथापत् िारीररक और मानहसक िुक्तद्ध। मन को िुद्ध करने के हलए र्िले िरीर को िुद्ध करना र्डता िै।

िरीर भगिान् का मक्तन्दर िै। हनत्य स्नान करके और स्वच्छ िस्त्र र्िन कर इसे िुद्ध रखना चाहिए। स्वच्छता ईश्वरर्रायणता का एक अंग िै। मन को िुद्ध रखने के हलए भोिन र्र हनयन्त्रण रखना आिश्यक माना गया िै

भोिन का मन र्र सीधा प्रभाि र्डता िै। साक्तत्त्वक और र्हित्र भोिन मन को र्हित्र बनाता िै। भोिन के सिपश्रेष्ठ सूक्ष्म सारतत्त्व से िी मन बनता िै; इसहलए, िैसा भोिन िोगा, िैसा िी मन बनेगा।

आर्को मन, िाणी और कमप से िुद्ध िोना चाहिए। आर्का हृदय स्फहटक अथिा हिमालय की बफप की भााँहत िुद्ध िोना चाहिए; तभी हदव्य ज्योहत अितररत िोगी। स्पष्टहदता, हनष्कर्टता, जिोपि तथा सब प्रकार के जिगुणों ंका अभाि िुहचता के िी अन्तगपत िै। िो िुहच (िुद्ध) िै, उसके हलए आध्याक्तिक मागप र्र चलना अत्यन्त सरल िै।

आत्मसांयम

आर्को र्ूणप जिसंयम रखना चाहिए। जिसंयम से तात्पयप िै–िरीर और मन दोनों र्र हनयन्त्रण। जिसंयम का जिय जिर्ीडन निीं ंिै। आर्को हनयहमत और अनुिाहसत िीिन व्यतीत करना चाहिए।
आर्को अर्नी समस्त इक्तियााँ अर्ने हनयन्त्रण में रखनी चाहिए। इक्तियााँ उर्द्रिी तथा हनरंकुि घोडों ंके समान िैं। िरीर रथ िै। मन लगाम िै। बुक्तद्ध रथी तथा जिा इस रथ का स्वामी िै। यहद इक्तियों र्र र्ूणप हनयन्त्रण न रखा िाये, तो िे इस रथ को अगाध गतप में हगरा देंगी। आर् बरबाद िो िायेंगे। िो व्यक्ति लगाम को दृढ़ रख कर बुक्तद्धमत्ता से घोडों ं(इक्तियों)ं र्र हनयन्त्रण रखता हुआ रथ िााँकता िै , िि कुिलतार्ूिपक अर्नी मंहिल (मोक्ष अथिा िाश्वत र्रमानन्द के धाम) तक र्हुाँच िायेगा।

जिसंयम का अथप िै-जिा-बहलदान, जिकार का नाि, धैयप, क्षमा, सहिष्णुता तथा नम्रता। िैराग्य के द्वारा राग र्र हििय प्राप्त करें। हिषयर्रायण िीिन के दोषों–िन्म, मृत्यु, रोग, िृद्धािस्था, र्ीडा, दुःख आहद र्र ध्यान देने से (दोष-दृहष् या हमथ्या-दृहष् रखने से) आर्के मन में िैराग्य का उदय िोगा। क्षमा, प्रेम और हनःस्वाथप सेिा द्वारा क्रोध तथा घृणा र्र हििय प्राप्त करें। बुराई को भलाई द्वारा िीतें। बुराई के बदले भलाई करें।

कामुकता को ब्रह्मचयप और हनयहमत िर् तथा ध्यान के अभ्यास िारा िीतें। लोभ को दान, उदारता और हनष्काम कमप के िारा िीतें। अहभमान को नम्रता िारा, भ्रम को ििेक और हिज्ञासा िारा िीतें। ईष्याप को उदारता, ििालता, अोभा और श्रेष्ठता िारा िीतें। अिभा को अोबहलदान, अोसमपर्ण, अोत्याग तथा अत, ाश्वत, अोदीप्त, आन्तररक िासक, अन्तराा अमर ब्रह्म के िारा िीतें।

आर् सब धमप के आधारभूत सद्गुणों ंको अर्ना कर (सामान्य-धमप का र्ालन करके) िाश्वत र्रमानन्द और अमरता को प्राप्त करें।

णापश्रम-धमप

णापश्रम-धमप का हसद्धान्त हिन्दू-धमप के मूलभूत हसद्धान्तों ंमें से एक िै। िणापश्रम-प्रथा हिन्दुओं ंकी हिहिष्ता ै। यि हिन्दू-धमप का ििेषता-सूचक गुण िै। यि गुण-कमप के अनुसार अक्तखल हिश्व में प्रचहलत िै, यद्यहर् कोई ििेष नाम इस प्रकार के भेद को किीं ंऔर निीं ंहदया गया िै।

हिहभन्न िाहतयों ंके कतपव्यों ंको िणप-धमप किते िैं। चार िाहतयााँ िैं-ब्राह्मण, क्षहत्रय, िैश्य और िू। िीन की अिस्थाओं ंके कतपव्य आश्रम-धमप किलाते िैं। चार आश्रम िैं-ब्रह्मचयप, गृिस्थ, िानप्रस्थ और संन्यास।

डसद्धा

मानि-समाि एक ििाल यन्त्र के समान िै। व्यक्ति और िाहतयााँ इसके र्ुरे िैं। यहद र्ुरे कमिोर और टूटे हुए िों,ं तो यन्त्र काम निीं ंकर सकता। र्ुरिों ंसे रहित यन्त्र कुछ निीं ंिै। मानि िरीर सुचारु रूर् से तभी काम कर सकता ै, िब उसके अंग स्वस्थ तथा बलिान् िों।ं यहद िरीर के हकसी भाग में र्ीडा िो, यहद उसका कोई अंग िो, तो मानि-यन्त्र हबगड िायेगा और अर्ना सामान्य कायप निीं ंकरेगा।

यिी दिा मानि-समाि की िै। प्रत्येक व्यक्ति को अर्ने कतपव्यों ंका र्ालन भली प्रकार करना चाहिए। हिन्दू-ऋहष-मुहनयों ंने िणापश्रम-धमप के नाम से सामाहिक और व्यक्तिगत स्तर र्र आदिप िीन व्यतीत करने की एक योिना बनायी। हिन्दुत्व िणापश्रम-धमप र्र आधाररत िै। हिन्दू-समाि का ढााँचा िणापश्रम-धमप र्र हटका हुआ िै। णापश्रम-धमप का र्ालन करके मनुष्य अर्ने क्रम-हिकास का मागप प्रिस्त करता िै। यि धमप अर्ररियप िै। यहद हनयमों ंका उल्लंघन हकया िाये, तो समाि िीघ्र िी नष् िो िायेगा।

णापश्रम-धमप का लक्ष्य िै सािपभौहमक और िाश्वत धमप का हिकास। यहद आर् धमप की रक्षा करते िैं, तो धमप भी आर्की रक्षा करेगा। यहद आर् उसे नष् करते िैं, तो िि भी आर्को नष् कर देगा। इसहलए अर्ने धमप को कभी नष् न करें। यि हसद्धान्त हितना व्यक्ति के हलए सत्य िै, उतना िी एक राष्ट्र के हलए। धमप िी राष्ट्र को िीहित रखता िै। धमप िी मनुष्य की आाा िै। धमप एक राष्ट्र की भी आाा िै।

र्ाश्चात्य दिों ंमें और सम्पूर्णप िगत् में िणापश्रम-धमप िै, यद्यहर् इसका ििााँ दृढ़ता से र्ालन निीं ंहकया िाता ै। कुछ र्ाश्चात्य दािपहनकों ंने तीन श्रेहणयों ंमें मानि-समाि को हिभाहित हकया िै-दािपहनक, योद्धा और िनसाधारण। दािपहनक ब्राह्मणों ंके सदृि िैं। इसी प्रकार योद्धा क्षहत्रय के तथा िनसाधारण िैश्य और िू के सदृि िैं। समाि को र्ूणपरूर्ेण व्यिक्तस्थत रूर् देने के हलए यि र्द्धहत अहनिायप िै।

चार जाडतयााँ

ऋग्ेवेद के रुरुषसूि में हिन्दू-समाि के चार भागों ंमें हिभािन का उल्ेलेख िै। उसमें हलखा िै हक ब्राह्मण सृहष्कताप र्रमाा के मुख से हनकले, क्षहत्रय उनकी भुिाओं ंसे, िैश्य उनकी िंघाओं ंसे और िूि उनके र्ैरों ंसे।

यि हिभािन गुण और कमप के अनुसार हकया गया िै। गुण और कमप से मनुष्य की िाहत हनधापररत िोती
ाी। गीता (४/१३) में भगिान् श्रीकृष्ण ने भी इसी तथ्य का समथपन हकया िै। िे किते िैं- "गुण और कमों के हिभाग से ब्राह्मण, क्षहत्रय, िैश्य और िूि मेरे िारा रचे गये िैं। उनके कताप को भी मुझ अकताप, अहिनािी र्रमेश्वर को िी िानो।"

गुण तीन प्रकार के िोते िैं-सत्त्व, रिस् और तमस्। सत्त्व श्ेवेत िै; रिस् लाल और तमस् काला िै। ये तीनों ं गुण मनुष्य में हिहभन्न अनुर्ात में र्ाये िाते िैं। हिन लोगों ंमें सत्त्व की प्रधानता िोती िै, िे ब्राह्मण िैं। िे बुक्तद्धमान् तथा हिचारक िोते िैं। िे िासकों ंका र्थ-प्रदिपन करने िाले र्ुरोहित, मन्त्री अथिा दािपहनक िोते िैं। कुछ लोगों ंमें रिस् की प्रधानता िोती िै, िे क्षहत्रय िैं। िे योद्धा अथापत् कमपिूर व्यक्ति िोते िैं। िे िािुरु अथिा आक्रामकों ंसे युद्ध करके दिे की रक्षा करते िैं। कुछ व्यक्तियों ंमें तमस् की प्रधानता िोती िै। िे िैश्य अथापत् व्यार्ारी िैं। िे व्यार्ार तथा कृहष िारा धनोर्ािपन करते िैं। िूि सेिक िैं। उनमें इनमें से कोई भी गुण अहधक हिकहसत निीं ंिै। िे अन्य िाहतयों ंकी सेिा करते िैं।

व्यािक अथप में साक्तत्त्वक र्ुरुष, िो र्हित्र और सद्गुणी िै तथा हदव्य िीिन व्यतीत करता िै, ब्राह्मण िै। र्ौरोहचत गुणों ंसे युि रािसी व्यक्ति क्षहत्रय िै। व्यार्ाररक प्रिृहत्त िाला रािसी र्ुरुष िैश्य िै। तामसी र्ुरुष िूि ाी। हिटलर और मुसोहलनी क्षहत्रय थे। फोडप िैश्य थे।

िाक्तिन्त, आत्मसंयम, तर्, िुहचता, क्षमािीलता, आिपि, ज्ञान, आत्मानुभि तथा ईश्वर में हिश्वास-ये ब्राह्मण के प्रकृहतित गुण िैं। र्राक्रम, भव्यता, दृढ़ता, दक्षता और युद्ध से न भागना, उदारता और िासन क्षहत्रय के प्रकृहतित गुण िैं। इसी प्रकार कृहष, र्ुि-र्ालन और व्यार्ार िैश्यों ंके प्रकृहतित गुण िैं। सेिा-भाि िूि का प्रकृहतित गुण िै।

आध्याक्तत्मक अथपशास्त्र का हनयम

िाहत-प्रथा अथापत् िणप-धमप में श्रम-हिभािन का हसद्धान्त हनहित िै। ऋहषयों ंने मानिीय प्रकृहत का भली प्रकार अध्ययन हकया था। िे इस र्ररणाम र् र् िुँचे हंकं सब मनुष्य सब प्रकार के कायप निीं ंकर सकते। इसहलए उन्ोंनें यि आिश्यक ने हक सब हिहभन्न िगों ंके लोगों ंको उनकी प्रिृहत्त, योग्यता अथिा गुणों ंके अनुसार हिहभन्न प्रकार के कतपव्य हदये िायें। ब्राह्मणों ंको आध्याक्तिक और बौक्तद्धक काययों को सम्पन करने का उत्तरदाहयत्व दे हदया गया। रािनैहतक प्रिासन और सुरक्षा-कायप क्षहत्रयों ंको हदया गया। िैश्यों ंको राष्ट्र की खाद्य की आर्ूहतप करने
तथा आहथपक व्यिस्था करने के काम सौंर्े गये। िूिों ंको दासोहचत कायप सौंर्े गये। ऋहषयों ंने हिन्दू–िाहत की इन समस्त आिश्यकताओं ंको समझ कर िणप और आश्रम की प्रथा प्रचहलत की थी।

यि श्रम-हिभािन िैहदक युग में आरम्भ हुआ। िेदों ंमें हलखा िै हक ब्राह्मण समाि का मक्तस्तष्क िै, क्षहत्रय उसकी भुिा िै, िैश्य र्ेट िै और िूि चरण िै।

एक बार मन, प्राण और इक्तियों ंमें इस बात को ले कर झगडा हुआ हक कौन बडा िै। हिहभन्न अंगों ंऔर र्ेट के बीच भी झगडा हुआ। यहद िाथ र्ेट से झगडा करने लगे, तो समस्त िरीर को कष् िोगा। यहद प्राण िरीर से हनकल िायें, तो सभी अंग हनक्तिय िो िायेंगे। हिर अथिा र्ेट िाथ-र्ाँिों िे से श्रेष्ठ िोने का दािा निीं ंकर सकते।

यहद हिहभन्न िोहतयों ंमें यि झगडा िो हक कौन बडा िै, तो समस्त सामाहिक ढाँचा अस्त-व्यस्त िो िायेगा। सिपत्र
असामंस्यि, सम्बन्ध-भंग तथा मतभेद की क्तस्थहत उत्पन्न िो िायेगी। समिा के संचालन के हलए एक हभश्ती या नाई का उतना िी मित्त्व िै हितना हक मन्त्री का। सामाहिक भिन आध्याक्तिक अथपिास्त्र के हसद्धान्त र् खडा हुआ िै। श्ेरेष्ठता या िीनता से इसका कोई सम्बन्ध निीं ंिै। समिा का प्रते्येक िगप अर्नी-अर्नी िक्ति तथा सामथ्यप
के अनुसार िनकल्याण अथापत् हिश्व-एकि[illegible]-नीच का कोई प्रश् निीं ंउठता।

चररत्र से जाडत-डनणपय

ब्राह्मण यहद अर्हित्र, चररत्रीन, दुराचारी तथा अनैहतक िै, तो िि ब्राह्मण निीं ंिै। िू यहद र्हित्र और सद्गुणी िै, तो िि ब्राह्मण िै। हिदुर हकतने मिान् थे! सत्यकाम िाबाल्य हकतना मिान् स्पष्िादी तथा सीधा-सािा हिद्याथी था। िाहत का सम्बन्ध चररत्र से िै। िणप का अथप त्वचा का रंग निीं ंिै; िणप िै चररत्र या गुण का रंग। चररत्र और आचरण भी मित्त्वरूणप िैं, मात्र िंि-र्रम्परा िी निीं।ं यहद कोई िन्म से ब्राह्मण िै तथा साथ–ी-साथ उसमें ब्राह्मण के गुण भी िैं, तो यि अच्छी क्तस्थहत िै; क्ोंहक कुछ गुण-सम्बन्धी योग्यताएँ िी ब्राह्मण का िन्म हनधापररत
करती िैं।

जाडत-प्रथा के लाभ और िाडन

कई हिदेिी आक्रमणों ंके हिरूद हिन्दू-धमप िाहत-व्यिस्था के कारण िी िीहित िै; र्रन्तु िाहत-व्यिस्था के कारण उनमें िेष और घृणा की भािनाएँ भी उत्पन्न हुई िैं। उनमें सियोग की भािना निीं ंिै। यिी कारण िै हक िे आि हनबपल और हबखरे हुए िैं। व्यिस्था के नाम र् िे साम्प्रदाहयक िो गये िैं। इसी कारण भारत की िो रिी िै।
िाहत-व्यिस्था में कोई बुराई निीं ंिै। यि हनतान्त तु्रुहट-रहित व्यिस्था िै; हकन्तु इसमें बाह्य कारणों ंसे दोष उत्पन्न िो गये िैं। िगप अर्ने-अर्ने कतपव्य की उर्ेक्षा करने लगे। योग्यता और चररत्र की कसौटी धीरे-धीरे लुप्त िोने लगी। िाहत का हनधापरण िन्म से िोने लगा। समस्त िाहतयाँ अर्ने आदिों ंसे चु्युत िो गयीं ंऔर कतपव्यों ं को भूल बैठीं।ं ब्राह्मण स्वाथी िो गये और उर्युपि योग्यता प्राप्त हकये हबना अर्ने िन्म के िी बल र् अर्ने को दूसरों ंकी अर्ेक्षा श्ेरेष्ठ समझने लगे। क्षहत्रयों ंने अर्ना िौयप खो हदया। िैश्य लोभी बन गये। िे गलत साधनों ंसे
धनोर्ािपन करने लगे। िे लोगों ंके आहथपक कल्याण का भी ध्यान निीं ंरखते थे। दान देने और त्याग करने की भािना समाप्त िो गयी। िू सेिा करने से कतराने लगे। िे बडे अहधकाररयों ंकी तरि व्यििार करने लगे। िे इस बात की अर्ेक्षा करने लगे हक दूसरे व्यक्ति उनकी सेिा करें। मानि के लोभ और अहभमान ने असंगहत तथा असामंस्यि की क्तस्थहतयाँ उत्पन्न कर दी िैं।
िणापश्रम-धमप में कोई बुराई निीं ंिै। मनुष्य के अिंकार और दम्भ ने समस्याएँ उत्पन्न की िैं। मनुष्य अथिा कुिु िी अरूणप िै। उनमें दोष–ी-दोष िैं। िि केिल दूसरों ंसे ऊँचा कििाने का अहधकार प्राप्त करने की प्रतीक्षा में रिता िै। ब्राह्मण सोचता िै हक अन्य तीन िाहतयाँ उससे नीची िैं। क्षहत्रय सोचता िै हक िैश्य और िू उससे िीन िैं। इसी तरि एक धहनक िू सोचता िै हक िि हनधपन ब्राह्मण, िैश्य या क्षहत्रय से श्ेरेष्ठ िै।

ितपमान काल में िणापश्रम-धमप नाम मात्र को िीहित बचा िै। इसको भली प्रकार व्यिक्तस्थत करना िै। ब्राह्मण, क्षहत्रय और िैश्य िो अर्ने आदिों से चु्युत िो चुके िैं और िो भली प्रकार अर्ने कतपव्यों ंका र्ालन निीं ं कर रिे िैं, उन्ें अर्ने-अर्ने कतपव्यों ंका भली प्रकार र्ालन करना चाहिए। उनकी हिक्षा-दीक्षा उर्युि ढंग से िोनी चाहिए। उन्ें अर्ने आद्य उिस्तर के अनुरूर् स्वयं को उठाना चाहिए। साम्प्रदाहयक भािना समाप्त िो िानी चाहिए। प्ेरेम, भक्ति, सियोग, त्याग तथा सेिा की भािनाओं ंसे ओत-प्रोत उन्ें एक नये मानस का हिकास करना चाहिए।

चार आश्रम

ीीनि में चार आश्रम अथिा अिस्थाएँ िोती िैं। इनके नाम िैं-ब्रह्मचयप, गृिस्थ, िानप्रस्थ और संन्यास। प्रत्येक आश्रम के अर्ने-अर्ने कतपव्य िैं। इन आश्रमों ंसे मानि के क्रम-हिकास में सियता हमलती िै। क्रम से चारों ंआश्रमों ंका ीीनि व्यतीत करते हुए, मनुष्य अर्नी रू्णपता तक र्हुँचता िै। प्रारम्भ से ले कर अन्त तक उसके ीीनि का हनयमन िो िाता िै। प्रथम दो आश्रम प्रिृहत्त-मागप (कमप-मागप) से सम्बक्तन्धत िैं तथा अक्तन्तम दो (िानप्रस्थ और संन्यास) हनिृहत्त-मागप (त्याग-मागप) से।

सुव्यवस्तथथत आध्यास्तत्मक क्रमडवकास की ओर

सनातन धमप में ीिीन अत्यन्त क्रहमक रूर् से व्यिक्तस्थत िै। इसमें मानिीय कायपकलार्ों ंके हिहभन्न क्षेत्रों ंके हिकास का रू्णप अिसर रिता िै। ीिीन के प्रत्येक आश्रम के हलए उर्युि कमों तथा प्रहिक्षणों ंका हनधापरण कर हदया िाता िै। ीिीन एक मिान् र्ाठिाला िै हिसमें मानि के सामथ्यप, क्षमताओं ंतथा मनःिक्तियों ंका क्रमिः हिकास िोता िै।

प्रत्येक मनुष्य को क्रहमक रूर् से हिहभन्न आश्रमों ंमें प्रिेि करना चाहिए। उसे हकसी आश्रम में समय से र्ूिप अर्ररर्क्व मनःक्तस्थहत में प्रिेि निीं ंकरना चाहिए। एक अिस्था को रू्णप करने के र्श्चात् िी िि अगले स्तर में प्रिेि कर सकता िै। प्रकृहत में हिकास क्रहमक िोता िै, अनायास निीं।ं

मनु ने सूमृहत में किा िै- "िो ब्रह्मचयप-आश्रम में रिता हुआ ब्रह्मचयप व्रत भंग हकये हबना समस्त िेदों ंको अथिा कम-से-कम एक या दो िेदों ंका अध्ययन कर ले, िि गृिस्थ-आश्रम में प्रिेि कर सकता िै। िब गृिस्थ अर्नी त्वचा में झुररपयाँ या अर्ने केिों ंमें सफेदी देख ले, अर्ने र्ौत्र का मुख देख ले, तब उसे िन में चले िाना चाहिए। िन में ीिीन का तृतीय भाग (आश्रम) व्यतीत करने के र्श्चात् उसे समस्त आसक्तियों ंको त्याग करके ीीनि के चतुथप आश्रम में एक तर्स्वी की भाँहत भ्रमण करना चाहिए।"

िाँ, हिहिष् र्ररक्तस्थहतयों ंमें ीिीन की हकसी अिस्था (आश्रम) को छोडा ४६ िा सकता िै। िुक िन्मिात संन्यासी थे। िंकर ने गृिस्थ- आश्रम में प्रिेि हकये हकस संन्यास ले हलया। कभी-कभी अहत हिहिष् र्ररक्तस्थहतयों ं में ब्रह्मचारी को भी संन्द ग्रिण करने की आज्ञा हमल िाती िै; क्योंहक संसार के प्रहत अर्ने ऋणों ंसे र्ूिप–िन्म में िी उऋण को चुका िोता िै। आिकल अयोग्य युिक-संन्यासी बिा हदखायी र्डते िैं। यि प्राचीन हनयमों ंके हिरुद्ध िै और इससे बहुत व्यिधान उर्क्तस्थ िो िाता िै।

ब्रह्मचारी

प्रथम आश्रम-ब्रह्मचयप-अध्ययन और अनुिासन का काल िै। हिद्याहथपयों ंको हिलासहप्रय निीं ंिोना चाहिए। िि गुरु के र्ास रि कर बेदों ंऔर हिद्याओं ंक अध्ययन करता िै। यि आश्रम उसका र्रीक्षा (probation) काल िै। प्राचीन मा में गुरु साधारणतया िंगल में कुटी बना कर रिते थे। ये कुहटयाएँ िी गुरुकुत अथापत् अरण्य हिश्वहिद्यालय किलाती थीं।ं हिद्याथी हभक्षािृहत्त िारा भोिन करता था। धनी और हनधपन के बालक

साथ-साथ रिते थे। हिद्याथी गुरु को अर्न आध्याक्तिक हर्ता मानता था और भक्ति, हिश्वास और सम्मानर्िूपक उसकी सेिा करता था।

हिद्याथी का िीिन उर्नयन संस्कार (यज्ञोर्िीत-संस्कार) से प्रारम्भ िोता िै। यि उसका दूसरा िन्म माना िाता िै। उसे स्वभाि से सरल और र्ररश्रमी िोन चाहिए। िि प्रातःकाल िल्दी उठ कर स्नान करता िै और सन्ध्या तथा गायत्रीर्ाठ करता िै। िि धमपग्रन्थों ंका अध्ययन करता िै। िि सरल एिं सनुतुहलत भोिन ग्रिण करता िै। िि र्यापप्त व्यायाम करता िै। िि कठोर भूहम र्र सोता िै; कोमल सुखदायक हबछौना तथा तहकयों ंका प्रयोग ििनिीं ंकरता। िि अहत-नम्र औ आज्ञाकारी िोता िै; िि गुरुिनों ंकी आज्ञा मानता िै और उनका आदर करता िै। िि मन, िचन और कमप से िुद्ध रिने की चेष्टा करता िै।

िि हनरन्तर गुरु-सेिा में रत रिता िै। िि स्त्री, महदरा, मांस, इत्र, माला स्वाहदष्ट भोिन, खेि तथा मसालेदार भोज्य र्दाथप, िीि-हिंसा, काम, क्रोध, लोभा नृत्य-गान, संगीतिादन, िुआ, गर्िर्, हमथ्यार्िाद और असत्य से अर्ने क बचाता िै। िि अकेला सोता िै।

हिद्याथीिीिन के अन्त में िि अर्ने सामथ्यप के अनुसार गुरु को दहक्षणा दे कर गृिस्थिीिन में प्रिेि करने के हलए घर िार्स िाने की आज्ञा माँगता िै। आज्ञा प्रदान करने से र्ूिप गुरु हनम्नांहकत अक्तन्तम उर्देि देता िै:

"सत्य बोलो। अर्ने कतपव्य का र्ालन करो। िेदाध्ययन से हिरत न िोओ। सन्तहत की र्रम्परा को हिशृंखल मत िोने दो। गुरु को िांहछत दहक्षणा देने के र्श्चात् गृिस्थाश्रम में प्रिेि करो। सत्य और कतपव्य के मागप र्र सदैि चलते रिो। अर्ने कल्याण की उर्ेक्षा मत करो। अर्नी समृक्तद्ध की उर्ेक्षा मत करो। िेदाध्ययन तथा िेदों ंके उर्देिों ंकी उर्ेक्षा मत करो।

"देिों ंऔर हर्तरों ंके प्रहत अर्ने कतपव्य की उर्ेक्षा मत करो। माता को देिता मानो, हर्ता को देिता मानो, आचायप को (गुरु को) देिता मानो और अहतहथ को देिता मानो। केिल ििी कमप करो िो दोष-रहित िो। केिल सत्कमप करो।

"आर्को अर्ने से श्रेष्ठ ब्राह्मणों ंको आसन आहद दे कर उनकी श्राक्तन्त दूर करनी चाहिए। उन्हें श्रद्धा, हिनम्रता और सिानुभूहतर्ूिपक उर्िार देना चाहिए। यहद कमपकाण्ड अथिा आचरण के सम्बन्ध में कोई संिय िो, तो मिार्ुरुषों ंके िीिन से हिक्षा लो। यिी आज्ञा िै, यिी हिक्षा िै, यिी िेदों ंका रिस्य िै। यिी देिी आदेि िै। इसका र्ालन करो। इसी र्र मनन करो।"

गृिस्थ

दूसरा आश्रम गृिस्थाश्रम िै। िब हिद्याथी अर्ना छात्रिीिन समाप्त करके गृिस्थिीिन के उत्तरदाहयत्व को ििन करने योग्य िो िाता िै, तब अर्ने हििाि के समय िि गृिस्थाश्रम में प्रिेि करता िै।
समस्त आश्रमों ंमें यि आश्रम अत्यन्त मित्त्वर्ूणप िै; क्योंहक यि अन्य समस्त आश्रमों ंका आधार िै। हिस प्रकार समस्त िीिन िायु िारा र्ोहषत िोते िैं, हिस प्रकार समस्त नहदयाँ समुद्र में र्हुँच कर हिश्राम प्राप्त करती िैं, उसी प्रकार समस्त आश्रम गृिस्थ-आश्रम में हिश्राम र्ाते िैं। गृिस्थ आयपिीिन का हृदय िै। प्रत्येक बात उस र्र हनभपर रिती िै।

हिन्दू के हलए ीिहा एक र्हित्र संस्कार ि ै। र्त्नी उसकी ीिीन-संहगनी िोती ि ै। िि उसकी अधाांहगनी िोती ि ै। उसके हबना हिन्दू कोई धाहमपक कमपकाण्ड सम्पन्न निीं ं कर सकता। धाहमपक कृत्य करते समय र्त्नी र्हत के बायीं ंओर खडी िोती ि ै। र्हत-र्त्नी राम-सीता को अर्ना आदिप मानते िैं।

गृिस्थ को सिाई और ईमानदारी से धनोर्ापिन करके उहचत ढंग से इसका हिभािन करना चाहिए। उसे अर्नी आय का दििाँ भाग दान में व्यय करना चाहिए। ऐहिक सुख नीहत-हसद्धान्तों ंकी सीमा के भीतर िी भोगने चाहिए। गृिस्थ को माि में केिल एक राहत्र स्त्री-संग का सुख अनुभि करना हिहित ि ै।

गृिस्थ को हनम्नांहकत र्ााँच मिायज्ञ करने चाहिए :

(१) देि-यज्ञ िेदमन्त्रोच्चारण के साथ देिताओं ंको आहुहत देना।

(२) ऋहष-यज्ञ िेदाध्ययन, हिद्याहथपयों ंको िेद र्ढ़ाना और ऋहषयों ंको आहुहत देना ऋहष-यज्ञ के अन्तगपत आते िैं।

(३) हर्तृ-यज्ञ-मृतक आत्माओं ंको तर्पण देना एिं श्राद्ध अथिा िाहषपक कमपकाण्ड सम्पन्न करना हर्तृ-यज्ञ ि ै।

(४) भूत-यज्ञ-गायों, ं कौओं ंतथा र्िुओं ंको भोिन देना भूत-यज्ञ ि ै।

(५) अहतहथ-यज्ञ-अहतहथयों ंको भोिन कराना और उनका मान-सम्मान करना अहतहथ-यज्ञ ि ै।

आहतथ्य गृिस्थों ंका प्रधान कतपव्य ि ै। उसे सिपप्रथम अर्ने अहतहथयों ंको, ब्राह्मणों ंको और सम्बहन्धयों ंको भोिन करा कर तब स्वयं र्त्नी सहित भोिन करना चाहिए।

िब गृिस्थ देखे हक उसके र्ुत्र उसके कतपव्यों ंका भार िीिन करने में समथप िो गये िैं तथा र्रिार में उसके र्ौत्र र्ौहत्रयााँ भी िैं, तब उसे समझना चाहिए हक उसके और उसकी र्त्नी के हलए संसार को त्याग कर अध्ययन और हचन्तन में अर्ना िीिन व्यतीत करने का समय आ गया ि ै।

वानप्रथथी

इसके र्श्चात् िानप्रस्थ-आश्रम की अिस्था ि ै हिसमें गृिस्थ िानप्रस्थी के रूर् में प्रिेि करता ि ै। ब्रह्मचयप हिस प्रकार गृिस्थिीिन की तैयारी ि ै, उसी प्रकार िानप्रस्थ अहन्तम अिस्था संन्यास की तैयारी ि ै। गृिस्थ-आश्रम के समस्त कतपव्यों ंका र्ालन कर चुकने के र्श्चात् मनुष्य को िन में या अन्य हकसी ंएकान्त-स्थान में िा कर उत्तर आध्याहत्मक हिषयों ंका हचन्तन-मनन करना चाहिए। अब िि सामाहिक बन्धनों ंऔर िीिन के उत्तरदाहयत्वों ंसे मुक्त ि ै। अब उसके र्ास धमपग्रन्थों ंका अध्ययन करने के हलए प्रचुर अिकाि ि ै। उसकी र्त्नी उसके साथ िा सकती ि ै, अन्यथा िि अर्ने र्ुत्र के साथ रिने के हलए स्वतन्त्र ि ै।

सांन्यासी

अक्तन्तम अिस्था संन्यास-आश्रम िै। संन्यासी िोने र मनुष्य सब-कुछ त्याग देता िै-धन-सम्पहत्त, िाहत-भेद, कमपकाण्ड, धमापनुष्ठान तथा दिे, राष्ट्र या धमप-िहेष के हलए आसक्ति। िि हभक्षा माँग कर हनिापि करता िै। गिन ध्यान की उत्कृष् अिस्थाओं ंमें िप्रि कर लेने के र्ित् िि अर्नी िी आिा में आनक्तन्दत िो उठता िै। हिषय-सुखों ंसे िि हिमुख िो िाता िै। िि रुहच-अरुहच, इच्छा, अिभिा, कामुकता, क्रोध, लोभ और अिकार से मिु िो िाता िै। उसमें समत्व दृहष् तथा मानहसक सनुतुलन िोता िै। िि सबसे प्ेरेम करता िै और ब्रह्मज्ञान हितररत करता हुआ प्रसन्नतारूिपक भ्रमण करता िै। मान-अर्मान, हनन्दा-सुतुहत और सफलता-असफलता में िि समभिा रखता िै। अब िि अहत–िणापश्रमी िो िाता िै अथापत् िणापश्रम से रें िो िाता िै। िि सिपथा मिु िो िाता िै। िि सामाहिक प्रथाओं ंऔर बन्धनों ंसे भी मिु िै।

ऐसा संन्यासी एक आदिप रुरुष िै। उसने रूणपता और मुक्ति प्राप्त कर ली िै। िि ब्रह्म िी िै, िीिनुमिु ि।ै इस रृथ्वी र साक्षात् दिेता-स्वरूर् ऐसी मिान् आिाओं ंकी िय िो!

आधुडनक ररस्तथथडतयो ंमें आश्रम-धमप

इस युग में ब्रह्मचयप, गृिस्थ, िानप्रस्थ और संन्यास-आश्रमों ंके प्राचीन हनयमों ंका रूरा-रूरा र्ालन करते हुए िीिन व्यतीत करना सम्भि निीं ंिै, क्योंहक ररक्तस्थहतयों ंमें बहुत ररितपन आ गया िै; हकनुतु उनमें हनहित मूल-भािना को रुनिीहित हकया िा सकता िै। इससे आधुहनक िीिन में बहुत सुधार िो सकता िै। इन आश्रमों ंके हनयमों ंके अनुसार िीिन व्यतीत करते हुए हकसी को दूसरे आश्रमों ंके हलए हनधापररत कमों को निीं ंकरना चाहिए। ब्रह्मचारी को गृिस्थों, ंिानप्रक्तस्थयों ंअथिा संन्याहसयों ंके हलए हिहित कमप निीं ंकरने चाहिए। संन्यासी को दोबारा गृिस्थिीिन के सुखों ंको प्राप्त करने का प्रयास निीं ंकरना चाहिए।

समाि में िाक्तन्त और व्यिस्था तभी स्थाहर्त िो सकती िै, िब प्रत्ेयेक मनुष्य सुचारु रूर् से अर्ने-अर्ने कतपव्यों ंका र्ालन करे। िणापश्रम-व्यिस्था का उनूमूलन सामाहिक कतपव्यों ंको हनमूपल कर देगा, समाि-धमप को िड से उखाड देगा। िणापश्रम-धमप का दृढ़तारूिपक र्ालन हकये हबना कोई भी राष्ट्र कैसे िीहित रिने की आिा कर सकता िै!

हिद्याहथपयों ंको र्हित्रता और सादगी का िीिन व्यतीत करना चाहिए। गृिस्थ को आदिप गृिस्थ का िीिन व्यतीत करना चाहिए। उसे आिसंयम, दया, सहिषुणुता, अहिंसा, सत्यता और हमताचार को व्यििार में लाना चाहिए। हिन्ें िानप्रस्थ एिं संन्यास-आश्रमों ंका िीिन कहठन प्रतीत िोता िो, उन्ें धीरे-धीर सांसाररक िीिन से हिरत िो कर हनष्काम सेिा, अध्ययन और ध्यान का अभ्यास करना चाहिए।

सवोच्च स्तथथडत

िणापश्रम केिल िरीर से िी सम्बक्तन्धत िै; िुद्ध, सिपव्यार्क अमर आिा मे निीं। ंआिज्ञान प्राप्त कर लें तथा दत्तात्ेरेय की भाँहत अहत–िणापश्रमी बन िायें। दत्तात्ेरेय के अनुसार-

मिदाडद जगत्सवं न डकांडचत्प्रडतभाडत मे।
ब्रह्मैव केवलां सवं कथां वणापश्रमस्तथथडतः ।।

अथापत् मित् से ले कर नीचे तक अक्तखल िगत् मुझमें निीं ंभासता। प्रत्ेयेक िसुतु ब्रह्म िी िै। हफर िणापश्रम किाँ?

ईश्वर करे, आर् सबमें िणापश्रम और िणापश्रम-धमप का रूणप ज्ञान प्रकाहित िो। आर् सबमें िैश्व-प्ेरम और भ्रातृत्व की भिाना हिकहसत िो ! अिो-प्रिंसा तथा स्वाग्रि के हलए मनुष्य िारा हनहमपत समस्त हिघटनकारी अिरोध हछन्न-हभन्न िो िायें!

युग-धमप

सत्ययुग में धाहमपक हनयमािली हभन्न थी, त्ेरतायुग में उसमें र्ररितपन कर हदया गया। िार्र का धमप अन्य युगों से हभन्न था। कहलयुग में उन्िोंनें अन्य रूर् धारण हकया। धमप समय-चक्र के साथ र्ररिहतपत िोता रिता िै। मनुष्य र्ररिहतपत िोता रिता िै। हिहभन्न अनुभिों के कारण उसकी प्रकृहत र्ररिहतपत िोती रिती िै; इसहलए उसके धमप का बाह्य रूर् भी र्ररिहतपत िोना चाहिए।

सत्ययुग में िो ध्यान-हचन्तन से, त्ेरता में िो यज्ञ से और िार्र में िो हिष्णु की उर्ासना से प्राप्त िोता था, ििी कहलयुग अथापत् लौियुग में भगिान् हिष्णु के नाम-कीतपन से प्राप्त हकया िा सकता िै।

सत्ययुग में मनुष्यों का मन िुद्ध तथा हिक्षेर्-रहित था। उस युग में न हसनेमा थे, न िोटल थे, न नृत्यिालाएँ थीं और न िी हिक्षेर् उत्पन्न करने िाली अन्य िस्तुएँ थीं। अतः उनके हलए ध्यान-हचन्तन सरल और सिि था। इसहलए सत्ययुग के लोगों के हलए ध्यानयोग को उर्युि बताया गया िै। त्ेरतायुग में यज्ञ-सामग्री सरलता से उर्लब्ध िोती थी। मनुष्यों की प्रिृहत्तयों में सहक्रयता थी। अतः उनके हलए अहग्निोत्र, ज्योहतष्टोम, दिपर्ौहणपमा एिं अन्य यज्ञों को सम्पन्न करना सरल था; इसहलए उस युग में यज्ञ को सनातन धमप का बाह्य रूर् किा गया। िार्रयुग में अितारों की अहभव्यहक्त हुई और लोग सरलता से भगिान् की प्रत्यक्ष उर्ासना कर सकते थे; इसहलए उस युग में उर्ासना को साधना का प्रमुख रूर् माना गया। कहलयुग में हिक्षेर् के हलए अनुकूल अनेक र्हरस्थहतयाँ िैं। मनुष्य में ब्रह्मचयप, इच्छा–िहक्त और हिचार और हििेक–िहक्त का अभाि िै। यज्ञ करने के हलए सामग्री प्राप्त िोना दुलपभ िै। इसहलए िरर-कीतपन तथा मानिता की हनष्काम सेिा साधना के मुख्य स्वरूर् बतलाये गये िैं।

उर्संिार

रूणप उत्सािा से स्वधमप-र्ालन करें। अर्ने कतपव्यों का हनष्ठार्ूिपक र्ालन करें। धमप में हनहित समस्त गुणों को हिकहसत करें। सदाचार के मागप से तहनक भी हिचहलत मत िों। अर्ने सम्पूणप हृदय, मन और आत्मा से धमप का र्ालन करें। स्वधमप-र्ालन से प्रसन्नता तथा मुहक्त प्राप्त िोती िै तथा आर्का क्रम-हिकास त्वररत गहत से िोता िै। आर्को िीघ्र िी अमरत्व, िाश्वत र्रमानन्द, र्रम िाहन्त, अखण्ड आनन्द, कैिल्य और रूणपता प्राप्त िोंगे। आर्को िाश्वत र्रमानन्द के राज्य और अनन्त िाहन्त के धाम की ओर ले िाने िाले र्रम ज्योहतरूर् धमप की िय िो!

हिन्दुत्व का िाश्वत धमप सदा के हलए सुरहक्षत रिे ! समस्त हिन्दू सेि प्ेरम के बन्धन में बंध कर संगहठत िों!

चतुथप अध्याय

हिन्दू-आचार-नीहत

धमप का हचह्न आचार अथिा सदाचार ि◌ै। आचार भलाई का हचह्न ि◌ै। आचार से ि◌ी धमप की उत्पहत्त ि◌ोती ि◌ै। धमप ि◌ीिन को समृद्ध बनाता ि◌ै। धमापभ्यास ि◌ारा मनुष्य इस लोक एिं र्रलोक में समृक्तद्ध और कीहतप प्राप्त करता ि◌ै।

सदाचार ि◌िसो धमप ि◌ै। यि समस्त तर् और साधनाओं ◌ंका आधार ि◌ै। धमपर्रायणता, सिाई, सत्कमप, ि◌क्ति और समृक्तद्ध-ये सब आचरण से ि◌ी उत्पन्न ि◌ोते ि◌ैं।

आचरण और चररत्र

मनुष्य आकांहक्षत र्दाथों को र्ाने की कामना करता ि◌ै। कामना कायप-रूर् में र्ररणत ि◌ोती ि◌ै। यि आचरण किलाता ि◌ै। आचरण ि◌ै ि◌्यििार। िो कामनाएँ अहभव्यि ि◌ोती ि◌ैं, िे आचरण बन िाती ि◌ैं।

मनुष्य की कई प्रकार की इच्छाएँ ि◌ोती ि◌ैं। कभी-कभी इच्छाओं ◌ंमें हिरोध उत्पन्न ि◌ो िाता ि◌ै। िो इच्छा ि◌िियी ि◌ोती ि◌ै, ि◌ि दृढ़ हनिय (will) किलाती ि◌ै। आन्तररक प्रिृहत्त िो दृढ़ हनिय को सम्भि बनाती ि◌ै, ि◌ि चररत्र किलाती ि◌ै। चररत्र हिहिष् गुणों ◌ंका समुिय ि◌ै हिससे व्यक्तिकता का हनमापण ि◌ोता ि◌ै।

मनुष्य के चररत्र की र्रीक्षा करने के हलए उसका बाह्य ि◌्यििार सदैि एक हिश्वस्त र्थ-प्रदिपक हसद्ध निीं ◌ं ि◌िता ि◌ै।

आचार-नीहत अथापत् आचरण-हिज्ञान

नैहतकता (morality) अथिा आचार-नीहत (ethics) आचरण का हिज्ञान ि◌ै। चररत्र में अच्छे-बुरे का अध्ययन आचार-नीहत ि◌ै। आचार-नीहत का हिज्ञान मनुष्यों ◌ंको एक-दूसरे के प्रहत एिं अन्य ि◌ीिों ◌ंके प्रहत ि◌्यििार करने का ढंग बताता ि◌ै। इसमें िे हिहधसंगत हसद्धान्त हनहित ि◌ैं हिनके अनुसार मनुष्य को ि◌्यििार करना चाहिए। आचार-नीहत ि◌ै सदाचार।

नैहतकता कई प्रकार की ि◌ोती ि◌ै-मानिीय नैहतकता, र्ाररिाररक नैहतकता, सामाहिक नैहतकता, राष्ट्रीय नैहतकता और व्यािसाहयक नैहतकता। डाक्टर व्यािसाहयक नैहतकता का ध्यान रखता ि◌ै। उसे अर्ने रोहगयों ◌ंके

गुप्त रिस्यों ंको दूसरों ंके समक्ष प्रकट र्नीं ंकरना चाहिए। उसका कतपव्य िै हक हकसी मिमारी को रोकने के हलए िि सारे िारहणक उर्ाय करे और सिापिहनक स्वास्थ्य तथा सफाई की ओर रू्रा-रू्रा ध्यान दे।

आचार-नीहत एक सारे्क्ष हिज्ञान िै। सम्भि िै िो बात एक व्यक्ति के हलए अच्छी िो, िि दूसरे के हलए अच्छी न िो। िो बात हकसी हिहिष् काल में और स्थान र् अच्छी िो, िि हकसी अन्य काल तथा अन्य स्थान में अच्छी र्नीं ंभी िो सकती िै। नीहतिास्त्र स्वयं मनुष्य और उसके चतुहदपक् के िातािरण के हलए प्रासंहगक िै।

आचार-नीहत, आध्याक्तिकता और धमप

हबना आचार-नीहत के आर् आध्याक्तिक मागप में उन्नहत र्नीं ंकर सकते। आचार-नीहत योग का आधार िै। यि िेदान्त की आधारहिला िै। यि िि दृढ़ स्तम्भ िै हिस र् भक्तियोग का भिन हटका हुआ िै। यि भगित्साक्षात्कार का ििर्ि–ार िै।

आचार-नीहत की रू्णपता के हबना आध्याक्तिक उन्नहत अथिा साक्षात्कार सम्भि र्नीं ंिै। योग के हिद्याथी अथिा साधक में आचार-नीहत हिषयक दृढ़ता िोनी चाहिए। उसे हिचार, िाणी तथा कमप से िुद्ध और सत्यहनष्ठ िोना चाहिए। उसका आचरण उत्कृष् िोना चाहिए। उसे हकसी भी िीि को हिचार, िाणी अथिा कायप से र्नीं ं सताना चाहिए। उसे सम्यक् हिचार, सम्यक् िाणी और सम्यक् कमप का रू्णपरूरे्ण अभ्यास करना चाहिए।

प्रत्ेयेक धमप की अर्नी आचार-नीहत िोती िै। ईसामसीि के िैलोर्दि (Sermon on the Mount) तथा दिादिे (Ten Commandments) में मनुष्य के उत्थान के हलए नैहतक हिक्षाएँ िैं। भगिान् बुद्ध का अष्ांग मागप नीहतिास्त्र का सारतत्त्व िै। र्तंहिल मिहषप के यम तथा हनयम उत्कृष् नीहतिास्त्र के अंग िैं। मनुस्मृहत, याज्ञिल्क्यस्मृहत और र्ारािरस्मृहत में भी मानि के हलए आचार-संहिता प्रस्तुत की गयी िै। गीता में िहणपत तीन प्रकार के तर् आचार-नीहत का िी एक गिन स्वरूर् िैं।

आचार-नीहत का अभ्यास करने के लाभ

नैहतकता धमप का ििर्ि–ार िै। िो नीहतसंगत अथिा सद्गुणों ंसे रू्णप िीिन व्यतीत करता िै, िि हनिापण, रू्णपता अथिा मोक्ष प्राप्त करता िै।

आचार-नीहत के अभ्यास से आर्को अर्ने र्डोहसयों,ं हमत्रों,ं कुटुक्तम्बों,ं संगी-साहथयों ंतथा अन्य लोगों ंके साथ सामंिस्य स्थाहर्त करते हुए िीिन व्यतीत करने में सिायता हमलेगी। इसके अभ्यास से आर्को स्थायी सुख और मोक्ष प्राप्त िोगा। इससे आर्का हृदय र्हित्र तथा अन्तःकरण हनमपल बनेगा। नीहतिास्त्र के हसद्धान्तों ंका रू्णपतया र्ालन करने िाला नैहतक मनुष्य धमप अथिा न्याय के मागप से हंकंहचत् भी च्युत न िोगा। युहधहष्ठर ने आचार-नीहत के अभ्यास के कारण िास्वत प्रहतष्ठा प्राप्त की। िि धमप की प्रहतमूहतप थे; इसहलए िि अब तक िमारे हृदयों ंमें प्रहतहष्ठत िैं।

सदाचरण भौहतक और आध्याक्तिक समृक्तद्ध का मूल िै। आचरण से ख्याहत में िृक्तद्ध िोती िै। सदाचरण आयु को बढ़ाता, समस्त हिर्दाओं ंएिं बुराइयों ंको नि करता और िाश्वत सुख प्रदान करता िै। सदाचरण िी गुणों ंको िन्म देता िै। अतः सदाचरण हिकहसत करें।

हिन्दू-धमप में आचार-नीहत की संहिताएँ

हिन्दू आचार-नीहत सिोर्रर िै। हिन्दू धमप में नैहतक अनुिासन र्र बल हदया िाता िै। यम तथा हनयम योग और िेदान्त की नींि िैं। अहिकहसत मनुष्य स्वयं अर्ने हलए निीं ंसोच सकते; इसहलए मनु और याज्ञिल्क्य िैसे मिान् सन्तों ंऔर िष्ाओं ंने आचरण के हनयम बनाये िैं।

गीता में भगिान् कृष्ण किते िैं- "कतपव्य-अकतपव्य का हनणपय करने में िास्त्रों ंको अर्ना प्रमाण मानें। आर्को िास्त्र-हिहध से हनयत हकये गये कमों को िी करना चाहिए" (१६/२४)। याज्ञिल्क्य, मनु एिं ऋहषयों ंिारा रहचत सूमृहतयों ंमें स्पिा रूर् से सदाचार के हनयम हनधापररत हकये िैं। आर्में िास्त्रो नैहतक हसद्धान्तों ंऔर हनयमों ंर्र हिचार करने िेतु क्षमता तथा समय का अभाि िै; अतः आर्को सन्त-मिात्माओं ंसे िी नीहत-सम्बन्धी तत्त्व ग्रिण करके उसका अक्षरिः र्ालन करना चाहिए।

हिन्दू-आचार-नीहत के मौहलक हसद्धान्त

हिन्दुओं ंकी आचार-नीहत सूक्ष्म, भव्य और गिन िै। समस्त धमों ंने आचार-नीहत-सम्बन्धी हिचारों ंकी हिक्षा दी िै, यथा- 'हिंसा मत करो, दूसरों ंको चोट मत र्हुँचाओ, अर्ने र्डोहसयों ंको अर्ने समान प्रेम करो।' र्रन्तु उन्िोंने कारण निीं ंबताया िै। हिन्दू-आचार-नीहत का आधार िै- "सिपव्यार्क आिा एक िै। िि समस्त िीिों ंका अन्तरािा िै। िि सामान्य हित्र चेतना िै। यहद आर् अर्ने र्डोसी को या हकसी अन्य िीि को क्षहत र्हुँचाते िैं, तो आर् अर्ने को िी क्षहत र्हुँचाते िैं; क्योंहक अक्तखल हिश्व आर्के अर्ने अहतररि और कुछ निीं ंिै।" यि हिन्दू-आचार-नीहत िै। यि मूलभूत ताक्तत्त्वक सत्य िै िो समस्त हिन्दू-आचार-नीहत-हसद्धान्तों ंका आधार िै।

आिा एक िै। समस्त िीिों ंमें एक िी प्राण स्पक्तन्दत िोता िै। र्ुरुष, स्त्री और मानि–िहत में िीिन समान िै। अक्तस्तत्व समान िै। यि उर्हनषदों ंअथिा शु्रहतयों ंकी सुस्पष् घोषणा िै। धमप का यि मौहलक सत्य आचार-नीहत अथिा नैहतकता अथिा सम्यक् आचरण के हिज्ञान का आधार िै। िेदान्त नैहतकता का आधार िै।

प्रथम बात िो धमप हसखाता िै, िि िै सब आिाओं ंमें हनहित एकता। उर्हनषदों ंका कथन िै- "तेरा र्डोसी िस्तुतः तू स्वयं िै–िो तुझे उससे र्ृथक् करता िै, िि मात्र एक भ्रम िै।" एक आिा सब िीिों ंमें हनिास करती िै। सिपभौहमक प्रेम इस एकता की अहभव्यक्ति िै। िौक् सिपभौम भ्रातृत्व का आधार िै। समस्त मानिीय सम्बन्ध इसी एकता र्र हटके हुए िैं। याज्ञिल्क्य ने अर्नी र्त्नी मैत्रेयी से किा- "हप्रय! देखो, केिल र्हत-प्रेम के कारण र्हत हप्रय निीं ंिै, आिा के प्रहत प्रेम के कारण र्हत हप्रय िोता िै।" इसी प्रकार स्त्री, र्ुत्र, धन-सम्पहत्त, हमत्र, संसार और स्वयं देिता भी अर्नी आिा के कारण हप्रय िैं। सब इसहलए हप्रय िैं; क्योंहक सबमें एक िी आिा हिद्यमान िै। यहद आर् हकसी दूसरे व्यक्ति को क्षहत र्हुँचाते िैं, तो आर् अर्ने को िी क्षहत र्हुँचाते िैं; यहद आर् हकसी की सिायता करते िैं, तो आर् अर्नी िी सिायता करते िैं। सब प्राहणयों ंमें एक िी प्राण तथा एक िी सामान्य चेतना िै। यिी सम्यक् आचरण की नींि िै। यिी आचार-नीहत का आधार िै।

उर्ासना के रूर् सिा

मात्र प्रकार समिा-सिा समझता उसमें भि निीं ंहक समस्त हिश्व र्मिाा का प्रकटीकरण िि र्मिाा िी सिा कर रि िै। उसमें यि भी निीं ंर्मिाा उसके उर्करणों ं(इक्तियों)ं के माध्यम से कायप कर रि और प्रत्येक र्मिाा को अहर्पत भेंट एक यौहगक हक्रया िै।

भारतिषप में व्यक्तियों ंको आमक्तन्त्रत करने ५०० व्यक्तियों ंभोिन तैयार हकया िाता हिन्दुओं ंहलए क्तखलाना र्मिाा उर्ासना िै। यि अहतहथ-यज्ञ िै। हिन्दू प्रत्येक प्राणी को भगिान् िै।

हिन्दू बडे उदार, उदात्त, िहिल-हृदय, र्रोर्कारी, सिानुभूहतरूूणप, दयािान् सत्कािरील िोते हकसी देख अर्ने घर िायेंगे उसके साथ ऐसा िव्यिार करेंगे, मानो िि अहतहथ िो। र्िले उसे भोिन करिा कर िे भोिन करेंगे। संसार में कििीं ंऐसा िव्यिार देखने-सुनने को निीं ंहमलेगा। अन्य देिों ंभोिन का एक ग्रास भी हबना सकता।

हिन्दुओं ंहिश्वास हक एक सन्त-महिमा को अक्तखल हिश्व को भोिन दे क्योंहंक ज्ञान िो िै हक साक्षात्कार प्राप्त सन्त ब्रह्म से एकाकार िोता िि सारी सृहष् से एकरूर् हिन्दू-नीहतर्ास्त्र िेदान्त उतूकृष् दिपन र आधाररत दिपन ििीन एकत्व और चेतना हसद्धान्त को मानता नैहतकता एिं र्रोर्कार इसी एकत्व अहभव्यक्तियााँ हिन्दू स्वयं भोिन से कौओं,ं कुत्तों,ं गायों ंऔर मछहलयों ंभोिन देता िै। सब रूर्ों ंमें अन्तहनपहित एकमे आिा िी मिचानने प्रयास करता िै। िि िै हक दूसरों ंप्रेम करना को प्रेम िै को कष् हुाँचाना स्वयं कष् हुाँचाना िैश्व-प्रेम के अभ्यास िारा अनुभि सारे के िैं, सारे र्ााँ उसी िैं और अक्तखल हिश्व उसका आिास िै **(वसुधैव कुटुम्बकम्)** धीरे-धीरे िि ब्रह्माण्ड आिा से एकाकार िो िाता िै और र्मिाा से भी। हिन्दू-आचार-नीहत धीरे-धी आिसाक्षात्कार की ओर प्रिृत्त करती िै। आचार-नीहत योग का एक साधन िै।

आचार-नीहत के संधिपन अथिा िोधन की प्रहक्रया

समस्त नैहतक अनुिासनों ंका मूल मानहसक िोधन िै। यि िोधन समस्त दुष्कमों से बचते हुए सद्गुणों ं के सहक्रय अभ्यास िारा िी सम्भि िो सकता िै। िर समय भलाई करें। अहिंसा, सत्य और ब्रह्मचयप र्ार् से बचने, सद्गुणों ंको अर्नाने और आिर्ोधन की तीन प्रहक्रयाओं ंके प्रतीक िैं।

मनुष्य के अिंकार से िी सारी बुराइयााँ उत्पन्न िोती िैं। अिंकार अर्ने को आकांक्षा, इच्छा और लोभ के रूर्ों ंमें व्यि करता िै। इसके प्रभाि से मनुष्य घृणा, प्रेम, चाटुकाररता, अहभमान, अनैहतकता, हमथ्याचार, कूटनीहत और भ्राक्तन्त में रस लेने लगता िै।

दोहभमान से उत्पन्न अिंकार का उनूमूलन करने िेतु िरीर की बुराइयों ंतथा नश्वरता र सतत हिचार करें। बुराई समझ कर उनका बहिष्कार करें और मानहसक रूर् से उनसे ऊर्र उठ िायें। िो िांछनीय िै, उन्नयनकारी और हदव्य िै, उसी का हचन्तन-मनन करें।

अनुहचत कृत्य (हििेक की उर्ेक्षा करके हकया गया अहिचाररूूणप कमप) से िी समस्त प्रकार की हिर्हत्तयााँ उत्पन्न िोती िैं। हिर्हत्तयों ंसे मुक्ति र्ाने िेतु सदाचार का र्ालन करना चाहिए। अर्ने हिचार, िाणी, कमप आन्तररक उद्देश्य तथा सामान्य आचरण में सत्य एिं र्हित्रता का र्ालन दृढ़तार्ूिपक करें। मनुष्य और र्िुओं ंके प्रहत कोई धारणा हनहमपत करते समय तथा दूसरों ंके साथ अर्ने िव्यिार में स्नेि, सिनिीलता तथा उदारता का र्ररचय दें।

रि क्षेत्र में मनुष्य को इन सद्गुणों ंका अभ्यास करने तथा इनको व्यि करने का प्रयत्न करना चाहिए। हर्ता-रुत्र, बडे-छोटे, हिक्षक-हिद्याथी, हमत्र-हमत्र, गुरु-हिष्य, नेता-अनुयायी, प्रिा-प्रिासक और राष्ट्र-राष्ट्र के र्ारस्पररक सम्बन्धों ंमें िमें इस आदिप को चररताथप करना चाहिए।
आर्को सद्गुण के मागप र र आगे बढ़ना चाहिए। इस बात का हनिय कर लें हक आर् धमप से हंकंहचन्मात्र कदाहर् हिचहलत निीं ंिोंगें। आर्को अर्ने मन को सिाधानीर्ूिपक प्रहिहक्षत करना िोगा और अर्नी इच्छाि–क्ति को हिकहसत करना और बलिती बनाना िोगा। इसी कारण यम, हनयम और षट्सम्पत् र बहुत बल हदया गया ि। हनत्य-प्रहत के िीिन में हकये गये आित्याग एिं बहलदान के संकक्तल्पत कमों िारा मन और इच्छाि–क्ति को प्रयोग में लाना एिं उन्िें अनुिाहसत बनाना चाहिए। इस प्रकार आचार-नीहत के संधिपन के हलए दो बातें आिश्यक ि- हनक िागरूकता और सम्यक् अभ्यास। आचार-नीहत के संधिपन में सिदाििनील सदसिििेक तथा भलाई एिं श्रेष्ठता के प्रहत सुहनहित श्रद्धा का मित्वर्ूणप सिार िोता िै।

औहचत्य तथा अनौहचत्य का दिपन

प्रत्येक व्यक्ति किता िै-"यि उहचत िै, िि अनुहचत िै, तुम्हारा कथर (अथिा हिचार) उहचत िै, उसका कथन (अथिा हिचार) अनुहचत िै"; र्रन िि यि ठीक-ठीक निीं ंबतला सकता िै हक 'उहचत' तथा 'अनुहचत' से उसका स्वा अहभप्राय िै।

िि मार्दण्ड क्ा िै हिससे आर् हकसी कायप के उहचत-अनुहचत अथिा अच्छे-बुरे िोने का हनणपय लेते िैं? उहचत-अनुहचत और भला-बुरा सार्ेक्ष िब्द िै। उहचत तथा अनुहचत नैहतक स्तर से िैहधक र्क्ष को और भलाई तथा बुराई इसके र्रणामिाक र्क्ष को व्यि करते िैं। आर्को अर्ना आचरण इस स्तर के अनुकूल बनाना िोगा। िो हकसी हनयम के अनुसार िोगा, िि उहचत िै। िो उसे करने योग्य िै, िि अच्छा िै। धमप िमें नैहतक हिज्ञान के आधार के हलए अक्तन्तम रूर् में मान्य सामग्री प्रदान करता िै।

औडचत्य-अनौडचत्य की सार्ेक्षता

सिी और गलत तथा धमप और अधमप सार्ेक्ष िब्द िैं। इन हनयमों ंको यथातथ्य र्रभाहषत करना बहुत कहठन िै। कभी-कभी सन्त िन भी यि हनणपय करने में सम्भ्रहमत िो िाते िैं हक हिहिष् र्ररक्तस्थहतयों ंमें क्ा उहचत और क्ा अनुहचत िै। इसीहलए भगिान् कृष्ण ने भी गीता में किा िै- "क्ा कमप और क्ा अकमप िै, इस हिषय में बुक्तद्धमान् र्ुरुष भी भ्रहमत िो िाते िैं; इसहलए मैं तुझे उस कमप के हिषय में बतलाऊँगा हिसे िान कर तू अिुभ से
मुि िो िायेगा। तुझे कमप, अकमप और हनहषद्ध कमााँ का स्वरूर् अिश्य िानना चाहिए। कमप की गहत गिन िै। िो व्यक्ति कमप में अकमप को और अकमप में कमप को देखता िै, िि मनुष्यों ंमें बुक्तद्धमान् िै। िि समस्तः कमप करते
हुए भी योगयुि िै" (४/१६, १७ और १८)।

उडचत-अनुडचत के उदािरण

उहचत तथा अनुहचत सदा चतुहदपक् र्ररक्तस्थहतयों ंके अनुसार सार्ेक्ष िोते िैं। एक क्तस्थहत में िो उहचत िै, दूसरी क्तस्थहत में ििी अनुहचत िो िाता िै। उहचत और अनुहचत समय, हििेष र्ररक्तस्थहतयों, ं िणप और आश्रम के अनुसार र्ररिहतपत िोते रिते िैं। नैहतकता एक र्ररितपनिील और सार्ेक्ष िब्द िै। िो व्यक्ति हकसी कुख्यात महिला के घर छि मिीने में एक बार िी िाता िै, उसकी अर्ेक्षा िि हिषयी र्ुरुष अहधक अनैहतक िै िो अर्नी

ासिनारूूहतप के हलए अर्नी हिहधित् र्ीिाहित र्ल्ी को बार-बार उत्पीहडत करता रिता ि ै। अनैहतक हिचारों ंमें हनरन्तर लीन रिने िाला मनुष्य सिापहधक अनैहतक ि ै। दोनों ंमें यि सूक्ष्म भेद आर्को स्पष् रूर् से समझ में आ गया िोगा। क्षहत्रय रािा के हलए ित्रुु को मारना उहचत ि ै। ब्राह्मण या संन्यासी के हलए खतरे के समय अर्नी रक्षा करने ितेु भी हकसी को मारना उहचत निीं।ं उनें् कठोर सहिष्ुणुता और क्षमािीलता का अभ्यास करना चाहिए। हकसी र्िीाा या गुरु र् यहद हकसी अन्यायी अहधकारी िारा अन्यायरूूणप अहभयोग लगाया गया ि ै, तो उसका र्िीान बचाने के हलए झूठू बोलना ठीक ि ै। इस हिहिष् र्ररक्तस्थहत में असत्य सत्य बन गया ि ै। र्रनुतु ऐसा सत्य हिससे बहुतों ंको िाहन हुँचे, असत्य िी ि ै। र्थकों ंकी हनत्य ित्या करने िाले डाकू की ित्या अहिंसा ि ै।

र्िहेष र्ररक्तस्थहतयों ंमें हिंसा अहिंसा बन िाती ि ै।

हनिृहत्त-मागप र् चलने िाले संन्यासी या तर्स्वी को क्षमा िोभा देती ि ै; र्रनुतु िासक को िोभा निीं ं देती। अर्ने को िाहन हुँचाने िाले व्यक्ति को िासक क्षमा कर सकता ि ै; र्रनुतु िनता को अत्यहधक िाहन हुँचाने िाले को निीं।ं

संकटरूूणप र्ररक्तस्थहतयों ंके हलए कहतर्य हिहिष् धमप िोते ि ैं, हिनें् आर्द्-धमप किते ि ैं। िब भयंकर अकाल र्डा तो ऋहष हिश्वाहमत्र ने एक चाण्डाल से मांस ले कर दिेयज्ञ में चढ़ाया। सन्त उक्तिस्त ने एक र्िीात से उक्तच्छष् अन्न ले कर खा हलया था, क्ोंहक िि बहुत भूखे थे और किीं ंसे भोिन र्ाने में समथप निीं ंथे।

औडचत्य तथा अनौडचत्य के सूचक

ििहेषक दिपन के प्रितपक ऋहष कणाद (इस दिपन के) प्रथम सूत्र में किते ि ैं- "िो तुम्हारे ऊध्वपगमन में सिायक बन कर तुम्हें र्रमािा के समीर् ले िाये, िि उहचत ि ै। िो तुम्हारे अधोगमन का कारण बने और तुम्हें र्रमािा से दूर ले िाये, िि अनुहचत ि ै। िो धमपग्रन्थों ंमें उक्तल्लक्तखत आदिेों ंके सिपथा अनुकूल ि ै, िि उहचत ि ै और िो उन आदिेों ंके प्रहतकूल ि ै, िि अनुहचत ि ै।" यि उहचत-अनुहचत का र्ररभाहषत करने का एक ढंग ि ै। ईश्वरेच्छा के अनुकूल कायप करना उहचत तथा उसके प्रहतकूल कायप करना अनुहचत ि ै।

एक सामान्य व्यक्ति के हलए यि िानना कहठन ि ै हक हकनीं ंहिहिष् कायों ंसे कौन-सी ईश्वरीय इच्छा हनहित ि ै। इसीहलए मनीषी सन्तों ंने यि घोषणा की ि ै हक सम्बन्ध में लोगों ंको िास्त्रों,ं र्िीान् र्क्तण्डतों ंऔर आिज्ञानी रुुरुषों ंिारा मान्य हिचारों ंको स्वीकार करना चाहिए। हिसने िषों र्यपन्त हनष्काम कमपयोग का अभ्यास हकया िो और दीघपकाल तक ईश्वरोर्ासना की िो, ऐसा र्हित्र रुुरुष िब कुछ हिहष् कायप करना चािता ि ै, तो उसे सिि िी ईश्वरीय इच्छा का र्ता लग िाता ि ै। िि उस (इच्छा) की आन्तररक, तीव्र तथा मौन िाणी सुन सकता ि ै। साधारण मनुष्यों ंको यि हदव्य िाणी सुनने का प्रयास निीं ंकरना चाहिए। िे हिकृत मन की िाणी को ईश्वरीय िाणी समझने की भूल कर सकते ि ैं। उनका हनम्न िृहत्तक मन उनें् भ्रहमत कर देगा।

स्वाथपभाि बुक्तद्ध को आच्छाहदत कर देता ि ै। इसहलए यहद मनुष्य में लिेमात्र भी स्वाथपभाि ि ै, तो िि उहचत तथा अनुहचत में भेद निीं ंकर सकता। उसके हलए अहत र्हित्र, सूक्ष्म और तीव्र बुक्तद्ध की आिश्यकता ि ै। गीता में साक्तत्त्वक, रािसी और तामसी बुक्तद्ध का िणपन इस प्रकार हकया गया ि ै-

"िे र्ाथप! िो बुक्तद्ध प्रिृहत्त और हनिृहत्त-मागप को, कतपव्य-अकतपव्य को, भय-अभय को तथा बन्धन-मोक्ष को तत्त्व से िानती ि ै, िि बुक्तद्ध साक्तत्त्वक ि ै। हिस बुक्तद्ध के िारा मनुष्य धमप-अधमप तथा कतपव्य-अकतपव्य को ठीक-ठीक निीं ंिानता ि ै, िि बुक्तद्ध रािसी ि ै। िो तमोगुण से हघरी हुई बुक्तद्ध अधमप को धमप मानती ि ै तथा समूूणप अथों को हिर्रीत िी मानती ि ै, िि बुक्तद्ध तामसी ि ै" (१८/३०, ३१ और ३२)।

सदाचार के र्थ र अग्रगामी साधकों ंकी सियतता के हलए र्िहिानों ंिारा अनेक र्ररभाषाएँ दी गयी िैं। बाइहबल में किा गया िै- "दूसरों ंके साथ िैसा िी र्व्यिार करें, हिस र्व्यिार की आर् अर्ने हलए उनसे अिा
करते िैं।" यि बहुत सुन्दर नीहतर्–चन िै। इसमें सदाचार का सम्पूर्णप सार हनहित िै। यहद कोई व्यक्ति साधानी से इसका आचरण करे, तो िि कोई अनुहचत कायप र्निं ंकरेगा। िो आर्के हलए हितकर र्निं ंिै, िैसा दूसरों ंके साथ भी न करें, हिससे दूसरों ंकी भलाई न िो अथिा िो दूसरे को चोट र्िुँचाये और हिसके कारण आर्को लक्तज्जत िोना र्डे। िी कमप करें हिससे दूसरों ंकी भलाई िो तथा िो प्रिंसनीय िो। िैसा िी र्व्यिार करें हिसकी
आर् अर्ने हलए दूसरों ंसे अिा करते िैं। यिी धमप का रिस्य िै। यिी कमपयोग का सार िै। सम्यक् (औहचत्यर्ूणप) आचरण की यि संहक्षप्त र्िहेचना िै। ऐसे आचरण से आर्को िाश्वत आनन्द की प्राक्तप्त िोगी।
"अहिंसा र्रम धमप िै।" मन, िाणी तथा कमप से हकसी को चोट न र्िुँचाना सिपगुणों ंमें उत्कृष् गुण िै। मन, िाणी और कमप से अहिंसा में प्रहतहष्ठत व्यक्ति कभी अनुहचत कमप र्निं ंकर सकता। इसी कारण मिहषप र्तंिहल ने अर्ने रियोगदिपन में अहिंसा को बहुत मित्त्व हदया िै। यम के अभ्यास में अहिंसा का प्रथम स्थान िै।
दूसरों ंको सुख र्िुँचाना उहचत िै; उन्ें कष् और र्ीडा र्िुँचाना अनुहचत िै। दैहनक र्व्यिार में इस हसद्धान्त का र्ालन करता हुआ व्यक्ति आध्याक्तिक र्थ र अर्ना क्रमहिकास कर सकता िै। ऐसा कोई कमप न करें हिसके फलस्वरूर् आर्को भयभीत अथिा लक्तज्जत िोना र्डे। इस हसद्धान्त का र्ालन करने र आर् सिपथा सुरहक्षत रिेंगे। आर्के र्िहेक तथा बुक्तद्ध को िो भी हसद्धान्त अनुकूल प्रतीत िो, मनोयोग और आस्थार्ूिपक उसी का र्ालन करते रिें। आर् उन्नत िो कर र्रमानन्द-धाम को प्राप्त िोंगे।

र्ि कायप मन को उन्नत करे तथा िाक्तन्त एिं सुख प्रदान करे, िि उहचत िै; िो कायप मन में हिषाद, र्ीडा और व्याकुलता को उत्पन्न करे, िि अनुहचत िै। उहचत-अनुहचत के र्रीक्षण का यि एक सरल उर्ाय िै।

आध्याक्तिक क्रमहिकास में सियक कमप उहचत िै और इसमें बाधा डालने िाला कमप अनुहचत िै। अिौक् की ओर अग्रसर करने िाला कमप उहचत िै और हिहभन्न र्िृहत्ताओं ंमें र्ृथपक् की भािना उत्पन्न करने िाला कमप अनुहचत िै। धमपिास्त्रों ंके आदेिों ंके अनुकूल कमप उहचत िै और उनके प्रहतकूल कमप अनुहचत िै। ईश्वरीय इच्छा के अनुकूल कमप उहचत िै और ईश्वरीय इच्छा के प्रहतकूल कमप अनुहचत िै। र्रोर्कार, सेिा और सियता करना तथा दूसरों ंको सुख देना उहचत िै। दूसरी ओर, दूसरों ंको कष् देना और चोट र्िुँचाना अनुहचत िै। हकसी िीि को क्षहत न र्िुँचाने के भाि से हकया गया कमप हनहित िी नैहतकता िै। नैहतक आदेि िीिों ंको सब प्रकार की र्ीडाओं ंसे मुि रखने के हलए बनाये गये िैं।

दानिीलता उहचत क्ों ंिै? क्ोंहक िि 'दान करो' के हसद्धान्त के अनुरूर् िै। चोरी अनुहचत क्ों ंिै? क्ोंहक यि असेतेय के हसद्धान्त के हिरोध में िै। दु:ख और कहठनाई में र्डे हकसी व्यक्ति की सियता करना क्ों ं अच्छा िै? क्ोंहक इससे आर्का चररत्र र्ररष्कृत िोगा। इसे आर्के हृदय में दयाभाि िाग्रत िोगा। सदगुणों ंके अभ्यास िारा आर्को भगित्साक्षात्कार करने में सियता हमलेगी। िीि-हिंसा में क्ा बुराई िै? क्ोंहक इसका लक्ष्य अिोभनीय िै। इससे आर्का चररत्र भ्रष् िो िायेगा। इससे आर् र्िुओं ंके समान क्रूर बन िायेंगे।

यौहगक उद्यानकमप

अनुहचत कमों िारा आर् अर्ने चररत्र को दूहषत करते िैं। अच्छे कमों िारा आर् श्रेष्ठ चररत्र का हिकास करते िैं। चररत्रिीन व्यक्ति र्ािहिकता के स्तर र उतर आता िै। चररत्रिान् व्यक्ति सिपत्र सम्मान्य, श्रद्धेय तथा र्ूज्य माना िाता िै। सिपत्र उस र हिश्वास हकया िाता िै। अत: यौिनकाल में िी सिरत्र का हिकास करें। हृदय-र्ूर्ी उद्यान में दोषों ंको हनराना और सद्गुणों ंका कषपण करना सीखें। अिगुण तथा बुरी आदतें झाहडयाँ िैं।

सद्गुण अमूल्य फल-फूल ि ैं। प्रहतर्क्ष-भािना की यौहगक हिहध सीखें। काम, क्रोध, लोभ, अिंकार एिं स्वाथपर्रता के हिर्रीत गुण हिंत्रता अथिा ब्रह्मचयप, क्षमािीलता, उदारता, नम्रता और हनःस्वाथपता ि ैं। कुिल यौहगक माली बनें। हृदय-रूर्ी उद्यान में सुन्दर रुष्र्ों ंका रोर्ण करें और हृदय उद्यान के मध्य भगिान् की प्रहतष्ठा करके उन र ध्यान करें। आर् िाश्वत आनन्द और अनश्वरता का उर्भोग करेंगे।

उर्संिार

आर्को आचरण के हनयमों ं का र्ालन करना चाहिए। हिहधकतापओं ं ने आर्की अर्नी उन्नहत तथा आध्याहत्मक क्रमहिकास के हलए ये हनयम बनाये ि ैं। हिहधकताप मिान् सन्त थे। उन्ें प्रत्यक्ष भगित्साक्षात्कार हुआ था।

सदाचार का र्ालन करते हुए रिना हनःसन्ेिि कहठन ि ै। िो ऐसा करता ि ै, उसे उर्िास, िैमनस्य और अत्याचारों ंका सामना करना र्डता ि ै। अतएि सहिष्णुता, दैन्य-भाि, मौन, सिनिीलता और क्षमा-भाि-इन गुणों ं का हिकास करना अत्यन्त मित्त्वर्ूणप ि ै। हकसी भी मूल्य र र सदाचार की मयापदा बनाये रखें। इसके हलए हकसी भी प्रकार का हमथ्यार्िाद सिन करने के हलए तैयार रिें। बुराई के बदले भलाई करें।

िीिन संकट में िो, तो नैहतकता का मागप न छोडें। भौहतक लाभ प्राप्त करने के लोभ में सदाचार का त्याग न करें। िब कभी भी हकसी प्रकार भ्रम उत्पन्न िो िाये, तब िास्त्रों ंतथा सन्त िनों ंसे हिक्षा लें। चररत्र-हनमापण करें। हिकहसत िों। ं अर्ना आदिप सदा अर्ने समक्ष रखें। सदाचार का सदैि र्ालन करें। आर् िीघ्र िी िाश्वत आनन्द एिं अमृतत्व प्राप्त करेंगे।

र्ंचम अध्याय

हिन्दू-हसद्धान्त

कमप का हसद्धान्त

कमप क्या िै?

कमप का अथप कायप (हक्रया) िी निीं,ं प्रतुयुत् उसका र्रणाम (फल) भी िै। हकसी कमप का फल िसुतुतः कमप से हभन्न निीं ंिै। यि (फल) कमप का िी एक भाग िै। इसे उससे (कमप से) रृथक् निीं ंहकया िा सकता। श्वास-प्रश्वास, हचन्तन, िातापलार्, दिपन, श्रिण, भोिन करना आहद कमप िैं। हचन्तन मानहसक कमप िै। कमप िमारे ितपमान िीिन के तथा इससे रूिप-िन्मों ंके कायों का योग िै।

कोई भी कायप या हिचार, हिसका र्रणाम हनकलता िै, कमप किलाता िै। कमप के हसद्धान्त का अथप िै- कायप-कारण-हसद्धान्त। ििााँ कारण िै, ििााँ कायप अिश्य फहलत िोगा। बीि िृक्ष का कारण िै। िृक्ष कायप-रूर् िै। िब िृक्ष बीि उत्पन्न करता िै, तब िि बीि का कारण बन िाता िै।

कमप डकस प्रकार बनते िैं?

'मानि-प्रकृहत हत्रहिध िै-इच्छा, ज्ञान और हक्रया। इन तीनों ंसे कमप बनता िै।

कमप की रृष्ठभूहम में इच्छा और हिचार हिद्यमान रिते िैं। हकसी िसुतु के हलए इच्छा मन में उत्पन्न िोती िै। तब आर् सोचते िैं हक उसे कैसे प्राप्त करें। हफर आर् उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते िैं। इच्छा, हिचार और कमप सदैि साथ रिते िैं। यिी मानो कमप-रूर्ी रज्जु के तीन सूत्र िैं।

इच्छा कमप को उत्पन्न करती िै। आर् आकांहक्षत र्दाथों को प्राप्त करने िेतु कमप तथा प्रयास करते िैं। कमप के फलस्वरूर् दुःख-सुख की उत्पहत्त िोती िै। अर्ने कमों का फल र्ाने के हलए आर्को अनेक िन्म लेने र्डेंगे। यिी कमप का हसद्धान्त िै।

कमप-डसद्धि की प्रडक्रया

हिन्दू-धमप में िी निीं,ं प्रतुयुत् बौद्ध और िैन धमों में भी कमप का हसद्धान्त मौहलक हसद्धान्तों ंमें से एक िै। मनुष्य िैसा बीि बोता िै, िैसी फसल काटता िै। यि कमप का हसद्धान्त िै। यहद आर् बुरे कमप करेंगे, तो उसका बुरा फल आर्को भोगना र्डेगा। यहद अच्छा कमप करेंगे तो आर्को अिश्य सुख प्राप्त िोगा। रृथ्वी र्र कोई ऐसी शहक्त निीं ंिै िो कमों ंको अर्ने फल उत्पन्न करने से रोक सके। प्रत्येक हिचार, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक कमप मानो शाश्वत ईश्वरीय न्याय की तरािू र्र तोले िाते िैं। कमप का हसद्धान्त अटल िै।

इस सृहष् में अनायास ी और अव्यिक्तस्थत ढंग से घटनाएँ घहटत निीं ंोतीं।ं ि हनयहमत रूर् से उत्तरोत्तर घहटत ोती ैं। ि एक हनयहमत क्रम से एक-दूसरे का अनुगमन करती ैं। ो-कुछ आर्के ारा अब ो रि ै और ो भहिष्य में घहटत ोगा, उनके बीच एक हनहित सम्बन्ध ै।

प्रत्येक कमप का हत्रहिध र्ररणाम ोता ै। ि आर्को समुहचत रुरस्कार या फल देता ै। ि आर्के चररत्र को भी प्रभाहित करता ै और आर्के मानस र अर्नी छार् छोड देता ै। यि छार् उस कृत्य को रुनः करने के हलए आर्को प्रेररत करेगी। बािरी या भीतरी प्रेरणा के कारण मानहसक छार् मन में एक हिचार तरंग का रूर् धारण कर लेगी। प्रत्येक कमप का प्रभाि संसार र भी र्डता ै।

जैसी करनी, वैसी भरनी

रृथ्वी में छोटा-सा बीि बो देने से छोटा-सा अंकुर हनकलता ै। हफर अंकुर से र्हत्तयाँ हनकलती ैं। तब उसमें फूल और फल लगते ैं। फल में दोबारा बीि आते ैं। आम के बीि से आम का रेड उत्पन्न ोता ै। यहद आर् धान बोयेंगे तो गेहूँ की फसल की आिा निीं ंकर सकते। हिस प्रकार का बीि ोगा, उससे उसी प्रकार का रौधा उत्पन्न ोगा। स्त्री के गभप से मानि ी उत्पन्न ोता ै। इसी प्रकार घोडे से घोडा और श्वान से श्वान ी उत्पन्न िोता ै। इसी प्रकार यहद आर् कुकमप के बीि बोयेंगे, तो उनसे दुःख और कष् की फसल ी रैदा ोगी। यहद आर् सत्कमों का बीि बोते ैं, तो आर् सुख की फसल काटेंगे। यिी कमप का हसद्धान्त ै।

िो-कुछ आर् अर्ने कमों ारा बोते ैं, ि आर्को ार्स हमल िाता ै। यहद आर् सेिा, दान और दया के कायों ारा दूसरों ंको सुखी बनाते ैं तो आर् सुख का बीि बोते ैं। उससे आर्को सुख-रूर्ी फल प्राप्त ोगा। यहद आर् कठोर िब्दों,ं अर्मान, दुव्यपििार, क्रूर कृत्यों ंऔर अत्याचार ारा दूसरों ंको दुःख देते ैं, तो आर्. दुःख का बीि बोते ैं। इस बीि से आर्को र्ीडा, कष्, हिर्हत्त और दुःख का फल प्राप्त ोगा। यि कमप का अर्ररित्यप हसद्धान्त ै।

भूतकाल में हकये हुए आर्के कमप ितपमान र्ररक्तस्थहत के हलए उत्तरदायी ैं और ितपमान कमप आर्के भहिष्य का हनमापण करेंगे। हिश्व में अव्यिस्था या स्वेच्छाचार की तरि की कोई क्तस्थहत निीं ंै। आर् अर्ने अच्छे कमों से अच्छे बनते ैं और बुरे कमों से बुरे।

यहद आर् बुरे हिचारों ंको प्रश्रय देते ैं, तो इसका कुर्ररणाम आर्को भोगना र्डेगा। तब आर् कहठनाई में र्डेंगे और प्रहतकूल र्ररक्तस्थहतयों ंसे हघर िायेंगे। तब आर् अर्ने ाताािरण और र्ररक्तस्थहतयों ंको दोष देंगे। इस कमप-हसद्धान्त को भली प्रकार समझ कर बुक्तद्धमत्ता से रिें। श्रेष्ठ हिचारों ंको स्वीकार करें। आर् सदा सुखी रिेंगे।

कमप, आदतें, चररत्र और भाग्य

हिचार आर्के भाग्य के हनमापता ैं। यहद आर् श्रेष्ठ हिचार रखेंगे, तो श्रेष्ठ चररत्र हिकहसत ोगा; कुहिचार रखेंगे, तो अधम चररत्र हिकहसत ोगा। यि प्रकृहत का अर्ररिायप हनयम ै। इसहलए आर् उदात्त हिचारों ंको र्ोहषत करके सोच-समझ कर अर्ने चररत्र का हनमापण कर सकते ैं। हिचार स्थूल रूर् धारण करके कमप बन िाता ै। यहद आर् मन को अच्छे तथा उन्नयनकारी हिचारों ंर ी हटका सकें, तब स्वभाितः आर् अच्छे और प्रिंसनीय कायप करेंगे।

आर्का आचरण आर्के चररत्र को प्रकट करता ै। आचरण से आर्का चररत्र बनता भी ै। सदाचार को र्ोहषत (हिकहसत) करने ेतु अनुिासन और अहिरत सतकपता की आिश्यकता ै। आर्को अर्ने प्रत्येक हिचार,

ब्दि और कमप के प्रहत िाग्रत रिना िोगा। दूसरों ंके साथ र्व्यिार करते समय आर्को अत्यहधक सािधानी रखनी िोगी। सदिाय रखते हुए भी स्र्ूप-संस्कारों,ं प्रिृहत्तयों ंऔर मनोिोगों ंके िीभूत िो कर आर् हिचहलत िो सकते िैं। उि हिक्षा प्राप्त लोग भी सम्यक् र्व्यिार करना निीं ंिानते। सद्विचार से यि प्रकट िोता िै हक आर्का मन र्रषूकृत (र्रमाहिपत) और संयहमत िै और आर्की सांसृकृहतक रृष्ठभूहम सचमुच श्रेष्ठ तथा आध्याक्तिक िै। िर्, प्राणायाम और मौनव्रत के अभ्यास से मनोिोगों ंआहद को हनयक्तन्त्रत करने में सियता
हमलेगी।

कमप के बीि बो कर स्वभाि की फसल काटी िाती िै। स्वभाि बो कर चररत्र की फसल प्राप्त िोती िै। चररत्र का िर्न करके भाग्य की फसल हमलती िै। इस प्रकार भाग्य आर्की अर्नी रचना िै। आर्ने िी इसे बनाया िै। श्रेष्ठ हिचारों ंको प्रश्रय दे कर, सत्कमप करके तथा अर्ने सोचने के ढंग को बदल आर् अर्ने भाग्य को हनरस्त कर सकते िैं। अभी आर् सोचते िैं हक आर् िरीर िैं और आर्का अमुक नाम िै। अब इसके हिर्रीत सोचना प्रारम्भ करें। हिचार करें हक आर् सिपव्यार्क अमर ब्रह्म िैं। आर् ब्रह्म िी िो िायेंगे। यि अर्ररित्यप हनयम िै।

तीन प्रकार के कमप

संहचत, प्रारि और हक्रयमाण

कमप तीन प्रकार के िोते िैं-संहचत, प्रारि और हक्रयमाण अथिा आगामी। अतीत के एकहत्रत कमप संहचत किलाते िैं। इनका एक अंि मनुष्य के चररत्र, उसकी प्रिृहत्तयों,ं अहभिृहत्तयों,ं झुकािों,ं क्षमताओं,ं इच्छाओं ंआहद में दृहष्गोचर िोता िै। संहचत कमों से िी प्रिृहत्तयााँ उद्भूत िोती िैं। प्रारि भूत कमों का िि अंि िै िो ितपमान िरीर के हलए उत्तरदायी िै। संहचत कमों का िि अंि हिससे ितपमान िन्म प्रभाहित िोता िै, प्रारि किलाता िै। यि र्की हुई फसल के समान िै। इससे न बचा िा सकता िै और न इसे बदला िा सकता िै। इसे भोग करके िी क्षय हकया िा सकता िै। आर् अर्ना रुराना ऋण चुकाते िैं। प्रारि कमप िि िै, िो आरम्भ िो गया िै और िस्तुतः फल प्रदान कर रिा िै। संहचत कमों के ढेर में से उसे चुना िाता िै। हक्रयमाण कमप िि िै िो भहिष्य के हलए हनहमपत िो रिा िै-इसे आगामी अथिा ितपमान भी किते िैं।

िेदान्त-साहित्य में एक सुन्दर सादृश्य प्रस्तुत हकया गया िै। धनुधपर ने तीर छोड हदया िै, उसके िाथ से तीर छूट चुका िै, िि उसे िार्स निीं ंलौटा सकता। अब िि दूसरा बाण छोडने िाला िै। उसकी र्ीठ र्र रखे हुए तरकि में बाणों ंका ढेर संहचत कमप िै; िो बाण उसने छोड हदया, िि प्रारि िै और िो बाण िि छोडने िाला िै, िि आगामी कमप िै। इसमें से संहचत और आगामी र्र उसका रूणापहधकार िै; र्रन्तु प्रारि उसे अिश्य िी भोगना र्डेगा। अतीत के िो कमप र्ररर्क्व िो गये िैं, उन्ें उसको भोगना िी र्डेगा।

एक अन्य सुन्दर सादृश्य भी िै। अन्न भण्डार संहचत कमप िै। अन्न-भण्डार का िो भाग हबक्री िेतु दुकान र्र रख हदया िाता िै, िि प्रारि कमप िै और िो भाग हनत्य बेचा िाता िै, िि आगामी कमप का प्रहतहनहधत्व करता िै।

ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने से संहचत कमप-समूि नष् िो िाता िै। श्रेष्ठ और हदव्य हिचारों ंको प्रश्रय देने एिं सत्कमों को करने से उसमें बहुत कुछ र्ररितपन हकया िा सकता िै। आगामी कमप प्रायहित्त िारा, हनहमत्त-भाि (अथापत् इस भाि से हक मनुष्य र्रमािा के िाथ का यन्त्र मात्र िै) िारा तथा साक्षी-भाि (यि भाि हक व्यक्ति मन और इक्तियों ंके कमों का साक्षी मात्र िै) से नष् हकये िा सकते िैं।

स्वतन्त्र इच्छा की सवोच्चता

आर् अर्नी हनयहत के स्वामी िैं। आर् अर्ने भाग्य के हनमापता िैं। आर् िो-कुछ दुःख प्राप्त करते िैं, उसके हलए आर् उत्तरदायी िैं। आर् अर्नी ितपमान क्तस्थहत के हलए उत्तरदायी िैं। यहद आर् सुखी िैं, तो अर्ने कमों के कारण और यहद दुःखी िैं तो भी अर्ने कमों के कारण। प्रत्येक कमप का फल देर-सबेर अिश्य हमलता िै। सत्कमप का र्ररणाम सुखद िोता िै तथा दुष्कमप का दुःखद।

आर्को भोग-स्वातन्य का निीं, िरन् कमप-स्वातन्य का अहधकार िै। इसहलए भगिान् कृष्ण ने किा िै : **"कमपण्येवाडधकारि मा फलेषु कदाचन**-कमप करने का िी तेरा अहधकार िै, कमप-फल र निीं।" िनकाहद ने कमप के िारा िी र्ूणपता प्राप्त की थी। आर् अर्ने चररत्र, हिचार और कामनाओं को र्ररिहतपत कर सकते िैं। मनुष्य की इच्छा सदा स्वतन्त्र िै। स्वाथपर्रायणता के कारण उसकी इच्छा दूहषत िो गयी िै। हनम्न कामनाओं एिं रुहच-अरुहच से मुक्ति र्ा कर िि अर्नी इच्छा को िुद्ध, दृढ़ और सहक्रय बना सकता िै। प्रत्येक अिा एक ऐसे कृषक की भााँहत िै हिसके र्ास अर्नी भूहम का एक टुकडा िै। भूहम का क्षेत्रफल, भूहम की प्रकृहत, ऋतु की र्ररक्तस्थहतयााँ आहद सब र्िले िी हनहिय िो चुकती िैं। र्रन्तु कृषक इस बात के हलए र्ूणप स्वतन्त्र िै हक िि भूहम को िोत कर और खाद दे कर अच्छी फसल प्राप्त करे या उसे अकृष् रिने दे।

िी-कुछ आर् ितपमान में िैं, िि भूतकाल के आर्के हिचारों और कमों का फल िै। िो-कुछ आर् भहिष्य में बनेंगे, िि आर्के ितपमान हिचारों और कमों का र्ररणाम िोगा। िो प्रिृहत्तयााँ आर्ने र्ूिप िन्म में प्राप्त की थीं, उनके हलए सिापहधक उर्युि िातािरण आर्को ितपमान में प्राप्त िोता िै। भहिष्य के हलए आर् अर्ेक्षाकृत उत्तम र्ररक्तस्थहतयााँ बना सकते िैं। आर् अर्ने इच्छानुसार कमों को र्ूर् दे सकते िैं। आर् र्ूणपता की बहुत ऊाँची क्तस्थहत तक उठ सकते िैं। आर् इिया र्ूणप योगी बन सकते िैं। आर् अर्ना चररत्र, हिचार और कमप बदल सकते िैं। इसहलए भीष्म और िहसष्ठ ने र्ुरुषाथप को भाग्य से उिर स्थान हदया िै।

हिस नाहिक के र्ास डााँड, र्िार तथा र्ाल निीं िोते, उसे ििाएाँ और तरंगें किााँ-की-किााँ बिा ले िाती िैं; हकन्तु हिस हनर्ुण नाहिक के र्ास ये िस्तुएाँ िोती िैं, िि अर्नी नौका को हकसी भी इक्तच्छत हदिा में ले िा सकता िै तथा दूसरे हकनारे र कुिलतार्ूिपक र्हुाँचा सकता िै। इसी प्रकार हिस व्यक्ति को प्रकृहत का हनयम-हिचार का हनयम, कमप का हनयम और कारण कायप का हनयम-ज्ञात िै, िि इस संसार-समुि को हनभीकतार्ूिपक र्ार करके हनभपयता एिं अमरता के दूसरे तट र र्ूणप कुिलतार्ूिपक र्हुाँच सकता िै। इन हनयमों के ज्ञान की सिायता ले कर िि सिायक िक्तियों से सिापहधक लाभ प्राप्त करने की दृहष् से उनका (िक्तियों का) उर्योग करेगा और हिरोधी तत्त्वों को कुिलता से हनष्प्रभािी कर देगा। ज्ञान प्रकाि-स्तम्भ िै। अतः ज्ञान हनतान्त आिश्यक िै। अज्ञानता मिान् र्ार् िै। अज्ञानी मनुष्य प्रकृहत का हिकार या दास बन िाता िै।

डनष्काम कमप की मडिमा

स्वाथपर्ूणप कमप मनुष्य के र्ुनिपन्म का कारण िै। र्ुनिपन्म र्ुराने कमों को भोगते हुए नये कमों को िन्म देता िै। र्ुनिपन्म के दुःखों से मुि िोने के हलए कमप से मुि िोना िोगा। हनष्काम कमप आर्को बन्धन में निीं डालेगा। िि आर्के हृदय को िुद्ध बनायेगा और ऐसी र्ररक्तस्थहतयााँ हनहमपत करेगा हिसके कारण आर्के ऊर्र हदव्य प्रकाि तथा भगित्प्रसाद का अितरण िोगा। सम्यक् हचन्तन करें, भितार्ूिपक कायप करें, हनयहमत र्ूर् से ध्यान करें और िाश्वत र्रमानन्द तथा अमरता प्राप्त करें!

रुनिपन्म का हसद्धान्त

रुनिपन्म अथापत् अिा के अिागमन का हसद्धान्त हिन्दू-धमप का आधारभूत हसद्धान्त ि ै। रुनिपन्म का ाक्तिब्दक अथप ि ै-रुनः मूतप रूर् में आना अथापत् स्थूल िरीर को रुनः धारण करना। िििीा रुनः एक मांसल अिारण ग्रिण करता ि ै। अिागमन िब्द का अथप ि ै- एक स्थान से दूसरे स्थान को िाना, नये संसार में ििप्रि करना।

संसूकृत िब्द **'सांसार'** संसूकृत धातु **'सृ'** से हनकला ि ै हिसका अथप ि ै-संसरण करना। उर्सगप 'सम्' का अथप-अत्यहधक। िििीा बारम्बार इस संसार में और अन्य सूक्ष्म उितर लोकों ंमें संसरण करता रिता ि ै। अिा का इस प्रकार बार-बार संसरण िी संसार का िास्तहिक अथप ि ै।

संसार का अक्तस्तत्व इसहलए ि ै ताहक िििीा अि-साक्षात्कार कर सके।।

मानि में असीम सम्भािनाएँ हनहित ि ैं। िक्ति और बुक्तद्ध का भण्डार उसके भीतर ि ै। उसे अर्नी अन्तहनपहित हदव्यता को प्रकट करना िोगा। िीिन और मृतुयु से गिुरने का यिी उद्देदेश्य ि ै।

डिन्दू-धमपग्रन्थो ांमें रुनजपन्म के डसद्धिा का डनरूर्ण

मृतुयु के रिात् आर्का अक्तस्तत्व समाप्त निीं ंिोगा। ितपमान िीिन के रूिप आर्ने असंख्य िीिन व्यतीत हकये ि ैं। गीता में भगिान कृष्ण ने किा ि ै-"अिुपना इससे रूिप तुमने और मैंने कई िन्म हलये ि ैं। किेल में िी उनके हिषय में िानता ि ै। तुम निीं ंिानते। िन्म के बाद मृतुयु िोना अहनिायप ि ै और मृतुयु के बाद रुनिपन्म िोना। हिस प्रकार मनुष्य रुराने िस्त्र उतार कर नये िस्त्र धारण करता ि ै, उसी प्रकार िरीर में िास करने िाला अिा रुराने रीरों ंको त्याग कर नये िरीरों ंमें ििप्रि करता ि ै।"

उर्हनषदों ंने भी घोहषत हकया ि ै- "हिस प्रकार एक िोंक एक तृण के अन्त में र्हुँच कर दूसरे तृण-रूर् आश्रय को र्कड कर अर्ने को हसकोड लेती ि ै, उसी प्रकार यि अिा इस िरीर को मार कर-अहिद्या (अचेतनािस्था) को प्राप्त कर दूसरे आधार का आश्रय ले अर्ना उर्संिार कर लेता ि ै" (बृिदारण्यक उर्हनषद् : ४/४/३)। "हिस प्रकार सुनार सोने का एक टुकडा ले कर उससे दूसरे निीन और अहधक सुन्दर रूर् की रचना करता ि ै, उसी प्रकार यि अिा इस िरीर को नष् कर-अचेतनािस्था को प्राप्त करा कर अन्य हर्तर, गन्धिप, दिे, प्रिार्हत, ब्रह्मा अथिा अन्य भूतों ंके निीन और सुन्दर रूर् की रचना करता ि ै" (बृिदारण्यक उर्हनषद् : ४/४/४)। "अन्न की भााँहत मनुष्य र्कता ि ै (अथापत् िीरीणप िो कर मर िाता ि ै) तथा अन्न की भााँहत िी िि (कमािुपि) रुनः िन्म ले लेता ि ै" (कठोर्हनषद् : १/१/६)।

कमप और रुनजपन्म

रुनिपन्म का हसद्धान्त कमप के हसद्धान्त का िी उर्हसद्धान्त ि ै। एक व्यक्ति तथा दूसरे व्यक्ति की प्रकृहत में िी भेद र्ाया िाता ि ै, िि उनके अर्ने रूिप-कमों के कारण िी िोगा। रूिप-कमप का अथप ि ै रूिप–िन्म। इसके अहतररि आर्के समस्त कमों का फल इसी िीिन में निीं ंहमल सकता, इसहलए अिहिष् कमों का फल प्राप्त करने के हलए एक और िन्म िोना चाहिए। प्रत्ेयेक अिा बहुत बार िन्म लेता और मृतुयु को प्राप्त िोता ि ै। िब तक आर् अहिनािी र्रम तत्त्व का ज्ञान प्राप्त निीं ंकर लेते, तब तक िन्म और मृतुयु की शृंृंखला समाप्त निीं ं िगी।

अचे्छे कमप उियोहनयों ंमें िन्म लेने के तथा बुरे कमप नीच योहनयों ंमें िन्म लेने का कारण बनते िैं। सदाचरण करने से उिलोकों ंकी ओर ऊध्वपगमन िोता िै तथा दुराचरण करने से हनम्न लोकों ंकी ओर अधोगमन। हिद्या का र्रणाम मोक्ष िै और इसके हिर्रीत (अहिद्या) का र्रणाम बन्धन िै। िब तक अचे्छे तथा बुरे कमप नष् निीं ंिोते, मनुष्य सैकडों ंकल्पों ंमें भी मोक्ष या कैिल्य मुक्ति प्राप्त निीं ंकर सकता। अचे्छे और बुरे- दोनों ंप्रकार के कमप िीि को अर्नी िििीर में मिबूती से बाँध कर रखते िैं। एक िििीर स्वणप की िै और दूसरी लौि की। िाश्वत तत्त्व का ज्ञान प्राप्त हकये हबना मनुष्य के िारा मोक्ष निीं ंप्राप्त हकया िा सकता।

रू्वप-जन्मो ंके अस्तित्व के प्रमाण

निाित हििु िषप, भय और दु:ख प्रकट करता िै। इसका कारण तब तक समझ में निीं ंआ सकता, िब तक हक िम यि न मानें हक हििु इस िीिन में कुछ चीिीं ंको देख कर रू्िपिीिन की तत्सदृ िसुतुओं ंकी याद करता िै। िो िसुतुएँ र्िले िषप, भय और दु:ख उत्पन्न हकया करती थीं,ं िे इस िीिन में भी उसी प्रकार िषप, भय आहद उत्पन्न करती रिती िैं। भूतकाल की सूमृहत रू्िप–िन्म को तथा आिा के अक्तस्तत्व को हसद्ध करती िै।

निाित हििु कु्षुधा िान्त करने के हलए माँ का दूध र्ीता िै। रू्िप–िन्म में इसी प्रकार करने की सूमृहत बनी रिने के कारण िि ऐसा करता िै। बिे को दूध र्ीने की इच्छा उसके रू्िप–िन्म के अनुभि के कारण िोती िै। इससे यि हसद्ध िै हक यद्यहर् हििु की आिा ने रू्िप–रीर त्याग कर निीन िरीर धारण कर हलया िै; र्रनु्तु उसे रू्िप–िन्म के िरीर के अनुभिों ंका स्मरण िै।

आर् संसार में हनतान्त हिस्मरणिीलता की अिस्था तथा हनर्ट अन्धकार में भटकते हुए निीं ंआये िैं। आर् रू्िप–िन्म में प्राप्त की हुई कुछ आदतें और सूमृहतयाँ ले कर िन्म लेते िैं। इच्छाएँ रू्िप-अनुभि से उद्भूत िोती िैं। िम देखते िैं हक कोई भी व्यक्ति हबना इच्छा के उत्पन्न निीं ंिोता। प्रत्येक प्राणी कुछ इच्छाओं ंको ले कर उत्पन्न िोता िै हिनका सम्बन्ध उसके रू्िप–िन्म में भोगी हुई िसुतुओं ंसे िोता िै। इच्छाएँ रू्िप–िन्मों ंमें उसके आिा के अक्तस्तत्व को हसद्ध करती िैं।

मृतु्यु और रु्नजपन्म के मध्य आत्मा का मागप

आिा सूक्ष्म िरीर (हलंग-दिे) के साथ उत्क्रमण करती िै। सूक्ष्म िरीर इन उन्नीस तत्त्वों ंसे हनहमपत िै-र्ाँच ज्ञानेक्तियाँ, र्ाँच कमेक्तियाँ, र्ाँच प्राण, मन, बुक्तद्ध, हचत्त और अिंकार। िीिाा के समस्त संस्कार, िासनाएँ और िृत्तियाँ इस सूक्ष्म िरीर के साथ चली िाती िैं। सूक्ष्म िरीर हफर स्वगप की ओर चल देता िै। िब िुभ कमों ंके फल समाप्त िो िाते िैं, तब यि अर्ने हलए नया िरीर तैयार करके रृ्थ्वीच रु्नः िन्म लेता िै।

हिनका आचरण अच्छा रिा िै, िे उियोहनयों ंमें िन्म लेते िैं और हिसका आचरण अच्छा निीं ंरिता, िे र्ार्-योहनयों ंअथिा हनम्न कोहट की योहनयों ंमें कच लेते िैं।

देवयान और डर्तृयान

ध्यान और उर्ासना करने िाला व्यक्ति िब मृतु्यु को प्राप्त िोता िै तो प्रथमत िि प्रकाि में िाता िै, हफर िि प्रकाि से हदिस को, हदिस से िुक्ल र्क्ष को, िुक्ल र्क्ष से उत्तरायण के छि मास को, उत्तरायण से िषप को, िषप से सूयप को, सूयप से चिमा को तथा चिमा से हिद्युत् को िाता िै। हिद्युत् के क्षेत्र में रहुँच कर िि ऐसे

व्यक्ति से हमलता िै िो मानि निीं ंिै। िि व्यक्ति उसे कायपब्रह्म अथापत् हिरण्यगभप के र्ास ले िाता िै। यि दिीं ं का मागप अथापत् दियान िै।

लोकहित के काम करने िाला तथा दान करने िाला व्यक्ति मृतूयूर्रान्त प्रथमतः धूम्रलोक को िाता िै, हफर िि धूम्रलोक से राहत्र को, राहत्र से कृष्ण र्क्ष को, कृष्णण र्क्ष से दहक्षणायन को और ििााँ से िि हर्तृलोक को िाता िै। हर्तृलोक से बि आकाि को तथा आकाि से चिमा को िाता िै। ििााँ िि र्ुण्य कमों के क्षीण िोने तक रिता िै। र्ुण्य कमों के क्षीण िो िाने र्र िि हफर इसी मागप से इस र्ृथ्वी र्र लौट आता िै। र्िले िि आकाि बनता िै, हफर िायु, हफर धुआाँ, हफर कोिरा, हफर मेध और तब िषाप की बूाँदों ंके रूर् में र्ृथ्वी र्र हगरता िै। तब िि भोिन में िीिरूर् में िीिरूर् करता िै हिसे मनुष्य खाते िैं। अन्ततः िि उनकी सन्तान बन िाता िै।

िि खहनि–गत्, िनस्पहत–गत् और र्िु–गत् के हिहभन्न अक्तस्तत्वों ंको र्ार करता िै अथापत् िरायुि (िरायु से उत्पन्न) बनने से र्िूप िि उक्तद्भि (बीि से उत्पन्न), स्वेदि (स्वेद से उत्पन्न) और अण्डि (अण्डे से उत्पन्न) बनता िै।

सांसार के बन्धन को डकस प्रकार तोडें

इस संसार-चक्र अथिा भि-चक्र अथिा िन्म-मृतुयु-चक्र में बााँधने िाली िोरें आर्की इच्छाएाँ िी िैं। िब तक आर् इस संसार के र्दाथों की इच्छा करते रिेंगे, तब तक आर्को उन्हें प्राप्त करके भोगने के हलए इस संसार में आना िी र्डेगा। हकन्तु िब इन भौहतक र्दाथों के हलए आर्की कामना समाप्त िो िायेगी, तब बन्धन टूट िायेंगे और आर् स्वतन्त्र िो िायेंगे। हफर आर्को अन्य िन्म लेने की आिश्यकता निीं र्डेगी। आर्को मोक्ष की प्राक्तप्त िो िायेगी।

आर् इस संसार में भटकते िैं, क्योंहक आर् अर्ने को र्रमात्मा से हभन्न समझते िैं। ध्यान और योग के िारा यहद आर् अर्ने-आर्को 'उसके साथ एक कर दें, तो आर् अमरता और िाश्वत र्रमानन्द प्राप्त करेंगे। िाश्वत तत्त्व के ज्ञान िारा कमप के बन्धन को काट कर अर्नी अन्तरात्मा–िो अन्तयापमी िै-की र्रम िाक्तन्त का अनुभि करें। आर् िन्म और मृतुयु के चक्र से छूट िायेंगे। र्ार्ों ंऔर िासनाओं ंसे मुि िो कर आर् िीिन्मुि बन िायेंगे। आर् सभी िीिों ंमें र्रमात्मा का दिपन करेंगे तथा 'उसे' सभी िीिों ंके रूर् में देखेंगे।

अितार की अिधारणा

मनुष्य के आरोिण के हलए र्रमात्मा का र्ृथ्वी र्र अिरोिण अितार किलाता िै। गीता में भगिान् कृष्ण किते िैं- "यद्यहर् मैं अिन्मा अहिनािीस्वरूर् तथा सब भूत-प्राहणयों ंका ईश्वर हाँ, तदहर् मैं अर्नी प्रकृहत को अधीन करके योगमाया से प्रकट िोता हाँ। िब–िब धमप की िाहन और अधमप की िृक्तद्ध िोती िै, तब-तब मैं अर्ने रूर् को प्रकट करता हाँ। मैं साधु र्ुरुषों ंका उद्धार करने के हलए और दूहषत कमप करने िालों ंका नाि करने के हलए तथा धमप-स्थार्ना के हलए युग-युग में प्रकट िोता हाँ" (४/६, ७ और ८)।

ईश-कृर्ा का डसद्धाि

भागितों ंके अर्ने हनिी िास्त्र िैं। इन्हें र्ांचरात्र आगम किते िैं। इनमें िासुदेि-मत को प्रहतर्ाहदत हकया गया िै-इसहलए िे उर्हनषदों ंके समकक्ष समझे िाते िैं। इनके िारा प्रहतर्ाहदत धमप र्थभ्रष् मानिता के हलए उर्लब्ध ईि-कृर्ा र्र आधाररत िै। इसहलए इस धमप में अितार के हसद्धान्त र्र अहधक बल हदया गया िै और

उन अमर कथाओं ंका प्रचार हकया गया िै िो बाद में हिषुणुरुराण, िररिंरुिाण और भागितरुराण में संकहलत की गयीं।ं इन ग्रन्थों ंको ढ़ने से आर्को भगिान् कृष्ण की महिमा का स्पष् ज्ञान िोगा।

भगिान् कृष्ण, राम आहद अितारों ंकी उर्ासना िारा आर्को आिसाक्षात्कार िो सकता िै। बहुतों ंने र्िले से िी आिसाक्षात्कार प्राप्त कर हलया। तुकाराम, रामदास, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास आहद ने र्रमािा का आमने-सामने दिपन हकया िै। उनकी र्िसि रचनाओं ंसे उनकी उि आध्याक्तिक उर्लक्तियों ंका र्ररचय प्राप्त िोता िै।

ईश्वर-अडभव्यस्ति की श्रेडणयाँ

र्ूणापितार, अंिाितार और र्िर्िआितार-ये अितारों ंके प्रकार िैं। भगिान् कृष्ण की कलाओं ंकी संख्या १६ िै। िे र्ूणापितार िैं। उन्ोंनें मानिीय प्राणी के समान न िन्म हलया और न मृतुयु को प्राप्त हुए। िे प्रकट हुए और अन्तधापन िो गये। िे अब भी िैं। उनकी हनत्य-लीलाएँ गोलोक (अथापत् हदव्य िृन्दािन) में हुआ करती िैं। अितारों ंके िरीर हदव्य अथापत् अप्राकृत िोते िैं। उनके िरीर मानिीय िाड-मांस से निीं ंबने िोते।

केिल अज्ञानी तथा भ्रहमत आिाएँ अितार-हसद्धान्त का हिरोध करती िैं और यि मानती िै हक भगिान् कृष्ण मात्र मनुष्य थे। उन्ोंनें हित्र धमपग्रन्थों ंका भी प्रकार अध्ययन निीं ंहकया िै। िे अल्प बुक्तद्ध के तामसी लोग िैं। िे हछिान्वेषण करने में िी रुहच रखते िैं। भगिान् कृष्ण किते िैं- "दुष्कमों में रत भ्रहमत तथा दुष् मनुष्य मुझे प्राप्त निीं ंिोते। माया उनकी बुक्तद्ध को नष् कर देती िै। िे दानिी स्वभाि के िो िाते िैं। ऐसा उनका भाग्य िोता िै।"

बन्धुओ ! आर् समूपूणप हृदय तथा मन से राम या कृष्ण की उर्ासना करें। उन्ें अर्ने हृदय में प्रहतहष्ठत करें। िे िीघ्र िी आर्को दिपन देंगे और आर् उनकी उर्क्तस्थहत को अनुभि करेंगे। आर् अमरता और िाश्वत र्रमानन्द प्राप्त करेंगे। अितारों ंकी िय िो! भगिान् हिषुणु के अितारों ंभगिान् राम और भगिान् कृष्ण की िय िो! उनका अनुग्रि आर् सब र्र रिे!

षष्ठ अध्याय

हिन्दू-कमपकाण्ड

सन्ध्योर्ासना

सन्ध्योर्ासना का ि◌ाक्तब्दक अथप ि◌ै-दो बेलाओं ◌ंके सक्तन्ध-काल में उर्ासना। यि राहत्र तथा हदिस, स्िूपह्न तथा अर्राह्न एिं सन्ध्या तथा राहत्र के सक्तन्ध-कालों ◌ंमें की ि◌ाने ि◌ाली प्रभु की प्राथपना तथा उर्ासना ि◌ै। सूयप को अर्घ्प देना एिं गायत्री-मन्त्र का ि◌र् तथा उर्ासना करना इसके मूलभूत अंग ि◌ैं। ि◌स्तुतः उर्युपि बेलाओं ◌ंमें की गयी प्रत्येक सन्ध्योर्ासना उर्ासक की हदनचयाप की अिहध में हकये र्ार्ों ◌ंके हलए, क्षमा एिं ज्ञान तथा दैिी कृर्ा की सम्प्राक्तप्त के हलए भगिान् से की गयी प्राथपना ि◌ै।

समुहचत सक्तन्ध-काल में सन्ध्योर्ासना करने से ि◌ी अहधक लाभ ि◌ोता ि◌ै। सक्तन्ध-काल में ि◌क्ति का हिहेष सुफुरण ि◌ोता ि◌ै। सन्ध्या-काल की समाक्तप्त के र्िात् यि ि◌क्ति लुप्त ि◌ो ि◌ाती ि◌ै।

एक अडनवायप कतपव्य

हिस हिन्दू का यज्ञोर्िीत-संस्कार सम्पन्न ि◌ो चुका ि◌ै, उसके हलए सन्ध्योर्ासना एक दैहनक धाहमपक कृत्य िै। यि एक हनत्य कमप ि◌ै। सन्ध्योर्ासना एक अहनियप कतपव्य ि◌ै हिसे आि◌्◌ुक्तद्ध तथा आिोन्नहत के हलए प्रहतहदन करना चाहिए।

सनातन धमप के सभी अनुयाहययों ◌ंको सन्ध्योर्ासना करनी चाहिए। प्रत्येक ब्रह्मचारी तथा प्रत्येक गृिस्थ का यि दैहनक कतपव्य ि◌ै। यहद ि◌ि ऐसा निीं ◌ंकरता, तो ि◌ि प्रत्यिाय-दोष का भागी ि◌ोता ि◌ै और उसका ब्रह्म-तेि नष्ि ि◌ाता ि◌ै।

हिन्दू–िास्त्रों ◌ंमें किा गया ि◌ै हक ि◌ो भी ब्राह्मण, ि◌ो भी क्षहत्रय या ि◌ो भी ि◌ैश्य प्रहतहदन हत्रकाल सन्ध्योर्ासना निीं ◌ंकरता, ि◌ि नरकगामी ि◌ोता ि◌ै। याज्ञिल्क्यसूमृहत में केिल सन्ध्योर्ासना के प्रयोिन के हलए ि◌ी यज्ञोर्िीत-संस्कार का हिधान हनधापररत हकया गया ि◌ै। इस हिधान के अनुसार ब्राह्मण, क्षहत्रय तथा ि◌ैश्य ि◌ारा यज्ञोर्िीत धारण करने की आयु क्रमिः आठ, ग्यारि तथा बारि ि◌षप की ि◌ै; क्योंहक इस संस्कार-हििेष के र्िात् िी उन्िें सन्ध्या तथा ि◌ैहदक अनुष्ठानों ◌ंका र्ात्र समझा ि◌ाता ि◌ै। उन्िें बाह्याभ्यन्तर रूर् से स्वयं को ि◌ुद्ध रखना चाहिए। तभी ि◌े दैिी हिज्ञान की र्ािन महिमा से सुर्ररहचत ि◌ो सकते ि◌ैं।

सन्ध्योर्ासना के लाभ

र्, उर्ासना, स्वाध्याय, ध्यान, धारणा, आसन, प्राणायाम आहद का संयुि रूर् सन्ध्या ि◌ै। ि◌ो हनत्य-प्रहत सन्ध्या करता िै, उसका मुखमण्डल ब्रह्म-तेि से उद्दीप्त रिता ि◌ै, ि◌ो व्यक्ति हनधापररत हिहध से ि◌ास्त्र-सम्मत समय र हनत्य-प्रहत र्ूिा र करता ि◌ै, ि◌ि हििुद्ध ि◌ो ि◌ाता ि◌ै और उसका प्रत्येक प्रयत्न सफल ि◌ोता ि◌ै। उसे ि◌क्ति तथा िाक्तन्त की सम्प्राक्तप्त ि◌ोती ि◌ै। हनयहमत सन्ध्या स्िूप-संहचत संस्कारों ◌ंके र्ा को हिक्तच्छन्न कर प्रत्येक व्यक्ति की र्ुरातन र्रक्तस्थहत को र्ूणपतः र्ररिहतपत कर देती ि◌ै। इससे ि◌ुहचता, आिभाि, भक्ति एिं हनष्कर्टता का उदय िोता ि◌ै।

अनुष्ठान-डवडध

आचमन, मािपन, अघमषपण, सूयप-अर्घ्प, प्राणायाम, गायत्री मन्त्र का मौन ि◌र् एिं उर्स्थान इस अनुष्ठान के मित्त्वर्ूणप अंग ि◌ैं। आचमन में 'अच्युताय नमः', 'अनन्ताय नमः', 'गोहिन्दाय नमः' इत्याहद मन्त्रों ◌ंसे अहभहषि िल का अधर से स्पिप कराया ि◌ाता ि◌ै और मािपन में ि◌रीर तथा मन की ि◌ुक्तद्ध के हलए ि◌रीर र ि◌ल हछडका िाता ि◌ै। सूयप-अर्घ्प में सूयप देिता तो ि◌ल अहर्पत हकया ि◌ाता ि◌ै और प्राणायाम के ि◌ारा श्वास-प्रश्वास को हनयक्तन्त्रत कर चंचल मन को क्तस्थर हकया ि◌ाता ि◌ै।

अर्घ्य

अर्घ्य तक के प्रथम चरण में िल को सम्बोहधत स्तोत्र तथा उससे प्राप्त लाभों ंका उल्लेख िै। मुख तथा हिर र िल हछडक कर भीगी उँगहलयों ंसे मुख, नाहसका, कणप, िक्ष, स्कन्ध, हिर आहद हिहभन्न अंगों ंके स्पिप का प्रयोिन उि अंगों ंका हित्रीकरण तथा इनके अहधष्ठातृदेिों ंका आिािन िै। इससे स्नायुिकि उद्दीप्त तथा सुप्त िक्तियाँ िाग्रत िोती िैं।

अर्घ्य उन दैत्यों ंको दूर भगाता िै िो उगते हुए सूयप का मागप अिरुद्ध करते िैं। इसका हनहिताथप यि िै हक काम, क्रोध तथा लोभ िे दैत्य िैं िो बुक्तद्ध के हिकास में बाधा उत्पन्न करते िैं। बुक्तद्ध िी सूयप िै।

प्राणायाम तथा जर्

सन्ध्या का हितीय चरण प्राणायाम तथा गायत्री िर् िै।

सूयोर्थथान

सूयोर्स्थान सन्ध्या का तृतीय चरण िै। यि क्षमा, दया तथा भगितृकृर्ा के हनहमत्त की िाने िाली प्राथपना िै। इस प्राथपना में किा गया िै-"मुझे भूलोक में स्खहलत मत िोने दो। िे प्रभु, मुझ र कृर्ा करो। मेरी िक्ति अत्यन्त क्षीण थी। िे भगिन्! मैंने कुकृत्य हकये िैं। िे प्रभु, मुझ र दया करो।" यि प्रातः, मध्याह्न तथा सान्ध्य प्रिर में सूयपदेि को सम्बोहधत-हनदेहदत िेद की ऋचाएँ िैं। सूयप मनुष्य की बुक्तद्ध िै तथा अज्ञान अन्धकार िै। ज्ञान प्रकाि िै। िब आर् अज्ञान के अन्धकार से मुि िो िाते िैं और िब िेद माता गायत्री की कृर्ा से आर्की अन्तःप्रज्ञा के चक्षु खुल िाते िैं, तब आर्को िाश्वत आनन्द, चरम िाक्तन्त तथा अमरत्व की सम्प्राक्तप्त िो िाती िै। यि िी हदव्य प्रकाि िै िो अज्ञान के अन्धकार तथा हिक्षेर् को नष् कर देता िै; यि िि िन्दनीय दीक्तप्त िै हिससे यि समस्त संसार ज्योहतत िै; यि िि र्ािन प्रकाि िै हिसकी कृर्ा से भि का हृदय िाश्वत आनन्द से रूर्ण िो उठता िै और यि िि िेिो ज्योहत िै हिसे साधक गायत्री मन्त्र के माध्यम से ईश्वर से प्राप्त करना चािता िै। िि ईश्वर से प्राथपना करता िै हक िि उसे ज्ञान प्रदान करे हिससे उसे आत्मसाक्षात्कार िो।

सन्ध्योर्ासना-एक सम्यक् हिज्ञान

सत्य का साक्षात्कार मनुष्य की स्वाभाहिक इच्छा िै। िि सृहष् के रिस्य से र्ररहचत िोना चािता िै। इस सम्बन्ध में िास्त्रों ंकी सुस्पष् उद्घोषणा िै- "िब अज्ञान का नाि िो िाता िै, िब र्ाखण्ड तथा हमथ्याचार हिक्तच्छन्न िो िाते िैं और िब मनुष्य को उसकी हृदय-गुिा में र्रमात्मा का साक्षात्कार िो िाता िै, तभी उसके सम्मुख यथाथप एिं अक्तन्तम सत्य अनािृत िोता िै।"

सत्य के राज्य में सफलता-प्राक्तप्त के हलए सन्ध्या-हिज्ञान एक सम्यक् हिज्ञान िै। इस दैिी हिज्ञान के अध्ययन में हकसी को अर्ने मन में हकसी प्रकार के अन्धहिश्वास को स्थान निीं ंदेना चाहिए। हकसी को इसकी मित्ता को हसद्ध करने की भी आिश्यकता निीं ंिै। इसकी मित्ता एिं महिमा एक ज्वलन्त सत्य िै। आि का भौहतकिादी समाि भी सन्ध्या-हिज्ञान में हनहित सत्य के प्रहत अर्नी सिमहत व्यि करता िै। िास्त्रों ंमें आया िै-

"ब्राह्मी-क्तस्थहत ि्ृक्ष, सन्ध्या इस ि्ृक्ष का मूल, िेद इसकी िाखाएँ और धाहमपक कृत्य इसके र्त्र िैं। अतः मूल अथापत् सन्ध्या र् िी अहधक ध्यान देना चाहिए।" अब सन्ध्या की महिमा सिपथा स्पष् िो गयी। सत्य-मागप के र्थक के हलए सन्ध्या हनतान्त आिश्यक िै। िास्त्रों ंके समादेि के अनुसार ब्राह्मण को हकसी भी मूल्य र् हनयहमत रूर् से प्रहतहदन सन्ध्या करनी चाहिए। िास्त्रों ंमें किा भी िै-"**अिरिः सन्ध्यामुर्ासीत।"**

सन्ध्या के अभ्यास की रूिापरे्क्षाएँ

आिार

यहद आर् इस हिज्ञान में प्रहिहक्षत िोना चािते िैं, तो आर्को अर्ने भोजन के सम्बन्ध में अत्यहधक सािधान रिना चाहिए। भोजन हनयहमत और साक्तत्त्वक िोना चाहिए। भोजन का मनुष्य र् बहुत अहधक प्रभाि र्डता िै। आर् एक छोटे िेर तथा बडे िाथी के बीच के अन्तर को देक्तखए। समायोहजत भोजन से आर्का सम्यक् हिकास िोगा। हिहभन्न प्रकार के गररष्ठ भोजन से आलस्य उत्पन्न िोता िै। अतः आर् अर्ने दैहनक भोजन-सम्बन्धी हनयमों ंका कठोरतार्ूिपक र्ालन कीहजए। आर्की िक्ति एिं सहक्रयता सिपदा अकु्षण्ण रिेगी।

आसन (बैठने की मुद्रा)

जो व्यक्ति सन्ध्या करता िै, िि आसन र् ध्यान निीं ंदेता। िि हकसी भी मुद्रा में बैठ जाता िै। यि अहधक लाभप्रद निीं ंिोता। उसे प्रहतहदन एक हनहित हदिा की ओर उन्मुख िो कर हकसी सम्यक् आसन (र्द्मासन या सुखासन) में बैठना चाहिए। जिाँ तक िो सके, उसे एक िी बैठक में (अर्ने बैठने की मुद्रा को र्ररिहतपत हकये हबना) अर्नी सन्ध्योर्ासना समाप्त कर लेनी चाहिए। उसे आसन के सम्बन्ध में र्ूणप रूर् से दक्ष िोना चाहिए, तभी िि सन्ध्योर्ासना करते समय अर्ने मन को एकाग्र कर सकेगा।

आस्था तथा भक्ति

आर्को आस्था तथा भक्ति के साथ सन्ध्या करनी चाहिए। मन्त्र की आिृहत्त मात्र से हििेष लाभ निीं ंिोता। अर्ने र्ार्ों ंकी क्षमा के हलए प्रभु से अन्तमपन से प्राथपना कीहजए।

युवा र्ीढी से एक अनुरोध

कुसंस्कारों,ं भ्राक्तन्तर्ूणप हिक्षा-प्रणाली तथा कुसंग से ग्रस्त युिा छात्र सन्ध्या की महिमा तथा इसकी गिन प्रभािोत्पादकता को हिस्मृत कर बैठे िैं। िे सन्ध्या निीं ंकरते। यि उनके हलए अथपिीन िो चुकी िै। िे नाक्तस्तक िो गये िैं। िे सन्ध्या करने से र्ूिप प्रयोगिाला में इसका र्रीक्षण तथा इसकी उर्योहगता के सम्बन्ध में हिज्ञान-सम्मत प्रमाण चािते िैं। उनके हिचारानुसार र्ाश्चात्य िैज्ञाहनकों ंिारा इसकी र्ुहष् अहनिायप िै। प्राचीन ऋहषयों ंके कथन का उन र् कोई प्रभाि निीं ंिै। क्तस्थहत हकतनी र्तनोन्मुखी िै!

युिा छात्रो ! सन्ध्या की अिमानना कर स्वयं को हिनष् मत कीहजए। सन्ध्या के दैहनक अनुष्ठान से आर्का जीिन सफल िोगा। इससे आर्को भौहतक तथा आध्याक्तिक समृक्तद्ध, सुस्वास्थ्य, दीघप जीिन एिं आन्तररक िुद्धता की सम्प्राक्तप्त िोगी। इसके अहतररि सन्ध्या आर्के हलए ईश्वर-साक्षात्कार में भी सिायक हसद्ध िोगी। अब से िी

सिी, इसका अनुष्ठान प्रारम्भ कर दीहिए। आर् इसी क्षण उहिमताओं ंएि कहठनाइयों ंके बीच भी हनयहमत रूर् से हनत्यप्रहत सन्ध्या करने का संकल्प कीहिए। हिलम्ब मत कीहिए और अर्ने हनरथपक कायपकलार्ों ंको कम कर दीहिए। ितापलार् तथा मेलि–ोल कम कीहिए। आर्को सन्ध्या के हलए र्यापप्त समय हमल िायेगा।

सन्ध्या-सम्बन्धी अनुिासन का दृढ़तारूिपक र्ालन कीहिए। िषाप िो या झंझािात, यिााँ तक हक यहद प्रलय िोने लगे, तो भी सन्ध्या को अधूरी मत छोहडए। बहुत लोग किते िैं हक सन्ध्या के हलए उन्ें समय निीं ंहमल र्ाता िै; क्योंहक उन्ें अन्य अनेक कायों में व्यस्त रिना र्डता िै, हकन्तु इसका कारण उनकी दुबपलता एिं उत्तम संस्कारों ंका अभाि िी िै। िे इस दिी हिज्ञान की महिमा को निीं ंसमझ र्ाते। यहद िे अर्ने हकसी हमत्र को नदी के तट र् सन्ध्या की मुिा में बैठे देख लेते िैं, तो हचल्लाना या कोई आर्हत्तिनक कायप करना प्रारम्भ कर देते िैं। उन अभागों ंको इस बात का ज्ञान निीं ंरिता हक सन्ध्या के मूल में कौन-सा गूढ़ तत्त्व हनहित िै। इस र्हित्र अनुष्ठान में रिस्यों–का-रिस्य हनहित िै। इसी कारण प्राचीनकालीन ऋहष किते थे - "िो व्यक्ति प्रहतहदन सन्ध्योर्ासना निीं ं करता, िि िास्ति में र्ुि िै।"

र्रमािा आर्को हकसी भी मूल्य र् प्रहतहदन सन्ध्या करने की बुक्तद्ध प्रदान करे! आर् सन्ध्या-सम्बन्धी हनयमों ंका र्ालन करें। आर् समस्त क्लेिों ंसे मुि िों ंऔर र्हित्र सन्ध्या-हिज्ञान आर्को र्हिुद्धता, अर्रहमत आनन्द तथा अर्रत्व प्रदान करे!

दि िास्त्रो संस्कार

मनुष्य के िीिन के हिहभन्न चरणों ंके अनुरूर् हकये िाने िाले िास्त्र-हिहित हिहिष् कमों को संस्कार किते िैं। मनुष्य के र्हिुक्तद्धकरण के हलए प्रयुि िोने िाले ये िास्त्र-हिहित कमप हिन्दुओं ंके िीिन को र्हित्र करते िैं। ये िन्म से ले कर मृत्युर्यपन्त व्यक्ति के िीिन की मित्त्वरूणप घटनाओं ंको एक आध्याक्तिक गररमा प्रदान करते िैं। ये मानि-िीिन की मित्त्वरूणप अिस्थाओं ंके र्हिषक प्रतीक िैं। हिस प्रकार हकसी हचत्र की बहिरेखाओं ं को हिहभन्न रंगों ंसे अनुरंहित कर हदया िाता िै, उसी प्रकार ब्रह्मण्य भी िास्त्रो संस्कारों ंसे तेिोमय िो उठता िै। िैिािस्था, बाल्यािस्था, युिािस्था एिं मृत्यु से सम्बक्तन्धत रृथक् रृथक् संस्कार िोते िैं।

संस्कारों ंकी कुल संख्या बािन िै, हिनमें दि संस्कार मित्त्वरूणप िैं। ये दि मुख्य तथा मान्यता-प्राप्त संस्कार िैं- गभापधान, रुंसिन, सीमान्तोन्नयन, िातकमप, नामकरण, अन्नप्रािन, चूडाकरण, उर्नयन, समाितपन और हििाि। इन संस्कारों ंमें भी अब कुछ िी प्रचहलत रि गये िैं। कुछ संस्कार मनुष्य की अबोधािस्था एिं प्रारक्तम्भक िैिािस्था से सम्बद्ध िैं। कुछ संस्कार ऐसे धाहमपक अनुष्ठान िैं हिन्ें प्रहतहदन या हिहिष् अिसरों ंर् सम्पन्न हकया िाता िै। इस प्रकार िन्म से मृत्यु तक हिन्दुओं ंका रूरा िीिन महिमाक्तन्वत एिं सुरहक्षत रिता िै।

गभापधान

गभापधान प्रिनन-हक्रया को र्हित्रता प्रदान करता िै। इसमें र्हत र्हिुि के िन्म के हलए ईश्वर से िाहदपक प्राथपना करता िै। िि ऋतु–िक्तन्त के अनुष्ठान या उत्सि के समय र्हित्र मन्त्रों ंकी आिृहत्त करता िै और र्त्नी इस मन्त्ररूत िातािरण में गभप धारण करती िै। इससे भ्रूण के मक्तस्तष्क की कोहिकाओं ंमें उत्तम संस्कार बन िाते िैं। िुद्धि बुक्तद्ध एिं सम्यक् हििेक से सम्पन्न िास्तहिक हिन्दू के हलए सम्भोग दैहिक सुख िी निीं ंिै। उस समय रुरुष अर्नी हदव्य एिं रचनािक प्राहणक िक्ति का उर्योग एक मानि-िरीर के हनमापण के हलए कर रिा िोता िै। सम्भोग के समय र्हत-र्त्नी को प्रफुल्ल-हचत्त रिना चाहिए। अिसन्न, उहिग्नता, क्रोध तथा घृणा की मनःक्तस्थहत में उन्ें सम्भोग से हिरत िी रिना चाहिए। उन्ें र्हित्र िास्त्रों ंका अध्ययन करना चाहिए। यहद उनके मन में अिसन

की प्रहतकृहत उर्त्तस्थत िोती िै, तो उनें् अहभमनुयु िैसे क्षात्रधमी एिं सुहिज्ञ रुत्र की प्राक्तप्त िोती िै। यहद उनके मन
में भगिान् बुद्ध का हचत्र प्रहतहबक्तम्बत िोता िै, तो करुणा आहद सद्‌गुणों ंसे सम्पन्न रुत्र की प्राक्तप्त िोती िै। यहद
उनके मन में धन्वन्तरर की प्रहतकृहत उर्त्तस्थत िोती िै, तो उनें् प्राप्त रुत्र हिख्यात आयुिेदाचायप िोता िै। इसी प्रकार यहद उनकी मानहसकता का कें-हबन्दु सूयपदेि िोते िैं, तो उनें् महिमा-मक्तण्डत एिं दीक्तप्तमान् रुत्र की प्राक्तप्त िोती िै।

रुंसवन

तृतीय मास में रुंसिन-संस्कार िोता िै। इसके हलए कुछ मन्त्रों ंका हिधान िै। इस समय हििु के अन्नमय-कोष तथा प्राणमय-कोष का हनमापण िोता िै।

सीमिोंोयन

सीमान्तोन्नयन-संस्कार सप्तम मास में िेद-मन्त्रों ंके रा्ठ के साथ हकया िाता िै। यि िुभ एिं अहनष्कर िक्तियों ंके दुष्प्रभािों ंसे माता की रक्षा करता िै तथा गभपस्थ हििु को स्वास्थ्य प्रदान करता िै। इससे हििु के िरीर का सम्यक् हिकास िोता िै। मन्त्रों ंके रा्ठ से हनःसृत समस्वरतारूणप स्पन्दनों ंतथा इस संस्कार से सम्बक्तन्धत अनुष्ठान के ररणामस्वरूर् हििु के िरीर का संगठन इस हिहध से िोता िै हक िि सौन्दयपमक्तण्डत िो उठता िै।

जातकमप

हििु के िन्मग्रिण के रिात् तत्क्षण िी िो संस्कार िोता िै, उसे िातकमप किते िैं। िि उसकी दीघापयु, बुक्तद्ध तथा कुिलता के हलए ईश्वर से प्राथपना करता िै और उसे िेद तथा मक्खन क्तखलाता िै।

नामकरण

नामकरण-संस्कार (हििु को नाम हदया िाना) मन्त्र-रा्ठ के साथ दििें, ग्यारििें या बारििें हदन सम्पन्न िोता िै।

अिप्राशन

यि संस्कार छठे मास में सम्पन्न हकया िाता िै। इसमें हििु को रिली बार ठोस भोज्य दाथप हदये िाते िैं। इस अिसर र मन्त्र-रा्ठ िोता िै और हिहभन्न देिों ंको नैिेद्य अहर्पत हकये िाते िैं।

चूडाकरण

चूडाकरण या मुण्डन-संस्कार प्रथम या तृतीय िषप में हकया िाता िै। कणपिेध का अनुष्ठान प्रथम या सप्तम िषप में या प्रथम िषप की समाक्तप्त के रिात् या चूडाकरण-संस्कार के साथ िी सम्पन्न िोता िै। इन अनुष्ठानों ंसे हििु का िरीर सनुतुहलत रिता िै और िीयप तथा भ्रूण की हिकृहत के कारण उत्पन्न हकसी भी रैतृक दोष का

हनराकरण ि ो ि ाता ि ै। हिद्यारम्भ भी एक संस्कार ि ै हिसमें बालक को अक्षर-ज्ञान कराया ि ाता ै। इसे अक्षराभ्यास भी किते ि ैं। इन संस्कारों ंका सम्बन्ध ि ीिन की बाल्यािस्था से ि ै।

उर्नयन

ि ीिन की हितीय अिस्था अथापत् यिुािस्था से सम्बक्तन्धत सिापहधक मित्त्वरूणप अनुष्ठान ि ै-उर्नयन-संस्कार। यि बालक का हितीय ि न्म ि ै हिसे आध्याक्तिक ि ीिन भी किते ि ैं। उर्नयन का अथप ि ै-समीर् ले ि ाना। इस अिसर र् बालक को गुरु के समीर् उर्क्तस्थत हकया ि ाता ि ै। आचायप उसे यज्ञोर्िीत र्िनाता ि ै और गायत्री मन्त्र ि ारा दीहक्षत कर उसे एक दण्ड प्रदान करता ि ै। ि ि ब्रह्मचयापश्रम का प्रारम्भ ि ै हिसमें ब्रह्मचयप व्रत का रूणप रूर् से र्ालन हकया ि ाता ि ै। यिाँ से उसके अध्ययन-काल का प्रारम्भ ि ोता ि ै। इस दीक्षा के माध्यम से ि ि हि ि ो ि ाता ि ै अथापत् ि ि हितीय ि न्म ग्रिण करता ि ै। बालक का ि न्म माता-हर्ता की र्ारस्प्ररक इच्छा से ि ोता ि ै। यि उसका भौहतक ि न्म ि ै। गायत्री मन्त्र में दीहक्षत ि ोने के र्िात् उसका एक अन्य ि न्म ि ोता ि ै और यिी ि ोता ि ै उसका यथाथप ि न्म। याज्ञिल्क्य के अनुसार ब्राह्मण, क्षहत्रय तथा ि ैश्य का उर्नयन संस्कार क्रमिः आठ, ग्यारि तथा बारि ि षप की आयु में ि ोता ि ै। मनु के अनुसार यि आयु ब्राह्मण के हलए र्ाँच ि षप, क्षहत्रय के हलए छि ि षप तथा ि ैश्य के हलए आठ ि षप ि ै।

यज्ञोर्वीत एवां अन्य प्रतीको ांका मित्त्व

यज्ञोर्िीत में एक-दूसरे से गुाँथे हुए तीन धागे ि ोते ि ैं। यज्ञोर्िीतधारी को हिचार, ि ाणी तथा ि रीर अथापत् मनि्चन-कमप र् हत्रहिध हनयन्त्रण रखना चाहिए। यज्ञोर्िीत हिश्व में क्तस्थत हिहभन्न हत्ररुहटयों ंि ैसे सत्-हचत्-आनन्द, सृहष्-क्तस्थहत-प्रलय, ि ाग्रत-स्वप्न-सुषुक्तप्त (तीन अिस्थाएाँ), सत्त्व-रिस्-तमस् (हत्रगुण) तथा ब्रह्मा-हिष्णु-ि ि (हत्रमूहतप) आहद का संकेतक ि ै।

दण्ड का यि हनहिताथप ि ै हक हिद्याथी को अर्ने मन, ि चन और कमप को हनयन्त्रण में रखना चाहिए। हिसका इन तीनों र् हनयन्त्रण ि ै तथा ि ो मन, ि चन और कमप से ब्रह्मचयप व्रत का र्ालन करता ि ै, ि ि रूणपता को प्राप्त ि ोता ि ै।

बालक एक कौर्ीन, एक छोटा र्ीत ि स्त्र और कहट में मूाँि हनहमपत एक मेखला धारण करता ि ै। आचायप उस र् मृगचमप रख देता ि ै। उसका नीिन र्ीत ि न नीिन दि का एि र्ीत ि णप आध्याक्तिकता का प्रतीक ि ै। कौर्ीन-धारण इस तथ्य की और संकेत करता ि ै हक बालक को रूणप ब्रह्मचयप का हििुद्ध ि ीिन व्यतीत करना चाहिए। मेखला की लर्ेट हत्रहिध ि ोती ि ै। इसका तात्पयप यि ि ै हक बालक के हलए संहिता, ब्राह्मण तथा उर्हनषदों ं का अध्ययन आिश्यक ि ै। मृगचमप तर्वी ि ीिन का संकेतक ि ै-ऐसा ि ी ि ीिन उसे व्यतीत करना चाहिए।

समावतपन

हिद्याथीि्ीन की समाक्तप्त के र्िात् ि ो संस्कार सम्पाहदत हकया ि ाता ि ै। उसे समितपन किते ि ैं। हिद्याथी ि दाध्ययन तथा व्रतों ंकी समाक्तप्त के र्िात् आचायप को कुछ भेंट देता और और्चाररक स्नान की अनुमहत प्राप्त करता ि ै। यि स्नान उसके हिद्याथीि्ीन के र्रसमार्न का प्रतीक ि ै। घर लौटने र् उसका समितपन-संस्कार ि ोता ि ै। इस प्रकार अब ि ि ि हि कर ि ीिन की हितीय अिस्था अथापत् गृिस्थाश्रम में ि्रि करने के हलए स्वयं को तत्पर र्ाता ि ै।

डववाि

ाििहा ारा मनुष्य का ाििर ाििन के हितीय आश्रम में ोता ै। यिीं ंसे गृिस्थाि–ीन का प्रारम्भ ोता ै। िि मनुष्य के हिहित कतपव्यों ंका ्ालन करते हुए यज्ञ, स्वाध्याय तथा सन्तानोत्पहत्त ारा स्वयं को हिहभन्न ऋणों ं से मुि करता ै। ि (र्हत) िधू से किता ै- "मैं सौभाग्य के हलए ्ाहणग्रिण करता िाँ।" े अर्ने ाथ में एक-दूसरे का ाथ ले कर र्हित्र अहग्न की र्रक्रमा करते ैं। नि–धू अहग्न को धान्य की िहि प्रदान करते हुए यि प्राथपना करती ै- "मेरा र्हत दीघापिु िो; मेरे कुटुम्ब की अहभिृहद्ध िो।"

जीवन की अस्तिम दो अवथथाएँ (आश्रम)

ानिप्रस्थ एिं संन्यास, दो अन्य अिस्थाएँ ैं हिनके र्ृथक् र्ृथक् अनुष्ठान ैं। मनुष्य समस्त सांसाररक कमों का र्रत्याग कर िन में चला ाता ै िाँ ि स्वयं को संन्यास ग्रिण करने के हलए तैयार करता ै। यि ानिप्रस्थ का ािन ै।

संन्यासी संसार का र्रत्याग कर देता ै और हभक्षाि–हत्त ग्रिण कर स्वाध्याय तथा ध्यान का ािन व्यतीत करता ै।

प्रेतकमप अन्त्येहष् अथापत् दाि-संस्कार को किते ैं। यि उसके र्ुत्र तथा उत्तराहधकारी ारा सम्पन्न हकया ाता ै।

र्ंच-मियज्ञ

ास्त्रों ंमें र्ंच-मियज्ञों ंका हिधान ै हिन्ें गृिस्थ को प्रहतहदन सम्पन्न करना चाहिए। प्रथम ब्रह्म-यज्ञ ै हिसे िद-यज्ञ भी किते ैं। इसमें ब्रह्म, िदों ंया ऋहषयों ंको िहि या सहमधा अहर्पत की ाती ै। दिे-यज्ञ हितीय यज्ञ ै। इसमें दिेों ंको िहि या सहमधा अहर्पत की ाती ै। हर्तृ-यज्ञ तृतीय यज्ञ ै हिसमें हर्तरों ंको िहि या सहमधा अहर्पत की ाती ै। चतुथप यज्ञ भूत-यज्ञ ै हिसमें समस्त प्राहणयों ंको बहल अहर्पत की ाती ै। र्ंचम यज्ञ अथापत्
मनुष्य-यज्ञ में उर्युपि दाथप मनुष्य को प्रदान हकये ाते ैं।
इन र्ंच-मियज्ञों ंका सम्पादन मनुष्य के आध्याहत्मक हिकास में सिायक हसद्ध ोता ै। ि क्रहमक र्ूर् से इस तथ्य से र्रहचत ो ाता ै हक ि एक र्ृथक् इकाई न ो कर इस हिसृतृत ब्रह्माण्ड का एक अंग ै। मिान् ऋहषयों ंारा प्रणीत र्हित्र ास्त्रों ंके अध्ययन से उसे ज्ञान प्राप्त ोता ै। हमत्रों,ं सम्बहन्धयों ंऔर साहथयों ंसे उसे सिायता प्राप्त ोती ै। उसका भौहतक ारीर उसके माता-हर्ता ारा प्रदत्त ोता ै। इस ारीर का र्ोषण गो-दुग्ध, ाकाहद िनस्पहतयों ंएिं फलों ंसे ोता ै। र्ंच-मिाभूत उसकी सिायता करते ैं। ि आक्सीन एिं लि के अभाि में ीहित निीं ंरि सकता। दिे तथा हर्तर उसकी मंगल-कामना करते ैं। इस प्रकार प्रकृहत का उस र र्ंचहिध ऋण ोता ै। अतः उसके हलए उि र्ंच-मियज्ञों ंके दैहनक सम्पादन ारा स्वयं को ऋण-मुि कर लेना अत्याािश्यक ै। इसके अहतररि चलते समय, सफाई-बुिारन करते समय, खेत में धान्य काटते समय, खाद्यान्न र्ीसते समय और र्ाक-कमापहद करते समय मनुष्य से अचेतन र्ूर् में अनेक कृहम-कीटों ंकी ित्या ोती रिती ै। इन र्ार्ों ंके हनराकरण का माध्यम ये यज्ञ िी ैं।

र्ांच-यज्ञ

ऋहषयों, ं दिों, ं हर्तरों, ं भूतों ं एिं अहतहथयों ंको गृिस्थों ंसे सिायता की अरेक्षा रिती िै। अतः गृिस्थों ंको रंच-यज्ञों ंको हनत्यप्रहत सम्पन्न करना चाहिए। धमपग्रन्थों ंका अध्ययन-अध्यार्न करना ब्रह्म-यज्ञ िै। हर्तरों ंको तर्पण
तथा िलार्पण एिं श्राद्ध करना हर्तृ-यज्ञ िै। िोम करना या अहन को आहुहत प्रदान करना दि-यज्ञ िै। बहल देना या सिपभूतों ंको खाद्यान्नार्पण करना भूत-यज्ञ िै। अहतहथ सत्कार करना मनुष्य-यज्ञ या अहतहथ-यज्ञ िै।

ब्रह्म-यज्ञ या ऋहष-यज्ञ

प्रत्येक मनुष्य को प्रहतहदन िास्त्राध्ययन करना चाहिए। उसे अन्य लोगों ंके साथ ज्ञान का आदान-प्रदान करना चाहिए। इसे ब्रह्म-यज्ञ या ऋहष-यज्ञ किते िैं। इसके अनुष्ठान से िि ऋहषयों ंके ऋण से मुि िो िाता िै।

देव-यज्ञ

श्रीमद्भगिद्गीता में भगिान् श्रीकृष्ण किते िैं- "कल्प के आहद में प्रिार्हत ब्रह्मा ने यज्ञ-सहित प्रिाओं ंको रच कर किा हक इस यज्ञ के िारा तुम लोग िृहद्ध को प्राप्त िोओ। यि यज्ञ तुम लोगों ंको इहच्छत कामनाओं ंको
देने िाला िो और इस यज्ञ िारा दिताओं ंकी उन्नहत करो और िे दिगण लोग तुम लोगों ंकी उन्नहत करें। इस प्रकार आर्स में (कतपव्य समझ कर) उन्नहत करते हुए तुम लोग र्रम कल्याण को प्राप्त िोओगे। यज्ञ िारा बढ़ाये हुए दिता लोग तुम्हारे हलए (हबना माँगे िी) हप्रय भोगों ंको देंगे। उनके िारा हदये हुए भोगों ंको िो र्ुरुष उनको हबना हदये स्वयं िी भोगता िै, िि हनिय िी चोर िै। इसका कारण यि िै हक यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने िाले श्रेष्ठ
र्ुरुष सब र्ार्ों ंसे छूट िाते िैं और िो र्ार्ी लोग अर्ने िरीर-र्ोषण के हलए िी र्काते िैं, िे र्ार् को िी खाते िैं"
(अध्याय ३/१०, ११, १२ और १३)। मनु किते िैं-"मनुष्य को िदाध्ययन तथा दि-अनुष्ठानों ंमें सिपदा संलग्न रिना चाहिए। िैहदक अनुष्ठानों ंसे िि चल एिं अचल िगत् का आधार स्तम्भ बन िाता िै।" ये यज्ञ िीिन-चक्र को दिी इच्छा के अनुरूर् प्रिहतपत करते िैं। इस प्रकार मनुष्य तथा संसार के हिकास का मागप प्रिस्त िोता िै।

हर्तृ-यज्ञ

हर्तरों ंको हनयहमत रूर् से तर्पण आहद अहर्पत करना हर्तृ-यज्ञ िै।

भूत-यज्ञ

गौ, श्वान, र्क्षी, मत्स्याहद में भोिन-हितरण करने को भूत-यज्ञ किते िैं।

मनुष्य-यज्ञ

हनधपनों ंको अन्न-दान करना मनुष्य-यज्ञ िै। भूखों ंको भोिन, नंगों ंको िस्त्र, गृिहिीनों ंको िरण और दुःखी ि नों ंको सुख देना इत्याहद कमप मनुष्य-यज्ञ िैं। र्ीहडत मानिता की हकसी भी प्रकार की सेिा मनुष्य-यज्ञ िै।

र्ांच-मिायज्ञ के लाभ

प्रहतहदन दया तथा सिानुभूहत से रूणप इन कायों को करने से मनुष्य के अन्तर में करुणा का हिकास िोता िै। इससे घृणा नष्ट िो िाती िै और मनुष्य का अिंकाररूणप हृदय क्रमिः कोमल िोता िाता िै। िि साहिपक प्रेम का धनी िो िाता िै। उसका हृदय हिस्तृत तथा िीिन के प्रहत उसका दृहष्टकोण व्यार्क िो िाता िै। स्वाथप और अिम्मन्यता से उत्पन्न उसकी र्ृथकता की र्ुरानी भािना क्रमिः क्षीणतर िोती हुई अन्ततः सिपथा हिनष्ट िो िाती िै। उसे इस तथ्य का ज्ञान िो िाता िै हक दूसरों ंको सुख दे करके, दूसरों ंकी सेिा-सिायता करके, दूसरों ंके दुःखों ंको दूर करके और अर्नी उर्लहब्धयों ंमें दूसरों ंके भागीदार बना करके िी िि सुखी िो सकता िै।

हनत्यप्रहत हकये िाने िाले रंच-मियज्ञों ंसे उसे िररष्ठ, समकक्ष तथा कहनष्ठ िनों ंसे सम्यक् सम्बन्ध-स्थार्न की हिक्षा हमलती िै।

मनुष्य का कोई रृथक्, िैयक्तिक अक्तस्तत्व निीं ंिोता। िि हिश्व से सम्बद्ध िै। िि माला में गूाँथे एक दाने की भााँहत िै। उसका सारा िीिन यज्ञमय एिं कतपव्यिील िोना चाहिए। इसी हिहध से मनुष्य का त्वररत हिकास िो सकेगा, इसी हिहध से उसे िाश्वत सत्ता के र्मानन्द की अनुभूहत िो सकेगी और इसी हिहध से िि िन्म-मरण के चक्र से मुि िो कर अमरत्व प्राप्त कर सकेगा।

श्राद्ध और तर्पण

श्राद्ध िीि के भौहतक िरीर के र्रत्याग के र्िात् उसकी िाक्तन्त के हलए उसके सम्बक्तन्धयों ंिारा हकया िाने िाला संस्कार िै। भौहतक कोष अथापत् दि से मुि िीि को प्रेत किते िैं। इस अिसर र श्राद्ध के हिस अंि का सम्पादन हकया िाता िै, उसे प्रेत-हक्रया किते िैं।

डदवांगत आत्मा को श्राद्ध तथा तर्पण से डकस प्रकार लाभ हाँचता िै

हर्तरों ंके लाभाथप सम्यक् समय तथा स्थान र सुरात्र ब्राह्मणों ंको श्रद्धारूिपक दान देने को श्राद्ध किते िैं। श्राद्ध से हर्तरों ंको तुहष्-लाभ िोता िै। रुत्र िारा श्राद्ध की सोलि आिृहत्तयों ंके र्िात् मृत हर्ता की आिा हर्तरों ंके साहन्नध्य में सुखरूिपक हनिास करती िै। अतः रुत्र को मृत हर्ता के हलए सहर्ण्डीकरण-अनुष्ठान अिश्य करना चाहिए। श्राद्ध तथा तर्पण से हर्तृलोक की मृतािा की कुषुधा तथा हर्र्ासा िान्त िो िाती िैं।

नरकगामी मृतािाएाँ कुषुधा-हर्र्ासा से अत्यन्त र्ीहडत रिती िैं। श्राद्ध-कमप तथा चािल का हर्ण्ड-दान और तर्पण करके उन्ें कष्मुि हकया िाता िै। अतः श्राद्ध-कमप अहनिायप िै। िो मृतािाएाँ स्वगप में हनिास करती िैं, उनको भी इससे तुहष्, िक्ति तथा र्ोषण प्राप्त िोता िै।

श्राद्ध हर्तरों ंके सम्मान में हकया िाने िाला एक अर्ररिायप अनुष्ठान िै। इसे श्रद्धा, भक्ति तथा आदर के साथ सम्पन्न करना अत्यािश्यक िै। िो रुत्र श्राद्ध तथा तर्पण निीं ंकरता, िि कृतघ्न रुत्र िै। िि नरकगामी िोता िै। धमपग्रन्थ उद्घोहषत करते िैं-"िो श्राद्ध निीं ंकरता, उसका रुनिपन्म हनम्नतर योहनयों ंमें िोता िै। िि दुःखी तथा हनधपन िीिन व्यतीत करता िै।"

दाि-सांस्कार के लाभ

दाि-संस्कार मृतक की अन्त्येहष् का सिोत्तम माध्यम िै। यि मृतािा के हलए अत्यन्त लाभप्रद िोता िै। यहद मृतक का दाि-संस्कार निीं ंिोता, तो िीि रृथ्वी से िी सम्बद्ध रि िाता िै। अर्ने भौहतक िरीर के प्रहत मोि तथा आसक्ति के कारण िि उसके चतुहदपक् माँडराता अथिा चक्कर लगाता रिता िै और इस प्रकार स्वगपलोक की उसकी हदव्य यात्रा में व्यिधान उर्क्तस्थत िो िाता िै। मन्त्र के स्वरों ंके स्पन्दन, आहुहतयााँ तथा तर्पण हदिंगत आिा को सुख तथा सान्त्वना प्रदान करते िैं।

सहर्ण्डीकरण-अनुष्ठान िीि के प्रेत-लोक से हर्तृ-लोक की ओर प्रस्थान करने में सिायक हसद्ध िोता िै। इस प्रकार िि हर्तृ-लोक में हुाँच कर हर्तरों ंमें सक्तम्महलत िो िाता िै। रुत्र हर्ता के िि की तीन बार प्रदहक्षणा

करता िै और 'तुम यिाँ से प्रस्थान करो' -इस मन्त्रोारण के साथ उस र एक बार िल हछडकता िै। दूसरे हदन अक्तस्थयों ंको एकहत्रत कर उन्ें हकसी नदी में हिसहिपत कर हदया िाता िै। िो लोग समथप िैं, िे िाराणसी या रिरिार िा कर गंगा में अक्तस्थ-हिसिपन करते िैं।

ऐसा हिश्वास हकया िाता िै हक हिस मृतक के र्िदेिष को गंगा में प्रिाहित हकया िाता िै, उसे आध्याक्तिक प्रकिा से आप्लाहित उिर लोकों ंकी प्राक्तप्त िोती िै और अन्ततः िि मुि िो िाता िै।

डर्तरो ंके दो वगप

मृतुयु के र्िात् तत्क्षण ििी अहग्न, िायु तथा आकिा से हनहमपत अहतिाहिक नामक दिे धारण कर लेता िै। इसके र्िात् भू-लोक में उसके िारा सम्पन्न घोर र्ार्ों ंतथा र्ुण्यकमों के अनुरूर् उसे नारकीय दुःखोर्भोग के हलए यातना-दिे तथा स्वहगपक सुखोर्भोग के हलए हदव्य दिे की प्राक्तप्त िोती िै। यातना-दिे िायु-तत्त्व-प्रधान एिं हदव्य दिे अहग्न-तत्त्व-प्रधान िोती िै। ििी को हर्तृ-लोक में र्हुँचने में एक िषप लगता िै।

हर्तरों ंके दो िगप िोते िैं। प्रथम िगप के हर्तरों ंको हदव्य हर्तर किते िैं। ये हर्तृ-लोक के अहधर्हत िोते िैं। हितीय िगप के हर्तरों ंको मानि-हर्तर किा िाता िै िो हर्तृ-लोक में मरणोर्रान्त र्हुँचते िैं। ब्रह्मा सभी का हर्तामि िै। आहद प्रिननकताप िोने के कारण कश्यर् तथा अन्य प्रिार्हत भी हर्तर िैं। हर्तृ-लोक भिुलोक के नाम से िाना िाता िै।

हर्तर िब्द का अथप मुख्यतः हनकटतम र्ूिपि–िैसे माता-हर्ता आहद–िोता िै। सम्यक् श्राद्ध हर्तरों ंकी तीन र्ीहढ़यों ंया समस्त हर्तरों ंके हलए हकया िाता िै। हर्ता, हर्तामि तथा प्रहर्तामि को तीन हर्ण्ड अहर्पत हकये िाते िैं और सिपप्रथम दो ब्राह्मणों ंको भोिन कराया िाता िै। भोिन के आदान-प्रदान से सात र्ीहढ़याँ र्ारस्पररक रूर् से एक-दूसरे को प्रभाहित कर सकती िैं।

हर्तृ-र्क्ष और मिालया अमािस्या

आहश्वन मास के कृष्ण र्क्ष को हर्तृ र्क्ष की संज्ञा दी गयी िै। इस मास का यि र्क्ष हदिंगत र्ूिपिों ंको हर्ण्ड दान देने के हलए र्हित्र एिं िास्त्र-सम्मत माना िाता िै और ििाँ तक इस र्क्ष के अक्तन्तम हदन का सम्बन्ध िै, इसे अन्त्येहष् िैसे संस्कारों ंके हलए सिापहधक मित्त्वर्ूणप समझा िाता िै।

सामान्यतः आि भी र्रम्परािादी हिन्दू प्रत्येक अमािस्या को हदिंगतिाओं ंके हलए अर्घ्प एिं तर्पण का अनुष्ठान हकया करते िैं। िास्त्रानुमोहदत अनुष्ठान भी मृतुयु-हदिस र प्रत्येक िषप हकये िाते िैं। इसे श्राद्ध कमप किा िाता िै। इस क्तस्थहत में इन अनुष्ठानों ंको हिहेष रूर् से आहश्वन मास के कृष्ण र्क्ष में िी सम्पन्न करने का क्ा मित्त्व िै? िस्तुतः उि र्क्ष में सम्पन्न हकये िाने िाले अनुष्ठानों ंका प्रभाि अत्यहधक हिहिष् िोता िै। भगिान् यम के एक िरदान के कारण ये आहुहतयाँ हर्तरों ंतक तत्काल एिं प्रत्यक्ष रूर् से र्हुँच िाती िैं। िरदान का यि प्रसंग हनम्नांहकत िै :

हर्तृ-र्क्ष का उद्गम
मिाभारत से उधृत एक कथा

मिाभारत का प्रख्यात नायक दानिीर कणप अर्ने भौहतक िरीर के र्रत्याग के र्ात् उितर लोकों ंमें ऊध्वपगमन करता हुआ योद्धाओं ंके लोक में र्हुँचा। ििाँ ििहितिास्था में हकये गये उसके असाधारण दान के र्ुण्य के फलस्वरूर् उसे उसके दान से सिस्रगुना अहधक स्वणप तथा रत के बृिद् भण्डार हमले। कणप की दान-राहि असीम थी, हकन्तु उससे अन्न-दान की उर्ेक्षा िो गयी थी। इसके र्ररणामस्वरूर् उसके चतुहदपक् स्वणप तथा रत की राहि तो एकत्र िो गयी; हकन्तु उसकी तुहष् के हलए उसे अन्न निीं ंप्राप्त िो सका। उसने इसके हलए यमरि से प्राथपना की। इसके प्रत्युत्तर में यमरि ने अन्न-दान की स्िूप-उर्ेक्षा के र्ररमािपन के हलए उसे एक बार र्ुनः चौदि हदनों ंके हलए भू-लोक में भेि हदया। कणप मृत्युु-लोक में िा कर ब्राह्मणों ं तथा हनधपनों ंको चौदि हदनों ंतक भोिन कराता रिा। इसके अहतररि उसने अक्तन्तम हदन मिालया को िल-तर्पण एिं अन्य हिहित अनुष्ठान भी हकये। इस र्क्ष के अन्तगपत उसने भू-लोक में िो अनुष्ठान हकये थे, उनके फलस्वरूर् उसके अभािों ंका हनराकरण िो गया। यि आहश्वन मास का कृष्ण र्क्ष था।

यमरि की कृर्ा से तब से एक ऐसी व्यिस्था का प्रचलन िो गया, हिसके अनुसार इस र्क्ष-हििेष में हकये गये इन अनुष्ठानों ंसे हनम्नांहकत हिलक्षण फल प्राप्त िोने लगे। इस अिहध में हदया गया हर्ण्ड-दान सभी हदिंगत आत्माओं ंको, चािे िे र्ाररिाररक दृहष्कोण से हर्ण्ड-दान करने िाले व्यक्ति के प्रत्यक्ष सम्बन्धी िों ंया न िों, ं प्राप्त िोने लगा। हर्तृ-र्क्ष की अमािस्या को हकया हुआ हर्ण्ड-दान हनस्सन्तान व्यक्तियों ंकी हदिंगत आत्माओं ं तक को प्राप्त िोने लगा। िो लोग र्ोर्कार तथा अन्न-दान के हिरत रिते थे और इसके फलस्वरूर् हिन्हें मरणोर्रान्त हर्तृलोक में इन सुख-सुहिधाओं ंसे िंहचत िोना र्डता था, िे भी इन अनुष्ठानों ंसे लाभाक्तन्वत िोने लगे। हिन लोगों ंकी मरण-हतहथ अज्ञात रिती िै और हिन लोगों ंका िाहषपक श्राद्ध सम्पन्न निीं ंिो र्ाता, उन्हें भी हर्तृ-र्क्ष का हर्ण्ड-दान प्राप्त िोता िै। हिन व्यक्तियों ंकी मृत्युु भयंकर दुघपटनाओं ंके कारण या अस्वाभाहिक रूर् से िोती िै और हिसके फलस्वरूर् हिनकी हदिंगत आत्माएँ सामान्य रूर् से हर्ण्ड-दान निीं ंग्रिण कर र्ातीं, ं उनको भी हर्तृ-र्क्ष का हर्ण्ड-दान प्रत्यक्ष रूर् से प्राप्त िोता िै। िबसे मिान् कणप ने आहश्वन र्क्ष का यि अनुष्ठान प्रारम्भ हकया, तभी से यमरि के उिररदान फहलत िोने लगे। हिन्दू आि भी इस र्क्ष के अनुष्ठान को अत्यहधक श्रद्धा और कठोर हनयम के साथ सम्पन्न करते िैं। इस अिहध में िे प्रहतहदन तीन बार स्नान तथा आंहिक उर्िास करते िैं। सिपहर्तृ अमािस्या को सारे अनुष्ठानों ंका सम्पादन िोता िै और प्रचुर मात्रा में दान हदया िाता िै।

डदवांगत आत्माओ ंकी तुडि

मिालया अमािस्या का हदन सभी हिन्दुओं ंके हलए मिान् अथपित्ता और मित्त्व का हदन िै। इस िाहषपक उत्सि के अिसर र्र स्िूिों ंकी हदिंगत आत्माओं ंकी तुहष् तथा िाक्तन्त के हलए िाहदपक प्राथपना की िाती िै। हिन्दू- इहतिास के अनुसार मिालया अमािस्या के हदन सूयप तथा चिमा का र्रस्पर हमलन िोता िै और सूयप कन्या राहि में प्रिेि करता िै। उस हदन हर्तर िमारे स्िूिि यम-लोक-क्तस्थत अर्ने हनिास-स्थान का र्ररत्याग कर मृत्युु-लोक में उतर आते िैं और अर्ने िंििधरों ंके घरों ंमें हनिास करते िैं।

अमािस्या से र्ूिप का र्क्ष अथापत् प्रहतर्दा से अमािस्या तक का काल हर्तरों ंकी तुहष् के हलए हकये िाने िाले र्हित्र अनुष्ठानों ंके हलए हििेष रूर् से हनधापररत हकया गया िै। इस कृष्ण र्क्ष में हर्तरों ंअथापत् हदिंगत आत्माओं ंके सम्मान में हकये िाने िाले अनुष्ठान गया में हकये िाने िाले अनुष्ठानों ंके समकक्ष िी िोते िैं। इन समस्त अनुष्ठानों ंका प्रयोिन हर्तरों ंका स्िूिन एिं उनकी इच्छाओं ंकी तृक्तप्त िै, ताहक िे िषप की िेष अिहध में िाक्तन्तर्ूिपक रि सकें।

निरात्र या नौ-हदिसीय दीं-स्लून

धाहमपक अनुष्ठान, रारम्पररक स्लून एि व्रत समयानुसार एक से अहधक दृहष् से मित्त्वरूणप िोते िैं। ईश्वर की आराधना िोने के अहतरर ये िीन्त अतीत के स्मरणोत्सि तथा रिस्यादी हनिपचन के अनुसार लक्षणिाक िोते िैं। इसके अहतरर से आि-साक्षात्कार के मागप र िी के हिहिष् र्थ-प्रदिपक प्रकाि स्तम्भ भी िैं।

बाह्यतः दीं या माँ का नौ हदिसीय स्लून, हिसे निरात्र-स्लू किा िाता िै, िहियोत्सि के रूर् में प्रचहलत िै। िुम्भ-हनिुम्भ के नेतृत्व में दैिय राक्षसों िारा घोहषत युद्ध में मिाकाली की िहिय के उर्लक्ष्य में यि नौ-हदिसीय स्लू-अचाप उन्हीं मिाकाली को समहर्पत की िाती िै। हकन्तु अर्नी साधना की अिहध में मिामाया के हिहभन्न रूर्ों के स्लून के हलए आध्यात्त्मिक साधक िारा हकये गये नौ राहत्रयों के तीन भागों में हिभािन के मूल में ी सत्य हनहित िै, िि भव्य िोने के साथ-साथ रूणपतया िैज्ञाहनक भी िै। ब्रह्माण्डीय स्तर र इसका मित्त्व यि िै हक यि मनुष्य के ईश्वर से सायुज्य या ीत्व से िहित्व की ओर हिकास के हिहभन्न चरणों की ओर िमारा ध्यान आकहषपत करता िै। ििाँ तक इसके िैयत्त्क अहभप्राय या मित्त्व का सम्बन्ध िै, यि व्यक्ति की आध्यात्त्मिक साधना की अर्ेहक्षत हदिा की ओर संकेत करता िै।

मानिीय अत्स्तत्व का केंद्रीय प्रयोिन िैिी सत्ता अथापत् ब्रह्म से अर्ने िाश्वत तादात्म्य से र्ररहचत िोना तथा स्वयं को उस हदव्य सत्ता के अनुरूर् हिकहसत करना िै। िैिी सत्ता में आत्यत्न्तक रूणपता हनहित िै िो रूणपतः हिशुद्ध अथापत् हनरंिन िै। उस िैिी सत्ता के साथ अर्ने सायुज्य से र्ररहचत और उसके तूर् िोना उस (िैिी) सत्ता के साथ हनहित रूर् से समस्वरता प्राप्त कर लेना िै। अतः प्रारम्भ में साधक को उन असंख्य अिुद्धताओं तथा आसुरी तत्त्वों से मुि िोना िै िो उसके राहथपि िरीर-धारण की अिस्था में उसके साथ हचर्ट गये िैं। इसके र्श्चात् उसे उदात्त, िुभ एिं हदव्य गुण प्राप्त करने िैं। इस प्रकार उसके हिशुद्ध िो िाने तथा सत्त्वगुण से सम्पन्न िोने के र्श्चात् िि ज्ञान की दीत्प्त से उसी प्रकार उद्दीप्त िो उठता िै हिस प्रकार हकसी रूणपतः िान्त सरोिर का र्ारदिी िल सूयप की प्रोज्ज्वल हकरणों से द्युहतमान् िो िाता िै।

दुगाप-रूजा र्ार्ों का डनराकरण

साधना की इस प्रहक्रया में दृढ़ संकल्प, स्लूप-संकत्त्ल्पत प्रयास तथा श्रमसाध्य संघषप की अर्ेक्षा िै। दूसरे िब्दों में इसके हलए असीम िक्ति अर्ेहक्षत िै। यि भगिती माँ (िो ब्रह्म की र्राित्क्त िै) िी िै िो साधक के माध्यम से हक्रयािील रिती िै। प्रथम तीन हदनों तक माँ का स्लून हिकराल िक्ति-रूर् दुगाप के रूर् में हकया िाता िै। आर्में िो कुछ भी अिुद्धता, र्ार् या दोष िै, उसके हनराकरण के हलए आर् माँ दुगाप से प्राथपना करते िैं। यि साधक में हिद्यमान र्ाहिक प्रिृहत्त एिं हनम्नतर आसुरी प्रकृहत के हिरुद्ध संघषप कर उसे नष् कर देती िै। िि ऐसी िहिमािक्ति िै िो आर्की साधना की उसमें उत्त्स्थत िोने िाली समस्त हिघ्न-बाधाओं से रक्षा करती िै। इस प्रकार प्रथम तीन हदनों का उर्योग बल अथापत् काषाय की हनिृहत्त तथा अहनष्कर मानहसक िासनाओं के हनराकरण के हलए हकये िाने िाले संकत्त्ल्पत प्रयास तथा संघषप के हलए िोता िै। यि निरात्र का प्रथम चरण िै हिसमें माँ के ध्वंसात्मक स्वरूर् का स्लून िोता िै।

लक्ष्मी-रूजन सद्गुणो की सम्प्रात्प्त

अिुद्ध िासनाओं, दुष्प्रिृहत्तयों अथापत् मनुष्य के हनषेधात्मक र्क्ष र िहिय-प्रात्प्त के र्श्चात् इनके स्थान र रचनात्मक गुणों की सम्प्रात्प्त के हलए िै। इसके अन्तगपत भगिद्गीता में भगिान् कृष्ण िारा प्रोक्त दैिी सम्पदा अथापत् हदव्य गुणों को प्राप्त करना र्डता िै। साधक के हलए यि अत्यािश्यक िोता िै हक िि इन समस्त सद्गुणों

की प्राक्तप्त एिं इनके हिकास के हलए प्रयास करता रि। इस प्रयास में सफलता प्राप्त िोने र उसे दुलपभ ज्ञानरत्न प्राप्त िोता ि। इस रत्न का मूल्य चुकाने के हलए उसे अर्ार आध्याक्तिक सम्पदा को एकत्र करना र्डता ि। हिरोधी गुणों के हिकास (प्रहतर्क्ष भािना) के अभाि में आसुरी प्रकृहत र्ुनः बलिती िो उठती ि। अतः साधक की साधना के हलए यि हितीय चरण र्िूर्िती चरण की भााँहत िी मित्त्वर्ूणप ि। इन दोनों चरणों के बीच का मूलभूत अन्तर यि ि हक ििााँ प्रथम चरण में अर्ने व्यक्तित्व के महलन एिं अिम्मन्यतार्ूणप हनम्नतर र्क्ष का संकक्तल्पत भाि से हनष्ठुरतार्ूिपक दमन करना र्डता ि ििााँ हितीय चरण में िुहचता के हिकास के हलए सुसम्बद्ध तथा सनुतुहलत प्रयास करने र्डते िैं। साधक की साधना के इस रमणीयतर र्क्ष का हचत्रांकन मााँ लक्ष्मी के र्ूिन में

िोता ि। िि अर्ने भि को अक्षय सम्पहत्त अथापत् दैिी सम्पदा प्रदान करती ि। लक्ष्मी ब्रह्म का सम्पहत्त-प्रदायक स्वरूर् ि। िि स्वयं र्हित्रता की प्रहतमूहतप ि। इस प्रकार इस हदव्य हत्र-हदिसीय हितीय चरण में लक्ष्मी-र्ूिन सम्पन्न हकया िाता ि।

सरस्वती-र्ूजन
सवोच्च ज्ञान का उदय

दुष्प्रिृहत्तयों के उन्मूलन तथा हिशुद्ध, साक्तत्त्वक एिं हदव्य गुणों के हिकास में सफलता प्राप्त करने के र्श्चात् साधक एक अहधकारी व्यक्ति िो िाता ि। इस क्तस्थहत में िि र्र ज्ञान के प्रकाि की सम्प्राक्तप्त के हलए तत्पर िो िाता ि। अब िि हदव्य ज्ञान की उर्लक्तब्ध के हलए स्वयं को सक्षम र्ाता ि। इस चरण के अन्तगपत दैिी सरस्वती

(िो हदव्य ज्ञान की साकार अहभव्यक्ति और ब्रह्मज्ञान का मूतप रूर् ि) का श्रद्धार्ूणप र्ूिन हकया िाता ि। उसकी

हदव्य िीणा से भव्य िीणाक् एिं प्रणि के उदात्त स्तर हनःसृत िोते िैं। िि अर्ने हदव्य नाद के ज्ञान-दान के र्श्चात् अर्ने उज्वल एिं तुहहनित् श्वेत िस्त्र के अनुरूर् र्ूणप आत्म-ज्ञान प्रदान करती ि। इस प्रकार ज्ञानदात्री दैिी सरस्वती के तुहष्करण के साथ इस तृतीय चरण का समार्न िोता।

दििााँ हदन अथापत् हिियादिमी दैिी सरस्वती की कृर्ा के ज्ञान के अितरण िारा प्राप्त िीिनुमुक्ति के उर्लक्ष्य में व्याप्त हियोल्लास का द्योतक ि। अब िीि (सक्तच्चदानन्द के) हिशुद्धतम आत्म-भाि में प्रहतहष्ठत िो िाता ि। यि हदन अर्नी लक्ष्य-हसक्तद्ध या हििय के उर्लक्ष्य में मनाया िाता ि। सुदूर आकाि में मानो हियकेतु फिराने लगता ि। इस अिसर र्र साधक के कण्ठ से ये स्वर स्वतः फूट र्डते िैं-"मैं 'िि' हाँ। मैं 'िि' हाँ;
डचदानिरूर्ः डशवोऽम्ि, डशवोऽम्ि; डचदानिरूर्ः डशवोऽम्ि, डशवोऽम्ि।"

आध्यास्तत्मक सफलता को सुडनडित करने वाला एक सांयोजन

साधक के आध्याक्तिक हिकास में इस संयोिन की भी एक हिहिष्ट अथपित्ता ि। यि प्रत्येक साधक के हिकास के अर्ररिायप चरणों का द्योतक ि। इन चरणों से िोते हुए आध्याक्तिक क्रम-हिकास की यात्रा करना प्रत्येक साधक के हलए आिश्यक ि। िम एक सोर्ान के र्श्चात् दूसरे सोर्ान र्र आरूढ़ िोते िैं; हकन्तु यहद िम प्रथम सोर्ान के र्श्चात् अर्नी साधना की यात्रा को लघुर्थित करने के हलए अगले सोर्ानों की उर्ेक्षा कर देते िैं,

तो र्ररणाम हनहित रूर् से दुःखद िोते िैं। आिकल अनेक अज्ञ साधक आि-िुक्तद्ध तथा दैिी सम्पत् की सम्प्राक्तप्त िैसी प्रारक्तम्भक र्ूिपर्ेक्षाओं की र्ूहतप के हबना िी र्ूणप आत्म-ज्ञान की प्राक्तप्त के हलए आतुर िो उठते िैं।

तत्पश्चात् यिी लोग इस बात का उलािना देते िैं हक साधना-र्थ र्र उनकी िांहछत प्रगहत निीं िो रिी ि। उनकी यि प्रगहत कैसे सम्भि िो सकती ि? िब तक अिुद्धताओं का र्ररमािपन एिं हनष्कलुषता का हिकास निीं िोता, तब तक ज्ञान का अितरण असम्भि ि। अर्हित्र भूहम र्र साक्तत्त्वकता के र्ौधे का हिकास निीं िो सकता।

इस संयिोन या व्यिस्था के अनुरूर् आचरण करने से आर्के प्रयास हनहित रूर् से सफल िोंगें। यि
आर्का एकमात्र मागप िै। मुक्ति के हलए इसके अहतररि अन्य हकसी भी मागप का हनधापरण निीं ंहुआ िै। दुगुपणों ंको नष् करके इनके स्थान र्र स्वयं में इनके प्रहतर्क्षी सद्गुणों ंको हिकहसत कीहिए। इस प्रहक्रया के माध्यम से आर्को उस रूणपत्व की उर्लक्ति िोगी, हिसके र्ररणामस्वरूर् आर् ब्रह्म से अहभन्न िो िायेंगे। आर्के िीिन का र्रम उद्देश्य यिी िै। इन उर्लक्तियों ंके फलस्वरूर् आर् समस्त ज्ञान-भण्डार के स्वामी िो िायेंगे। आर् अर्नी
सिपज्ञता तथा सिपिक्तिमत्ता को अनुभि करने लगेंगे। आर् सभी िसुतुओं ंएिं व्यक्तियों ंमें स्वयं को िी र्ाने लगेंगे। आर् िीिनु्मि िो िायेंगे। आर् िन्म-मरण के चक्र तथा संसार-रूर्ी दानि र्र हििय प्राप्त कर लेंगे। अब आर् सांसाररक क्ेिों ंतथा िन्म-मरण से सिपथा असमूपृि िो िायेंगे। हिियश्री आर्का िरण करेगी।

हदव्य माता की िय िो! िि आर्को क्रहमक रूर् से आध्याक्तिक सोर्ान के उितम हिखर र्र प्रहतहष्ठत करके र्रमािा से एकीकृत करे!

सप्तम अध्याय

हिन्दू-उर्ासना

उर्ासना

उर्ासना ईश्वर के प्रहत भक्ति, श्रद्धा और प्र्ेम की अहभव्यक्ति िै। यि ईश्वर से सायुज्य की तीव्र लालसा और उससे ाहिदपक तदाकाररता की आध्याक्तिक हर्ासा की द्योतक िै। भि भगिान् से उसके प्रहत उत्कट भक्ति की सम्प्राक्तप्त तथा अज्ञानिारण के अर्नयन के हलए प्राथपना करता िै। ििि उसके सौम्य अनुग्रि के हलए लालाहयत रिता िै। ििि उसके हनरन्तर नाम-स्मरण, उसके मन्त्रों ंके िर्, उसके गुणगान तथा उसके कीतपन में संलग्न रिता और उसकी लीलाओं ंका श्रिण तथा गायन करता िै। ििि उसके भिों ंकी सुसंगहत में उसके धाम में हनिास करता िै। ििि उसके रूर्, उसकी प्रकृहत, उसके गुणों ंऔर उसकी लीलाओं ंर्र अर्ना ध्यान केक्तित हकये रिता िै। ििि अर्ने नेत्रों ंको बन्द करके प्रभु के स्वरूर् का मानस-दिपन करता िै तथा र्म िाक्तन्त और चरम आनन्द का उर्भोग करता िै।

उर्ासना ईश्वर की उर्क्तस्थहत में रिने अथिा उसके साहन्नध्य में हुँचने के हलए हकया गया उर्ासक का प्रयास िै। 'उर्ासना' का िाक्तब्दक अथप िै-ईश्वर के हनकटस्थ िोना। िास्त्रों ंतथा गुरु िारा उर्हदष् हिहध से अर्ने अभीक्तित आदिप या उर्ास्य देिता र् अर्ना ध्यान केक्तित करके उनकी ओर अग्रसर िोने को उर्ासना किा िाता िै। एक र्ात्र से अन्य र्ात्र में तेल डालते समय हगरते हुए तेल में िो प्रत्ययैकतानता िोती िै, ििी प्रत्ययैकतानता उर्ासक के हिचार में भी िोनी चाहिए। इसे तैलधारित् िोना चाहिए। इसमें िे सभी िारीररक तथा मानहसक अनुर्ालन एिं अभ्यास सहन्नहित िैं हिनके िारा हिज्ञासु आध्याक्तिकता के क्षेत्र में संयहमत और सन्तुहलत प्रगहत करता िै और अन्ततः उसे अर्ने हृदय में ईश्वरत्व की हिद्यमानता की प्रतीहत िोने लगती िै।

उर्ासना की उर्लक्तियाँ

प्रभु की उर्ासना से उर्ासक को हृदय की िुक्तद्ध, आध्याक्तिक स्पन्दनों ंकी समस्वरता, मन की सुक्तस्थरता, सगिों ंके र्ररमािपन तथा र्ररष्कार, र्ंचकोषों ंके समुहचत समायोिन और अन्ततः ईश्वर-साक्षात्कार या ब्रह्मािभि की सम्प्राहत िोती िै।

उर्ासना से भि ईश्वर के हनकट िो िाता िै। दूसरे िब्दों ंमें उसे प्रभु से संलार् करने की क्षमता भी प्राप्त िो िाती िै और उसका मन िुद्ध भाि तथा ईश्वर के प्रहत िुद्ध प्र्ेम से आप्लाहित िो उठता िै। यि मनुष्य को निैः िनैः हदव्य रूर् में रूर्ान्तररत कर देती िै।

उर्ासना से मनस्तत्त्व में र्ररितपन और रिस् तथा तमस् का हनराकरण िो िाता िै। फलस्वरूर्, मन साक्तत्त्वकता से ओत-प्रोत िो िाता िै। इससे िासना, तृष्णा, हिकार, काम, घृणा, क्रोधाहद का भी क्षय िोता िै। उर्ासना उर्ासक की अन्तमुपखी िृहत्त को िाग्रत कर देती िै। अन्ततः उसके माध्यम से ििि ईश्वर का सायुज्य प्राप्त कर िन्म-मरण के चक्र से मुि िो िाता िै। उर्ासना उसे अमरत्व तथा मुक्ति प्रदान करती िै।

भ्रमर-कीट-न्याय के अनुसार मन अर्ने ध्येय हिषय के साथ तूिर् िो िाता िै। आर्की प्रकृहत आर्के हिचारों ंके अनुरूर् िी िोती िै- यि एक अर्ररितपनीय मनोिैज्ञाहनक सत्य िै। उर्ासना में एक ऐसी रिस्यिाक अहचन्त्य िक्ति हनहित िै िो ध्याता तथा ध्येय को र्रस्पर अहभन्न कर देती िै।

भगिद्गीता में श्रीकृष्ण अिुपन से किते िैं-"िे र्रन्तर् अिुपन, मेरी अनन्य भक्ति से िी मेरा दिपन, मेरा ज्ञान तथा मुझमें रूणपतः अनुसूयूत िो िाना सम्भि िै" (११/५४)।

मिहषप र्तंहिल ने उर्ासना के मित्त्व र् अर्ने रियोग-सूत्रों ंमें कई स्थलों ंर् र्यापप्त बल हदया िै, क्योंहक उर्ासना रियोगी के हलए भी आिश्यक िै। रियोगी का एक अर्ना र्थ-प्रदिपक इष्टदेिता िोता िै— िैिे चािे योगेश्वर कृष्ण िों ंया योगीश्वर िंकर भगिान्। ईश्वर-प्रहणधान रियोग और हक्रयायोग का एक अंग िै। र्तंहिल किते िैं-"उर्ासना से मनुष्य समाहधस्थ िो सकता िै।"

आक्तिक उन्नयन, आध्याक्तिक प्रगहत तथा िीिन को धमोन्मुख बनाने के हलए हिन उत्प्रेरक उर्करणों ं की आिश्यकता िोती िै, उनमें उर्ासना मात्र एक अहनिायप आिश्यकता िी निीं,ं अहर्तु समाि के प्रत्येक िगप तथा श्रेणी के हलए लाभप्रद भी िै। इसका साधन भी सरल िै।

िैहिक र्िु तथा मानि के र्रस्पर सम्बन्ध का प्रश्न िै-भोिन, र्ान, हनिा, भय, मैथुनाहद उभयहनष्ठ िैं। िी िस्तुतः मनुष्य को यथाथप मानि या धमापहभमुख बनाती िै, िि िै धाहमपक चेतना। हिस मनुष्य का िीिन केिल बहिमुपखी तथा िासनाग्रस्त िै एिं िो हकसी प्रकार की उर्ासना निीं ंकरता, िि बाह्यतः मानि िरीर-धारी िोते हुए, भी यथाथपतः र्िु िी िै।

सगुणोर्ासना तथा हनगुपणोर्ासना

प्रतीक-उर्ासना तथा अिंग्रि-उर्ासना- ये उर्ासना के दो प्रकार िैं। प्रतीक-उर्ासना सगुणोर्ासना िै, बि हक अिंग्रि-उर्ासना हनगुपणोर्ासना िै हिसमें हनराकार तथा हनगुपण अक्षर या र्रात्पर ब्रह्म का ध्यान हकया िाता िै। िालग्राम, मूहतप तथा भगिान् राम, भगिान् कृष्ण, गायत्री देिी आहद के हचत्रों ंर् ध्यान केक्तित करना प्रतीक-उर्ासना िै। हिस्तृत नील िणप आकाि, सिपव्यार्ी िायु तथा सूयप का सिपव्यार्ी तेि अमूतप-उर्ासना के प्रतीक िैं। सगुणोर्ासना मूतप तथा हनगुपणोर्ासना अमूतप-उर्ासना िै।

भगिान् कृष्ण की लीलाओं ंका श्रिण, कीतपन या उनके नामों ंका गुणगान, प्रभु का अनिरत स्मरण, उनका र्ाद-सेिन, माल्यार्पण, िन्दन, प्राथपना, मन्त्रोच्चारण, आिसमर्पण एिं भगिद्भिों,ं मानिता तथा देि की नारायण-भाि से सेिा सगुणोर्ासना के अंग िैं।

आि-भाि से ॐ का गायन, आि-भाि से मानिता तथा देि की सेिा, आि-भाि या ब्रह्म-भाि से ॐ का मानहसक िर्, **'सोऽिम्'** या **'हशिोऽिम्'** का ध्यान या 'नेहत-नेहत' हसद्धान्त िारा माहयक चक्र को हनरस्त कर **'अिं ब्रह्मास्तस्म'** या **'तत्त्वमहस'** िैसे मिािाक्यों ंर् ध्यान केक्तित करना अिंग्रि-उर्ासना या हनगुपणोर्ासना िै।

सगुणोर्ासना भक्तियोग तथा हनगुपणोर्ासना ज्ञानयोग िै। सगुण (सहििेष) ब्रह्म तथा हनगुपण (हनहिपिेष) ब्रह्म के उर्ासकों ंको एक िी लक्ष्य की प्राक्तप्त िोती िै; र्रन्तु भक्तियोग की अर्ेक्षा ज्ञानयोग अहधक दुष्कर िै, क्योंहक इस आध्याक्तिक साधना के प्रारम्भ में िी देिाहभमान का र्ररत्याग कर देना र्डता िै। हिनमें देिाहभमान

ीं, उनके हलए अक्षर या अहिनिाी ब्रह्म की प्राक्तप्त अत्यहधक कहठन ि◌ै। इसके अहतररि हनराकार तथा हनगुपण ब्रह्म र्
मन को क्तस्थर करना अत्यन्त दु:साध्य ि◌ै। अक्षर या हनगुपण ब्रह्म की धारणा के हलए सुतीक्ष्ण, एकाग्र तथा सूक्ष्म
बुक्तद्ध की आिश्यकता ि◌ोती ि◌ै।

भक्तियोग में भाि

भक्तियोग ज्ञानयोग या आध्याक्तिक ध्यान की अर्ेक्षा अहधक सरल ि◌ै। भक्तियोग में भि प्रभु के साथ हनकट एिं प्रेमरूपण सम्बन्ध स्थाहर्त करके धीरे-धीर अर्नी प्रकृहत, रुहच तथा क्षमता के अनुसार भक्ति के छि
भािों ◌ंमें से हकसी एक भाि की साधना करता ि◌ै।

ान्ति-भाि, दास्य-भाि, सख्य-भाि, ि◌ात्सल्य-भाि, कान्ता-भाि और माधुयप-भाि भि के षड्लक्षण या
भगिान् के प्रहत उसके छि भाि ि◌ैं। प्रकार-भेद तथा भािनाक तीव्रता के ि◌ैहभन्य के कारण भाि र्रस्पर हभन्न
िोते ि◌ैं। इन हभन्न-हभन्न भािों ◌ंका ि◌गीकरण इनकी तीव्रता के अनुरूर् ि◌ोता ि◌ै। िहुि की माता-हर्ता के प्रहत ि◌ो
भािना ि◌ोती ि◌ै, ि◌ी भािना भगिान् के प्रहत प्रह्लाद तथा धुरुि की थी। यि ि◌ान्त-भाि ि◌ै। दास्य-भाि में भि का
आचरण एक दास की भााँहत ि◌ोता ि◌ै। उसका भगिान् ि◌ी उसका स्वामी ि◌ोता ि◌ै। ि◌नुमान् भगिान् के आदिप दास
ि◌ै। सख्य-भाि में समानता की भािना ि◌ोती ि◌ै। अिुपन और कुचेला में यिी भाि था। ि◌ात्सल्य-भाि में भि भगिान्
को िहुित् समझता ि◌ै। यिोदा तथा कौसल्या में क्रमिः श्रीकृष्ण तथा श्रीराम के प्रहत यिी भाि था। र्हत के प्रहत
र्त्नी का ि◌ो भाि ि◌ोता ि◌ै, उसे कान्ता-भाि किते ि◌ैं। सीता और रुक्तिणी में यिी भाि था। माधुयप-भाि इन समस्त
भािों ◌ंकी र्राकाष्ठा ि◌ै। इसमें प्रेम की तीव्रता के कारण प्रेमी-प्रेहमका एक ि◌ो ि◌ाते ि◌ैं। राधा और मीरा में इसी प्रकार
का भाि था।

माधुयप-भाि भक्ति का चरमोत्कषप ि◌ै। इसमें भगिान् में भि का अन्तलपयन ि◌ो ि◌ाता ि◌ै। इस भाि को
प्राप्त भि भगिान् की आराधना, उसका हनरन्तर स्मरण, उसका कीतपन, उसकी महिमा का ि◌णपन, उसके नाम
की आिृहत्त, उसका मन्त्रोिारण, उसकी प्राथपना एिं उसको दण्डित् प्रणाम करता ि◌ै। ि◌ि उसकी लीलाओं ◌ंका
श्रिण, उसके प्रहत अप्रहतबक्तन्धत तथा उन्मुि भाि से आिसमर्पण करता और उसी कृर्ा तथा उसका साहन्नध्य
प्राप्त करके अन्ततः उसमें अन्तलीन ि◌ो ि◌ाता ि◌ै।

माधुयप-भाि में भि तथा भगिान् का हनकटतम सम्बन्ध ि◌ोता ि◌ै। कान्ता-भाि तथा माधुयप-भाि में
हिषयासक्ति के हलए कोई स्थान निीं ◌ंि◌ोता। ये भाि कामुकता से रूणपतः असमृपि ि◌ोते ि◌ैं। कामुक या दूहषत भाि-
प्रिण लोगों ◌ंके हलए इन दो भािों ◌ंका ज्ञान असम्भि ि◌ै; क्ोंहक इनके मन में दूहषत भािनाएाँ या हनरन्तर कामुक
प्रिृहत्तयााँ बद्धमूल ि◌ो चुकी ि◌ोती ि◌ैं। सूफी सन्तों ◌ंमें भी प्रेमी-प्रेहमका का माधुयप-भाि ि◌ोता ि◌ै। ि◌यदेि-रहचत
गीतगोहिन्द माधुयप-रस से रूणप ि◌ै। रिस्यिाहदयों ◌ंि◌ारा प्रयुि प्रेम की भाषा का अथप ठीक-ठीक समझना सांसाररक
व्यक्तियों ◌ंके हलए असम्भि ि◌ै। इस भाषा का ज्ञान केिल गोहर्यों,◌ं राधा, मीरा, तुकाराम, नारद, ि◌ाहफज तथा उनके
िैसे अन्य मिान् भगिद्-भिों ◌ंके हलए ि◌ी सम्भि ि◌ै।

रूि तथा इष्टदेिता

रूि िैधी उर्ासना के हलए प्रयुि एक सामान्य र्ाररभाहषक ि◌ब्द ि◌ै। इसके हलए अचपन, ि◌न्दन,
भािाहद ि◌ैसे अनेक समानाथपक ि◌ब्दों ◌ंका प्रयोग हकया ि◌ाता ि◌ै; हकन्तु ये ि◌ब्द रूि के कुछ हनहित र्क्षों ◌ंके
द्योतक ि◌ैं। भि का इष्टदेिता या देिता का कोई हिहिष् रूर् रूि का हिषय ि◌ोता ि◌ै। ि◌ैष्णिों ◌ंके हलए नारायण या

हिषुणु या राम या कृष्ण के रूर् में उनके हिग्रि, िि ों ंके हलए हिि के अष्-रूर् तथा िि ों ंके हलए दिी उर्ास्य िै।

कभी-कभी भि रूिा के हलए अर्ने कुलदेिता या कुलदेिी का चयन कर लेता िै और कभी-कभी देिता का चुनाि उसके गुरु िारा िोता िै। हकन्िीं ंअिसरों ंर् र िि स्वयं ऐसे देिता का चयन कर लेता िै िो उसकी भािनाओं ंको सिापहधक प्रभाहित करते िैं। ििी उसके इष्देिता िोते िैं।

बाह्य रूिा में हकसी प्रहतमा, हकसी हचत्र या हकसी प्रतीक िैसे हिषय या आलम्बन को प्रयुि हकया िाता िै। उदािरणाथप हिषुणु-रूिा के हलए िालग्राम तथा हिि-रूिा के हलए हलंग का प्रयोग हकया िाता िै।

रूिा का हिषय सभी िस्तुएँ िो सकती िैं; हकन्तु स्वभाितः इसके हलए उन्िीं ंिस्तुओं ंका चुनाि हकया िाता िै िो उर्ासक के मन को सिापहधक प्रभाहित करती िैं। प्रहतमा या उर्योगी प्रतीक भि के मन में देिता के हिचार को िाग्रत कर सकता िै। िालग्राम-हिला मन की एकाग्रता को सरलतार्ूिपक िाग्रत कर सकती िै। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में हकसी प्रतीक या प्रहतमा के प्रहत अनुराग िोता िै। मूहतप (हिग्रि), सूयप, अहग्न, िल, गंगा, िालिग्राम तथा हलंग-ये सब ईश्वर के प्रतीक िैं िो साधकों ंके मन की एकाग्रता और हृदय की िुक्तद्ध के हलए उर्योगी िैं। प्रहतमाओं ंया प्रतीकों ंकी हिहिष क्षमता के प्रहत अर्नी-अर्नी आस्था के कारण उर्ासकों ंका व्यक्तिगत स्तर र् र उनकी और रुझान िो िाता िै। मनोिैज्ञाहनक दृहष् से इसका अथप यि िै हक मन हकसी हिहिष प्रतीक या प्रहतमा के माध्यम से इक्तच्छत हदिा में िी सुचार रूर् से कायप करता िै।

मानिता के अहधकांि का मन या तो अर्हित्र िै या दुबपल। अतः इन लोगों ंकी उर्ासना का हिषय अहनिायप रूर् से र्हित्र िोना चाहिए। िो हिषय िासना तथा घृणा की मनोिृहत्तयों ंके हलए उत्तेिक िोते िैं, उनसे दूर रिना चाहिए; हकन्तु कोई उन्नत भि हिसका मन हििुद्ध िै और िो प्रत्येक स्थान र् र या प्रत्येक िस्तु में हदव्य सत्ता का दिपन करता िै, हकसी भी िस्तु की उर्ासना कर सकता िै।

रूिा में हकसी हदव्य रूर् का प्रहतहनहधत्व करने िाली प्रहतमा या हचत्र को उर्ास्य हिषय के रूर् में प्रयुि हकया िाता िै। इस प्रहतमा की आराधना की िाती िै। प्रहतमा, हिला या हिग्रि या मूहतप-ये सभी आलम्बन हकसी ऐसे देिता-हििेष का प्रहतहनहधत्व करते िैं हिसका इनमें आिािन हकया िाता िै। हलंग हिि का प्रहतहनहधत्व करता िै। यि अहितीय तथा हनराकार ब्रह्म का प्रतीक िै। श्रुहत में आया िै : **"एकमेवाडितीयां ब्रह्म**-एकमात्र ब्रह्म की सत्ता िै, ब्रह्म के अहतररि दूसरी हकसी िस्तु की सत्ता निीं ंिै।" यिाँ िैत निीं ंिै। हलंग नेत्रों ंके हलए उज्ज्वल तथा आकषपक एिं मन की एकाग्रता के हलए उर्योगी िै।

िालिग्राम हिषुणु की प्रहतमा तथा उसका प्रतीक िै। भि हििेष की अहभरुहच के अनुसार श्रीराम, श्रीकृष्ण, काहतपकेय, गणेि, िनुमान्, दत्तात्रेय, सीता, लक्ष्मी, राधा, दुगाप, काली, सरस्वती आहद की प्रहतमाओं ंका हिधान िै।

हिषुणु तथा उनके अितारों ंएिं िक्ति एिं हिि की प्रहतमाएँ ऐसी लोकहप्रय िैं हिनका रूिन मक्तन्दरों ंतथा घरों–दोनों ंस्थानों ंर् र िोता िै। हतरुर्हत, र्ण्ढरर्ुर, र्लहन तथा कहतरगाम आहद मक्तन्दरों ंके हिग्रि िक्तिमान् देिता िैं। िे प्रत्यक्ष देिता िैं। िे भिों ंको िरदान देते, रोगमुि करते और उन्िें दिपन देते िैं। इन देिताओं ंकी लीलाएँ अद्भुत िैं। हिन्दू-धमप बहुदेििादी निीं ंिै। हिि, हिषुणु, ब्रह्मा तथा िक्ति एक िी ईश्वर के हिहभन्न रूर् िैं।

ईश्वर अर्ने भिों ंके समक्ष स्वयं को हिहभन्न रूर्ों ंमें अनािृत करता िै। िि ििी रूर् ग्रिण करता िै हिसका चयन भि अर्नी उर्ासना के हलए हकये रिता िै। यहद आर् उसकी रूिा चतुभुपि िरर के रूर् में करते

ौं, तो िि आर्के समक्ष िरर के रूर् में प्रकट िोगा और यहद आर् उसकी रूिा हिि के रूर् में करते िैं, तो िि आर्को हिि के रूर् में दिपन देगा। यहद आर् उसकी रूिा माँ दुगाप या काली के रूर् में करते िैं, तो िि आर्के समुमुख दुगाप या काली के रूर् में प्रकट िोगा, यहद आर् उसकी रूिा भगिान् राम, भगिान् कृष्ण या भगिान् दत्तात्रेय के रूर् में करते िैं, तो िि आर्के हनकट राम, कृष्ण या दत्तात्रेय के रूर् में उर्त्तस्थत िोगा और यहद आर् उसकी रूिा ईसा या अल्लिा के रूर् में करते िैं, तो िि आर्के समक्ष ईसा या अल्लिा के रूर् में प्रकट िोगा।

हिि या िरर, गणेि या सुब्रह्मण्य या दत्तात्रेय या भगिान् का कोई भी अितार, राम या कृष्ण, सरस्वती या लक्ष्मी, गायत्री या काली, दुगाप या चण्डी-इनमें से आर् हकसी की भी रूिा कर सकते िैं। ये सब एक िी ईश्वर के रूर् िैं। उर्ास्य का कोई भी नाम और रूर् िो-उर्ासना ईश्वर की िी िोती िै। अन्तव्यापर्ी ईश्वर िी अर्ने हिग्रि में अहधहष्ठत िो कर रूिा ग्रिण करता िै। यि हनतान्त भ्रान्त धारण िै हक एक रूर् हकसी अन्य रूर् से श्रेष्ठतर िै। सभी रूर् एक तथा समतुल्य िैं। हिि, हिष्णु, गायत्री, राम, कृष्ण, देिी तथा ब्रह्म एक िी िैं। एक िी ईश्वर िम सबका उर्ास्य िै। िो हिहभन्नता दृहष्गत िोती िै, उसका कारण उर्ास्य हिग्रिों ंकी र्रस्पर हिहभन्नता न िो कर उर्ासकों ंकी र्रस्पर हिहभन्नता िै। अज्ञान के कारण िी हिहभन्न धमों एिं सम्प्रदायों ंके अनुयायी र्रस्पर संघरषपरत रिते िैं।

मूहतप-रूिा का दिपन तथा मित्त्व

मूहतप-निदीहक्षत आध्याहत्मक साधकों ंका आलम्बन

मूहतप निदीहक्षतों ंके हलए एक आलम्बन िै। यि उनके आध्याहत्मक िीिै का आश्रय-स्थान िै। प्रारम्भ में उर्ासना के हलए कोई रूर् या प्रहतमा आिश्यक िोती िै। उर्ासना के हलए यि र्रमािा का एक बाह्य प्रतीक िै। यि र्रमािा का स्मरण कराती िै। भौहतक प्रहतमा मानहसक हिचार को उत्प्रेररत करती िै। मूहतप-रूिा से मन सुत्तस्थर तथा सनुतुहलत िोता िै। उर्ासक के हलए असीमता, सिपिहक्तमत्ता, सिपज्ञता, हििुद्धता, रूणपत्व, स्वातन्त्र्य, र्ािनता, सत्य तथा सिपव्यार्कता की अिधारणाओं ंसे संयुि िोना अहनिायप िै। असीम या हनरर्ेक्ष सत्ता र्र ध्यान केत्तित कर र्ाना सबके हलए सम्भि निीं ंिै। अहधकांि लोगों ंके हलए एकाग्रता के अभ्यास िेतु मूतप रूर् आिश्यक िै। सिपत्र र्रमािा का दिपन और उसकी उर्त्तस्थहत का भान सामान्य िन के हलए असम्भि िै। आधुहनक मनुष्य के हलए मूहतप-रूिा उर्ासना की सरलतम हिहध िै।

मन की त्तस्थरता के हलए हकसी प्रतीक की अहनिायपता असत्तन्दग्ध िै। आश्रय के हलए मन को एक आलम्बन की आिश्यकता िोती िै। प्रारत्तम्भक चरणों ंमें मन में चरम सत्ता की अिधारणा असम्भि िोती िै। उि अिस्था में हकसी बाह्य सियोग के अभाि में मन का केिीभूत िोना सम्भि निीं ंिो र्ाता। प्रारम्भ में हबना हकसी प्रतीय के मन को एकाग्र या ध्यानमन कर र्ाना असम्भि िोता िै।

प्रत्येक व्यत्ति मूडतपरूजक िै

िेदों ंमें मूहतप-रूिा का कोई उल्लेख निीं ंहमलता; हकनुतु रुराणों ंतथा आगमों ंमें घरों ंतथा मत्तन्दरों–दोनों ंमें मूहतप-रूिा का हििरण हमलता िै। मूहतप-रूिा का प्रिलर केिल हिन्दू-धमप में िै, ऐसी बात निीं ंिै। ईसाई क्रास को रूिते िैं। उनके मन में क्राए की प्रहतमा अहधहष्ठत रिती िै। मुसलमान िब हनत िो कर नमाि अदा करते िैं, तब उनकी मानहसकता में काबा का र्त्थर रचा-र्चा रिता िै। कुछ योहगयों ंतथा िेदात्तन्तयों ंके अहतररि संसार के सभी लोग मूहतपरूिक िैं। उनके मन में हकसी-न-हकसी प्रहतमा के हलए स्थान अिश्य िोता िै।

मानहसक प्रहतमा भी मूहतप का िी रूर् ि ै। इन दोनों ंमें प्रकार-भेद न िो का केिल मात्रा-भेद ि ै। सभी उर्ासक, िे हकतने िी प्रहतभा सम्पन्न क्ों ंन िों, ं अर्ने मन में हकसी रूर् को प्रहतहष्ठत करके उस र अर्ने मन को क्तस्थर करते िैं।

प्रत्ेयेक व्यक्ति मूहतपर्रूिक िोता ि ै। हचत्र या रेखांकन आहद प्रहतमा या मूहतप के िी रूर् िैं। स्थूल बुक्तद्ध िाले व्यक्ति के आलम्बन के हलए मूतप प्रतीक तथा सूक्ष्म बुक्तद्ध िाले व्यक्ति के आलम्बन के हलए अमूतप प्रतीक अर्ेहक्षत िोते िैं। िेदान्ती भी चंचल मन की क्तस्थरता के हलए ॐ को प्रतीक-रूर् में प्रयुि करता ि ै। केिल हचत्रों ंअथिा र्ाषाण या काष्ठ की प्रहतमाओं ंको िी मूहतप निीं ंकिा िाता, मनीषी तथा नेता भी मूहतपित् उर्ास्य िो िाते िैं। तब मूहतप-र्ूिा की हनन्दा क्ों ं?

ईश्वर से सम्पकप-थथार्न का माध्यम

मूहतप मूहतपकार की अथपिीन कल्पना न िो कर एक ऐसा देदीप्यमान माध्यम ि ै िो भि को आकहषपत करके उसे ईश्वरोनुमुख कर देता ि ै। प्रहतमा-र्ूिन के साथ-साथ भि के हृदय में प्रभु की उर्क्तस्थहत की अनुभूहत िोने लगती ि ै और उसका भक्ति-भाि उमड कर प्रभु की ओर प्रिाहित िोने लगता ि ै। आधुहनक हिषयासि मानि के अज्ञान के कारण उसकी दृहष् आच्छाहदत िो िाती ि ै और िि र्रमािा के स्वरूर् की हप्रय तथा सम्मोिक मूहतप में प्रहतहष्ठत हदव्य सत्ता का दिपन निीं ंकर र्ाता। इस िताब्दी की िैज्ञाहनक प्रगहत से िी आर्को मूहतप-र्ूिा की महिमा के सम्बन्ध में आश्वस्त िो िाना चाहिए। रेहडयो नामक एक लघु र्ेहटका गायकों ंतथा िािओं ंको हकस प्रकार अर्ने में तल्लीन बनाये रखती ि ै! यि एक याक्तन्त्रक तथा हनिीि संरचना मात्र ि ै िो तीव्र गहत से फेंके िाने र सिस्र खण्डों ंमें हिभाहित िो सकता ि ै; हकन्तु यहद आर् इसके उर्योग करने की हिहध से र्ररहचत िैं तो आर् इसके माध्यम से सिस्रों ंमील दूर गाये िाने िाले संगीत तथा हिश्व के सुदूर स्थानों ंमें िोने िाले भाषणों ंका आनन्द उठा सकते िैं। हिस प्रकार रेहडयो िारा आर् समस्त हिश्व के लोगों ंकी ध्वहन तरंगों ंको ग्रिण कर सकते िैं, उसी प्रकार आर्के हलए एक मूहतप के माध्यम से सिपव्यार्ी र्रमािा से सम्पकप स्थाहर्त करना भी सम्भि ि ै। सिपव्यार्ी र्रमािा की हदव्यता का स्पन्दन सृहष् के कण-कण में िो रिा ि ै। क्ा हदक्काल का कोई ऐसा अणुित् स्थान भी ि ै ििााँ िि हिद्यमान न िो। तब आर् यि कैसे कि सकते िैं हक िि मूहतप में हिद्यमान निीं ं िै?

कुछ लोग ऐसे भी िैं िो सिसा िी कि देंगे- "ईश्वर तो एक सिपव्यार्ी हनराकार सत्ता ि ै। उसे एक मूहतप में कैसे आबद्ध हकया िा सकता ि ै?" क्ा इन लोगों ंको कभी उसकी सिपव्यार्कता का ज्ञान िो र्ाता ि ै? क्ा ये लोग उसे केिल उसे-प्रत्ेयेक िस्तुु में सिपदा र्ररव्याप्त देख र्ाते िैं? इसका एकमात्र उत्तर ि ै निीं। ं यि उनका केिल अिंकार ि ै िो उन्ें ईश्वर की प्रहतमा के समुमुख हिनत निीं ंिोने देता ि ै और इसी कारण िे अर्ना अथपिीन तकप प्रसुतुत कर देते िैं।

"अधिल गगरी छलकत िाय।" आध्याक्तिक दृहष् से एक िास्ति-र्ररर्क्व-किुल व्यक्ति, िो ध्यान तथा उर्ासना में संलग्न रिता ि ै और हिसका हृदय ज्ञान तथा अकृहत्रम भक्ति से ओत-प्रोत रिता ि ै, िि सिपदा मौन रिता ि ै। िि मौन के माध्यम से िी अन्य लोगों ंको प्रभाहित और प्रहिहक्षत हकया करता ि ै। केिल ििी इस तथ्य से अिगत िो सकता ि ै हक मानहसक एकाग्रता के हलए प्रारम्भ में हकसी मूहतप की आिश्यकता िोती ि ै या निीं। ं

हकसी की बुक्तद्ध हकतनी भी कुिाग्र क्ों ंन िो, िि हकसी प्रतीक के अभाि में अर्ने मन को एकाग्र निीं ं कर सकता। एक प्रहतभा सम्पन्न या िीहान् व्यक्ति िी अर्ने अिंकार तथा दम्भ के कारण किता ि ै- "मुझे मूहतप र्सन्द निीं ंि ै। मैं हकसी रूर् र अर्ने मन को क्तस्थर करना निीं ंचािता।" िस्तुुतः उसके हलए हकसी हनराकार सत्ता र भी मन को एकाग्र कर र्ाना असम्भि िोता ि ै। िि सोचता ि ै हक यहद लोगों ंको यि ज्ञात िो िायेगा हक

िि साकार या सगुण सत्ता की उर्ासना करता िै, तो िि उनके उरिास का र्ात्र िो िायेगा। िास्तहिकता तो यि िै हक िि हकसी हनगुपण-हनराकार सत्ता की भी उर्ासना निीं ंकरता। िि केिल बातें बनाता िै और बिस करता तथा ढोंग रचता िै। केिल अनािश्यक िाद-हििाद में िी उसके समय का अर्व्यय िोता िै। अनेक हसद्धान्तों ंकी अर्ेक्षा एक अभ्यास श्ेरेष्ठतर िै। अहधकांि बुक्तद्धिाहदयों ंकी बुक्तद्ध उनके मागप में अिरोध िी उर्क्स्थत करती िै। ये
लोग ब्रह्म की सत्ता को अनुमानिन्य, समाहध को मन की प्रतारणा तथा आत्मसाक्षात्कार को िेदाक्तन्तयों ंकी कल्पना मात्र मानते िैं। हकतने मोिग्रस्त िैं िे। िे अज्ञान के आिरण में आबद्ध िो कर अर्नी तथाकहथत धमपहनरर्ेक्षतािन्य आत्मज्ञान की तुलना में हनतान्त नगण्य िै-से हदग्भ्रहमत िो गये िैं। इस प्रकार के लोगों ंकी मुक्ति के हलए कोई आिा निीं।ं सिपप्रथम िुभ संस्कारों ंिारा उनके अिुभ संस्कारों ंका र्ररमािपन हकया िाना आिश्यक िै। इसके र्श्चात् िी िे अर्नी त्रुहटयों ंको समझ सकेंगे। र्रमािा उनकी बुक्तद्ध को हनमपल करके यथाथप ज्ञान के प्रहत उनमें हिज्ञासा िाग्रत करे!

र्रमात्मा का एक प्रतीक

प्रहतमा (मूहतप) एक प्रतीक िै। मक्तन्दर में प्रहतहष्ठत मूहतप र्त्थर, लकडी या धातु से हनहमपत की िाती िै; हकन्तु भि के हलए यि एक बहुमूल्य िस्तु िै। इसका कारण िै हक इसमें भगिान् का हचह्नांकन िै और यि उसकी प्रतीक िै हिसे िि र्हित्र और िाश्वत समझता िै। ध्वि एक हचत्रांहकत िस्त्र का अंि मात्र िोता िै; हकन्तु िि एक
सैहनक के हलए उस िस्तु का प्रतीक िै िो उसके हलए अत्यहधक हप्रय िै। िि इस ध्वि के रक्षाथप प्राणोत्सगप के हलए भी उद्यत रिता िै। इसी प्रकार भि के हलए प्रहतमा भी अत्यन्त हप्रय िोती िै। िि भि से अर्नी भक्ति की भाषा
में िातापलार् करती िै। हिस प्रकार ध्वि सैहनक में सामररक िौयप िाग्रत करता िै, उसी प्रकार प्रहतमा भि में भक्ति-भाि िाग्रत करती िै। प्रहतमा में ईश्वर का अध्यारोर्ण हुआ रिता िै और इससे उर्ासक में दैिी हिचारों ंकी सृहष्ट् िो। का कोई टुकडा मूल्यिीन िोता िै। आर् उसे फेंक हदया करते िैं; हकन्तु िब उस र् रािकीय हचह्न अंहकत कर हदया िाता िै अथापत् िब िि कोई करेंसी नोट बना हदया िाता िै, तब आर् उसे अर्ने बटुए या बक्स में सुरहक्षत रख देते िैं। इसी प्रकार आर्के हलए हकसी सामान्य हिलाखण्ड का कोई मूल्य निीं ंिोता। आर् उसकी उर्ेक्षा कर देते िैं। हकन्तु यहद आर् र्ण्ढरर्ुर में भगिान् कृष्ण की प्रस्तर-प्रहतमा या हकसी अन्य मक्तन्दर में प्रहतहष्ठत प्रहतमा का दिपन करते िैं, तो आर् करबद्ध िो कर उसके सम्मुख नतमस्तक िो िाते िैं। ऐसा इसहलए िोता िै हक उस प्रस्तर र् प्रभु का हचह्न अंहकत िै। भि प्रस्तर-प्रहतमा र् अर्ने आराध्य प्रभु को उनके समस्त गुणों ंके साथ अध्यारोहर्त कर देता िै।

मूहतप-र्ूिन के समय आर् यि निीं ंकिते हक यि अमुक स्थान से आयी िै, अमुक ने भेिी िै, यि अमुक िस्तु से हनहमपत िै, यि अमुक मूल्य दे कर खरीदी गयी िै आहद। आर् उस प्रहतमा में प्रभु के समस्त गुणों ंका अध्यारोर्ण कर देते िैं और प्राथपना करते िैं-"िे अन्तयापमी ! तुम सिपव्यार्ी, सिपिक्तिमान्, सिपज्ञ तथा दयामय िो। तुम सिपभूतों ंके आहद स्रोत, स्वयम्भू, सत्-हचत्-आनन्द, हनत्य तथा अहिकारी िो। तुम मेरे िीिन के िीिन और मेरी आिा की आिा िो। मुझे प्रकाि और ज्ञान दो। तुम सिपदा के हलए मेरा आश्रय-स्थल बन िाओ।" िब आर्की भक्ति तथा ज्ञान में तीव्रता एिं गिनता का र्ररर्ाक िो िाता िै, तब आर्को प्रस्तर-प्रहतमा का दिपन निीं ं िोता। उसमें आर् उस प्रभु का िी दिपन करते िैं िो चैतन्य िै। नि-साधकों ंके हलए मूहतप-र्ूिा अत्यािश्यक िै।

डवराट् का अडवकल अंग

नि-साधक की साधना के प्रारक्तम्भक चरण में प्रहतमा हनतान्त आिश्यक ि ै। प्रहतमा-रूिा से ईश्वर प्रसन्न
िोता ि ै। प्रहतमा र्ााँच तत्त्वों ंसे हनहमपत िोती ि ै। ईश्वर का िरीर भी र्ााँच तत्त्वों ंसे हनहमपत िोता ि ै। प्रहतमा तो प्रहतमा
िी रि िाती ि;ै हकन्तु रूिा ईश्वर तक र्हुाँच िाती ि ै।

िब आर् हकसी व्यक्ति से िाथ हमलाते ि ैं, तब िि बहुत प्रसन्न िोता ि ै। आर् उसके िरीर के अल्पांि का
िी स्पिप कर रि े िोते ि ैं; हकन्तु इतने से िी उसे आनन्द प्राप्त िो िाता ि ै। िि मुस्करा कर आर्का स्वागत करता
ि।ै इसी प्रकार ईश्वर भी अर्ने हिराट् िरीर के अल्पांि के रूिन से अत्यन्त प्रसन्न िोता ि ै। मूहतप भगिान् के िरीर
का एक अंग ि ै। अक्तखल हिश्व उसका िरीर ि,ै उसका हिराट् रूर् ि ै। रूिा भगिान् तक र्हुाँच िाती ि ै। उर्ासक
प्रहतमा में भगिान् तथा उसके समस्त गुणों ंको अध्यारोहर्त कर देता ि ै। िि मूहतप के माध्यम से भगिान् की सोलि
प्रकार की सेिा अथापत् षोडिोर्चार करता ि ै। र्िले उसकी उर्क्तस्थहत के हलए उसका आिािन करता ि ै। इसके
र्श्चात् उसे आसन प्रदान हकया िाता ि ै। हफर उसका र्ाद-प्रक्षालन हकया िाता ि ै। तत्पश्चात् उसे अर्घ्य-दान हदया
िाता ि ै(अर्घ्य अहतहथ-सत्कार का द्योतक ि ै)। इसके र्श्चात् स्नान कराया िाता ि ै। हफर उसे िस्त्राभूहषत हकया
िाता ि ै। हफर यज्ञोर्िीत हकया िाता ि ै। तत्पश्चात् उसको चन्दन लगाया िाता ि ै। हफर उसे र्ुष्प अहर्पत हकये िाते
ि ैं(ये श्रद्धा-सुमन भगिान् के प्रहत प्रेम तथा श्रद्धा के प्रतीक िोते ि ैं)। हफर धूर् िलायी िाती ि ै। इसके बाद दीर्
िला कर उसकी आरती उतारी िाती ि ै। तत्पश्चात् उसे नैिेद्य और हफर ताम्बूल अहर्पत हकये िाते ि ैं। इसके बाद
कर्ूपर िला कर उसका नीरािन हकया िाता ि ै। इसके र्श्चात् उसे स्वणप-र्ुष्प अहर्पत हकये िाते ि ैं। अन्त में दिेता से
हिदा ली िाती ि ै(हिसिपन)। रूिा के इन िादा रूर्ों में भि के आन्तररक प्रेम की अहभव्यक्ति िोती ि ै। उसका
चंचल मन क्तस्थर िो िाता ि ै। इससे साधक को क्रमिः ईश्वर के सामीप्य का बोध िोने लगता ि,ै उसका िृदय
हििुद्ध िो िाता ि ैऔर धीरे-धीरे िि अर्ने अिंकार को नष् कर देता ि ै। प्रतीक के प्रहत आस्थािान् भि प्रस्तर,
मृहत्तका और र्ीतल की मूहतप, हचत्र, िालग्राम आहद में भगिान् के िरीर का िी दिपन करता ि ै। इस प्रकार की
उर्ासना मूहतप-रूिा िो िी निीं ंसकती। समस्त दृश्यप र्रमात्मा का प्रकटीकरण ि ै। िि संसार की सभी िस्तुओं ंमें
हिद्यमान ि ै। प्रत्येक िस्तु उर्ासना का हिषय ि;ै क्योंहक र्रमात्मा स्वयं को प्रत्येक िस्तु में अहभव्यि करता ि ै
और उसमें अिक्तस्थत िो कर रूहित िोता ि ै। उर्ासना के उर्क्रम से िी यि स्पष् िो िाता ि ैहक िो रूिा का
हिषय ि,ै िि िररष्ठ एिं चेतन ि ै। िस्तुओं ंके प्रहत यि धारणा भि के हलए अत्यन्त आिश्यक ि ै। िस्तुओं ंको
देखने-र्रखने के उि दृहष्टकोण के हलए अप्रहिहक्षत मक्तस्तष्क को प्रहिहक्षत करना आिश्यक ि ै।

मूहतप-रूजा से भक्ति का हवकास

मूहतप-रूिा मनुष्य की एकाग्रता को सरल तथा सिि बना देती ि ै। आर् र्रमात्मा को उसके हकसी अितार-हििेष के रूर् में
देखते ि ैं। मूहतप-रूिा के माध्यम से आर् अर्ने मनिक्षुओं से उि अितार में अिक्तस्थत
र्रमात्मा की मिान् लीलाओं ंको देख सकते ि ैं। इस हिहध की गणना आत्मसाक्षात्कार की सरलतम हिहधयों ंमें की
िाती ि ै।

हिस प्रकार हकसी प्रख्यात योद्धा के हचत्र से आर्के मन में िौयप की भािना िाग्रत िोती ि,ै उसी प्रकार
ईश्वर का हचत्र-दिपन करने से मन हदव्यता के हिखर र्र आरूढ़ िो िाता ि ै। हिस प्रकार अर्ने क्तखलौने में हकसी
हििु को अध्यारोहर्त करके उसके साथ खेलते हुए तथा उसे काल्पहनक स्तन-र्ान कराते हुए हकसी हििु में
मातृ-भाि उत्पन्न िो िाता ि,ै उसी प्रकार भि प्रहतमा की उर्ासना तथा उस र्र अर्ना ध्यान केक्तित करके
अर्नी भक्ति-भािना को हिकहसत करता ि ै।

डनयडमत रूजा से प्रडतमा-स्तथथत देवत्व का अनावरण

हनयहमत रूिा तथा मूहतप में हनहित दिेत्व के प्रहत आस्था–हनत िमारी आन्तररक भािनाओं ंको अहभव्यि करने िाली अन्य हिधाओं ंसे मूहतप में अन्तहनपहित दिेत्व अनािृत िो िाता िै। हनहित रूर् से यि एक आियपिनक तथा चमत्काररूणप तथ्य िै हक प्रहतमा िँसी तथा मुखर िो कर आर्के प्रश्नों ंके उत्तर तथा आर्की समस्याओं ंका समाधान प्रस्तुत करने लगती िै। आर्के अन्तर में र्रव्याप्त र्रमािा मूहतप में प्रसुप्त दिेत्व को िाग्रत करने में सक्षम िै। यि उस िहिकािाली लेंस की भााँहत िै िो सूयप की हकरणों ंको कर्ास के ढेर र भिीभूत कर देता िै। लेंस और कर्ास दोनों ंमें से कोई भी अहग्न निीं ंिै और सूयप की हकरणें भी कर्ास को स्वयं िला र्ाने में असमथप िैं। िब इन तीनों ंको एक हिहिष् हिहध से एकत्र कर हदया िाता िै, तभी अहग्न उत्पन्न िो कर कर्ास को िला र्ाती िै। प्रहतमा, साधक तथा सिपव्यार्ी र्रमािा के सम्बन्ध में भी यिी हसद्धान्त लागू िोता िै। रूिा प्रहतमा को हदव्य ज्योहत से प्रकाहित कर देती िै और तब प्रभु उस प्रहतमा में प्रहतहष्ठत िो िाते िैं। यिााँ से िी िे एक हिहिष् हिहध से आर्को सुरक्षा प्रदान करते िैं। प्रहतमा से चमत्कार की सृहष् िोती िै। हिस स्थान र प्रहतमा की प्राण-प्रहतष्ठा िोती िै, िि तत्क्षण मक्तन्दर के रूर् में र्रणत िो िाता िै। मक्तन्दर िी क्यों, ं िि स्थान तो िैकुण्ठ या कैलास िी िो िाता िै। िााँ हक हनिासी दुःख-दैन्य, व्याहध, हिफलता तथा स्वयं संसार से भी मुि िो िाते िैं। प्रहतमा में िाग्रत र्रमािा हकसी अहभभािक दिेदूत का उत्तरदाहयत्व ििन करता िै और अर्ने सम्मुख श्रद्धा-हिनत िोने िालों ंके ििी र आहिषा–षपण करते हुए उन्हें आत्यक्तन्तक सुख प्रदान करता िै।

प्रडतमा डचद्घन िै

प्रहतमा हदव्य सत्ता का प्रतीक मात्र िै। भि को उसमें हकसी हिला-खण्ड या धातु-राहि के दिपन निीं ं िोते। उसके हलए तो िि र्रमािा का िी प्रतीक िै। मूहतप में उसे अन्तयापमी भगिान् की हिद्यमानता की िी प्रतीहत िोती िै। दहक्षण भारत के सभी िैि नयनार सन्तों ंने हििमूहतप अथापत् हलंग की रूिा के माध्यम से िी र्रमािा का साक्षात्कार कर हलया था। भि के हलए प्रहतमा हचद्घन िोती िै। िि उससे प्रेरणा ग्रिण करता िै। प्रहतमा उसका मागप-दिपन करती िै। िि उससे िातापलार् करती िै और हिहभन्न प्रकार से उसकी सिायता करने के हलए मानि-िरीर धारण करती िै। दहक्षण भारत के मदुरै मक्तन्दर में भगिान् हिि की मूहतप ने एक लकडिारे तथा एक िृद्ध स्त्री की सिायता की। हतरुर्हत के मक्तन्दर की मूहतप ने अर्ने भि के सिायताथपमानि-रूर् धारण कर न्यायालय में साक्ष्य हदया। इस प्रकार के चमत्कार तथा रिस्य केिल भिों ंके हलए िी बोधगम्य िोते िैं।

जब प्रडतमाएँ सजीव िो उठी ं

हकसी भि या सन्त के हलए िड दाथप िैसी कोई िस्तु निीं ंिै। यिााँ िो-कुछ भी िै, िासुदेि या चैतन्य िै-
"वासुदेवः सवं इडत।" िस्तुतः भि प्रहतमा में प्रभु के िी दिपन करता िै। एक रािा ने नरसी मेिता की र्रीक्षा ली। उसने उनसे किा- "ओ नरसी, यहद तुम भगिान् कृष्ण के सिे भि िो और यहद तुम्हारे कथनानुसार प्रहतमा स्वयं भगिान् कृष्ण िैं, तो तुम इसे गहतिील कर दो।" नरसी मेिता की प्राथपना के फल-स्वरूर् प्रहतमा गहतिील िो गयी। हिि-मूहतप के सम्मुख रिने िाले िािन िृषभ नन्दी ने तुलसीदास िारा अहर्पत भोिन ग्रिण हकया। मूहतप मीराबाई के साथ क्रीडारत रिती थी। िि उसके हलए िँसी तथा चेतन थी।

बि अप्पय दीहक्षतार दहक्षण भारत क्तस्थत हतरुर्हत मक्तन्दर गये, तब ि ष्णिों ंने उनको मक्तन्दर में प्रिे निीं ंकरने हदया; हकन्तु दूसरे हदन प्रातःकाल उन ि ष्णिों ंने देखा हक मक्तन्दर की हिष्णु-मूहतप हिि-मूहतप में र्रणत ि ो गयी ि ै। मक्तन्दर का मिन्त यि देख कर स्ति रि गया। उसने अप्पय दीहक्षतार से क्षमा माँगते हुए उनसे हिनय की हक ि े मूहतप को रुनः हिष्णु की मूहतप में र्रणत कर दें।

दहक्षण भारत के दहक्षण कनारा ि नर्द-क्तस्थत उहडहर् में कनकदास नामक एक मिान् कृष्ण-भि रिते थे। ि ाहतगत अकुलीनता के कारण उनके हलए मक्तन्दर-प्रिे ि हिपत था। ि े मक्तन्दर की र्रक्रमा करने लगे। ऐसा करते समय उन्ें मक्तन्दर के र्ीछे एक छोटी क्तखडकी हदखायी र्डी। इस क्तखडकी के सामने बैठ कर ि े आि-हिभोर ि ो कर भगिान् कृष्ण का सुतुहत-गान करने लगे। भगिान् कृष्ण के प्रहत उनकी अगाध भक्ति और उनके संगीत के लयबद्ध माधुयप से आकहषपत ि ो कर ि िाँ बहुत लोग एकत्र ि ो गये। हिग्रि में प्रहतहष्ठत भगिान् कृष्ण भी अर्नी क्तस्थहत र्ररिहतपत कर कनकदास की ओर उन्मुख ि ो गये हिससे ि े उनका दिपन कर सकें। इस घटना ने र्ुिाररयों ंको आियपचहकत कर हदया। तीथपयाहत्रयों ंको आि भी ि ि क्तखडकी और ि ि स्थान हदखाया ि ाता ि ै ि िाँ बैठ कर कनकदास ने सुतुहत-गान हकया था।

मूहतप भगिान् से अहभन्न ि ै; क्ोंहक यि मन्त्र चैतन्य–ि ो स्वयं दिेता ि ै-की अहभव्यक्ति का ि ािन ि ै। मूहतप के सम्बन्ध में भि में ि ि ी अहभिृहत्त अर्ेहक्षत ि ै ि ो यहद भगिान् उसे प्रत्यक्ष दिपन दे कर उससे सुस्पष् स्वरों ंमें िाताप लार् करें, तो ि ि प्रदहिपत करेगा।

वेदिा और मूडतप-रूजा

तथाकहथत ि ेदान्ती को मक्तन्दर में प्रहतहष्ठत मूहतप के सम्मुख नतमस्तक ि ोने में लज्जा का अनुभि ि ोता ि ै। ि ि समझता ि ै हक उसके साष्ांग दण्डित् करने से उसका अिैत ि ा ष्णित् हिलुप्त ि ो ि ायेगा। अप्पर, सुन्दरार तथा सम्बन्धार आहद प्रख्यात तहमल सन्तों ंके ि ीिनिृत्त का अध्ययन करने से आर्को ज्ञात ि ो ि ायेगा हक अिैत के सैद्धाक्तन्तक तथा व्याििाररक र्क्ष में उनकी हकतनी गिरी र्ैठ थी। यद्यहर् ि े सिपत्र भगिान् हिि का दिपन करते थे तथाहर् िे सभी हिि-मक्तन्दरों ंमें ि ा कर हिि-मूहतप के सम्मुख नतमस्तक ि ोते थे और भिन गाया करते थे। ये भिन आि भी उर्लि ि ैं। हतरसठ नायनार सन्तों ंने केिल 'चयाप' तथा 'हक्रया' के अभ्यास से ि ी र्रमािा का साक्षात्कार कर हलया था। िे मक्तन्दर के फिप र झाडू लगाते, रुष्प-चयन करते, भगिान् के हलए माला गूँथते और मक्तन्दर में दीर् ि लाते थे। ि े हनरक्षर थे; हकन्तु उन्ें आिसाक्षात्कार हुआ। ि े व्याििाररक योगी थे और उनके हृदय हििुद्ध भक्ति से. ओत-प्रोत थे। ि े कमपयोग के मूतप रूर् थे। उन्ोंने समन्वययोग का अभ्यास हकया था। उनके हलए मक्तन्दर की मूहतप मात्र प्रस्तर-खण्ड न ि ो कर हचद्घन थी।

मधुसूदन स्वामी को अिैत-साक्षात्कार, स्विौक्-दिपन तथा अिैत-भाि का बोध ि ो चुका था; हकन्तु ि ि भिर भगिान् कृष्ण के सगुण रूर् के प्रहत उनकी अत्यहधक अनुरक्ति थी।

तुलसीदास को सिपव्यार्ी सत्ता का साक्षात्कार ि ो चुका था। उनमें ि ैश्व-चेतना थी। सिपव्यार्ी हनराकार भगिान् से उनका ि ाताप लार् हुआ करता था; हकन्तु धनुधपर भगिान् राम के प्रहत उनका तीव्र अनुराग हमट निीं ं र्ाया था। अर्नी ि ृन्दािन-यात्रा में ि ब उन्ोंने मुरलीधर कृष्ण की मूहतप देखी, तब उन्ोंने किा- "इस मूहतप के सम्मुख मैं नतमस्तक निीं ंि ोऊँगा।" तत्क्षण ि ी भगिान् कृष्ण की मूहतप ने भगिान् राम की मूहतप का रूर् धारण कर हलया और तब उन्ोंने उसके सम्मुख अर्ना ि ि ी झुकाया। तुलसीदास की भाँहत तुकाराम को भी यि ि ैश्व-अनुभि प्राप्त था। ि े अर्ने अभंग में किते ि ैं- "हिस प्रकार गन्ने में मधुर रस व्याप्त रिता ि ै, उसी प्रकार मैं अर्ने भगिान् को सिपभूतों ंमें व्याप्त देखता हाँ।" हकन्तु ि े अर्ने कूल्ों ंर ि ाथ रखे हुए र्ण्ढररुर के हिठ्ठल भगिान् का

उल्लेख सगुण रूर् में िी करते िैं। मीरा को भी सिपव्यारी् कृष्ण से अर्ने तादात्म्य का भान था; हकनु्तु िि 'मेरे हगररधर नागर' की धुन की आिृहत्त अनिरत रूर् से हकया करती थी।

उर्युपि तथ्यों ंसे िम इस हनष्कषप र र हुँच सकते िैं हक मूहतप-रू्िा के माध्यम से ईश्वर-साक्षात्कार सम्भि िै तथा ईश्वर के सगुण रूर् की उर्ासना उसके साक्षात्कार के हनहमत्त की िाने िाली उसके सिपगत हनराकार क्ष की उर्ासना में भी अत्यहधक सियक हसद्ध िोती िै। िम इस हनष्कषप र र भी हुँचते िैं हक प्रारम्भ में हचत की एकाग्रता एिं ध्यान के हलए मूहतप-रू्िा अहनिायप िै और उर्ासना की इस हिहध से भागित-चेतना की सम्प्राक्तप्त में हकसी भी प्रकार कोई अिरोध निीं ंउर्क्तस्थत िोता। िो लोग मूहतप-रू्िा के घोर हिरोधी िैं, िे अज्ञान के हनहिड अन्धकार में भटक रिे िोते िैं। रू्िा और उर्ासना के यथाथप ज्ञान से िंहचत ये लोग मात्र र्ाहित्ता-प्रदिपन के हलए मूहतप-रू्िा के हिरुद्ध अथपिीन तथा अनािश्यक र्रचचाप और िाद-हििाद में संलग्न रिते िैं। यथाथप साधन-सम्पहत्त के नाम र उनके र्ास कुछ निीं ंिोता। अथपिीन िब्दािली से बोहझल भाषा में सारिीन प्रिचन देना उनका स्वभाि तथा व्यिसाय बन गया िै। अर्ने साथ-साथ उन्िोंने अन्य अगहणत लोगों ंके भी मन-मक्तस्तष्क को हिकृत तथा अक्तस्थर करके उनका सिपनाि कर हदया िै। हकसी-न-हकसी रूर् में समस्त संसार प्रतीकों ंऔर मूहतपयों ंकी रू्िा करता िै। प्रारम्भ में मन को हकसी स्थूल हिषय या प्रतीक र क्तस्थर करके उसे अनुिाहसत हकया िाता िै। िब यि क्तस्थर तथा सूक्ष्म िो िाता िै, तब इसे 'अिं ब्रह्माक्तस्म' िैसी अमूतप अिधारणाओं ंर केक्तित हकया िा सकता िै। िैसे-िैसे साधक ध्यान के अभ्यास में प्रगहत करता िाता िै, िैसे-िैसे उसके हलए सगुण हनगुपण में र्रणत िो िाता िै और िि हनराकार सत्ता से तादात्म्य स्थाहर्त कर लेता िै। मूहतप-रू्िा िेदान्त की मान्यताओं ंके हिरुद्ध निीं ंिै। इसके हिर्रीत यि उसकी सिायक िी िै।

िो लोग मूहतप-रू्िा के दिपन तथा इसकी अथपित्ता से अभी तक अर्ररहचत थे, अब उन्िें इसका स्पष्ट बोध िो िायेगा और उनके ज्ञान-चकु्षु खुल िायेंगे। िास्त्राध्ययन के हिर्रीत तथा योहगयों, ं सन्तों ंके सम्पकप से दूर रिने िाले अज्ञानी िन िी मूहतप-रू्िा के हिरुद्ध अनािश्यक तकप प्रसु्तुत करते िैं।

कमपकाण्डीय (िैधी) भक्ति से र्रा-भक्ति की ओर

उत्तर भक्ति या र्रा-भक्ति तथा हनम्नतर भक्ति या कमपकाण्डीय भक्ति ये भक्ति के दो भेद िैं।
कमपकाण्डीय भक्ति को िैधी या गौणी-भक्ति किते िैं। यि और्चाररक भक्ति िै। िैधी-भक्ति भक्ति की हनम्नतर हिधा िै िो बाह्य साधनों ंर हनभपर िै। इससे मन हििुद्धतर िोता िाता िै। इस भक्ति के िारा साधक के हृदय में ईश्वर के प्रहत क्रमिः प्रेम की िृक्तद्ध िोने लगती िै। िि हकसी प्रतीक या प्रहतमा की आराधना करता, घण्टी बिाता
तथा रु्ष्प, चन्दन, धूर्, दीर्ाहद से प्रहतमा-रू्िन कर ईश्वर को नैिेद्य अहर्पत करता िै।

मुख्या या र्रा-भक्ति भक्ति का एक हिकहसत रूर् िै। इसे उत्तर भक्ति की संज्ञा दी गयी िै। यि समस्त र्रम्पराओं ंका अहतक्रमण कर िाती िै। भक्ति की इस हिधा के प्रहत आस्थािान् भि को हकसी हिहध-हिधान की हचन्ता निीं ंरिती। रू्िा या उर्ासना के बाह्य प्रारूर् के प्रहत िि सिपथा उदासीन रिता िै। िि सिपत्र और सिपभूतों ंमें अर्ने प्रभु के दिपन करता िै। उसका हृदय ईश्वर-प्रेम से ओत-प्रोत रिता िै। उसके हलए अक्तखल हिश्व िृन्दािन िै। उसकी मनोदिा अहनिपचनीय िोती िै और िि र्रम आनन्द को प्राप्त करता िै। िि िािााँ-िााँ िाता िै िािााँ-िााँ प्रेम, हििुद्धता तथा आनन्द की हकरणें हिकीणप करता रिता िै और िो कोई भी उसके सम्पकप में आता िै, उसके हलए िि प्रेरणाप्रद हसद्ध िोता िै।

प्रारम्भ में मूहतप-रू्िा करने िाले भि को अब सिपत्र प्रभु के दिपन िोने लगते िैं और उसकी भक्ति र्रा-भक्ति का रूर् ग्रिण कर लेती िै। इसके फलस्वरूर् िि िैधी-भक्ति की सीमाओं ंको र्ार करके रागाक्तिका या

प्ेरमा-भक्ति के क्ेषत्र में प्रहिष् िो िाता िै। उसे सिपभूतों ंमें ईश्वर की प्रतीहत िोने लगती िै तथा िि िुभ-अिुभ, िहि-अिहि आहद िैसे हिचारों ंसे मिु िो िाता िै। दुष्, दसुयु, नाग, िृहिक, हरीहलका, श्वान, िृक्ष, काष्ठ-खण्ड, िैल-राहि, सूयप, चिमा, नक्षत्र, अहग्न, िल, रृथ्वी आहद में िि प्रभु का दिपन करने लगता िै। उसकी व्यार्क दृहष् तथा उसका हदव्य अनुभि िणपनातीत िै। ऐसे भिों ंकी िय िो िो िसुतुतः भूसुर िैं और िो अन्य प्राहणयों ंको सांसाररक रं्क तथा मृतुयु-रि से हिमिु कर उनें उितर क्तस्थहत प्रदान करते िैं।

हिन्दू-धमप हिज्ञासुओं ंको क्रमिः भौहतक प्रतीकों ंसे मानहसक प्रतीकों ंकी ओर, हिहिध मानहसक प्रतीकों ं से एकमेि सगुण ईश्वर की ओर तथा सगुण ईश्वर से र्रात्पर हनगुपण ब्रह्म की ओर ले िाता िै।

हिन्दू-दिपन की महिमा तथा हिन्दू-रूिा-र्द्धहत

हिन्दू-दिपन तथा हिन्दू-रूिा-र्द्धहत हकतनी उदात्त िै! इसकी र्ररसमाक्तप्त प्रहतमा-रूिन में िी निीं ंिो िाती। साधक मूहतप-रूिा के माध्यम से भक्ति तथा समाहध के उि स्तरों ंतक र्हुँच िाता िै। मूहतप-रूिा करते समय भी उसे सिपव्यार्ी र्रमाििा का ध्यान करना िोता िै। उसके हलए यि आिश्यक िै हक उसे अर्ने हृदय तथा सिपभूतों ंमें ईश्वर की हिद्यमानता का भान िोता रिे। एक लघु प्रहतमा का रूिन करते समय भी उसे र्ुरुष-सूि की आिृहत्त तथा उस सिस्रिीषप, सिस्रनेत्र और सिस्रर्ाद हिराट् र्ुरुष का हचन्तन करना िोता िै िो हिश्व में व्याप्त िोने के साथ-साथ इसका अहतक्रमण भी कर िाता िै और िो हनत्यिुद्ध आिा या ईश्वर के रूर् में सिपभूतों ंमें अिक्तस्थत रिता िै। िो व्यक्ति मूहतप के समुमुख धूर्, अगरबत्ती तथा कर्ूपर िलाता िै, ििी यि भी किता िै-"सूयप, चिमा, नक्षत्र तथा हिद्युत् स्वयं दीक्तप्तमान् निीं ंिोते। ऐसी क्तस्थहत में एक साधारण अहग्न-सुफुहलंग के हलए प्रकािरूणप िोना कैसे सम्भि िै? िसुतुतः ये सब 'उसी' के प्रकाि से प्रकाहित िोते िैं। अक्तखल हिश्व 'उसी' की दीहप्त से दीक्तप्तमान् िै।" हिन्दू-िास्त्रों ंमें िहणपत रूिा की हिहधयाँ तथा उसके रिस्य िैज्ञाहनक दृहष्कोण से भी हनभापन्त तथा युक्तिसम्मत हसद्ध िोते िैं। िास्त्राध्ययन तथा भिों ंएिं मिािाओं ंके सम्पकप से िंहचत अज्ञानी िन िी मूहतप-रूिा की हनन्दा करते िैं।

हिन्दू-धमप से इतर प्रत्ेयेक अन्य धमप में कुछ हनहित मत िोते िैं हिनके अनुसरण के हलए लोगों ंको बाध्य हकया िाता िै। प्रत्ेयेक ऐसे धमप के र्ास सभी रोगों ंके उर्चार के हलए एक िी औषहध िोती िै। समस्त क्तस्थहतयों ंके हलए तथा समस्त मनुष्यों ंके हलए एक िी प्रकार के भोिन की व्यिस्था कर दी िाती िै। समस्त अनुयाहययों ंके हलए एक िी नार् का िस्त्र िोता िै। हिन्दू इस तथ्य से अिगत िैं हक मूहतप, क्रास, हितीया का चिमा आहद प्रतीक मात्र िैं, िो प्रारम्भ में मन की क्तस्थरता तथा उसकी एकाग्रता के हिकास के हलए उत्ेप्रेरक हसद्ध िोते िैं। इसके अहतररि इनें उन हिहभन्न खूंहटयों ंकी भी संज्ञा प्रदान की गयी िै हिन र र िे अर्ने आध्याक्तिक हिचारों ंतथा अर्नी आस्थाओं ंको लटका सकें। प्रतीक सबके हलए आिश्यक निीं ंिोता। हिन्दू-धमप में इसे अहनिायप निीं ंमाना गया िै। उितर क्तस्थहत में योहगयों ंएिं सन्तों ंके हलए यि अनािश्यक िै। प्रतीक एक स्ेलेट की भााँहत िै िो प्रथम कक्षा के बाल-हिद्याहथपयों ंके हलए िी उर्योगी िोती िै; हकन्तु हिन लोगों ंके हलए यि अनुर्योगी िै, उनें यि किने का अहधकार निीं ंिै हक यि सबके हलए अनुर्योगी िै। यहद िे इसे अनुर्योगी या व्यथप मानते िैं, तो इससे उनका अज्ञान िी र्ररलहक्षत िोता िै।

हनष्कषप

प्रारम्भ में मूहतप-रूिा में कोई दोष निीं ंिोता। आर्के हलए मूहतप में ईश्वर तथा उसके गुणों ंका अध्यारोर्ण करना अहनिायप िै। आर्की हचन्तन-प्रहक्रया में इस तथ्य के हलए एक सुहनहित स्थान िोना चाहिए हक मूहतप में

अन्तरिाा हनहित िै। इसके रिात् साधक को िनैः िनैः यि अनुभि िोने लगता िै हक उसके उरास्य प्रभु मूहतप के साथ-साथ सिपभूतों ंके हृदयों ंतथा हिश्व के समस्त नाम-रूरों ंमें भी अहधहष्ठत िैं। उनकी हिद्यमानता की प्रतीहत उसे सिपत्र िोने लगती िै।

मूहतप-रूिा धमप का इत्यलम् न िो कर इसका प्रारम्भ मात्र िै। िो हिन्दू िास्त्र नि-साधकों ंके हलए प्रारम्भ में मूहतप-रूिा की अनुिंसा करते िैं, ििी उितर क्तस्थहत के साधकों ंके हलए असीम या हनररेक्ष सत्ता के ध्यान की तथा 'तत्-त्वम्-अहस' आहद मिािाक्यों ंकी अथपित्ता के हचन्तन की भी अनुिंसा करते िैं।

रूिा के हिहभन्न सोरान िैं। प्रथम सोरान मूहतप-रूिा तथा हितीय सोरान मन्त्रोिारण और प्राथपना िै। रुष्पाचपना की अरेक्षा मानहसक उरासना श्रेष्ठतर िै। रम तत्त्व अथिा हनगुपण ब्रह्म का ध्यान सिपतोत्कृष् िै।

आि-साक्षात्कार या ब्रह्म-साक्षात्कार सिोि क्तस्थहत िै। ध्यान का स्थान हितीय िै। योगी रमाि-तत्त्व र ध्यान केक्तित करने का प्रयास करता िै। उसके इस प्रयास में नैरन्तयप िोता िै। मूहतप-रूिा को तृतीय तथा यज्ञीय अनुष्ठानों ंएिं तीथापटन को चतुथप स्थान प्राप्त िै। िास्त्र और गुरु दयामयी माता के समान िैं। िे साधकों ंके िाथ र्कड कर र्ग-र्ग र उन्ें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते िैं और अरने इस अहभयान में उस समय तक सहक्रय रिते िैं, िब तक साधक हनहिपकल्प-समाहध को निीं ंप्राप्त िो िाते। िे स्थूल-बुक्तद्ध िाले नि-दीहक्षत साधकों ंके हलए साधना की स्थूल हिहधयों ंका हनधापरण करते और तीक्ष्ण-बुक्तद्ध, सूक्ष्म तथा एकाग्र बुक्तद्ध से सम्पन्न उितर क्तस्थहत के साधकों ंको अमूतप ध्यान की हिहध का प्रहिक्षण देते िैं।

इनमें से प्रत्येक आध्याक्तिक प्रगहत के एक हििेष चरण की ओर िमारा ध्यान आकहषपत करता िै। मानिीय आिा अरनी िक्ति तथा अरने क्रमहिकास की न्यूनाहधक मात्रा के अनुरूर असीम या हनररेक्ष सत्ता को ग्रिण करने या उसका साक्षात्कार करने के हलए हिहभन्न हिहधयों ंका उरयोग करता िै। िि उिसे उितर क्तस्थहत को प्राप्त करता हुआ, अहधकाहधक िक्ति-संचय करता हुआ अन्ततः उस सिोि सत्ता में स्वयं को हिलीन कर उससे तादात्म्य स्थाहरत कर लेता िै।

उन हिन्दू िास्त्रों ंतथा हिन्दू-ऋहषयों ंकी िय िो िो साधकों ंकी उरासना को क्रमिः उितर क्तस्थहतयों ंमें ले िाते हुए अन्ततः उन साधकों ंको हनगुपण, सिपव्यारी, हनराकार, हदक्कालातीत (या उरहनषदों ंमें िहणपत) असीम तथा हनरुराहधक ब्रह्म में संक्तस्थत िोने में सिायता प्रदान करते िैं!

ईश्वर की हप्रय सन्तानो ! अरनी अज्ञान िहनत अहिश्वास की धारणा नष् करके इस क्षण अरने हृदय में उि, अहडग और िान्त आस्था को बद्धमूल कर लें। आर लोग मीरा, श्री रामकृष्ण रमिंस एिं दहक्षण भारत के अलिार तथा नयनार सन्तों ंका रुनः स्मरण करें। इन लोगों ंमें आस्था थी और ये उितम आध्याक्तिक सम्पदा के स्वामी थे। यहद आर लोग मूहतप-रूिा के प्रहत इसी प्रकार आस्थािान् िैं, तो आर लोग भी गिन िाक्तन्त, सुख तथा समृक्तद्ध का उरभोग करते हुए यिीं ंऔर इस क्षण रमािा का साक्षात्कार कर सकते िैं।

यद्यहर आर लोग हनयहमत रूर से बाह्य रूिा करते रि सकते िैं; रनु्त भगिान् की मानहसक रूिा (आन्तररक रूिा) अनिरत और अबाध रूर से करते रिें। इससे उरासना रूणप िो िाती िै। िीिन िी उरासना िै। मेरी कामना िै हक आर लोग अरने दैहनक िीिन में हिराट् की हिश्व उरासना के हनहिताथप से ररहचत िो कर इसके अभ्यास िारा श्रेय तथा प्रेय को प्राप्त करें! आर सबको रमािा का िुभ आिीिापद प्राप्त िो!

अष्म अध्याय

हिन्दू-योग

चार मागप

कमपयोग, भक्तियोग, रियोग तथा ज्ञानयोग-ईश्वर-साक्षात्कार के हलए, इन बारप्रमुख मांगों ंकी व्यिस्था ौ। हिक्रयिीील प्रकृहत के व्यक्तियों ंके हलए कमपयोग, -मागप के प्रहत आस्थिाान् व्यक्तियों ंके हलए भक्तियोग, रिस्यिादी प्रकृहत के तों ंके हलए रियोग और बुक्तद्धिादी एिं दािपहनक हिज्ञासुओं ंके हलए ज्ञानयोग अयुि िै।

योग के अन्तगपत मन्त्रयोग, लययोग या कुण्डहलनीयोग, लक्तम्बकायोग तथा िायोग की भी गणना िोती िै। योग का हनहिताथप िसुतुतः ईश्वर से तादात्म्याराथ तथा संयोगाभ्यास साधक को ईश्वर से सम्पकप-स्थार्न के हलए अहभप्रेररत करता िै। इसकी प्रारक्तम्भक हिधाओं ंमें िैहभन्य िोते हुए भी इनके लक्ष्य अहभन्न िैं।

कमपयोग हनष्काम सेिा का मागप िै। हनष्कामकमी को कमपयोगी किा िाता िै। प्रहकयोग भगिान् के प्रहत एकाक्तन्तक हनष्ठा का मागप िै। प्रेम तथा भक्ति के माध्यम से दिा-सायुज्य के अन्वेषी को भक्तियोगी किा िाता िै। रियोग अिोहनग्रि का मागप िै। िो रिस्यिादी हिहधयों ंअथापत् रियोग िारा ईश्वर से तादात्म्य-स्थार्न के हलए उर्लीिल रिता िै, िि रियोगी िै। ज्ञानयोग ज्ञान-मागप िै। िो दिपन तथा हिज्ञासा के माध्यम से सिो सत्ता से तदाकाररता की प्राक्तप्त के हलए प्रयासरत रिता िै, उसे ज्ञानयोगी किते िैं।

कमपयोग
(कतपव्य कतपव्य के डलए)

कमपयोग हिहित हक्रयिीलता एिं हनष्काम सेिा का मागप िै। यि हनष्काम कमप िारा भगित्प्राक्तप्त का मागप ौ। इसे कमपफलों ंके प्रहत अनासक्ति का योग किते िैं।

कमपयोग िमें कमप के आसक्ति-रहित अनुष्ठान तथा अर्नी अहधकाहधक िक्ति िारा सिोत्तम लक्ष्य की सम्प्राक्तप्त का कौिल प्रदान करता िै। 'कतपव्य कतपव्य के हलए यि कमपयोगी का आदिप िाक् िै। कमपयोग के अभ्यासी के हलए कमप िी रू िै। कमपयोगी अर्ने प्रत्येक कमप को िेिन सामग्री का रूर् प्रदान कर ईश्वर को कर

देता ि◌ै। ि◌ि कमप-शृंखला में आबद्ध नि◌ीं ◌ंि◌ोता, क्योंहक ि◌ि अर्ने कमााँ के को ईश्वर को अहर्पत कर देता ि◌ै। **"योगः कमपस कौशलम्"** अथापत् योग कमपक कौल ि◌ै।

सामान्यतः सुख-दुःख कमप फल के अनुगत ि◌ोते ि◌ैं। प्रत्येक कमप सांसाररक के बन्धन को अहधकाहधक समुपुष् करते ि◌ए अनेक ि◌न्मों ◌ंका कारण बनता ि◌ै। य कमपयोग के अभ्यास से कमप के प्रभाि हनहलपप्त रि ि◌ा सकता ि◌ै। इस क्स्थहत में कमप हनबिी ि◌ो ि◌ाता ि◌ै। ि◌ो कमप कतापर्न के अभिमान से मुि, कमपफलों ◌ंके प्रहत हनरासि तथा सफलता-हिफलता में सनुतुहलत मैन ि◌ो कर समत्व-दृहष्, सम्यक् मानहसक अहभिृहत्त, सम्यक् भाि तथा सम्क संकल्प ि◌ारा हकया ि◌ाता ि◌ै, ि◌ि बन्धन का कारण नि◌ीं ◌ंि◌ोता। इसके हिर्रीत ि◌ि ि◌मारे हृदय को र्ािन करते हुए हदव्य प्रकाि के अितरण या ज्ञानयोग के माध्यम से ि◌मने हलए मुक्ति-प्राक्प्त में सायक हसद्ध ि◌ोता ि◌ै।

कमपयोग के अभ्यास के हलए कठोर नैहतक अनुिासन तथा इक्न्द्रय-हनग्रि अहनायप ि◌ै।
िस्तुतः ब्रह्मचयप अत्यािश्यक ि◌ै। इसके अहतररि सहिष्णुता, सामंस्य, सिानुभूहत, दया, समदृहष्, मानहसक सनुतुलन, हिश्व-प्रेम, धैयप, दृढ़ता, हिनम्रता, उदारता, उदात्तता, आत्महनग्रि, क्रोधानुिासन, अहिंसा, सत्य, खान-र्ान तथा हनद्रा में हमताचार, सादा ि◌ीिन तथा हतहतक्षा ि◌ैसे सद्गुणों ◌ंका अिपन भी अत्यन्त आिश्यक ि◌ै।

प्रत्येक मनुष्य को अर्ने ि◌णप तथा आश्रम के अनुसार स्व-धमप का र्ालन करना चाहिए। र्र-धमप के प्रहत आकहषपत ि◌ो कर स्व-धमप का र्ररत्याग श्रेयस्कर नि◌ीं ◌ंि◌ोता।

कुछ लोगों ◌ंके अनुसार कमपयोग एक हनम्न कोहट का योग ि◌ै। ि◌े सोचते ि◌ैं हक र्ानी लाना, बरतन साफ करना, हनधपनों ◌ंको भोिन देना और फिर र्र झाड़ू लगाना भृत्योहचत कमप ि◌ैं; हकन्तु यि एक दु:खद भूल ि◌ै। िस्तुतः ये लोग कमपयोग की प्रहिहध तथा महिमा से हनतान्त अर्ररहचत ि◌ोते ि◌ैं। हत्रलोकीनाथ भगिान् कृष्ण को अिुपन के सारहथ का कायप-भार ग्रिण करने के अहतररि गोर्ालन-कमप भी करना र्डा था।

भक्तियोग
(प्रेम प्रेम के डलए)

भगिान् के प्रहत प्रगाढ़ प्रेम को भक्ति कि◌ते ि◌ैं। भक्तियोग भक्ति का मागप ि◌ै। इसके प्रहत अहधकांि लोग आकहषपत ि◌ोते ि◌ैं। 'प्रेम प्रेम के हलए'-भक्तियोगी का हमगपदिपक सूत्र ि◌ै। ईश्वर प्रेम का मूतप रूर् ि◌ै। उसके प्रहत प्रेम ि◌ी उसकी प्राक्प्त में सायक ि◌ोगा। भािािेिरूणप दाम्पत्य प्रेम की भााँहत तीव्र एिं उत्कट प्रेम ि◌ारा ि◌ी ईश्वर-साक्षात्कार सम्भि ि◌ै। भगित्प्रेम के हिकास की गहत आनुक्रहमक ि◌ी ि◌ोनी चाहिए।

हिसका ईश्वर के प्रहत प्रेम-भाि ि◌ै, ि◌ि दुःखी और अभािग्रस्त नि◌ीं ◌ंि◌ोता। ि◌ि हकसी प्राणी या िस्तु से घृणा नि◌ीं ◌ंकरता। हिषय-िासना से उसे आनन्द नि◌ीं ◌ंप्राप्त ि◌ोता। ि◌ि अर्ने उत्कट प्रेमाहलंगन में सबको आबद्ध कर लेता ि◌ै।

काम तथा तृष्णा भक्ति के प्रहतबन्धक ि◌ैं। ि◌ब तक आर्के मन में कामना का लेिमात्र भी अििेष ि◌ै, तब तक आर्के ईश्वर-प्रेम में तीव्रता नि◌ीं ◌ंआ सकती।

आत्महनिेदन भगिान् के प्रहत रूणप, अकृहत्रम तथा हनरर्ेक्ष आत्मसमर्पण ि◌ै। यि निधा-भक्ति का उत्तम प्रारूर् ि◌ै। आत्महनिेदन प्रर्हत्त अथिा ि◌रणागहत ि◌ै। प्रर्हत्त के ि◌ारा भि भगिान् से तादात्म्य स्थाहर्त कर लेता ि◌ै। उसे ईश्वरीय अनुग्रि या प्रसाद की प्राक्प्त ि◌ो ि◌ाती ि◌ै।

ईश्वर के प्रहत प्रेम तथा सखा-भाि–हनत आनन्दाहतरेक का सम्यक् िणपन काब्दों ंिारा असम्भि िै। यि क्तस्थहत्त उस मूक व्यक्ति की-सी क्तस्थहत िै िो स्वाहदष् निोन कर लेने के बाद स्वयं को भोिन के स्वाद–िणपन में सिपथा असमथप र्ाता िै। इसकी अनिॄहत कुछ हिहिष् िनों ंके हलए िी सम्भि िै। हिसको एक बार यि समानुभूहत िो चुकी िै, एकमात्र ििी उसके दिपन, उसके श्रिण तथा उसके िणपन में समथप िो सकेगा; क्ोंहक िि अनिरत रूर् से उसी का हचन्तन करता रिता िै।

आध्याक्तिक हिज्ञानों ंमें भक्ति एक प्रमुख हिज्ञान िै। ईश्वर के प्रहत हिसका नम िै, िि िस्तुतः एक समृक्तद्ध-सम्पन्न व्यक्ति िै। भगित्प्रेम के अभाि के अहतररि अन्य कोई भी दुःख निीं िै। भगिान् के प्रहत भि का प्रेम िी एकमात्र सम्यक् मागप िै। नरमिा का नाम, उसके गुण तथा उसकी लीलाएँ सतत स्मरणीय िैं। उसके चरण-कमल ध्यान के मुख्य हिषय िैं। भि भगित्प्रेम का अमृत-र्ान करता िै।

भिों ंमें िाहतगत, हिश्वासगत, ईरिरगत, िणपगत या प्रिाहतगत र्ाथपक् निीं ंिोता। इन बातों ंकी ओर ईश्वर का ध्यान निीं ंिाता। िि भिों ंके हृदय की िुद्धता को िी देखता िै। कोई भी व्यक्ति भगिद्भि िो सकता िै। असूपृश्य नन्दा, चमपकार रैदास, आखेटधमी कण्णप्प, नाई सेना, मुसलमान बुनकर कबीर और भीलनी ििरी ये सभी भगिान के भि तथा मिान् सन्त थे। आखेटधमी कण्णप्प एक हनरक्षर तथा बबपर व्यक्ति था। उसने मुँि में िल भर कर हिि-हलंग र चढ़ा हदया था नैिेद्य अहर्पत कर हदया था; हकन्तु श्रेष्ठतम भिों ंमें की िाती िै। दहक्षण भारत के िैष्णि अलिार तथा िैि नयनार समि के हभन्न-हभन्न िगों के सदस्य थे।

राियोग
(डचि-वृडि-डनरोध)

राियोग आिहनग्रि तथा मन के हनयन्त्रण के माध्यम से ईश्वर से सायुज्य-स्थार्न की हिधा िै। यि
िमें इक्तियों ंके हनयम तथा हचत्त से हनःसृत िोने बाली हिचार-तरंगों ंअथापत् हचत्तिृहत्तयों ंके हनरोध, एकाग्रता के हिकास तथा ईश्वर-साहन्नध्य की कला में प्रहिहक्षत करता िै। िठयोग में िरीर तथा राियोग में मन को प्रहिहक्षत हकया िाता िै।

अष्टांगयोग

यम, हनयम, आसन, प्राणायाम, प्रत्यािार, धारणा, ध्यान तथा समाहध राियोग के अष्टांग िैं।

यम तथा हनयम की गणना उस नैहतक अनुिासन के अन्तगपत की िाती िै हिससे हचत्त–िुक्तद्ध िोती िै। अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचयप, अस्तेय और अर्ररग्रि के सक्तम्महलत रूर् को यम के नाम से िाना िाता िै। ये सभी गुण अहिंसा में बद्धमूल िैं।

कुछ हिहिष् व्रतों ंया हिहधयों ंके अनुर्ालन को हनयम किा िाता िै। िौच, सन्तोष, तर्, स्वाध्याय तथा ईश्वर-प्रहणधान हनयम के अन्तगपत आते िैं। यम तथा हनयम में क्तस्थत साधक योगाभ्यास में त्वररत गहत से प्रगहत करता िै।

आसन, प्राणायाम तथा प्रत्यािार को योग के अहतररि साधन के रूर् में व्यिहित हकया िाता िै। आसन क्तस्थर मुिा तथा प्राणायाम श्वास-प्रश्वास का हनयमन िै। इससे िाक्तन्त, मन की क्तस्थरता तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राक्तप्त

ीती ै। हिषयों ंसे इहदयों ंकी हिमुखता प्रत्यािार ै। आर्के हलए प्रत्यािार का अभ्यास आिश्यक ै; ियााँहक एकमात्र इसी के िारा आर्को अन्तदृपहष् तथा अन्तमुपखता की सम्प्राक्तप्त िोगी ै।

हकसी बाह्य हिषय, अन्तिक्र अथिा हकसी इष् या अहधष्ठातृ देिता र मन की क्तस्थरता को धारणा किते ीं। इसके र्श्चात् आता ै ध्यान। यि हकसी एक हिषय तर केक्तित हिचारों ंका सतत प्रिाि ै। ध्यान िारा साधक समाहध की हदिा में अग्रसर िोता ै। समाहध में ध्याता तथा ध्येय एक ो जाते ैं। इस क्तस्थहत में हचत्तिृहत्तयााँ हितान्त क्षीण, मन सिपथा हनक्तिय एिं संस्कार-समुदाय तथा िासनाएाँ रूणपतः हिनष् ो जाती ैं और योगी िन्म-मरण के चक्र से मुि ो कर कैिल्य प्राप्त कर लेता ै।

डचि की एकाग्रता-सफलता की कुांजी

सचपलाइट में हकतनी िक्ति ोती ै! एक हिहिष् हिहध से हनहमपत कााँच (लेन्स) का केिीभूत सूयप की हकरणें रूई को िला सकती ैं। इसी प्रकार आर् भी हचत्त की बबाल िृहत्तयों ंको एक हिषय र केक्तित कर चमत्कारों ंकी सृहष् और इसके प्रकाि िारा प्रकृहत के रिस्यों ंका ज्ञान प्राप्त कर सकते ैं।

एक िैज्ञाहनक अर्नी प्रयोगिाला में बैठ कर अर्नी सारी िक्ति को एक हबन्दु र एकत्र कर अर्ने िोध तथा अनुसन्धान के हिषय र केक्तित कर देता ै। इसके फलस्वरूर् उसे तत्त्वाहद का रूणप ज्ञान प्राप्त ो िाता ै और िि प्रकृहत के समस्त प्रच्छन्न रिस्यों ंको िस्तामलकित् अनािृत कर देता ै। ज्योहतषी भी यिी करता ै। िि अर्ने दूरदिपक-यन्त्र के माध्यम से ग्रि-नक्षत्रों ंर अर्ना ध्यान केक्तित कर नक्षत्र-हिज्ञान से र्ररहचत ो िाता ै। रेहडयो, बेतार का तार, तार, दूरदिपन, ग्रामोफोन, दूरभाष, भार् के इंिन आहद सारे आहिष्कार गिन एकाग्रता िारा िी सम्भि ो सके ैं।

हचत्त की एकाग्रता के अभाि में आर् आध्याक्तिक साधना या िीिन के हकसी भी क्षेत्र में सफल निीं ो सकते। मन बन्दर की भााँहत चंचल ै। यहद रसोइये का हचत्त एकाग्र ै, तो िि कुिलतारूिपक भोिन तैयार कर सकता ै; हकन्तु यहद उसमें एकाग्रता निीं ै, तो िि भोिन हनतान्त अरुहचकर और स्वाद-गन्धिीन ो िायेगा। िल्य-हचहकत्सा-कक्ष में िल्य-हचहकत्सक को और िलर्ोत में र्ोतचालक को रूणप आय से एकाग्र-हचत्त ोने की आिश्यकता ोती ै। िकील, अध्यार्क, हिहधिेत्ता तथा हिद्याथी-इन सभी में हचत्त की एकाग्रता अहनिायप ै। एकाग्र-हचत्त ो कर िी िे मानो व्यिसाय में सफल ो सकते ैं। मिान् कायों के हनष्पादन में सफल सभी मिान् िा मेधािी व्यक्तियों ंमें हचत्त की एकाग्रता रूणप रूर् से हिद्यमान थी।

सांसाररक हिषयों ंमें रत मनुष्य की हचत्तिृहत्तयााँ बहिमुपखी ोती ैं। उसका मन बन्दर की भााँहत चंचल रिता ै। िि सिपदा आिान्त रिता ै। धन, स्त्री, सन्तान, सम्पहत्त, गृिहद मात्र उसके हचन्तन के हिषय ोते ैं। उसका मन धनोर्ािपन एिं अर्नी इक्तच्छत िस्तुओं ंकी सम्प्राक्तप्त में सदैि व्यस्त रिता ै। हचत्त की एकाग्रता का उसमें हनतान्त अभाि ोता ै। अन्तदृपहष् तथा आि-हिश्लेषण उसके हलए दुलपभ ैं। उसका मन बहिमुपखी प्रिृहत्तयों ंका आश्रय स्थान बना रिता ै।

योगी अर्ने हचत्त को चक्रों, ं मन, सूयप, नक्षत्रों ंतथा तत्त्वाहद र क्तस्थर कर अहधमानिीय ज्ञान प्राप्त करता ै। िि तत्त्वों ंर स्वाहमत्व प्राप्त कर लेता ै। हचत्त की एकाग्रता िी ज्ञान के कोषागार के ताले की एकमात्र कुंिी ै।

हचत्त की एकाग्रता की प्राक्तप्त एक सप्ताि या मास में सम्भि नहीं ंहै। इसके हलए कुछ समय की आिश्यकता तो होती ही है। इसके अभ्यास में हनयहमतता का सिोपरर मित्त्व है। ब्रह्मचयप, िान्त तथा मनोनुकूल स्थान, सन्तों ंकी संगहत एिं साक्तत्वक आिार हचत्त की एकाग्रता के सियक उपकरण हैं।

हचत्त की एकाग्रता तथा ध्यान िारा साधक समाहध की हदिा में अग्रसर होता है। हितकप, हिचार, आनन्द तथा अक्तस्मता समाहध के हिकास-क्रम की हिहभन्न अिस्थाएँ हैं। इस प्रकार इन अिस्थाओं ंको आक्रान्त करने के पश्चात् कैिल्य का प्रसाद प्राप्त होता है।

डसस्तद्धयााँ अवरोधक भी हो सकती हैं

योगाभ्यास में योगी की प्रगहत के फल-स्वरूप उसे हसक्तद्धयााँ प्राप्त होने लगती हैं। दूरदिपन तथा दूरश्रिण आहद जैसी हसक्तद्धयााँ योगी के मागप में अिरोध उत्पन्न करती हैं। उसे चाहिए हक िि इनकी हनमपम उपेक्षा करते हुए अपने लक्ष्य, असम्प्रज्ञात या हनहिपकल्प-समाहध की हदिा में अव्यिहहत गहत से अग्रसर होता रिे। यथाथप आध्याक्तिकता से इन हसक्तद्धयों ंका कोई सम्बन्ध नहीं ंहै। ये तो हचत्त की एकाग्रता के गौण फल मात्र हैं। इन हसक्तद्धयों ंका अनुगमन करने िाला सांसाररकता या गृहस्थाश्रम के अहिहित कमों में हलप्त व्यक्ति है। यहद िि सतकप नहीं ंहै, तो उसका पतन हनहित है।

ज्ञानयोग

(आध्यास्तत्मक अिदपशपन का मागप)

ज्ञानयोग ज्ञान का मागप तथा ब्रह्मज्ञान मोक्ष-प्राक्तप्त का साधन है। जीिािा के परमािा अथापत् ब्रह्म से तादात्म्य की प्रतीहत या अनुभि से िी मुक्ति प्राप्त होती है। अहिद्या बन्धन तथा दुःख का कारण है। अहिद्या के कारण कुष्ठि िी मूखपतािि स्वयं को िारा से पृथक समझ लेता है। अहिद्या की आिरण–िक्ति के परला का स्वतं अपने यथाथप हदव्य स्वरूप का ज्ञान नहीं ंहो पाता। ब्रह्मज्ञान इस आिरण को नि को उसे सत्-हचत्-आनन्द-स्वरूप में प्रहतहष्ठत कर देता है।

आध्यास्तत्मक अिदपडि तथा बौस्तद्धक ज्ञान

ज्ञानयोगी इस सत्य से पररहचत हो जाता है हक ब्रह्म उसके जीिन का जीिन तथा उसकी आिा की आिा है। उसे इस तथ्य का ज्ञान हो जाता है हक परमािा उसका आिस्वरूप है। आध्याक्तिक अन्तदृपहष् या अन्तःप्रज्ञा से उसे िाश्वत सत्ता से इतनी अहभन्नता की अपरोक्षानुभूहत हो जाती है। िि यि भी समझ जाता है हक अभिलोकन तथा हसद्धान्तों ंके प्रहत आिश्यीलता मात्र से यि सम्प्राक्तप्त असम्भि है। धिां अब उसके हलए अथपिीन िातापलाप का हिषय न हो कर अनुभूहत का हिषय हो जाता है। िि सतत तथा गिन ध्यान अथापत् हनहदध्यासन के माध्यम से हृदय की गिनतम गुिा में प्रहिष् हो कर उस आिायपिनक आि-मुिा को, उस आियपिनकी हनहध को प्राप्त कर लेता है हिसके समक्ष संसार की सारी सम्पहत्त नगण्य है।

ज्ञान केिल बौक्तद्धकता-प्रसूत ज्ञान नहीं ंहै। यि श्रिण तथा स्वीकृहत मात्र नहीं ंहै। यि केिल बौक्तद्धक सिमहत न हो कर चरम सत्ता से िी की एकत्व-भािना की प्रत्यक्ष अनुभूहत है। इसे पर-हिद्या किते हैं। मात्र बौक्तद्धक ज्ञान आपको ब्रह्मज्ञान की प्राक्तप्त नहीं ंकरा सकता।

ज्ञानयोग का साधक सिपप्रथम साधन-चतुष्य अथापत् हििेक, िैराग्य, -सम्पत् तथा मुमुकुषुत्व से सम्पन्न िोता िै। मि, दम, उर्रहत, हतहतक्षा, श्रद्धा तथा समाधान को षट्-सम्पत् किते िैं। साधन-चतुष्य से सम्पन्न साधक गुरु के चरणकमलों ंमें बैठ कर उससे शुरुहतयों ंका श्रिण-लाभ करता िै। गुरु मात्र श्रोहत्रय न िो कर ब्रह्महनष्ठ भी िोता िै। इसके र्ात् साधक मनन का अभ्यास करता िै हिसके फलस्वरूर् उसके सभी संियों ंकी आत्यक्तन्तक हनिृहत्त िो िाती िै। तदनन्तर िि ब्रह्म के गिन ध्यान अथापत् हनहदध्यासन िारा ब्रह्मसाक्षात्कार कर लेता िै हिसके
फलस्वरूर् िि िीिन्मुक्त िो िाता िै। िरीरस्थ िोते हुए भी उसे मुक्ति का प्रसाद प्राप्त िो िाता िै।

ुभेच्छा, हिचारणा, तनुमानसी, सत्त्वार्हत्त, असंसक्ति र्दाथापभािना एिं तुयपगा अथिा तुरीय ज्ञान की सप्त-भूहमकाएँ िैं।

दो र्डक्षयो ंका ििर्दा

एक िी िृक्ष र्र दो र्क्षी बैठे िैं। एक िृक्ष की सिोर्रर िाखा र्र िै और दूसरा नीचे की िाखा र्र। सिोर्रर िाखा र्र बैठा र्क्षी सिपदा िान्त, मौन तथा अर्नी महिमा में अहधहष्ठत रिता िै। िि सिपदा आनन्द-स्वरूर् रिता िै। हकन्तु हनम्नतर िाखा र्र बैठा र्क्षी क्रमिः मधुर तथा हति फलों ंका रसास्वादन करता रिता िै और कभी-कभी िषापहतरेक में नृत्य भी करने लगता िै। िि क्षण-क्षण में कभी सुखी और कभी दुःखी िोता रिता िै। कभी-कभी िि अत्यन्त हति फल का आस्वादन कर उहिग्न िो उठता िै। िि ऊर्र बैठे स्वहणपम र्ंख िाले अद्भुत र्क्षी का अिलोकन करता िै िो सिपदा अर्ने आनन्द-स्वरूर् में क्तस्थत रिता िै। िि भी इस स्वहणपम र्ंख िाले र्क्षी का स्वरूर् ग्रिण करना चािता िै; हकन्तु िीघ्र िी उसकी यि इच्छा हिसृमृत िो िाती िै और िि र्ुनः मधुर-हति फलों ंके रसास्वादन में हलप्त िो िाता िै। िि र्ुनः एक दूसरा फल खाता िै िो अत्यहधक हति िोता िै। इसके फल-स्वरूर् िि अत्यन्त दुःखी िो िाता िै और एक बार र्ुनः िि ऊर्र बैठे र्क्षी के समतुल्य िोना
चािता िै। क्रमिः िि फल-भक्षण का र्ररत्याग कर देता िै और ऊर्र बैठे र्क्षी की भाँहत िान्त तथा आनन्द-स्वरूर् िो िाता िै। ऊर्र बैठा र्क्षी ईश्वर या ब्रह्म िै, िब हक नीचे बैठा र्क्षी िीि या िीिात्मा िै िो अर्ने कमापनुसार सुख-दुःख का फल भोगता िै। िीिन-संघषप में आघात सिन करता हुआ िि आरोिण तथा अिरोिण की क्तस्थहत को प्राप्त िोता रिता िै। िि ऊर्र उठता िै; हकन्तु इक्तियों ंसे सम्मोहित िो कर र्ुनः नीचे हगर िाता िै।
िि अनुक्रहमक रूर् से हििेक तथा िैराग्य की साधन-सम्पदा अहिपत कर ईश्वरोन्मुख िो िाता िै और ध्यान के अभ्यास िारा आत्मसाक्षात्कार का प्रसाद प्राप्त कर ब्रह्म के िाश्वत आनन्द का अनुभि करने लगता िै।

समन्वययोग

कुछ लोगों ंके हिचारानुसार कमपयोग का अभ्यास िी मोक्ष का एकमात्र साधन िै। कुछ अन्य लोगों ंकी यि मान्यता िै हक ईश्वर-भक्ति िी मुक्ति का एकमात्र साधन िै और कुछ लोगों ंके हिश्वासानुसार ज्ञान-मागप िी हनरहतिय आनन्द की सम्प्राक्तप्त का एकमेि र्थ िै। हकन्तु कुछ लोग ऐसे भी िैं िो इन तीनों ंमागों को र्ूणपता एिं मोक्ष की प्राक्तप्त के हलए समान रूर् से प्रभािप्रद समझते िैं।

मनुष्य संकल्प, भािना तथा हिचार का एक हिहचत्र हमश्रण िै। िि अर्नी आकांहक्षत िस्तुओं ंको प्राप्त करने का प्रयास करता िै। उसमें संिेग िै हिससे उसमें भािनाओं ंका उिेक िोता िै। उसमें बुक्तद्ध तथा हििेक िैं हिससे िि हिचार तथा तकप-हितकप करता िै। कुछ लोगों ंमें संिेगात्मक तत्त्वों ंका प्राबल्य रिता िै, िब हक कुछ लोग मुख्यतः हििेक-बुक्तद्ध िारा अनुप्राहणत िोते िैं। हिस प्रकार संकल्प, भािना तथा हिचार र्रस्पर अर्ृथक् िैं, उसी प्रकार कमप, भक्ति तथा ज्ञान भी एक-दूसरे से अर्ृथक् िैं।

समन्वययोग साधना की सिापहधक उर्युि एिं प्रभिाप्रद हिहध िै। मल, हिक्षेर् तथा आिरण-ये मन के हिकार-त्रय िैं। मल का हनराकरण कमपयोग के अभ्यास से, हिक्षेर् की हनिृहत्त उर्ासना से और आिरण का उच्छेदन ज्ञान-मागप से करना चाहिए। अिािासाक्षात्कार का एकमात्र मागप यिी िै। दर्पण र् से धूल आहद िटा कर, उसे एक स्थान र् क्तस्थर कर तथा उसके बाह्य आिरण-र्ट को िटा कर िी आर् उसमें अर्क मुाँ स्पष् रूर् से देख सकते िैं। सरीर के तल में स्पष् प्रहतहबम्ब-दिपन के हलए उसके र्ंक, िायु-प्रताहडत िल के उिलन तथा उसकी काई को नष् करना हनतान्त आिश्यक िै। यिी बात आिसाक्षात्कार के सम्बन्ध में भी िै।

समन्वययोग से िी सामंस्यिरूणप तथा समग्र हिकास सम्भि िो सकेगा और एकमात्र उसी की साधना से रीर, मक्तस्तष्क तथा हृदय समुपुष् िो सकेंगे। मनुष्य के हलए रूणपत्व-प्राक्तप्त का यिी साधन िै। प्रत्येक हदिा में सामंस्यिरूणप सनुतुलन िी धमप का आदिप िै। इसकी सम्प्राक्तप्त समन्वययोग के अभ्यास से िी सम्भि िोती िै।

सभी िीिों ंमें िैहश्वक आिा का दिपन ज्ञान िै, इस िैहश्वक आिा के प्रहत प्रेम भक्ति िै तथा इसकी सेिा कमप िै। ज्ञान-प्राक्तप्त के र्ित् ज्ञानयोगी भक्ति तथा हनष्काम कमप से सम्पन्न िो िाता िै। कमपयोग उसकी आध्याक्तिक प्रकृहत की एक सिि अहभव्यक्ति िै; क्ोंहंक िि सिपभूतों ंमें एक िी आिा का दिपन करता िै। िब भि भक्तियोग में हनष्णात िोता िै, तब िि ज्ञान तथा कमप से भी सम्पन्न िो िाता िै। उसके हलए भी कमपयोग उसकी हदव्य प्रकृहत की सिि अहभव्यक्ति िो िाता िै; क्ोंहंक उसे ईश्वर के दिपन सिपत्र िोते िैं। कमपयोगी के हलए ज्ञान तथा भक्ति की सम्प्राक्तप्त तभी सम्भि िोती िै, िब उसके कमप रूणपतः हनष्काम िो िाते िैं। ये तीनों ंमागप िस्तुतः एक िी िैं। इन तीनों ंमें से प्रत्येक अर्ने िेष अहिच्छेद संघटक तत्त्वों ंर्र प्रधानता प्राप्त कर लेता िै। योग से िमें उस हिहध की प्राक्तप्त िोती िै हिससे िम आिदिपन, आिप्रेम तथा आिसेिा में समथप िो र्ाते िैं।

निम अध्याय

हिन्दू-धमपहिज्ञान

हिन्दू-धमपहिज्ञान-हिषयक िगीकरण

डिन्दू-धमप: डवडभि मतो ंका मैत्री-सांघ तथा डवडभि दशपनो ंका मिसांघ

हिन्दू-धमपहिज्ञान मुख्यतः दित्व के छि रूर्ों–गणेि, दिेी (दुगाप, लक्ष्मी, सरस्वती), हिि, हिष्णु, सूयप तथा स्कन्द-की आराधना का अध्ययन तथा मत (doctrine) िै। हदव्य आराधना के इन क्षों ंको षण्मत किा िाता िै।

हिन्दू-धमप सािपभौम, उदार, सहिष्णु तथा लचीला िै। यि इसका अद्‌भुत स्वरूर् िै। एक हिदेिी हिन्दू-धमप के नानाहिध सम्प्रदायों ंएिं मतों ंके नाम सुन कर आियपचहकत रि िाता िै; हकन्तु यि हिहिधता हिन्दू-धमप का दोष न िो कर इसका गुण या इसकी िोभा िी िै। लोगों ंमें मनोगत एिं स्वभािगत िैहभन्य िोता िै; अतः हिहभन्न आस्थाओं ंका िोना भी आिश्यक िै। यि हिन्दू-धमप का मूलभूत हसद्धान्त िै िो स्वाभाहिक भी िै। इस धमप में उिेतर से ले कर हनम्नतम आिाओं ंतक की अहभिृक्तद्ध और उनके हिकास के हलए र्यापप्त स्थान िै।

हिन्दू-धमप अत्यन्त लचीला िै। यि अनेक सम्प्रदायों ंएिं उर्ासना-र्द्धहतयों ंको स्वयं में समाँिे हुए िै; हकन्तु अनेक मित्त्वरूणप हबन्दुओं ंर्र इसमें र्रस्पर भेद भी िो िाता िै। हिन्दू-धमप में िेदान्त, िैष्णि, िैि, िाक्त आहद अनेक मत सहन्नहित िैं। यि अनेक मतों ंएिं उर्ासना-र्द्धहतयों ंका रुंि िै। यि हकसी हनहित मत के प्रहत आग्रिेील कोई धमप-हििेष न िो कर धमों का एक मिासंघ िै। इसके िार सभी के हलए खुले िैं। इसमें योग्यता एिं हिकास के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के हलए आध्याक्तिक मागपदिपन की व्यिस्था िै। उदार धमप का सौन्दयप इसी में सहन्नहित रिता िै और यिी िै हिन्दू-धमप की महिमा। अतः यिााँ हिहभन्न मत-मतान्तरों ंमें हकसी प्रकार के हिरोध के दिपन निीं िोते। ऋग्वेद की उद्‌घोषणा िै : "एकं सहिप्राः बहुधा चदक्तन्त" अथापत् सन्त िन एक िी सत्य को रृथक् रृथक् नामों ंसे रुकारते िैं। उर्हनषदों ंकी मान्यता िै हक हिस प्रकार रृथक् रृथक् रंगों ंिाली गायों ंके दूध का रंग एक अथापत श्वेत िी िोता िै, उसी प्रकार सभी धाहमपक या आध्याक्तिक मागों का गन्तव्य भी एक िी िोता िै। गीता में भगिान् श्रीकृष्ण किते िैं: मनुष्य हकसी भी मागप से मुझ तक क्ों न रहुाँचे, मैं उसको िरण देता हाँ, क्ोंहक िे सारे मागप मेरे िी में समाहित िो कर सारी

इस प्रश् का उत्तर कहठन िै हक हिन्दू-धमप िै क्ा? यि आस्थाओं ंका कै्षेत्री-संघ तथा दिपनों ंका मिासंघ िै। यि हिश्व के हिहभन्न मतािलम्बी हिचारको िथा दािपहनकों ंके हचन्तन के हलए र्यापप्त सामग्री प्रदान करता िै। सभी दिपन आिश्यक िैं। एक व्यक्ति के हलए िो दिपन आकषपक और सरल-सुिि िो सकता िै, और हकसी अन्य व्यक्ति के हलए अनाकषपक और दुबोध िो सकता िै। अतः हिहभन्न दृहष्कोण आिश्यक िैं। हिन्दू-धमप के सभी दिपन हिहभन्न दृहष्कोण िी िैं। ये हिज्ञासुओं ंको उिे से उिेतर स्तरों ंकी ओर अग्रसरण की प्ेरेरणा देते हुए उन्ें आध्याक्तिक महिमा के उिेतम हिखर र्र आरूढ़ करिा देते िैं।

सनातनधमी, आयपसमािी, दिेसमािी, िैन, बौद्ध, हसक्ख और ब्रह्मासमािी-ये सभी हिन्दू िी िैं; क्ोंहक इनका प्रादुभापि हिन्दू-धमप से िी हुआ िै और ये हिन्दू-धमप के एकाहधक क्षों ंको अत्यहधक मित्त्वरूणप समझते िैं।

हिन्दू ◌ैष्णि, ◌िै तथा ◌ि◌ा-इन तीन मिान् एिं मित्त्वरूणप सम्प्रदायों ◌ंमें हिभाहित ◌ैं ◌ो क्रमिः हिषुणु, ◌िहि तथा भगिती मातृ दिी के उऱासक ◌ैं। इनके अहतररि सौयप, गाणर्त्य तथा कौमार भी ◌ैं ◌ो क्रमिः भगिान् सूयप, गणि तथा स्कन्द को ईश्वर मान कर उनकी उऱासना करते ◌ैं।

◌ैष्णि
श्री-सम्प्रदायी

◌ैष्णि सामान्यतः चार प्रमुख सम्प्रदायों ◌ंमें हिभि ◌ैं। इनमें रामानिुाचायप ◌िारा प्रिहतपत श्री-सम्प्रदाय प्राचीनतम ◌ै। रामानिुाचायप के अनुयायी हिषुणु भगिान्, लक्ष्मी तथा इनके अितारों ◌ंकी आराधना करते ◌ैं। इनको रामानिुी, श्रीसम्प्रदायी या श्री ◌ैष्णि किा ◌िाता ◌ै। ये लोग 'ॐ नमो नारायणाय' अष्ाक्षर-मन्त्र का ◌ि् करते और मस्तक र दो रेखाओं ◌ंके मध्य एक लाल रंग की रेखा का हतलक लगाते ◌ैं।

रामानिुाचायप के ◌िदान्त देहिक नामक एक अनुयायी ने ◌ैष्णि-मत में कुछ सुधार हकये हिनके फलस्वरूर् रामानिुी दो दलों ◌ंमें हिभि ◌ो गये। इनमें एक को बडगलाई (उदीच्य-मत) और दूसरे को तेंगलाई (दाहक्षणात्य-मत) किा ◌िाता ◌ै। तेंगलाई प्रर्ह्त्त या आिसमर्पण को ◌ी मोक्ष का एकमात्र साधन समझते ◌ैं। डिगलाई इसे मात्र अनेक साधनों ◌ंमें से एक साधन मानते ◌ैं। ◌िडगलाई मत के अनुसार भि एक बानर-ि◌िु की भााँहत ◌िोता ◌ै ◌ो अर्नी मााँ के साथ स्वयं हचर्का रिता ◌ै (मकपट-न्याय); हकनुतु दाहक्षणात्य-मत के अनुसार भि एक मिाापरि–िाक की भााँहत ◌ोता ◌ै ◌ो मााँ ◌ारा हबना प्रयास के ◌ी इतस्ततः ले ◌ाया ◌ाता ◌ै (मिाापर-न्याय)। उदीच्य-मत को संसूकृत भाषा में हलक्तखत ◌ेद मान्य ◌ैं; हकनुतु दाहक्षणात्यों ◌ंने तहमल भाषा में 'नालाहयर प्रबन्धम्' (चतुःसिस्रर्दी) नामक अर्ने हिनी ◌ेदों ◌ंकी रचना कर ली ◌ै हिसे ◌े संसूकृत में हलक्तखत ◌ेदों ◌ंसे प्राचीन समझते ◌ैं। ◌िसुतुतः उनका 'नालाहयर प्रबन्धम्' ◌ेदों ◌ंके और्हनषहदक भाग र ◌ी आधाररत ◌ै। ◌े अर्नी सभी उऱासनाओं ◌ं में इसके र्दों ◌ंका गायन करते ◌ैं।

डिगलाई मतानुसार लक्ष्मी को हिषुणु की सिधहमपणी मानते ◌ैं ◌ो स्वयं अनन्त तथा अिन्मा ◌ैं। ◌े यि भी मानते ◌ैं हक हिषुणु की आराधना की भााँहत उनकी आराधना भी मोक्ष का उऱाय अथापत् साधन ◌ै। तेंगलाई मतानुयायी लक्ष्मी को ◌िन्मीला हकनुतु हदव्यरूहर्णी मानते ◌ैं। उनके मतानुसार ये स्वयं मुक्तिप्रदाहयका न ◌ो कर मुक्ति-प्राक्तप्त के हलए मध्यस्थ मात्र ◌ैं।

दोनों ◌ंमतों ◌ंमें मस्तकीय हतलक-हचह्नों ◌ंमें भी भेद ◌ै। ◌िडगलाई मतानुयायी अर्ने मस्तक र अ◌ाँगरेिी U अक्षर के आकार का श्ेवेत हतलक लगाते ◌ैं, ◌ो गंगा ◌ी के उद्गम स्थान भगिान् हिषुणु के दहक्षण चरण-तल का प्रतीक ◌ै। ◌े इसके मध्य में लाल रंग का एक हचह्न हचहत्रत करते ◌ैं ◌ो लक्ष्मी का प्रतीक ◌ै। तेंगलाई मतानुयायी अ◌ाँगरेिी के Y अक्षर–िसा हचह्न अंहकत करते ◌ैं ◌ो भगिान् हिषुणु के चरण–िय का प्रहतहनहधत्व करता ◌ै। ◌े नाहसका के मध्य भाग तक एक श्ेवेत रेखा का अंकन करते ◌ैं।

दोनों ◌ंमतों ◌ंके अनुयायी अर्ने ◌िक्ष, कन्धों ◌ंतथा अर्नी बााँि◌ों ◌ंर भगिान् हिषुणु के प्रतीक हचह्न ◌िख तथा चक्र का हचत्रांकन करिा लेते ◌ैं।

तेंगलाइयों ◌ंमें हिधिा का के-मुण्डन ◌िहिपत ◌ै। रामानिुी ब्राह्मणों ◌ंके नाम के आगे सामान्यतः उऱाहित-बोधक अय्यंगार, आचायप, चालू तथा आचालू ◌िब्द प्रयुि हकये ◌ाते ◌ैं।

रामानिी

रामानन्द के अनुयाहययों ंको रामानन्दी किते िैं। उत्तरी भारत के लोग इनसे भली हिहध र्रहचत िैं। ये रामानिु-सम्प्रदाय की एक िाखा िै। ये भगिान् राम, सीता, लक्ष्मण तथा िनुमान की उर्ासना करते िैं। रामानन्द रामानिु के हिष्य थे। लगभग चौर्िदिीं ंिताब्दी के प्रारम्भ तक ये िाराणसी में प्रख्यात िो चुके थे। भारत में गंगा की घाटी में इनके अनुयाहययों ंकी संख्या बहुत अहधक िै। उनकी हप्रया कृते भक्ति-माल िै। इनके सम्प्रदायगत हचह्न रामानुहियों ंकी भााँहत िी िैं। रामानन्दी- सम्प्रदाय के गृत्यागी सन्तों ंको िैरागी किा िाता िै।

वल्लभाचारी अथवा कृष्ण-सम्प्रदायी

मुम्बई, गिुरात तथा मध्य भारत में िल्लभाचारी-सम्प्रदाय का अत्यहधक मित्व िै। इसके प्रितपक का न्मि १४७९ में चम्पारण्य में हुआ था। उन्ें भगिान् कृष्ण का अितार माना िाता िै। िल्लभाचारी कृष्ण की आराधना बाल-गोर्ाल के रूर् में करते िैं। िे उनके िार्दिषीय बालरूर् की प्रतीक प्रहतमा की आराधना करते ैं। गोसाईं या धमपगुरु गृस्थ िोते िैं। ईश्वर-स्िून के हलए मक्तन्दरों ंमें दैहनक अष्िहिध अनुष्ठान अथापत् मंगल, शृंगार, ग्वाल, रािभोग, उत्थार्न, भोग, सन्ध्या तथा ियन का हिधान िै। ये सब ईश्वरोर्ासना के हिहभन्न रूर् िैं।

इनके ललाट र् लाल रंग की दो सीधी (perpendicular) रेखाएँ नाहसक के ऊर्र की ओर अधपचिाकार बनाती हुई हमलती िैं। उनके बीच में एक लाल हबन्दु िोता िै। िे तुलसी की कण्ठी धारण करते िैं। श्रीमद्भागित की िल्लभाचायपकृत सुबोहधनी टीका इन लोगों ंका प्रामाहणक ग्रन्थ िै। इस मत के अनुयाहययों ंको अर्ने िीिन-काल में कम-से-कम एक बार र्हित्र नाथिारा की यात्रा अिश्य करनी चाहिए।

चैतन्य-सम्प्रदाय

इस मत का बंगाल तथा उडीसा में अहधक प्रचार-प्रसार िै। इसके प्रितपक चैतन्य मिाप्रभु, हिन्ें गौरांग मिाप्रभु भी किा िाता िै, का िन्म १४८५ ईसिी में हुआ था। लोग उन्ें कृष्ण भगिान् का अितार मानते िैं।
चौबीस िषप की आयु में संन्यास-ग्रिण के र्श्चात् िे िगन्नाथर्ुरी चले गये ििााँ उन्ोंने िैष्णि-मत का उर्देि हदया।

चैतन्यमतािलम्बी भगिान् कृष्ण की उर्ास इस िम र्ुरुष के रूर् में करते िैं। इस मत के िार सभी िाहतयों ंके हलए खुले हुए िैं। इस सम्प्रदाय के अनुयायी भि िम हनरन्तर भगिान् कृष्ण के नाम का िर् करते रिते िैं।

कृष्णदासकृत चैतन्य-चररतामृत एक बृिद ग्रन्थ िै। इसमें चैतन्य तथा उनके प्रमुख हिष्यों ंसे सम्बक्तन्धत कथाएँ प्रस्तुत की गयी िैं तथा इस मत के हसद्धान्तों ंका प्रहतर्ादन भी हकया गया िै। इसकी रचना बंगला भाषा में की गयी िै।

इस मत के अनुयायी िैष्णि ललाट के नीचे की ओर चन्दन अथिा गोर्ीचन्दन की दो श्वेत तथा सीधी (perpendicular) रेखाओं ंिाला हतलक लगाते िैं िो उनकी नाहसका के ऊर्र से आता हुआ इसके अग्रभाग तक चला िाता िै। ये लोग तुलसी के छोटे-छोटे मनकों ंकी तीन लडी िाली छोटी कण्ठी धारण करते िैं।

डनम्बाकप-सम्प्रदाय

इस मत के प्रितपक हनम्बाकप अथिा हनम्बाहदत्य थे। उनका मूल नाम भास्कर आचायप था। उन्ें सूयप भगिान् का अितार माना िाता िै। इनके अनुयायी कृष्ण और राधा के युगल रूर् की उर्ासना करते िैं। इनका प्रमुख धाहमपक ग्रन्थ श्रीमद्भागितर्ुराण िै।

हनम्बाकपमतिालम्बी र्ीत चन्दन की दो सीधी (perpendicular) रेखाएँ किे-मूल के नीचे भौंिि ◌ंके हनकट मोड दे कर हमलाते हुए हतलक लगाते िैं। इसे भगिान् के र्दहचह्नों ◌ंका प्रतीक माना िाता िै।

हनम्बाकप-सम्प्रदायी अथिा हनमाित समस्त उत्तरी भारत में र्ाये िाते िैं। मथुरा में इनकी संख्या बहुत अहधक िै। बंगाल के िैष्णि-सम्प्रदायों ◌ंमें से इस सम्प्रदाय के अनुयाहययों ◌ंकी संख्या सिापहधक िै।

माध्व-सम्प्रदाय

माध्व-सम्प्रदाय के लोग िैष्णि िोते िैं और ब्रह्म-सम्प्रदायी के नाम से िाने िाते िैं। इस मत के संस्थार्क मध्वाचायप थे। उन्ें आनन्दतीथप तथा र्ूणपप्रज्ञ के नाम से भी िाना िाता िै। उनका िन्म १२०० ईसी में हुआ था। िे किराचायप के दिपहनक हसद्धान्त अिैत-मत के प्रबल हिरोधी थे। उन्ें िायु देिता का अितार माना िाता िै। उन्ोंने उडीर्ी में एक मक्तन्दर का हनमापण कराया तथा भगिान् कृष्ण की मूहतप प्रहतहष्ठत की थी।

माध्व-सम्प्रदाय के गुरु ब्राह्मण और संन्यासी िोते िैं। इसके अनुयायी अर्ने अक्ष तथा कन्धों ◌र्र हिष्णु का प्रतीक हचह्न धारण करते िैं। इसके हचत्रांकन के भलते तम लिो का उर्योग हकया िाता िै। उनका हतलक गोर्ीचन्दन की दो सीधी रेखामा बत िोता िै िो िाहसका के ऊर्र िा कर हमल िाता िै। उस र्र ये लोग भगिान कृ र्र चढ़ायी हुई अगरबत्ती की भस्म से एक काली रेखा बनाते िैं िो िल्दी से बनाये हुए, गोल हचह्न में समाप्त िोती िै।

माध्यमतानुयायी दो उर्-सम्प्रदायों ◌ंमें हिभाहित िैं हिन्ें व्यासकूट तथा दासकूट किा िाता िै। इनकी संख्या कनापटक में अहधक िै।

सत्य, िास्त्राध्ययन, उदारता, दया, आस्था तथा अनसूया इनकी आचार संहिता िै। िे अर्नी सन्तान का नामकरण हिष्णु के नाम र्र करते िैं और उनके िरीर र्र उनके प्रतीकों ◌ंको हचत्रांहकत करते िैं। िे मन, िचन और कमप से सगुणों ◌ंका अभ्यास करते िैं।

राधावल्लभ-सम्प्रदाय

राधािल्लभ-सम्प्रदाय के अनुयायी भगिान् कृष्ण की उर्ासना राधा के िल्लभ या हप्रयतम के रूर् में करते िैं। इस सम्प्रदाय के संस्थार्क िररिंि थे। सिा सखी बाणी में इनके हिचारों,◌ं इनकी र्रम्पराओं ◌ंतथा मान्यताओं ◌ंका हिसूतृत िणपन हमलता िै।

चरणदासी, दादूर्न्थी, िररचन्दी, कबीरर्न्थी, खाकी, मलूकदासी, मीराबाई के इहत हनष्िाान् िन, माधिर्न्थी, रैदासी, सेनार्न्थी, सखी-सम्प्रदाय के अनुयायी और सदमार्न्थी ये सभी िैष्णि-मत के अन्तगपत आते िैं।

ॐ

दडक्षण के स्मातप ब्राह्मण

तहमलनाडु के िै ब्राह्मण अर्ने नाम के आगे अय्यर िब्द लगाते िैं। इन लोंगों ंको स्मातप किा िाता िै। ये लोग अर्ने ललाट र्र हिभूहत या र्हित्र भस्म की तीन सीधी रेखाओं ंका हतलक लगाते िैं। ये सभी भगिान् हिि के उर्ासक िैं। इनके हिहभन्न सम्प्रदाय हनम्नित् िैं :

(१) **विमा :** िड दि िडमा, चोल दि िडमा तथा इंहि िडमा।

(२) **बृित्चरणम् :** मलैनाट्टु बृित्चरणम्, र्लमनेरी बृित्वरणम्, हमलघु बृित्चरणम् तथा कण्डरामाहनक्क बृित्चरणम्।

(३) **वाडतमार**।

(४) **अि सिस्रम्**।

(५) **चोडलया** हिन्हें र्ाक्तण्डमार भी किा िाता िै और िो हतरुचेन्दूर के हनिासी िैं।

(६) **गुरुक्कल :** यि िडमाओं ंका िी एक उर्-सम्प्रदाय िै; हकन्तु यि मान्यता प्राप्त निीं ंिै। उनका कतपव्य मक्तन्दरों ंमें िा कर उर्ासना करना िै। तहमलनाडु के दहक्षणी िनर्दों ंमें इन्हें र्र्र नाम से भी िाना िाता िै। ये लोग अचपकों ंसे हभन्न िोते िैं। अचपक उर्युपि उर्-सम्प्रदायों ंमें से हकसी भी उर्-सम्प्रदाय के िो सकते िैं। िे गुरुकल अथिा र्र्रों ंके अहतररि अन्य व्यिसायों ंमें लगे र्ररिारों ंसे ििैाहिक सम्बन्ध स्थाहर्त कर सकते िैं। गुरुक्कल िब्द केिल र्ीिों ंके हलए िी व्यिहृत िोता िै, िब हक र्र्र और अचपक िब्द िैष्णिों ंके हलए भी प्रयुि िोते िैं।

केरल के शैव ब्राह्मण

(१) नम्बूद्रिी, (२) मि्र और (३) एमब्राक्तन्तरी।

बांगाल के शैव ब्राह्मण

(१) चक्रिती, (२) चुन्दर, (३) राय,
(४) गांगुली, (५) चौधरी, ६) हिश्वास,
(७) बागची, (८) मिूमदार और (९) भिाचायप।

कनापटक के शैव ब्राह्मण

(१) स्मातप, (२) िहिगा (३)कोटा , (४) िहिली , (५) तन्त्री ,(६) काडों ंऔर (७) र्ाया।

तेलुगु स्मातप

(१) मुरुहकनाडु, (२) िेलनाडु, (३) करणकम्मलु,
(४) र्ुदुरु िाहिडी, (५) तेलिन्यम्, (६) कोनसीमा िाहिडी और
(७) आरिेल हनयोगी।

डलांगायत

इन्् िीर िि ै किा िाता िै। ये कनापटक में र्ाये िाते िैं। ये एक छोटे रित-र्ात्र में िहिलंग रख कर उसे कण्ठ में धारण करते िैं।

अन्य शैव-सम्प्रदाय

आकिामुखी, गुदारा, गिम, कराहलंगी, नखी, रुखर, सुखर, ऊध्वपबाहु तथा उकारा-ये सभी ििै-सम्प्रदाय के अन्तगपत आते िैं।

िि

िि िगज्जननी दिी के उर्ासक िैं। दहक्षणी, िामी, कंचेहलया और करारी-ये सभी िि-सम्प्रदाय िैं।

कुछ अन्य सम्प्रदाय

सौर सूयप की, गाणत्य गणिे की तथा कौमार स्कन्द की उर्ासना करते िैं। नायुडू, कम्म नायुडू, चिी, मुदहलयार, गाउण्डर, हल्लई, नायर, नायनार और िी दहक्षण भारत के अब्राह्मण िैं।

सात िगों में हिभि नानकिी (उदासी, गंबिख्शी, रामरिी, सूथिी, गोहिन्दहसंिी, हनमपला, नागा), बाबा लाली, प्राणनाथी, साधु, सतनामी एिं ििहिनारायणी-ये कुछ अन्य सम्प्रदाय िैं।

आयपसमािी तथा ब्रह्मसमािी

स्वामी दयानन्द सरस्वती आयप-समाि के संस्थार्क थे। उनका िन्म १८२४ में काहठयािाड में हुआ था। यि समाि धाहमपक रृष्ठभूहम र प्रहतहष्ठत एक सामाहिक सस्था िै। गुरुकुलों, सूकूलों तथा र्ाठिालाओं की स्थार्ना में इसकी हििेष रुहच रिती िै। आयप-समाि की िुद्धि-सभा आयेतर लोगों को आयप-धमप में दीहक्षत करती िै।

ब्रह्म-समाि की स्थार्ना मूलतः रािा राममोिन राय ने उन्नीसिीं ितािदी के प्रारम्भ में की थी। ब्रह्मसमािी मूहतपरूिक निीं िोते। केिचि सेन ने १८६० ईसिी में ब्रा-समाि को एक नया मोड हदया। अब ब्रह्म-समाि की दो िाखाएँ िो गयी िैं। प्रथम रािा राममोिन राय िारा प्रहतर्ाहदत हसद्धान्तों का अनुसरण करती िै हिसे आहद ब्रा-समाि किते िैं। दूसरी िाखा को साधारण ब्रह्म-समाि किा िाता िै। यि केिचि सेन के हसद्धान्तों के अनुरूर् तथा कुछ आधुहनक िै। इसके अनुयायी बंगाल में र्ाये िाते िैं।

साधु तथा संन्यासी

प्राचीन ऋहषयों,ं िष्ाओं,ं सन्तों,ं र्रमिंस संन्याहसयों ंतथा साधुओं ंको प्रणाम। ये लोग हदव्य ज्ञान तथा सम्यक् बुक्तद्ध के आगार एिं भूत, ितपमान तथा भहिष्य में संसार के भाग्य के हनयामक िैं।

प्रत्येक धमप में एक ऐसे िगप की व्यिस्था िै िो हचन्तन और ध्यान का एकान्त तर्स्वी िीिन व्यतीत करता िै। इन्हें बौद्धों ंमें हभक्कुषु, मुसलमानों ंमें फकीर, सूहफयों ंमें सूफी फकीर और ईसाइयों ंमें फादर तथा रेिरेण्ड किा िाता िै। यहद आर् हकसी धमप के मानहचत्र से इन िैखानसों ंअथिा संन्याहसयों ंया हिरि तथा हदव्य ध्यान का िीिन बेरातीत करने िालों ंका अहभलोर्न कर दें, तो उस धमप की गररमा रूणपतः नष् िो िायेगी। यिी िे लोग िैं िो संसार के धमों का रक्षण-र्ोषण तथा दुःखी एिं िोकाकुल गृिस्थों ंको सान्त्वना प्रदान करते िैं। ये लोग आत्मज्ञान, स्वहगपक िाक्तन्त तथा हदय ज्ञान के अग्रदूत और अध्याि-हिज्ञान तथा और्हनषद् ज्ञान के प्रचारक-प्रसारक िोते िैं। ये रोहगयों ंका रोग हनिारण करते, हनराहश्रतों ंको सान्त्वना प्रदान करते तथा रोगी-व्यथा र र् डें रोहगयों ंकी र्रचयाप करते िैं। ये िेदान्त-ज्ञान तथा 'तत्त्वमहस' मिािाक् के हनहिताथप को समझा कर हनरािा व्यक्तियों ंको आिा, िताि िों ंको प्रफुल्लता, हनबपलों ंको बल एिं कायरों ंको सािस प्रदान करते िैं।

दशनामी सांन्यासी

सनक, सनन्दन, सनतुकुमार तथा सनतुसिात भगिान् ब्रह्मा के मानस र्ुत्र िैं। इन्होंने प्रिृहत्त-मागप में प्रिेि करने से इनकार कर हदया तथा हनिृहत्त-मागप अंगीकार हकया। ये चारों ंकुमार संन्यास-मागप के र्थ-प्रदिपक र्ुरोधा थे। श्री दत्तात्रेय भी मौहलक संन्याहसयों ंमें थे। आधुहनक युग के सभी संन्यासी इन चारों ंकुमारों,ं दत्तात्रेय एिं िंकराचायप के आध्याक्तिक उत्तराहधकारी िैं।

श्री िंकराचायप को भगिान् हिि का अितार माना िाता िै। िे कििेीत के प्रख्यात प्रहतर्ादक थे और उन्होंने शृंगेरी, िारका, र्ुरी तथा बदरीनारायण-धाम के मागप में हिमालय-क्तस्थत ज्योहतमठ में एक-एक मठ की स्थार्ना की थी।

सुरेश्वर, र्द्मर्ाद, िस्तामलक एिं तोटक-ये चारों ंश्री िंकराचायप के संन्यासी हिष्य थे। सुरेश्वर, र्द्मर्ाद, िस्तामलक एिं तोटक क्रमिः शृंगेरीमठ, र्ुरीमठ, िारकामठ तथा ज्योहतमठ के प्रभारी थे। श्री िंकर तथा सुरेश्वराचायप के आध्याहलक उत्तराहधकारी शृंगेरीमठ के संन्याहसयों ंके सरस्वती, र्ुरी तथा भारती-तीन नाम, िारकामठ के संन्याहसयों ंके तीथप तथा आश्रम-दो नाम: र्ुरीमठ के संन्याहसयों ंके िन तथा अरण्य-दो नाम ; ज्योहतमठ के के सन्याहसयों ंके हगरर, र्ित तथा सागर तीन नाम िोते िैं।

दिनामी भगिान् हिि अथिा भगिान् हिष्णु की उर्ासना एिं हनगुपण ब्रह्म का ध्यन करते िैं। िाथों ंमें दसि धारण करने िाले दण्डी संन्यासी िंकर र्रम्र्रा से सम्बद्ध िैं। र्रमिंस संन्यासी दण्ड ग्रिण निीं ंकरते िैं। िे र्ररव्राकों ंकी भांहत स्छन्द् हिचरण करते िैं। अिधूत नग्न संन्यासी िोते िैं। िे हनतान्त अर्ररग्रिी िोते िैं।

रामकृष्ण हमिन के संन्यासी श्री िंकर की र्रम्परा से सम्बक्तन्धत िैं। िे अर्ना नाम र्ुरी रखते िैं।

इनके अहतररि हनरंिनी अखाडा तथा िूना अखाडा िैसे अखाडों ंके अखाडा संन्यासी भी िोते िैं िो िंकिरमतािलम्बी िोते िैं। इनकी गणना दिनाहमयों ंमें की िाती िै। ये केिल उत्तर प्रदेि में र्ाये िाते िैं।

ऋहषकेि तथा िररिार संन्याहसयों ंके उर्हनिेि् िैं। िाराणसी भी संन्याहसयों ंका प्रमुख गढ़ िै।

शैव

दहक्षण भारत के तहमल संन्यासी किोीलूर मठ तथा धमपरुरम् अहधनम से सम्बक्तन्धत िैं। िांकर-मत से उनका कोई सम्बन्ध निीं ंिै। िे िैि िोते िैं।

नागा

नागाओं ंकी गणना िैि-संन्याहसयों ंमें की िाती िै। ये नग्न रिते िैं। ये अर्ने र्ूरे िरीर र्र भस्म रमाते और दाढ़ी तथा िटा रखते िैं।

उदासी

गुरुनानक के र्न्थ के तर्क्तस्वयों ंको उदासी किा िाता िै। ये संन्याहसयों ंऔर बैराहगयों ंके समकक्ष िोते िैं। सांसाररक हिषय-िासना के प्रहत उदासीन रिने के कारण इन्हें उदासी किा िाता िै।

वैरागी

िो हिषयासक्ति के हििाहतरेक से रहित िै, िि िैरागी िै। िैरागी िैष्णि िोते िैं। िे भगिान् राम, सीता और िनुमान् की उर्ासना तथा तुलसीदास-रहचत 'रामचररतमानस' का र्ाठ करते िैं। रामानन्दी-सम्प्रदाय के हभक्षाटन करने िाले िैं। िैराहगयों ंकी इस र्रम्परा का प्रारम्भ हिष्य श्री आनन्द ने हकया था।

रामसनेिी

इस सम्प्रदाय के प्रितपक रामचरन का िन्म रािस्थान में ियर्ुर के हनकट एक गााँि में सन् १७१८ ईसिी में हुआ था। रामसनेिी-मत के हभक्षाटनकमी सन्त हिदिे गााँि मोहिनी-इन दो िगों में हिभाहित िैं। हिदिेी नग्न रिते िैं, िब हक मोहिनी से गैररक सूती िस्त्र धारण करते िैं। इनका मठ रािस्थान के िािर्ुर में िै। रामसनेिी-सम्प्रदाय के सािहसक अनुयायी मेिाड तथा अलिर में र्ाये िाते िैं। के मुम्बई, गुिरात, सूरत, र्ूना, अिदाबाद, िैदराबाद और िाराणसी में भी हमलते िैं।

कबीरर्न्थी

कबीरर्न्थी सन्त कबीर के अनुयायी िैं। ये समस्त उत्तर तथा मध्य भारत में बहुत अहधक संख्या में र्ाये िाते िैं। इस र्न्थ की बारि िाखाएाँ िैं। िाराणसी-क्तस्थत कबीरचौरा में कबीरर्क्तन्थयों ंका एक बहुत बडा मठ िै। धमपदास कबीरदास के प्रमुढ हिष्य थे। इस र्न्थ के अनुयाहययों ंसे मन, िचन और कमप से गुरु-भक्ति की अर्ेक्षा की िाती िै। इन्हें सत्यिादी, दयालु, अहिंसािादी और एकान्तिासी िोना चाहिए। कबीर के र्ुत्र कमाल के अनुयायी योगाभ्यास करते िैं।

दादूर्न्थी

दादू-र्न्थ िैष्णि सम्प्रदायों ंके अन्तगपत िी एक र्न्थ िै। इस र्न्थ के गुरु दादू एक कबीरर्न्थी गुरु के हिष्य थे। इनके अनुयायी भगिान् राम के उर्ासक िैं।

अिमदाबाद में िन्म-ग्रिण करने िाले दादू िाहत के धुहनया थे। इन्ें १६०० ईसी के आस-र्ास का माना िाता िै। दादूर्न्थी हिरि, नागा तथा हिस्तरधारी-इन तीन िगों में हिभाहित िैं। हिरि मुक्तण्डतर्ा–ी िोते िैं और अर्ने र्ास केिल एक िस्त्र तथा एक िल-र्ात्र रखते िैं। नागा लोग सिस्त्र िोते िैं औ उन्ें सैहनक माना िाता िै। हिस्तरधारी गृिस्थ का सामान्य िीिन व्यतीत करते िैं।

दादूर्न्थी मारिाड तथा अिमेर में बहुत अहधक संख्या में िैं। इनकी उर्ासमा का प्रमुख स्थान सम्भर तथा ियर्ुर के हनकट नरैना में िै। इनके धमपग्रन्थों ंमें किी िै। दं सहन्नहिष् िैं।

गोरिर्न्थी

गोरखनाथ कबीर के समकालीन थे। उनको भगिान् हिि का अितार माना िाता िै। िे अर्ने को रोज्दनाथ का र्ुत्र और आहदनाथ का र्ौत्र करतार माना िालना-क्तस्थत गोरखर्ुर में गोरखनाथ का एक मक्तन्दर िै। भतृपिरर गोरखनाथ के हिष्य थे।

गोरक्ष–तक, गोरक्ष-कल्प तथा गोरक्षनामा गोरखनाथ िारा संसृकृत में हलक्तखत ग्रन्थ िैं।

गोरखनाथ के अनुयाहययों ंको सामान्यतः कनफटा भी किा िाता िै। इसका अथप यि िै हक दीक्षा ग्रिण के अिसर र्र इनके कान में छेद कर उनमें कुण्डल र्िना हदये िाते िैं। गोरखर्न्थी भगिान् हिि की उर्ासना करते िैं।

डनम्बाकप-सम्प्रदायी एवां रामानुज-सम्प्रदायी

हनम्बाकप-सम्प्रदाय के साधु िैष्णि िोते िैं। रामानुि-सम्प्रदाय के संन्यासी तररक िस्त्र,हिखा, यज्ञोर्िीत तथा हत्रदण्ड धारण करते िैं। इनकी संख्या इस समय नगण्य िै।

र्रणामी-सम्प्रदाय

इप्त सम्प्रदाय के संस्थार्क श्री र्ीरननाथ का िन्म काहठयािाड-क्तस्थत रािकोट िनर्द के अन्तगपत िामनगर में १६७५ ईसी में हुआ था। िे राि िामदास के दीिान थे। इस मत के अनुयायी अहिंसा, सत्य तथा दया का अनुर्ालन करते िैं। ये हिन्दी भाषा में रहचत कुल िाम स्वरूर् या अिबोध नामक र्हित्र ग्रन्थ का र्ाठ करते िैं हिसमें श्री र्ीरननाथ के उर्देि संकहलत िैं। इसमें १८,००० चौर्ाइयाँ िैं। ये बाल कृष्ण की उर्ासना करते िैं।

इस मत के अनुयायी अहधकांितः र्ंिाब, गुिरात, असम, नेर्ाल तथा मुम्बई में र्ाये िाते िैं। इनके दो मठ िैं-एक िामनगर में और दूसरा र्न्ना में।

दिम अध्याय

हिन्दू र्ौराहणकी तथा प्रतीक

हिन्दू र्ौराहणकी

र्ौराहणकी प्रते्येक धमप का एक अहभन्न अंग िै। यि दिपन का मूतप रूर् िै। िसुतुतः र्ौराहणकी एक ऐसा हिज्ञान िै िो प्राचीनकालीन, हिहेषतः आहदकालीम कथाओं ंका अन्वीक्षण करता िै। यि र्ाठकों ंको नैहतक हनदिों ंएिं सटीक दृटान्तों ंिारा प्रबुद्ध कर उनें् रूणपत्व या उितर आदिों ंकी सम्प्राक्तप्त के हलए उते्प्रेररत करता ैं। अमूतप उदिों ंएिं सूक्ष्म हिचारों ंको कथाओं, ं दृष्ान्तों, ं िनशुरुहतयों, ं अन्योक्तियों ंतथा आख्यानों ंमें र्रणत कर सामान्य िन के हलए अत्यन्त रुहचकर तथा प्रभिाप्रद बनाया िा सकता िै। हिन्दू-धमप के उदात्त तथा अमूतप दिपहनक हिचार एिं आदिप प्रभिोत्पादक कथाओं ंका रूर् ग्रिण कर ममपस्पिी िो िाते िैं।

र्ौराडणकी तथा इडतिास

सभी धमों के अर्ने-अर्ने रुराण िैं हिनमें कुछ इहतिास का भी रुट िोता िै। िसुतुतः रुराण तथा इहतिास का सूक्ष्म भेद-दिपन कहठन िै। यहद कोई ईसाई उठ कर किने लगे, "िमारे र्ैगम्बर ने अमुक-अमुक

चमत्काररूूणप कृत्य हकये िैं, तो इसके उत्तर में अन्य लोग कि उठेंगे, "यि तो गल्प मात्र िै। िमारे रैगम्बरों ंने तो इससे भी अहधक चमत्काररूूणप कृत्य हकये िैं िो यथाथपतः ऐहतिाहसक िैं।" िसुतुतः इन दोनों ंके सूक्ष्म अन्तर को
बता र्ाना हनतान्त दुष्कर िै।
अन्य धमों के अनुयाहययों ंके हलए हिन्दुओं ंके अितारिाद का हसद्धान्त कर्ोलकक्तल्पत और गौरहि्रा
अन्धहिश्वास िै। िुिद्ध-हृदय भिों ंको मुग्ध करने िाली तथा भि-समाहध में प्रहिष् करा देने िाली भगिान् कृष्ण की सुन्दर प्रहतमा कुछ अन्य धमापिलक्तम्बयों ंकी दृहष् में हिकराल िी प्रतीत िोगी। ईसाइयों,ं यहहदयों ंतथा अन्य धमापनुयाहययों ंके अर्ने रृथक् रृथक् अन्धहिश्वास तथा हमथक िैं िो उनके हलए रूूणपतः ऐहतिाहसक िैं। िसुतुतः र्ौराहणक कथाएँ काल्पहनक न िो कर सत्य के भािनाक प्रसुतुहतकरण की एक हिधा िैं।

दशपन, र्ौराडणकी तथा कमपकाण्ड

दिपन, र्ौराहणकी तथा कमपकाण्ड प्रत्ेयेक धमप के ये तीन अंग िोते िैं। दिपन धमप का सारतत्व िै। यि इसके मूलभूत हसद्धान्तों,ं लक्ष्यों ंऔर इसा िोते िैं। दिपन साधनों ंका प्रहतर्ादन करता दिपन रुराण मिारुरुयों ंया लोकोतर प्राहणधीर के कमपकाण्ड दिपन को और अहधक मूतप रूर् प्रदान करता िै हिससे यि सिपसाधारण के हलए बोधगम्य िो सके। कमपकाण्ड धाहमपक अनुष्ठानों ंर्र आधाररत अथप करते िैं।

रुराण हिहभन्न हमथकों ंके रुंि िैं। इनके हिश्वोत्पहत्त-मीमांसा-हिषयक हमथक अत्यन्त रोचक िैं। हिन्दू-त्योिारों ंके अिसर र् रुराणों ंके कुछ अंग आि भी अहभनीत हकये िाते िैं हिसके फलस्वरूर् िनमानस उदात्त हिचारों ंतथा आि भी र्ररूूररत िो कर आध्याक्तिक उत्थान को प्राप्त िोता िै।

र्ौराडणकी का अध्ययन और इसकी उर्योडगता

हिन्दू-धमप की प्राचीन र्ौराहणकी में मिान् सत्य सहन्नहित िैं। रुराणों ंके आिरण में आिहष्त िोने से िी कोई िसुतु उर्ेक्षणीय निीं ंिो सकती। तकप मत कीहिए। मौन रहिए। रुराणों ंके अध्ययन में बुक्तद्ध का प्रयोग कम कीहिए। यि एक प्रहतबन्धक तत्त्व िै। यि आर्को भ्रम में डाल देगा। अिंकार और दम्भ का र्ररत्याग कीहिए। कल्पना के हलए प्रेेम-भि का अभ्यास कीहिए। मृि-हृदय िो कर हििु की तरि बैहठए। आर् रुराणों ंिारा अनािृत-अहभव्यि सत्य को हृदयंगम कर लेंगे। रुराणों ंके प्रणेताओं ंतथा ऋहषयों ंकी माहमपक भािनाओं ंसे आर् र्ररहचत िो िायेंगे। अब आर्को िास्ति में रुराणों ंमें आनन्द आयेगा।

आर् मानहचत्रों ंकी सिायता से भूगोल का अध्ययन करते िैं। िसुतुतः मानहचत्रों ंमें कोई दि निीं ंिोता; हकनुतु इनसे हिहभन्न दिों ंके सम्बन्ध में र्यापप्त ज्ञान प्राप्त िो बाता िै। हमथकों ंके सम्बन्ध में भी यिी बात िै। इनके माध्यम से आर्को सूक्ष्म आध्याक्तिक सत्यों ंका ज्ञान प्राप्त िो सकता िै।

र्ौराहणकी के अध्ययन से आर्को चररत्र-हनमापण तथा आदिप िीिन यार्न के हलए र्यापप्त हिक्षा हमलेगी। आर्के िीिन, आचरण तथा चररत्र को एक नयी हदिा प्रदान करने के हलए श्रीराम, श्रीकृष्ण, भीष्म, नल, िररिंर, लक्ष्मण, भरत, िनुमान बुहधहटर, अिुपन, सीता, साहित्री, दमयन्ती, राधा आहद के िीिनिृत्त आध्याक्तिक प्रेेरणा के मिान् स्रोत िैं। हंकंकतपव्यहिमूढ़ता की क्तस्थहत में िब आर्को करणीय-अकरणीय का ज्ञान निीं ंरि िाता, तब रुराणों ंके अध्ययन से आर्को अर्नी समस्याओं ंका यथाथप समाधान प्राप्त िो िाता िै।

इस प्रकार िम देखते िैं हक र्ौराहणकी की कुछ अर्नी उर्योहगताएँ, तथा उर्लक्तियाँ िैं िो हिक्षाप्रद आख्यानों ंतथा प्रबोधक कथोर्कथनों ंके माध्यम से िेदों ंकी अमूतप तथा सूक्ष्म हिक्षाओं ंको अन्ततपम में अंहकत कर

देती िैं हिसके फलस्वरूर् मनुष्य के हलए हदव्य िीिन यार्न, रूणपत्व, मुक्ति तथा अमरत्व के मागप प्रिस्त िो िाते िैं।

हिन्दू-प्रतीक

बाह्य प्रतीकों ंकी आिश्यकता तथा उर्योहगता को अस्वीकार निीं ंहकया िा सकता। सम्यक् दृहष्कोण से देखने र आर्को ज्ञात िो िायेगा हक आर्के भौहतक सक्का आध्याक्तिक िीिन में इनका मित्त्वरूणप योगदान रिता िै। यद्यहर् िे बहुत िी साधारण तथा मित्त्विीन प्रतीत िोते िैं; र िास्ति में िे अत्यहधक हिज्ञानसम्मत तथा साथपक िैं।

डतलक-एक शुभ डचह्न

हतलक एक िुभ हचह्न िै। ललाट र चन्दन, हिभूहत या कुंकुम का हतलक लगाया िाता िै। िैि, हिष्णु तथा दिी के भि अर्ने ललाट र क्रमिः हिभूहत, चन्दन तथा कुंकुम का हतलक लगाते िैं। िास्त्रों ंके अनुसार हतलक-िून्य ललाट र्हतिीना स्त्री, िर्-काल का दुबोध मन्त्र, श्िान रुरुषों ंके समुमुख अहिनत िी, दया-िून्य हृदय, कूर्-रहित भिन, मक्तन्दर-िीहीन ग्राम, नदी-िून्य दिे नेतृत्व-िीहीन समिा, दान-हिरहित धन, हिष्य-िीन गुरु, न्याय-िून्य दिे, योब मन्त्री-रहित रािा, र्हत की अिज्ञा करने िाली र्त्नी, िल-िून्य कूर्, गन्ध-िीन रुष्प, अर्हित्र आिा, अिषपण-ग्रस्त खेत, अस्पष् बुक्तद्ध, गुरु को ईश्वर-तुल्य र मानने िाला हिष्य, अस्वस्थ िरीर, हिशुद्धता-िीहीन आचार, मैत्री-िीहीन तर, सत्य से असमूपि िाणी, सदाचार-िून्य दिे, श्ररश्रहमक-रहित श्रम, त्याग-हिल संन्यास, तीथापटन में असंलग्न रैर, हििेकिीन हनिय, धार-िून्य छुरा, दुग्धिीना ग तथा तीक्ष्णता-रहित भाला- ये सभी हनन्दनीय िैं। इनका अक्तस्तत्व नाम मात्र के हलए िी िै। इस दृहष्कोण से आर् हतलक अथिा र्हित्र हचह्न के मित्त्व को भली हिहध समझ सकते िैं।

हतलक भूमध्य अथापत आज्ञाचक्र र लगाया िाता िै । इसका प्रभाि अत्यन्त िीतल िोता िै। आध्याक्तिक दृहष् से प्रभािप्रद िोने के अहतररि चन्दन में औषधीय गुण भी िोते िैं। िब आर् ध्यान के हलए मन को आज्ञाचक्र र क्तस्थर करते िैं, तब इस प्रहक्रया से उत्पन्न तार् को चन्दन प्रभाि-िून्य कर देता िै। हतलक उस हबन्द की ओर संकेत करता िै ििााँ ज्ञान-चकुषु खुलता िै। भगिान् िि के भ्रमध्य में एक तृतीय नेत्र िै हिसके खलने र तीनों ं लोक भस्म िो िाते िैं। इसी प्रकार िब िी का तृतीय नेत्र खुलता िै तब उसके आध्याक्तिक, आहधदैहिक तथा आहधभौहतक क्लेि-त्रय, संहचत प्रारबध तथा आगामी कमप-त्रय एिं स्थूलिन्मकृत समूणप र्ार्ों ंका आत्यक्तन्तक िमन िी िाता िै। हतलक लगाते समय आर् कल्पना करते िैं- "मैं िैत भािों ंसे यिु अहितीय ब्रह्म हाँ। मेरा प्रज्ञाचकुषु िीघ्र खुल िाये।" हतलक लगाते समय आर्के में इस हिचार का िोना आिश्यक िै।

हतलक लगाने की हिहिध हिहधयााँ िैं। िैि र्हित्र भस्म की तीन सीधी रेखाओं ंका हत्ररुण्ड लगाते िैं। िैष्णि ललाट र हतलक धारण करते िैं और प्राथपना करते "िे प्रभु! सत्त्व, रिस् तथा तमस् के बन्धनों ंसे यिु हत्रगुणाक्तिका माया के दुष्प्रभाि से मेरी रक्षा करो।" कुछ िैष्णि एक िी अधोमुखी रेखा का हतलक लगाते िैं। िस्तुतः िैष्णिों ंतथा िैिों ंके हतलक लगाने की हिहधयों ंमें िी अन्तर िोता िै। इनका हनहिताथप तो एक िी िै।

डशिा : इसकी उर्योडगता तथा अथपविा

ब्राह्मण तथा अन्य िाहतयाँ चोटी अथिा हिखा धारण करती िैं। अिो की तरि प्राचीन काल में हिखा
इतनी छोटी निीं ंिोती थी। यि मक्तस्तष्क को रूूणपतः अिृत हकये रिती थी। लोग इसकी िृक्तद्ध में बाधक निीं
ंितेि थे। िे हिखा को कभी निीं ंकाटते थे। यि आकक्तस्मक आघातों ंसे मक्तस्तष्क की रक्षा करते हुए इसे िीतलता
प्रदान
करती िै। इससे हिर सूयप के तार् से प्रत्यक्ष रूर् से प्रभाहित निीं ंिो र्ाता। हिखा के अभाि में छतरी आहद का
प्रयोग आिश्यक िो गया िै।
हिखा-धारण के मूल में िैज्ञाहनक तथा धाहमपक-दोनों ंदृहष्कोण हनहित िैं। कोई भी धाहमपक अनुष्ठान
हिखा-बन्ध के र्ित् िी करना चाहिए। किेल दाि-संस्कार तथा श्राद्धकमप के अिसर र् िी हसखा को खुली तथा
किे-रािि को अस्त-व्यस्त रखा िाता िै। अस्त-व्यस्त किे-रािि अर्िकुन की द्योहतका िै। ऐसा किेल अत्यन्त
िोक तथा हिर्त्त के अिसरों ंर् िी हकया िाता िै। कौरि-सभा में िासन िारा चीरिरण के अिसर र् िौर्दी
ने िर्थ ग्रिण की थी हक िि िब तक अर्ने अर्मान का समुहचत प्रहतिोध निीं ंले लेती, तब तक िि मुि-किेी
िी रिेगी। िदिरथ से उनके हप्रयर्ुत्र राम के हलए अहनष्कर दो िरदान माँगने के हलए, कैकेयी दुसर किेी िो
कर कोर्- भिन में िा बैठी थी। खली हगिा के साथ िुभ कायप कभी मीरा सम्पन्न निीं ंहकये िाते। आिकल बहुत
कम लोग हिखा रखते िैं। र्ाश्चत्य सभ्यता के अनुकरण की धुन में महिलाएँ भी इसके मित्व के प्रहत उदासीन िो
गयी िैं। मक्तस्तष्क के संिेदनिील अंग तथा किेीय स्नायु-संस्थान र् हिखा का प्रभाि अत्यन्त हितकर िोता िै।

यज्ञोर्वीत का डनडिताथप

ब्राह्मण, क्षहत्रय तथा िैश्य यज्ञोर्िीत धारण करते िैं। हिन्दुओं ंमें यज्ञोर्िीत-संस्कार एक र्हित्र अनुष्ठान
माना िाता िै। हकसी िुभ हदन र् र्ाँच से आठ िषप की आयु के अन्तगपत आने िाले ब्राह्मण-बालकों ंको यज्ञोर्िीत
धारण का हदया िाता िै। इसके र्ित् िे गायत्री मन्त्र के िर् के अहधकारी िो िाते िैं। ब्राह्मण इस अनुष्ठान के
र्ित् िी िास्तहिक ब्राह्मण िो । र्ाता िै। किा िाता िै- **"जन्मना जायते शूद्रः, कमपणा जायते डिजः"** अथापत्
मनुष्य िन्म से िूि तथा को अथापत् यज्ञोर्िीत-धारण से िहि िो िाता िै। उर्नयन संस्कार को दूसरा िन्म किते
िैं। अतः ब्राह्मणों ंको िहि किा िाता िै।

यज्ञोर्िीत में तीन धागे िोते िैं। इसका अथप यि िोता िै हक मनुष्य को मनसा–िाचा-कमपणा ब्रह्मचारी िोना
चाहिए। यज्ञोर्िीत का प्रत्येक सूत्र एक-एक कर अथापत् ऋक्, यिु और साम का एिं एक-एक दिे अथापत् ब्रह्मा,
हिष्णु तथा िहि का द्योतन करता िै। इनके बीच की ग्रक्तन्थ हनगुपण ब्रह्म का प्रहतहनहधत्व करती िै यज्ञोर्िीत के
सूत्र-त्रय हत्रगुणाक्तिक माया के तीनों ंगुणों–सत्त्व, रिस् तथा तमस्-का प्रहतहनहधत्व करते िैं, िब हक इनकी ग्रक्तन्थ से
माया के हनयन्त्रक ईि का बोध िोता िै। िो लोग हत्रकाल सन्ध्या के समय गायत्री मन्त्र का िर् करते हु ब्रह्मग्रक्तन्थ
को र्कड कर ईश्वर की उर्ासना करते िैं, उन्िें असीम िक्ति तथा अिौ की। सम्प्राक्तप्त िोती िै। र्ुरातन काल में
ब्रह्मग्रक्तन्थ को र्कड कर गायत्री की उर्ासना करने िाले साधक को िरदान तथा िार् की िक्ति प्राप्त िो िाया
करती थी। आधुहनक हिहक्षत बुक्तद्धिादी िगप र्हित्र यज्ञोर्िीत की िक्ति तथा सन्ध्योर्ासना के मित्व हनतान्त
अर्ररहचत िो चुका िै। यिी कारण िै हक ये लोग इसके प्रहत उदासीन िो यो। िैं। ईश्वरोर्ासना का हनयहमत िीिन
व्यतीत करने िाले ब्राह्मण के हलए यज्ञार्योग में मिान िक्ति हनहित रिती िै। इस र्हित्र सूत्र की िक्ति से क्षहत्रयों ं
तथा िैश्यों ंको भी िक्ति, यि तथा समृक्तद्ध की प्राक्तप्त िोती िै।

हििाि के अिसर र् गृिस्थ एक अहतररि यज्ञोर्िीत धारण करता िै; हकन्तु ब्रह्मचारी के हलए किेल
एक िी यज्ञोर्िीत का हिधान िै। हििाि के समय अहतररि सोर्िीत धारण िीिन-साथी के मंगलाथप हकया िाता
िै। यज्ञोर्िीत को िरीर र् सदिै धारण हकये रिना चाहिए। इसे िरीर से उतार कर या धोबी के यिाँ भिे कर
इक्षाहलत कररिाना हनहषद्ध माना गया िै। कुछ लोगों ंको यज्ञोर्िीत धारण कर कायापलय िाने में लज्जा का अनुभि
िोता िै। अतः ये लोग इसे घर र् िी छोड िाते िैं। हकतने अज्ञ िैं ये!

हिखासूत्राहद हिन्दू–िहत के बाह्य हचह्न ि ैं। र्हित्रता, िआसंयम, अहिंसा, धिैप तथा मैत्री हिन्दू-धमप के अन्तरंग लक्षण ि ैं।

आचमन तथा प्रोक्षण

प्रभु का नाम-स्मरण करते हुए तीन बार िल-ग्रिण को आचमन किते ि ैं। िब स्नान करना सम्भि न ि ो, तब िरीरर्–ुक्तद्ध के हलए इस र तीन बार िल हछडकने को प्रोक्षण किते ि ैं। इससे िरीर बाह्य तथा आन्तररक- दोनों ंरूर्ों ंसे िुद्ध ि ो िाता ि ै। िल र्ीते समय हनम्नांहकत मन्त्र का िर् हकया िाता ि ै-**"अचुयुताय नमः, अनिाय नमः तथा गोडविाय नमः ।"** तत्पिात् िरीर के हिहभन्न अियिों–ंनेत्र, कणप, मुख, नाहभ, हिर आहद का स्पिप करते हुए भगिान् के हिहभन्न नामों–ंकेिि, नारायण, माधि, गोहिन्द, हिष्णु, मधुसूदन, हत्रहिक्रम, िामन, श्रीधर, हृषीकेि, र्द्मनाभ, दामोदर आहद का िर् हकया िाता ि ै। हनत्यकमों से हनिृहत्त के उर्रान्त भोिनरूि या भोिनोर्रान्त, सडक र टिलने तथा स्नान के उर्रान्त आचमन करने से मनुष्य र्हित्र ि ो िाता ि ै। इससे आर्को प्रभु की उर्क्स्थहत का यथासम्भि भान ि ोता रिता ि ै। प्रत्येक कमप, प्रत्येक अनुष्ठान तथा प्रत्येक प्रतीक का एक गिन आध्याक्त्मक मित्व ि ै। इससे आर् रिस् तथा तमस् से ग्रस्त अर्नी मानहसकता को सत्त्वोन्मुख कर सकते ि ैं। इससे आर्को भगित्स्मरण के अहधकाहधक अिसर प्राप्त ि ोते रिते ि ैं।

भगवान्, अडतडथ तथा र्ांच-प्राणो ंको अिर्पण

भोिन के र्ूि स्थान को र्हित्र कर ििााँ आसन रखा िाता ि ै। तत्पिात् र्त्तल र भोिन के व्यंिन र्रसे िाते ि ैं। भोिन के र्ूि कुछ ि ैहदक मन्त्रों ंका िर् करते हुए र्त्तल के चतुहदपक् थोडा िल हछडक हदया िाता ि ै। इससे भोिन र्हित्र ि ो िाता ि ै। इसके बाद थोडा िल र्ीते ि ैं। भोिन के र्ूि अल्प मात्रा में िल-ग्रिण ि ैज्ञाहनक तथा औषधीय दृहष्कोण से अत्यन्त लाभप्रद ि ोता ि ै। इस प्रकार **'ॐ प्राणाय स्विाा, अर्ानाय स्विाा, व्यानाय स्विाा, उदानाय स्विाा, समानाय स्विाा** तथा अन्त में **ब्राह्मणे स्विाा** मन्त्रोिारण के साथ र्ंच-प्राणों ंतथा हृदयस्थ ब्रह्म को भोिन अहर्पत हकया िाता ि ै। आर् इस अर्पण के मित्त्व र तो हिचार कीहिए। भोिन करने िाला अर्ने हलए भोिन निीं ंकरता। भौहतक िरीर भोिन करने िाला निीं ंि ोता। भोिन ग्रिण करने िाले तो िस्तुतः र्ंच-प्राण िी ि ैं। इस प्रकार भोिन को भी योग या यज्ञ के रूर् में र्ररणत हकया िा सकता ि ै।

भोिन ग्रिण करने के र्ूि इसे भगिान् को अहर्पत करना चाहिए। उस समय मन में यि भाि ि ोना चाहिए-**"त्वदीयां वि गोडवि तुभ्यमेव समर्पये"** अथापत् गोहिन्द ! तुम्हारी िस्तु तुम्हीं ंको अहर्पत कर रिा हाँ। हिन्दुओं ंमें यि र्रम्परा रिी ि ै हक भोिन के र्ूि यहद कोई घर र आ िाता ि ै, तो उसे भोिन कराया िाता ि ै। अहतहथ ईश्वर का प्रहतहनहध ि ोता ि ै। श्रुहत किती ि ै-**"अडतडथ देवो भव।"**

घण्टी, दीर्, धूर्, कर्ूपर तथा चिन

बाह्य कोलािल से अप्रभाहित रिने तथा मन को क्तस्थर तथा अन्तमुपखी करने के हलए मक्तन्दरों ंमें र्ूिा के समय घक्तण्टयााँ बिायी िाती ि ैं।

दिेता की आरती भी उतारी िाती ि ै ि ो इस तथ्य की र्ररचायक ि ै हक दिेता ज्योहत-स्वरूर् ि ै। िि रूणप प्रकाि ि ै। भि किता ि ै- "तुम ब्रह्माण्ड के स्वयं-प्रकाि ि ो। सूयप, चि तथा अहग्न में ि ो ज्योहत ि ै, िि तुम्हारी िी

ों। अर्ने हदव्य प्रकाि से मेरे अन्तर के अन्धकार को दूर करो। मेरी प्रज्ञा प्रकाहिती िो।" आरती उतारने का हनहिताथप यिी िै।

दिेता के समुमुख धूर् िलायी िाती िै हिससे मक्तन्दर का कक्ष रूणपतः धूमाहदत िो उठता िै। धूर् का धुआाँ रोगाणु-नािक िोता िै। धूर्ाहग्न से इस सत्य की ओर संकेत िोता िै हक ईश्वर सिपव्यार्क िै और उसकी िीिन्त सिपव्यार्कता से अक्तखल हिश्व ओत-प्रोत िै। धूर् िलाने का प्रयोिन इसी तथ्य की स्मृहत में हनहित िै। भक्त प्राथपना करता िै- "िे प्रभु! िो िासना तथा संस्कार-समुदाय मुझमें सुप्तािस्था में िैं। उन्ें िला कर भस्म कर दो। मुझे हनष्पार् कर दो।"

कर्पूर िलाने का तात्पयप यि िै हक िैयक्तिक अिं कर्पूर की भााँहत हर्घल िाता िै और िीिात्मा ज्योहतयों की ज्योहत से हमल कर तदाकार िो िाता िै।

चंदन इस तथ्य का द्योतक हदलाता िै हक आर्ातकाल में मनुष्य को चन्दन की भंहत धपयपिान िोना चाहिए। हकसी कठोर िस्तु र् घहषपत करने से चन्दन से सुगन्ध हनकलती िै। इसका लेर् बनाया िाता िै। अत: भक्तको कहठनाइयों से हघर िाने र् हनथपक प्रहतिाद निीं करना चाहिए। इसके हिर्रीत उसे प्रयुद्धहचत्त िो कर चन्दन की भांहत सदाियता का सुरहभ-दान देते रिना चाहिए। इससे यि हिक्षा भी हमलती िै हक उसे अर्ने ितुरु से घृणा निीं करना चाहिए। यद्यहर् चन्दन को घहषपत कर उसका लेर् बना हदया िाता िै, तथाहर् िि मौन रिकर िाततिरण को मधुर सुगन्ध प्रदान करता रिता िै। अर्ने ितुरु की भी हकसी प्रकार की क्षहत की कामना निीं करनी चाहिए।

प्रसाद : इसकी र्हवत्रता तथा महिमा

प्रसाद िाक्तन्त प्रदान करता िै। यि भगिान् को हनिेहदत नैिेद्य िै। कीतपन, उर्ासना, र्ूिा, ििन और आरती के समय भि अर्ने सामथ्यप के अनुसार भगिान् से मीठे चािल, फल, गुड, दूध, नाररयल, केले तथा इस प्रकार की अन्य सामहग्रयााँ अहर्पत करता िै। इस नैिेद्य-हनिेदन के र्श्चात् र्ररिार के सदस्यों अथिा मक्तन्दर में उर्क्तस्थत लोगों में प्रसाद-हितरण हकया िाता िै।

र्ूिा में भगिान् को िल, र्ुष्प, चािल आहद अहर्पत हकये िाते िैं। इससे यि स्पष्ट िो िाता िै हक भगिान् तुच्छतर भेंट से भी प्रसन्न िो िाते िैं। िो िस्तु अर्ेहक्षत िै, िि िै मात्र िाहदपकता। गीता (९/२६) में भगिान् किते िैं:

र्त्रं र्ुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छहत।
तदिं भक्त्युर्हृतमश्नाहम प्रयतात्मनः ।।

"िो भी भि मुझे श्रद्धार्ूिपक र्त्र, र्ुष्प, फल तथा िल अर्पण करता िै, उसे मैं ग्रिण कर लेता हाँ; क्ोंहक यि प्रेमर्ूिपक अहर्पत हकया गया िोता िै।" प्रभु को केिल स्वणप, रत्न तथा बहुमूल्य िस्त्र अहर्पत करना आिश्यक निीं िै। भि भगिान् को िो-कुछ भी अहर्पत करता िै, उसे िि अर्नी क्षमता तथा अर्ने िीिन-स्तर के अनुरूर् िी अहर्पत करता िै। इसका तात्पयप यिी िै हक संसार की सारी सम्पदा भगिान् की िी िै। एक धनिान् व्यक्ति भगिान् को बहुमूल्य िस्तुएाँ अहर्पत करता िै, हनधपनों को भोिन देता तथा रोहगयों की र्ररचयाप करता िै और ऐसा करके िि सिपभूतों में भगिान का िी दिपन कर रिा िोता िै।

र्ूिा हबल्वर्त्र, र्ुष्प, तुलसी और हिभूहत से की िाती िै और इन्ें भगिान् का प्रसाद मान कर हितररत हकया िाता िै। हिभूहत भगिान् हिि का प्रसाद िै हिसे मस्तक र् धारण हकया िाता िै। अल्प मात्रा में इसका

ग्रिण भी हकया ा सकता ै। कुंकुम दिी या क्ति का प्रसाद ै। इसे भूमध्य में लगाया ाता ै। तुलसी भगिान् हिष्णु, राम या कृष्ण का प्रसाद ै। इसका सिेन करना चाहिए। स्न्नि तथा िन के समय मन्त्रोिारण ारा इनमें रिस्याक क्तियों ंका उिक ोने लगता ै।।

भोगार्पण के समय भि के मनोभिा का अत्यहधक मित्त्व ै। यहद भगिान् का कोई अनन्य भि भगिान् को कोई िसुतु अहर्पत करता ै, तो इस प्रसाद के ग्रिण के फलस्वरूर् नाक्तस्तकों ंकी मानहसकता में भी मिान् र्ररितपन ो ाता ै। प्रसाद के ी माध्यम से भगितूकृर्ा का अितरण ोता ै। नारदचररत्र र्ढ़ए। इससे आर्को भगिान् तथा उन्नत साधकों ंतथा सन्तों ंके र्हित्र प्रसाद अथिा उक्तच्छष् की गररमा की स्पष् अनुभूहत ो ायेगी।

र्ाण्डुरंग हिट्ठल ने नामदिे ारा अहर्पत चािल आहद ग्रिण हकये। इतना ी निीं,ं उन्ोंनें स्वयं नामदिे को भी सिभोिी बना हलया। यहद भगिान् को उत्कक्तण्ठत हृदय से भोिन अहर्पत हकया ाता ै, तो े कभी-कभी सदिे उर्क्तस्थत ो कर उसे ग्रिण का लेते ैं। अन्य अिसरों ंर र् े अहर्पत भोिन के सारतत्त्व को ग्रिण करते ैं और यि भोिन प्रसाद के रूर् में यथाित् रि ाता ै। मिाओं ंतथा हनधपनों ंको भोिन कराने के र्ात् ो ेष रि ाता ै, उसको प्रसाद-रूर् में ग्रिण कर हलया ाता ै। यज्ञानुष्ठान में सब लोगों ंमें प्रसाद-हितरण हकया ाता ै। इससे दिेताओं ंका आिीिापद प्राप्त ोता ै। र्ुत्रेहष्ट-यज्ञ की समाक्तप्त र र् दिरथ को र्ायस से भरा एक र्ात्र हमला हिसे उन्ोंनें अर्नी राहनयों ंको दे हदया और राहनयााँ उस र्ायस को ग्रिण का गभपिती ो गयीं।ं भि के हलए प्रसाद र्हित्रतम िसुतु ै। प्रसाद ग्रिण कर मनुष्य को स्वयं को धन्य एिं सौभाग्यिाली समझना चाहिए। प्रसाद ग्रिण में हकसी प्रकार का कोई प्रहतबन्ध निीं ंोता। इस र र् दिे, काल तथा सामाहिक क्तस्थहत का कोई प्रभिा निीं ंोता। प्रसाद की र्हित्रकाररता असक्तन्दग्ध ै।

प्रसाद तथा चरणामृत के लाभ िणपनातीत ैं। इनमें मानि-िीिन के दृहष्कोण को मूलतः र्ररिहतपत कर देने की क्ति हनहित रिती ै। इनमें रोहगयों ंको रोग-मुक तथा मृतकों ंको ीहित तक कर देने की क्षमता ै। मिारे दिे की र्ािन धरती र र् ऐसी कई-एक घटनाएाँ ो चुकी ैं हिन्ें प्रसाद की क्ति तथा क्षमता के दृष्ान्त के रूर् में प्रस्तुत हकया ा सकता ै। प्रसाद से दुःखों ंकी हनिृहत्त तथा र्ार्ों ंका िमन ोतिा ै। यि ोक, दुःख तथा हचन्ता की रामबाण औषहध ै। इस कथन की प्रामाहणकता की र्ुहष् के हलए श्रद्धा आिश्यक ै। श्रद्धािीन व्यक्ति के हलए यि अहधक प्रभिाप्रद निीं ंै।

आधुहनक हिक्षा र्द्धहत तथा संस्कृहत में र्ले-र्ोसे लोग प्रसाद की महिमा को हिस्मृत कर चुके ैं। अहधकांि अंग्रेी र्ढ़े-हलखे लोग मिाओं ंारा प्रदत्त प्रसाद को कोई मित्व निीं ंदेते। यि एक भयंकर भूल ै। प्रसाद में र्हित्रीकरण की मिान क्ति हनहित ै। र्ाश्चात्य िीिन र्द्धहत के अन्तगपत र्ाहलत-र्ोहषत ोने के कारण उनका हचन्तन र्ाश्चात्य संस्कृहत के अनुरूर् ो गया ै। े प्राचीन काल के ऋहषयों ंकी सन्तान की मनीषा से अर्ररहचत ो गये ैं। आर् एक सप्ताि के हलए िृन्दािन ा अयोध्या या िाराणसी या र्ण्ढरर्ुर में चले ाइए। आर्को प्रसाद के चमत्काररक प्रभिा तथा इसकी महिमा की स्पष् अनुभूहत ो ायेगी। इससे कई असाध्य रोगों ं का हनिारण ो ाता ै। अनेक हनष्कर्ट समहर्पत साधकों ंको प्रसाद से ी आध्याक्तत्यका अनुभिों ंकी प्राक्तप्त ो ाती ै। प्रसाद एक अचूक औषहध तथा अध्याि-सुधा ै। यि र्रमािा का आिीिापद तथा सिप दुःखों ंकी रामबाण औषहध ै। प्रसाद क्ति तथा हदवयता का मूतप रूर् ै। प्रसाद से भक्ति संिहधपत, र्ुष् एिं तीिमयी ोती ै। इसका ग्रिण हिश्वासर्ूिपक करना चाहिए।

जर्-माला

मनकों ंकी संख्या का हनहिताथप

सामान्यतः िर् के हलए प्रयुि िोने िाली माला में १०८ मनके िोते िैं। मनुष्य प्रहतहदन २१,६०० बार साँस लेता िै। यहद मनुष्य २०० माला का िर् करता िै, तो िर् की संख्या २१,६०० िो िाती िै। िि प्रहत साँस एक बार रि् करता िै। इसका अथप िोता िै हक िि हदन-भर िरर-स्मरण करता िै। १०८ मनकों ंकी हिभाहित संख्या भी मनकों ंकी संख्या िो सकती िै। इससे गणना में कोई अन्तर निीं ंआता। मेरु (मरकों ंके बीच िाला मनका) से यि ज्ञात िो िाता िै हक आर्ने १०८ बार िर् कर हलया िै। यि इस तथ्य की ओर भी संकेत करता िै हक आर्की उँगहलयाँ िब भी कभी मेरु का स्पिप करती िैं, आर् आध्याक्तिक थ र र एक ग आगे हनकल चुके िोते िैं और आर्की एक बाधा नष् िो चुकी िोती िै। इस प्रकार आर्के अज्ञान के एक अंकी हनिृहत्त िो िाती िै। माला एक ऐसा पे्ररणाप्रद उर्करण िै िो आर्को आर् के हलए उत्प्रेररत करता रिता िै। प्राथपना करते समय मुसलमानों ंके िाथ में भी बत्ता रिती िै। िे मनके फेरते रिते िैं तथा अल्लाि का नाम िर्ते रिते िैं। ईसाइयों ंके हलए उनकी अर्नी प्राथपनाएँ िोती िैं।

रक्षा–ोत्र

रि् तथा ध्यान र बैठने से रूिप सामान्यत: रक्षा-स्तोत्र की आिृहत्त की िाती िै। इसमें किा िाता िै "र्रमािा मेरे िरीर के प्रत्येक अंग में अिक्तस्थत िोकर िैं। मेरी रक्षा करें।" िरीर के हिहभन्न अियिों ंके रूथक् रूथक् नामों ंका स्मरण हकया िाता िै तथा प्रत्येक अंग के रक्षाथप भगिान् के हिहिष नाम का उिारण हकया िाता िै। अंगन्यास और करन्यास का भी यिी प्रभाि िोता िै। ये दुष्िािओं ंके अहनष्टकर प्रभाि को नष् कर देते िैं। यहद धारणा तथा ध्यान में कोई अन्तराय आ िाता िै,तो यि उसका हनराकरण कर देता िै। यि ऐसी प्राथपना िै हिससे िर् तथा ध्यान में आने िाली हिघ्न-बाधाओं ंका हनराकरण िो िाता िै।

गेरुआ िस्त्र तथा मुक्तण्डत हिर
त्याग के प्रतीक

संन्यासी का गेरुआ िस्त्र इस तथ्य का द्योतक िै हक िि अहग्न की भाँहत र्हित्र िै। इच्छाओं ंतथा िासनाओं ंके कल्मष से मुि िि तर्े हुए स्वणप की भाँहत चमकता िै। काषाय िस्त्र र्हित्रता का सूचक िै। इससे िुहचता का द्योतन िोता िै। हनिृहत्तमागी साधक के हलए यि सिायक हसद्ध िोता िै। िि अिुभ कमों के प्रहत हिरि िो िाता िै। यि िस्त्र उसे स्मरण हदलाता िै हक िि सांसाररक सुखोर्भोग का अहधकारी निीं ंिै। धीरे-धीरे उसमें स्वभािगत र्ररितपन िोने लगता िै। रंगीन िस्त्र संन्यासी की र्िचान का बाह्य प्रतीक िै।

संन्यासी रूणपतः मुक्तण्डतिी–ी िोता िै। इससे उसकी सुन्दरता िाती रिती िै। उसे सुगक्तन्धत तैलाहद िारा अर्नी केि-राहि के सौन्दयप-रक्षण की हचन्ता निीं ंरिती। इससे यि स्पष् िो िाता िै हक िि बाह्य सौन्दयप के सभी रूर्ों ंसे हिरत िो कर आिा में क्तस्थत िो गया िै िो सौन्दयों का सौन्दयप िै। मुण्डन से इस तथ्य का संकेत प्राप्त िोता िै हक संसार के हलए उसका अक्तस्तत्व िून्यित् रि गया िै। उसे हकसी ऐक्तिय हिषय की इच्छा निीं ंकरनी चाहिए। िसुतुतः मुक्तण्डतिी–ी रूणप अनासक्ति की मनःक्तस्थहत एिं िागहतक सुखों ंके प्रहत हिरहत का बाह्य प्रतीक मात्र िै। संन्यास-ग्रिण के समय िि हिखा-िीन भी िो िाता िै। यि इस बात का द्योतक िै हक िि हिहभन हनत्य-नैहमहत्तक कमों के बन्धन से मुि िो चुका िै और हक ये सारे कमप िैराग्य की अहग्न में िल कर भस्म िो चुके िैं। इसके अहतररि मुक्तण्डतिी–ी यायािी–ीन के हलए सुहिधािनक भी िोता िै। केि-राहि उसके इच्छानुसार स्नान में बाधक हसद्ध िोगी। मुण्डन से िि कई असुहिधाओं ंसे मुि िो िायेगा। उसका िो समय बालों ंको सुखाने तथा सिाने-सँिारने में व्यतीत िोता, उसका उर्योग िि प्राथपना तथा ध्यान में कर सकता िै।

हनष्कषप

ेदि तथा उर्हनषद् र्रम सत्य का िणपन अनौर्चाररक हिहध से इसके ाहिुद्ध एिं नए रूर् में करते िैं; हकन्तु इहतिास, रुराण तथा आगम ऐहतिाहसक कथाओं ंएिं रुराकथािास्त्रीय आख्यानों ंके माध्यम से उसे एक ैयहक्तक संस्पिप प्रदान कर देते िैं।

बाह्य प्रतीकों ंकी उरेक्षा मत कीहिए। िैहदक प्रथाओं ंतथा हिहध-हनषेधों ंका अनुसन्धानिाक अध्ययन कीहिए। आर्को इनमें से प्रत्येक में आियपिनक तथा अमूल्य रत्न प्राप्त िोंगें। उनका अनुसरण करने से उनकी उर्योहगता तथा कायपक्षमता ज्ञात िो िायेगी।

आर् सब धमप के मागप र्र चलते हुए इसी िन्म में कैिल्य प्राप्त करें!

एकादि अध्याय

हिन्दू-दिपन-१

(षि्-दशपन)

दिपन : इसका उद्भि तथा इसकी सीमाएँ

दिपन धमप का बौक्तद्धक अथिा युक्तिर्रक र्क्ष िै। भारत में इसे धमप का एक अहभन्न अंग माना िाता िै। यि र्रम सत्य तथा चरम सत्ता के स्वरूर् का तकपसम्पत अनुसन्धान िै। यि िीिन की सूक्ष्म तथा गिन समस्याओं ं का स्पष् समाधान प्रस्तुत करता िै और क्ेलि तथा मृत्यु से मुक्ति तथा अमरता एिं िाश्वत आनन्द की प्रारर की हदिा में िमारा र्थ-प्रदिपन करता िै।

दिपन की मूल स्थार्नाएँ मनुष्य की िीिनोर्योगी आिश्यकताओं ंमें हनहित िैं। हचन्तन के क्षणों ंमें मनुष्य लोकोत्तर हिषयों ंका ज्ञान प्राप्त करना चािता िै। उसमें मृत्यु, अमरत्व, आिा, स्रष्ा तथा सृहष् के रिस्योद्घाटन की प्रिृहत्त हिद्यमान रिती िै। उसके इस अहभयान में दिपन उसका सिायक हसद्ध िोता िै। दिपन मनुष्य की उत्तरोत्तर हिकासिील चेतना की अहभव्यक्ति िै। दािपहनक इस चेतना को िब्दबद्ध करते िैं। मिान् सिपनिाक हचन्तक तथा दािपहनक प्रत्ेयेक युग में हुए िैं। िे मनुष्य को उन्नत तथा प्ेरेररत करते रिते िैं।

मनुष्य के मन में दिपन-सम्बन्धी कुछ हनहित प्रश् उठा करते िैं। यि संसार िै क्ा? इसका कोई प्रयोिन भी िै? यि सत्य-स्वरूर् िै या प्रतीहतमात्र ? क्ा इस हिश्व का कोई स्रष्ा या िास्ता िै? यहद कोई इसका स्रष्ा िै, तो उसका स्वरूर् क्ा िै ? मनुष्य और स्रष्ा का र्ारस्पररक सम्बन्ध क्ा िै, क्ा िन्म-मरण के चक्र से मुक्ति का कोई मागप भी िै? क्ा कोई ऐसी िस्तु िै हिसे हनिैयक्तिक एिं हनरुर्ाहधक अथिा हनरर्ेक्ष किा िा सके ? यहद ऐसी कोई िस्तु िै, तो उसका मूलभूत स्वभाि क्ा िै? मनुष्य के बन्धन का कारण क्ा िै? उसकी तात्त्विक प्रकृहत क्ा िै? िि िीि िाि का एक अंिमात्र िै या उससे अहभन्न िै? िैयक्तिक या सगुण ईश्वर एिं हनगुपण या हनिैयक्तिक हनरर्ेक्ष ब्रह्म में अन्तर क्ा िै? इस संसार का उद्गम क्ा िै? र्दाथप और मन क्ा िै? िीिािा क्ा िै? िीिन का लक्ष्य क्ा िै? इन समस्याओं ंके समाधान की खोि िी दिपन िै। यि इन समस्त समस्याओं ंका सम्यक् समाधान प्रस्तुत करता िै।

मृत्युः दशपन का प्रारम्भ-डबन्दु

मृत्यु-सम्बन्धी हिचार सदैि से िी धमप तथा दािपहनक िीिन की सिपहधक प्रभािरूणप अहभप्ेरेरक िक्ति रिा िै। मनुष्य मृत्यु से भयभीत रिता िै। मृत्यु उसके हलए, अभीक्तित घटना निीं ंिै। िि अमरत्व चािता िै। दिपन का प्रारम्भ-हबन्दु यिी िै। दिपन इसका अन्ेवेषण और अनुसन्धान करता िै। इसकी हनभीक उद्घोषणा यिी िै। मनुष्य! मृत्यु से भयभीत न िो। तुम्हारे हलए एक हनत्य-धाम की व्यिस्था िै हिसे ब्रह्म किते िैं। िि तुम्हारा आिस्वरूर् िै िो तुम्हारी हृदय-गुिा में हनिास करता िै। तुम र्हित्र हृदय से उस अनघ, हनत्य एिं अहिकारी आिा का ध्यान करो। तुम्हें अमरत्व प्राप्त िोगा।" मृत्यु संसार की नश्वरता तथा एक चरम सत्ता के अक्तस्तत्व का संकेत-हचह्न िै।

दशपन के डवडभि मतवाद(Schools)

मनुष्य तथा ईश्वर के ्ारस्पररक सम्बन्ध का स्पष् बोध दिपनिास्त्र के हिद्याहथपयों ंतथा सभी साधकों ंके हलए एक मित्वरूणप हिषय िै। संसार के दिापहनकों, ंरै्गम्बरों, ंसन्तों, ंहचन्तकों, ंआचायों तथा धमपगुरुओं ंने ईश्वर से मनुष्य तथा हिश्व के सम्बन्ध की व्याख्या के प्रयत्न हकये िैं। दिपनिास्त्र के हिहभन्न मतिादों ंतथा हिहभन्न धाहमपक मतों ंका प्रादुभापि हिहभन्न दिापहनकों ंकी हिहिध व्याख्याओं ंके आधार र िी हुआ िै।

दशपनशास्त्र तथा अिः प्रज्ञा

दिपनिास्त्र आर्को िाश्वत आनन्द के ररमण्डल के िार तक तो हुाँचा सकता िै; हकन्तु उसके हलए आर्को उस ररमण्डल में प्रहिष् करा देना असम्भि िै। हनत्य-सुख तथा अहनिपचनीय महिमा की उस धरती र रै्र रखने के हलए अन्तःप्रज्ञा अथिा लोकोत्तर अनुभूहत आिश्यक िै।

हिन्दू-दिपन हनराधार ररकल्पना या अथपिीन अनुमान मात्र निीं ंिै। यि उदात्त, भव्य, अहितीय तथा व्यिक्तस्थत िै। यि रिस्यरूणप आध्याक्तिक अनुभिों ंअथिा अरोक्षानुभूहत र अहधहष्ठत िै। हिन िषाओं, ंसाधु-सन्तों ंतथा ऋहषयों ंने रम सत्य का अव्यिहित तथा रिसानुभूत साक्षात्कार हकया था, ि िी भारत की हिहभन्न दिापहनक प्रणाहलयों ंके प्रितपक िैं। दिपनिास्त्र के हिहभन्न मतों ंमें से सभी प्रत्यक्षतः या रोक्षतः:. शु्रुहत अथिा िेदों ंर आहश्रत िै। िो लोग उर्हनिदों ंका सुहिचाररत अध्ययन करते िैं, उन लोगों ंको शु्रुहतयों ंके अरौरुषेय उदघाटन तथा दिपनिास्त्र के हनष्कषो की ्ारस्पररक समस्वरता का सम्यक् ज्ञान िो िाता िै।

भारतीय दिपन की िास्त्रसम्मत तथा िास्त्रहिरुद्ध िाखाएाँ

षड-दिपन भारतीय दिपन की छि िास्त्रसम्मत िाखाएाँ िैं। न्याय, िैहिषेक, साहित्य, योग, रूिपमीमांसा तथा उत्तर मीमांसा या िेदांत रम सत्य के दिपन के छि िास्वानुभोहदत मागप िैं। दिपन की िास्त्रसम्मत िाखाएाँ बेदों ंकी प्रामाहणकता िै हिश्वास करती िैं, िब हक इसकी िाखहिरुद्ध िाखाएाँ, िेदों ंकी प्रामाहणकता से हिश्वास निीं ंकरतीं। ंये छि िास्त्रहिरुद्ध मत हनम्नित् िैं

१. चािापक का र्दाथपिादी मत।

२. िैन-मत।

३. बौद्धों ंका िैभाहषक मत।

४. बौद्धों ंका सौत्राक्तन्तक मत।

५. बौद्धों ंका योगाचार मत।

६. बौद्धों ंका िून्यिादी या माध्यहमक मत।

षड्-दिपन अथिा छि िास्त्रसम्मत मतिाद

षड्-दिपनों ंका िदों ंसे प्रत्यक्ष उद्भि हुआ िै। दिपन का िाक्तब्दक अथप िै दृश्य या देखना। प्रत्येक दिपन सत्य के अन्वीक्षण का एक मागप या इसके प्रहत एक दृहष्कोण िै।

गौतम ऋहष ने न्याय के हसद्धान्तों ंया भारतीय तकपिास्त्र को व्यिक्तस्थत रूर् हदया और कणाद ने िैिहषक सूत्रों ंकी रचना की। कहर्ल मुहन सांख्य-र्द्धहत के प्रणेता थे और सिपप्रथम र्तंिहल मिहषप ने योग-प्रणाली को एक सुसम्बद्ध रूर् दे का योग-सूत्रों ंकी रचना की। इनका योग-दिपन रियोग र एक प्रख्यात र्ाठ्य-रु्स्तक िै। व्यास के हिष्य िैहमहन ने िदों ंके कमपकाण्डीय भाग र आधाररत मीमांसा-सूत्रों ंकी रचना की। बादरायण ने अर्ने प्रख्यात िदान्त-सूत्रों ंअथिा ब्रह्म-सूत्रों ंकी रचना की िो उर्हनषदों ंके उर्दिों ंका प्रहतर्ादन करते िैं। िदान्त के हिहभन्न मतों ंने अर्ने दिपनों ंको इसी आधार-भूहम र अिक्तस्थत हकया िै।

मागप अनेक,गिव्य एक

षड-दिपन एक नगर में हुँचने के छि हिहभन्न मागों के सदृि िैं। आर् बम्बई रेलगाडी या िायुयान या बस या अन्य हकसी िािन से िा सकते िैं। इसी प्रकार आर् योग या िदान्त या अन्य हकसी भी मागप से अर्ने िीिन के लक्ष्य तक हुँच सकते िैं। मनुष्य को उसके लक्ष्य तक ले िाने के हलए उसके स्वभाि एिं उसकी क्षमता तथा मानहसक िक्ति के अनुरूर् हिहभन्न हिहधयों ंया मागों ंकी व्यिस्था िै; हकन्तु इन सभी भागों ंका लक्ष्य एक िी िै और िि िै िीिाा तथा र्रमािा के सायुज्य के माध्यम से अज्ञान तथा तज्जहनत क्लेिों ंकी हनिृहत्त एिं स्वातन्त्र्य, रू्णपत्व, अमरत्व तथा हनत्य-सुख की सम्प्राक्तप्त।

हिन्दू-धमप के हकसी भी हिद्याथी को उि छि दािपहनक मतों ंके अहभलाक्षहणक भेदों ंको स्पष् करने िाले हसद्धान्तों ंकी अहभज्ञता के हबना अर्ने ज्ञानािपन से सन्तुष् निीं ंिो िाना चाहिए। अहधक प्रबुद्ध अध्येता को उन मूल सूत्रों ंका अध्ययन करना चाहिए हिनमें प्रत्येक मत के हसद्धान्तों ंका हनरूर्ण हकया गया िै। इन छि दािपहनक मतों ंके अध्ययन से आर्की बुक्तद्ध सुतीक्ष्ण तथा आर्का ज्ञान हिद िोगा। इससे आर्का र्रम सत्य-सम्बन्धी ज्ञान अहधक व्यार्क िोगा। प्रत्येक मत आध्याक्तिक सोर्ान का एक चरण िै।

षिदशपनो ंका र्ारस्पररक सम्बन्ध

उि छि मत तीन िगों में हिभाहित िैं : (१) न्याय तथा िैिहषक, (२) सांख्य तथा योग, और (३) मीमांसा तथा िदान्त। िैिहषक तथा योग क्रमिः न्याय और सांख्य के समूपूरक िैं। िदान्त सांख्य का अहभिधपन एिं इसकी आरूहतप िै। इसकी ज्ञान-प्राक्तप्त के हलए व्याकरण, मीमांसा, न्याय और सांख्य का अध्ययन आिश्यक िै। न्याय के अध्ययन से बुक्तद्ध तीक्ष्ण िोती िै और उसके फलस्वरूर् हिज्ञासु िदान्त के ज्ञान-ग्रिण में समथप िोता िै। न्याय सभी दािपहनक अनुसन्धानों ंके हलए रूिपरे्हक्षत िै।

िैिेषिक-दिपन का आिकल अहधक मित्त्व निीं ंरि गया िै; हकन्तु न्याय की िनहप्रयता में कोई व्यिधान निीं ंआया िै। सांख्य-मत की िीिन्तता समाप्तप्राय िै और योग के व्यािाररक र्क्ष का अभ्यास कुछ हगने-चुने लोगों ंतक िी सीहमत रि गया िै। आिकल इन सभी मतों ंमें िदान्त को सिापहधक िनहप्रयता प्राप्त िै।

न्याय तथा िैहषक आर्के समक्ष आनुभहिक िगत् की व्याख्या प्रसुतुत करते िैं। ये संसार की सभी िसुतुओं ंको कुछ हिहिष् र्दार्थों के अन्तगपत िगीकृत कर देते िैं। िे इस तथ्य की व्याख्या करते िैं हक ईश्वर ने अणु-र्रमाणुओं ंसे इस भौहतक िगत् की सृहष् हकस प्रकार की िै। िे ईश्वरीय ज्ञान की प्राक्तप्त के हलए िमारा िगत प्रदिपन करते िैं। सांख्य आर्को हिन्दू-मनोहिज्ञान का गिन ज्ञान प्राप्त कराता िै। कहर्ल मुहन मनोहिज्ञान के आहद प्रणेता थे। हचत्तर्-िृहत्त-हनरोध तथा ध्यान योग के हिषय िैं। योग मन तथा इक्तियों ंके अनुिासन का मागप प्रिस्त करता िै। यि हचत्त की क्तस्थरता एिं एकाग्रता तथा हनहिपकल्प-समाहध में प्रहिहष् में आर्के हलए सियक हसद्ध िोता िै। र्ूिपमीमांसा िेदों ंके कमपकाण्ड से तथा उत्तरमीमांसा िेदों ंके ज्ञानकाण्ड से सम्बक्तन्धत िैं। उत्तरमीमांसा को िेदान्त-दिपन भी किते िैं। यि हिन्दू धमप की आधारहिला िै। िेदान्त-दिपन ब्रह्म के स्वरूर् की हिद व्याख्या एिं िीिाात्मा तथा र्रमािा की तात्त्विक अहभन्नता का प्रहतर्ादन करता िै। यि अहिद्या के हनिारण
तथा िीि की ब्रह्म से सायुज्य-प्राक्तप्त की हिहधयों ंका हििेचन करता िै। न्याय तथा सांख्य अज्ञान को क्रमिः हमथ्या ज्ञान और अहििेक किते िैं। यथाथप तथा अयथाथप में अभेद-दिपन अहििेक िै। िेदान्त इसे अहिद्या किता िै। ज्ञान िारा इसका उन्मूलन प्रत्येक दिपन का लक्ष्य िै। मनुष्य को अहिद्या की हनिृहत्त के र्श्चात् िी िाश्वत आनन्द तथा अमरत्व की प्राक्तप्त िो सकती िै।

न्याय तथा िैहषक के अध्ययन से मनुष्य संसार की भौहतक संरचना की ज्ञान-प्राक्तप्त एिं भ्राक्तन्त-दिपन के हलए बुक्तद्ध के प्रयोग में सक्षम िोता िै। सांख्य के अध्ययन से िि प्रकृहत के हिकास-क्रम से र्ररहचत िोता िै और योग के अध्ययन तथा अभ्यास से उसे आि-हनग्रि एिं मन तथा इक्तियों ंर्र स्वाहमत्व की प्राक्तप्त िोती िै। िेदान्त के अध्ययन से मनुष्य अहिद्या का हनराकरण कर आध्याक्तिकता या हदव्य महिमा के उितम सोर्ान र्र आरूढ़ िो िाता िै और उसको चरम सत्ता के साथ अर्ने तादात्म्य का बोध िो िाता िै।

वेदि : दशपन-शास्त्र की सवापडधक सिोषप्रद शािा

न्याय, िैहषक, सांख्य तथा योग के कुछ हसद्धान्त िेद-हिरोधी िैं। िसुतुतः िे मत िेदों ंर्र सिति रूर् से िी आहश्रत िैं। न्याय तथा िैहषक िेदों ंकी प्रामाहणकता को स्वीकार करते िैं; हकनुतु मुख्य रूर् से िे मानिीय हििेक-बुक्तद्ध र्र िी हनभपर िैं। मनुष्य की बुक्तद्ध सान्त तथा चर्ल िोती िै। इसकी अर्नी सीमाएँ िैं। इसका व्यार्ार हदक्, काल तथा कारण-कायप की सीमाओं ंके अन्तगपत िी सम्पन्न िोता िै। अतः इसके हनष्कषप हनदोष निीं ंिो सकते। इससे लोकोत्तर या अनुभिातीत हिषयों ंका समाधान असम्भि िै। एकमात्र िेद िी हनमापन्त तथा प्रामाहणक िैं। इनमें दृष्ाओं ंतथा ऋहषयों ंके अन्तःप्रज्ञाक अनुभि समाहिष् िैं िो ब्रह्मज्ञाहनयों ंके अनुभि के अनुरूर् िैं।

दिपन की सिापहधक सन्तोषिनक प्रणाली िेदान्त िी िै। इसका उद्भि उर्हनषदों ंसे हुआ िै। यि दिपन की समस्त िाखाओं ंका अग्रिती ंिै। मीमांसा में कमपकाण्ड्ड् र्र अत्यहधक बल हदया िै। इसके अनुसार िेदों ंमें एकमात्र कमप का िी प्रहतर्ादन हकया गया िै। उर्ासना या ज्ञान इसके उर्ांग मात्र िैं। िेदान्त इस अिधारणा का खण्डन करता िै। इसके अनुसार ज्ञान मुख्य तथा कमप एिं उर्ासना गौण िैं। इन्ें ज्ञान का उर्ांग मात्र किा िा सकता िै। कमप से स्वगप की प्राक्तप्त िोती िै िो र्ररष्कृत हिषयोर्भोग का एक अस्थायी स्थान िै। िाश्वत आनन्द तथा अमरत्व प्रदान करने में अक्षम कमप िन्म-मरण के चक्र को उन्मूहलत निीं ंकर सकता।

िंकराचायप के युग में दिपनिास्त्र की सभी छि िाखाएँ र्ुक्तष्पत-र्ल्लहित िो रिी थी। अतः उन्ें अर्ने हसद्धान्त केिलाद्वैत के प्रहतर्ादन के हलए अन्य मतों ंका खण्डन करना र्डा। हकनुतु आिकल सांख्य तथा िैहषक आहद का अक्तस्तत्व केिल नाम मात्र को िी रि गया िै। हकनुतु आि भी कुछ हिन्दू-उर्देिक, संन्यासी तथा मण्डलेश्वर र्ुरातन दािपहनक मतों ंका खण्डन कर अद्वैत-मत को प्रहतहष्ठत करने का प्रयत्न कर रिे िैं। यि उनकी भूल िै। इस युग में भौहतकिाद, अज्ञेयिाद, हनरीश्वरिाद एिं हिज्ञान का खण्डन कर िेदान्त का प्रहतष्ठार्न करना चाहिए।

न्याय

भूडमका

दिपन की न्याय-प्रणाली के प्रितपक ऋहष गौतम को प्रणाम !

न्याय तथा हिन्दू-तकपिास्त्र के प्रितपक गौतम ऋहष थे। इन्ें अक्षराद तथा दीघपतमस् के नाम से भी िाना िाता िै। न्याय तथा िैहषक-दिपन हिश्ेलेषणिाक िैं। न्याय िब्द हकसी हिषय में प्रििे या इसके हिश्ेलेषणिाक अनुसन्धान का अहभव्यंिक िै। इस हिश्ेलेषण के हनहिताथप के अनुसार न्याय िब्द सांख्य के संश्ेलेषण का सिपथा हिरोधाथी िै। न्याय को कभी-कभी तकपहिद्या या िादहिद्या भी किा िाता िै। तकप न्याय का हिहिष् लक्षण िै।

न्याय औपचाररक तकपिास्त्र मात्र न िो कर एक समग्र ज्ञानिास्त्र िै। सामान्य िन के मतानुसार न्याय का सम्बन्ध मुख्यतः तकपिास्त्र से िै; हकन्तु तकपिास्त्र इसका एक प्रकरण या अंग मात्र िै। न्याय का प्रयोिन तकपयुि प्रमाण ऱ अहधहष्ठत हसद्धान्तों को एक माध्यम से ज्ञान के हिषय का आलोचनात्मक परीक्षण िै। न्याय दािपहनक समस्याओं ऱ आलोचनात्मक हिहध से हिचार करता िै। इसमें मनोहिज्ञान, तकपिास्त्र, तत्त्विास्त्र तथा धमपहिज्ञान-सम्बन्धी हिचार-हिमिप का समािेि िै।

न्याय : दाशपडनक अनुसन्धान की डवडध

न्याय का अहभप्राय मानिीय ज्ञान के प्रमेय-प्रमाता के अनुसन्धान की हनभ्रापन्त द्धहत प्रस्तुत करना िै हिसमें हिचार-हिहध तथा बुक्तद्ध और हििेक भी सहन्नहित रिते िैं। इसमें इक्तियों ंके साक्ष्य को आलोचनात्मक रररूच्छा के हलए प्रस्तुत हकया िाता िै। न्याय ज्ञान की यात्क्तन्त्रकता का हिस्तृत हििरण प्रदान करता िै। न्याय तथा िैहिषक अनुभि के हलए दिे, काल, कारण, द्रव्यथप, मन, आत्मा तथा ज्ञान अथिा प्रमा का अन्वेषण-गिेषण कर अपने हनष्कषप को हिश्व-सम्बन्धी हसद्धान्त के रूर् में प्रस्तुत करते िैं। न्याय तथा िैहषक एक िी इकाई के अिय िैं। िैहषक न्याय का अनुरूरक िै। ये समिगीय द्धहतयााँ िैं। ये दोनों ंियक्तिक अथापत् सगुण ईश्वर, आत्माओं ंकी अनेकता तथा अणुसंघात–हनत हिश्व में हिश्वास करते िैं। इसके अहतररि इन दोनों ंमें अनेक युक्तियााँ उभयहनष्ठ िैं।

न्याय संस्कृत दािपहनक अध्ययन का आधार िै। यि समस्त सुव्यिक्तस्थत दिपनों ंकी रूप-रीहठका िै। यि दिपन के हिद्याथी के हलए प्रारक्तम्भक राठ्य-रुस्तक िै। न्याय के ज्ञान के अभाि में आर् श्री व्यास कृत ब्रह्मसूत्र को निीं ंसमझ सकते। इसके अध्ययन से तकपिक्ति का हिकास िोता िै। इससे बुक्तद्ध तीक्ष्ण तथा सूक्ष्म िोती िै। तीक्ष्ण तथा सूक्ष्म बुक्तद्ध के अभाि में िेदान्त-सम्बन्धी हिषयों ंका अनुसन्धान असम्भि िै। कठोपहनषद् (१/३/१२) में आया िै: **"दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदडशपडभः।"** अथापत् इसे (आत्मा को) सूक्ष्मदृष्ा अपनी तीक्ष्ण तथा सूक्ष्म बुक्तद्ध िारा देखते िैं।

गौतम का 'न्यायसूत्र' न्यायदिपन का प्रथम ग्रन्थ िै। यि इस मत का सिापहधक प्रख्यात ग्रन्थ िै। इस ग्रन्थ ऱ अनेक भाष्यकारों ंने अनेक भाष्यों ंकी रचना की िै। दृष्ान्त के हलए िात्स्यायन कृत न्यायभाष्य, श्रीकण्ठ कृत न्यायालंकार, ियन्त कृत न्यायमंिरी, गिधपन कृत न्यायबोहधनी तथा िाचस्पहत हमश्र कृत न्यायिाहत्तपकतात्पयप-टीका आहद के नाम हलये िा सकते िैं।

ज्ञान

ज्ञान के हलए प्रमाता, प्रमेय, प्रहमहत तथा प्रमाण का चतुगूयूपि स्तूिपरे्हाहक्षत िै। प्रमेय अथापत् िे हिषय हिनके सम्यक् ज्ञान की अरे्क्षा िै, उनकी संख्या बारि िै ये िैं :

(१) आिा, (२) िरीर, (३) इक्तियााँ,
(४) अथप, (५) बुक्तद्ध, (६) मन,
(७) प्रिृहत्त, (८) दोष, (९) पे्रत्य-भाि,
(१०) फल, (११) दुःख और (१२) अर्िगप।

प्रत्यक्ष, अनुमान, उर्मान और िब्द-ये चार प्रमाण िैं िो सम्यक् ज्ञान के करण अथिा साधन िैं। आप्त रुरुषों ंके िचन भी िब्द-प्रमाण के अन्तगपत िैं और इक्तिय का दाथप से संयोग िोने र्र प्राप्त ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण िै।

ईश्वर, आत्मा तथा डवश्व

ईश्वर

न्याय के अनुसार मनुष्य के कमों से उनके फलों ंकी उत्पहत्त िोती िै। इसे अदृष् किते िैं और इसका हनष्पादन ईश्वर के हनयन्त्रण में िी िोता िै। ईश्वर अदृष् की प्रहक्रया का र्यपिेक्षक िै। अदृष् का बुक्तद्धसम्मत हसद्धान्त मनुष्य की हनयहत का हनयमन करता िै और ईश्वर अदृष् का हनयामक िै। िसुतुतः ईश्वर अदृष् की हदिा में कोई र्ररितपन न कर इसकी प्रहक्रया में सिायता मात्र प्रदान करता िै। ईश्वर मनुष्यों ंका कमप-फल-दाता िै। िि सिपिक्तिमत्ता तथा सिपज्ञता से सम्पन्न एक हिहिष् आिा िै। अर्ने इन गुणों ंसे िि संसार का हनयमन और संचालन करता िै।

ईश्वर एक सगुण सत्ता िै िो हमथ्या ज्ञान, अधमप तथा प्रमाद से रहित िै। िि स्रष्ा तथा एक िै और हनत्य-ज्ञान तथा इच्छा-हक्रया उसके गुणों ंसे युि िैं। िि हिभु अथापत् सिपव्यार्ी िै।

आिा

आिा एक यथाथप सत्ता िै। यि एक िाश्वत सत्ता िै। इच्छा, िेष, संकल्प, सुख, दुःख, बुक्तद्ध और ज्ञान इसके गुण िैं। 'मैं' की अिधारणा का हिषय िी आिा िै। इसके अभाि में कोई भी संज्ञान या प्रत्यहभज्ञान सम्भि निीं ंिै। आिा के हबना नेत्र िस्तुरु-दिपन और कान िब्द-श्रिण में असमथप िैं। इक्तियों ंके व्यािार के हलए हकसी कताप की आिश्यकता िोती िै। िि कताप यि आिा िी िै। हकसी हिषय के दिपन के र्िात् िष्ा का 'मैंने देखा िै' यि ज्ञान िेष रि िाता िै, भले िी िि व्यक्ति नेत्रिीन िी क्ों ंन िो गया िो। यि ज्ञान न तो इक्तियों ंका गुण िै न इसके हिषयों ंका। मन आिा निीं ंिै। यि आिा का साधन या करण िै हिससे िि सोचता िै। आिा कताप िै। िरीर-र्ात तथा इक्तियों ंऔर मन से सम्बन्ध-हिचे्छेद के र्िात् भी इसकी सता अकु्षुण्ण रिती िै। आिाएँ बहुसंख्यक िैं।

हिश्व

हिश्व हनत्य, अहिकायप और कारण-रहित र्रमाणुओं ंका संयोिन िै। हिश्व की स्वतन्त्र सत्ता िै और यि हिचार-सारे्क्ष निीं ंिै। हिश्व रृथ्वी, िल, अहग्न और िायु का रूर्ान्तरण िै। न्याय नौ िव्यों ंको स्वीकृत करता िै। ये नौ िव्य िैं-रृथ्वी, िल, अहग्न, िायु, आकाि, काल, हदक्, मन तथा आिा।

बन्धन का कारण तथा अर्िगप के साधन

हमथ्या ज्ञान, दोष, प्रिृहत्त, िन्म तथा दुःख हिश्व के संघटक तत्त्व िैं। हमथ्या ज्ञान समस्त क्ेलिों ंतथा दुःखों ं का मूल िै। हमथ्या ज्ञान से राग–िेष के दोष की तथा राग–िेष से िुभािुभ कमों की उत्पहत्त िोती िै। िुभािुभ कमों के फलस्वरूर् मनुष्य को रुरस्कार या दण्ड-ग्रिण करने के हलए अनेक िन्म-ग्रिण करने र्डते िैं। िन्म-मरण से दुःख प्राप्त िोता िै। दिपन का लक्ष्य इस हमथ्या ज्ञान की हनिृहत्त िै िो सिपदुःखों ंका मूल िै। हमथ्या ज्ञान, दोष, प्रिृहत्त, िन्म तथा दुःख के आनुक्रहमक तथा आत्यहन्तक हनराकरण से अर्िगप की प्राहप्त िोती िै।

सोलि र्दाथप

मनुष्य सोलि र्दाथों के यथाथप ज्ञान से हमथ्या ज्ञान का हनराकरण कर आत्यहन्तक आनन्द को प्राप्त कर सकता िै। ये सोलि र्दाथप िैं-प्रमाण, प्रमेय, संिय, प्रयोिन, दृष्ान्त, हसद्धान्त, अियि, तकप, हनणपय, िाद, िल्प, हितण्डा, िेत्वाभास, छल, िाहत तथा हनग्रि-स्थान।

प्रहतर्ाद्य हिषय के सम्बन्ध में सिपप्रथम संिय या भ्रम उत्पन्न िोता िै। इसके र्श्चात् प्रयोिन अथापत् हिचार-हिमिप का अहभप्राय तथा दृष्ान्त आते िैं। हसद्धान्त अथापत् प्रमाहणत हनष्कषप दृष्ान्त का अनुगामी िै। इसके र्श्चात् र्ंचाियि, तकप तथा हनणपय आते िैं। तकप िंका-हनितपक तथा हनणपय हिषय की समीचीनता के सम्बन्ध में हनिय या हनष्कषप िै। तत्र्श्चात् आता िै िाद, हिसका अनुगमन करते िैं िल्प तथा हितण्डा। िल्प अर्ने र्क्ष-समथपन का अथपिीन प्रयास तथा हितण्डा हनरथपक हछिान्िेषण िै। इसके र्श्चात् िेत्वाभास और हनग्रि-स्थान आते िैं। िेत्वाभास में असद िेतु हनहित रिता िै और हनग्रि स्थान-से-की- युक्ति संबंधी अक्षमता के कारण र्ररचचाप का अन्त िो िाता िै।

ज्ञान की प्राहप्त िोने र्र व्यक्ति के दोष अथापत राग, दि तथा मोि हिहलन िो िाते िैं। यिााँ िेष में क्रोध, ईष्याप, दुभापिना तथा घृणा का, राग में कामुकता, लोभ तथा हलिा का एिं मोि में सन्ेदि, अिंकार, प्रमाद तथा हमथ्या बोध का भी समािेि िैं। मोि से राग तथा िेष उत्पन्न िोते िैं। यहद आर् मोक्ष प्राप्त करना चािते िैं, तो आर्को हमथ्या ज्ञान से प्रारम्भ तथा दुःख में अन्त िोने िाली शृंखला को समाप्त करना िोगा। यहद हमथ्या ज्ञान लुप्त िो िाता िै, तो दोष भी हिलीन िो िायेंगे और यहद दोष हिलीन िो िाते िैं, तो व्यक्ति प्रिृहत्त से तथा उसके र्ररणाम स्वरूर् िोने िाले िेिान्तरण तथा दुःख से मुि िो िाता िै।

िेिान्तरण में आत्मा एक िरीर का र्ररत्याग कर अन्य िरीर ग्रिण कर लेता िै। ग्रि िेिान्तरण उसके सुख-दुःख भोग का कारण िै। िेिान्तरण से मुि आत्मा सिपदुःखों ंसे मुि िो िाता िै। िरीरर्ात तथा इसके फलस्वरूर् सुख-दुःख की हनिृहत के र्श्चात् िीघ्र िी उसे र्रम मुक्ति या हनिापण मुक्ति की प्राहप्त िो िाती िै।

अर्िगप या मोक्ष की अिस्था

अर्िगप या मोक्ष दुःख की आत्यहन्तक हनिृहत्त िै। यि क्ेलि-मुि अिस्था िै। इसमें दुःखों ंका ध्िंस िो चुका िोता िै। यि सुखोर्भोग अथिा आनन्द निीं ंिै। यि आत्मोन्मूलन निीं ंिै। यि बन्धनािा िै। इक्कीस प्रकार के दुःखों ंकी हनिृहत्त िी मोक्ष िै। मुिािस्था में मन का आत्मा से सम्बन्ध हिच्छेद िो िाता िै। इस हस्थहत में इच्छा, प्रिृहत्त, धमप, अधमप, िेष तथा मानहसक संस्कार आत्मा के आश्रय-स्थान निीं ंरि िाते; क्योंहक मन अब सत्ताि्िीन्य िी चुका िोता िै। नैयाहयकों ंका मोक्ष एक अथपिीन िब्द िै; क्योंहक यि हनतान्त संिेदनि्िीन्य र्ाषाणित् दुःख तथा भाि-रहित अिस्था िै।

डनष्कषप

सृहष् का प्रारम्भ र्रमाणुओं ंके संयोग से हुआ िै। इसमें संयोग तथा हियोग हनहित िै। ईश्वर, र्रमाणु तथा नौ िव्य सृहष् के कारण िैं। ईश्वर हनत्य-ज्ञान-सम्पन्न िै। इच्छा तथा हक्रया उसके गुण िैं। िि हिभु िै। िीि कताप तथा भोिा िै। िीि अनेक िैं और उनमें अनेक गुण िैं। अज्ञान बन्धन का कारण तथा बन्धन इक्कीस प्रकार के दुःखों ंका र्ररणाम िै। मोक्ष सिपदुःखों ंसे हनिृहत्त िै। ओिज्ञान, िो ज्ञान के अन्य प्रकारों ंसे हभन्न िै, मोक्ष का साधन िै। गौतम आरम्भिाद तथा अन्यथाख्याहत के समथपक िैं।

िैहिषक

भूहमका

िैहिषक-दिपन के प्रितपक कणाद ऋहष को मौन प्रणाम ! कणाद ऋहष को औलूक् और काश्यर् नामों ं से भी िाना िाता िै।

िैहिषक-मत के नामकरण के मूल में 'िहिष' िब्द हनहित िै िो दाथों ंके स्वभािगत र्ृथक् का द्योतक िै। कणाद के सूत्रों ंमें िैहिषक-दिपन का मूल-तत्त्व हनहित िै। इसमें हिस मुख्य हिषय का हनरूर्ण हकया गया िै, िि 'िहिष' िै िो इस मत के प्रितपक िारा र्ररगहणत छि दाथों में एक िै।

न्याय तथा वैशेहषक

आिा के स्वभाि तथा गुण और हिश्व-रचना के मूलभूत हसद्धान्तों ंके हिषय में िैहिषक तथा न्याय एकमत िैं। िैहिषक न्याय का समूपूरक िै। िैहिषक का मुख्य प्रयोिन अनुभि की व्याख्या िै। र्िले यि अर्नी हिज्ञासाओं ंको दाथों के आधार र अथापत् अवतस्तत्वान् िस्तुओं ंके समथपन में आने िाले सामान्य गुणों ंका नामहनदेि करने की र्द्धहत के आधार र क्रमबद्ध करता िै। यि कुछ सामान्य अिधारणाओं ंका प्रहतर्ादन करता िै िो प्रत्यक्ष, अनुमान तथा िब्द-प्रमाण िारा ज्ञेय िस्तुओं ंसे सम्बद्ध िैं।

कणाद के सूत्र

कणाद के िैहिषक-सूत्र दि अध्यायों ंमें हिभाहित िैं। प्रथम अध्याय में दाथों के समस्त िगप र हिचार हकया गया िै। हितीय अध्याय में कणाद ने िव्यों ं(substances) का अहभहनियन हकया िै और तृतीय अध्याय में उन्होंने आिा तथा आन्तररक इन्द्रिय (मन) का िणपन हकया िै। चतुथप अध्याय में िरीर तथा उसके अियिों ंकी र्ररचचाप िै और र्ंचम में कमप का प्रहतष्ठार्न हकया गया िै। षष्ठ अध्याय में कणाद ने धमप र िास्त्रानुमोहदत हिहध से हिचार हकया िै। सप्तम अध्याय में उन्होंने गुणों ंतथा समिाय का प्रहतष्ठार्न और अष्म में ज्ञान की अहभव्यक्ति, इसके स्रोत आहद का अहभहनियन हकया िै। निम अध्याय में उन्होंने 'िहिष' का तथा दिम में आत्मा के गुण-िैहभन्य का प्रहतर्ादन हकया िै।

प्रारम्भ में नामहनदेि करते हुए दाथों का िणपन हकया गया िै। इसके र्िात् उनको र्ररभाहषत और तत्पिात् उनका रीक्षण हकया गया िै।

यि मत मुख्यतः दाथों के हनधापरण से सम्बक्तन्धत िै; हकन्तु कणाद इसका प्रारम्भ धमप के अनुसन्धान से करते िैं। इसका यि कारण िै हक दाथों के सारतत्त्व के ज्ञान के मूल में धमप िी िै। इसका प्रथम सूत्र िै :

"यतोभ्युदयहनःश्रेयस हसस्तद्धः स धमपः।"

अथापत् हिससे र्रम कल्याण अथिा मोक्ष (दु:खों ंकी समात्तप्त) की प्रात्तप्त िोती िै, िि धमप िै।

सि र्दाथप

र्दाथप का िात्तब्दक अथप 'र्द का अथप' िोता िै; हकनु्तु यिााँ इसका अहभप्राय उस िव्य से िै, हिसकी दिपनिास्त्र में हििेचना की गयी िै। र्दाथप िि िै हिसके हिषय में सोचा िा सकता िै (अथप) तथा हिसका कोई नाम (र्द) िै। समस्त अत्तस्तत्विान्, दृश्यमान, नामधारी तथा अनुभिगम्य िसु्तुएाँ र्दाथप िैं। र्दाथप ज्ञान का हिषय िनिे से िेर् तथा नामधारी िोने से अहभधेय िै। संयोहित िव्य र्राहश्रत तथा अहनत्य िैं, िब हक सामान्य िव्य हनत्य तथा स्वतन्त्र िैं।

िैहिषक में हनम्नांहकत र्दाथों की र्रगणना की गयी िै :

(१) िव्य, (२) गुण, (३) कमप, (४) सामान्य, (५) हििेष, (६) समिाय और (७) अभाि।

इनमें से प्रथम तीन अथापत् िव्य, गुण तथा कमप की यथाथप या िसु्तुर्रक सत्ता िै। अन्य तीन अथापत् सामान्य, हििेष तथा समिाय तकप-हसद्ध र्दाथप िैं। ये बौत्तद्धक हिभेदीकरण–न्य िैं। कणाद ने केिल छि र्दाथों की गणना की िै; हकनु्तु उत्तरकालीन मनीहषयों ंने एक सातिें र्दाथप की भी र्रगणना कर दी।

र्ृथ्वी, िल, तेि, िायु, आकाि, काल, हदक्, आत्मा तथा मन-ये नौ िव्य िैं। इनमें से प्रथम चार तथा अत्तन्तम को र्रमाणु–न्य किा िाता िै। प्रथम चार हनत्य तथा अहनत्य-दोनों ंिैं। अर्ने हिहभन्न हमश्र रूर्ों ंमें िोने से ये अहनत्य िैं; हकनु्तु अर्ने अत्तन्तम र्रमाणुओं ं(हिनमें इनका उद्गम िै) के सन्दभप में ये हनत्य िैं।

मन एक हनत्य िव्य िै। आत्मा के असदृि यि सिपव्यार्ी निीं ंिै। यि र्रमाणु–न्य िै और एक समय में केिल एक िी हिषय का हिचार कर सकता िै।"

नौ िव्यों ंमें रूर्, रस, गन्ध, स्पिप, संख्या, र्ररमाण, र्ृथक्त्व, संयोग, हिभाग, र्रत्व, अर्रत्व, बुत्तद्ध, सुख, दु:ख, इच्छा, िेष और प्रयत्न-ये सतरि गुण िैं। इनमें हिन सात अन्य गुणों ंको समाहिष् हकया िाता िै, िे िैं-गुरुत्व, िित्व, स्नेि, संस्कार, धमप, अधमप तथा िब्द। इनमें से सोलि गुण अनात्म (भौहतक) िव्यों ंसे सम्बद्ध िैं। िेष आठ (बुत्तद्ध, प्रयत्न, इच्छा, िेष, सुख, दु:ख, धमप तथा अधमप) आत्मा के गुणधमप िैं।

तृतीय र्दाथप कमप र्ााँच प्रकार का माना िाता िै-उत्क्षेर्ण, अर्क्षेर्ण, आकुंचन, प्रसारण तथा गमन।

चतुथप र्दाथप सामान्य के दो भेद िैं-र्र-अर्र तथा र्रार्र।

र्ंचम र्दाथप 'हििेष' प्रथम र्दाथप के नौ हनत्य िव्यों ं(र्ृथ्वी, िल, तेि, िायु के र्रमाणु, आकाि, काल, हदक्, आत्मा तथा मन) से सम्बत्तन्धत िै। इन सभी में हनत्य तथा मूलभूत भेद िै और ये सभी एक-दूसरे से र्ृथक् िैं। इस 'हििेष' के कारण िी इस दिपन या मत को िैिेहषक किा िाता िै।

षष्ठ र्दाथप समिाय एक िी प्रकार का िोता िै। यि िव्यों ंतथा उनके गुणों,ं िाहत तथा उसके व्यहष्यों ंएिं हकसी िसु्तु तथा उससे सम्बत्तन्धत सामान्य प्रत्यय में हस्थत िोता िै। यि एक यथाथप तत्त्व माना िाता िै।

सप्तम दाथप अभाि दो प्रकार का िोता ि-ै (१) संसगापभाि अथापत् दो िस्तुओं ंमें िोने िाले संसगप या सम्बन्ध का हनषेध अथिा अभाि। संसगापभाि तीन प्रकार का िोता ि-ै (अ) प्रागभाि (उत्पहत्त के र्िले कारण में कायप का अभाि), (आ) प्रध्वंसाभाि (उत्पहत्त के र्ीछे कारण में कायप का अभाि) और (इ) अत्यन्ताभाि (ितपमान, भूत तथा भहिष्य-तीनों ंकालों ंमें दो िस्तुओं ंके संसगप का अहिद्यमान रिना); तथा (२) अन्योन्याभाि (अथापत् एक िस्तु दूसरी िस्तु निीं ंि ै अथापत् दोनों ंमें र्ारस्र्ररक भेद ि)ै। इन दोनों ंभेदों ंको हमलाने से अभाि चार प्रकार का िो
िाता ि।ै

र्दाथों के ज्ञान से डनःश्रेयस की प्राडप्त

दाथप-ज्ञान अभ्युदय की प्राहप्त का साधन ि।ै दाथों की एकरूर्ता या इनके भेद िारा इनके सारतत्त्व के हकसी धमप-िैहिष िारा उत्पन्न ज्ञान का र्ररणाम ि-ैहनःश्रेयस ।

अर्दि का डसद्धाि और इसकी अर्ापिता

कणाद ने अर्ने सूत्रों ंमें ईश्वर का स्पष् उल्लेख निीं ंहकया ि।ै उनके मतानुसार, हिश्व की रचना अदृष् का र्ररणाम ि ै िो कमाँ की अलहक्षत िहक्त ि।ै ि ेअदृष् के हसद्धान्त को िी र्रमाणुओं ंतथा आिाओं ंके आहद व्यार्ार का उदाम मानते ि।ैं कणाद के अनुयायी ईश्वर को िगत् का हनहमत कारण तथा र्रमाणुओं ंको उर्ादान कारण मानते ि।ैं

अहिचारिील र्रमाणु इस हिश्व के सुव्यिहस्थत संचालन में असमथप ि;ैं क्योंहक इसके हलए उनमें अर्ेहक्षत िहक्त तथा बुहद्ध का अभाि ि।ै र्रमाणुओं ंके कायों का हनयमन हनहित रूर् से सिपज्ञ तथा सिपव्यार्ी र्रमािा िारा िी िोता ि।ै अनुमान तथा धमपग्रन्थों ंके कारण िम ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करने के हलए बाध्य ि।ैं हिसके कारण अदृष् हक्रयािील िोता ि,ै िि बुहद्ध क्या ि?ै िि बुहद्ध ईश्वर ि।ै र्चमिाभूत कायप ि।ैं उनका कोई ऐसा रचहयता िोना आिश्यक ि ैहिसे इनका ज्ञान िो। िि 'रचहयता' ईश्वर ि।ै िेदों ंका कोई प्रणेता अिश्य िोना चाहिए। िेदों ंमें िो-कुछ भी ि,ै िि हनभापन्त तथा उनका प्रणेता हनश्छल ि।ै उसके हलए सिपज्ञ िोना अहनिायप ि।ै

प्रलयािस्था में आिाएँ बुहद्ध-रहित िो िाती ि।ैं अतः ि ेर्रमाणुओं ंका हनयन्त्रण निीं ंकर सकतीं।ं र्रमाणु स्वयं गहतिील िोने में असमथप ि।ैं अतः इनकी गहत का कोई आहद उत्प्रेरक िोना िी चाहिए। यि आहद उत्प्रेरक सृहष्कताप अथिा ईश्वर ि।ै

डवश्व का र्रमाणुवादी डसद्धाि

िैहिषक-मत के अनुसार हिश्व की संरचना र्रमाणुओं ंके संयोग से िोती ि।ै र्रमाणु असंख्य तथा हनत्य ि।ैं अदृष् की िहक्त िारा उनका हनरन्तर संयोग, हिघटन तथा र्ुनः हिघटन हुआ करता ि।ै र्रमाणु को सत्, कारण-रहित तथा हनत्य के रूर् में र्ररभाहषत हकया गया ि।ै यि सूक्ष्माहतसूक्ष्म, अदृश्य, अहिभाज्य, अमूतप तथा इहियों ंके हलए अगोचर ि।ै प्रत्येक र्रमाणु में एक 'हििेष' अथिा उसका अर्ना हनत्य सारतत्व हनहित रिता ि।ै

प्रारम्भ में र्रमाणुओं ंके संयोग से ियणुक की सृहष् िोती िै। तीन दूिणुकों ंके संयोग से त्रसरेणु उत्पन्न िोता िै। सूयप की हकरणों ंमें दृश्यमान एक रि-ऋण के आयतन के समान इसका उतना िी आयतन िोता िै हक इसे देखा िा सके।

र्रमाणुओं ंके चार िगप िैं-रृथ्वी के, िल के, तेि के तथा िायु के र्रमाणु। रृथक् रृथक् र्रमाणु एक-दूसरे से संयुि िो कर कुछ काल के उर्रान्त रुनः हिघहटत िो िाते िैं।

'िैहषक-सृहष्मीमांसा इस अथप में िैतिादी िै हक इसमें हनत्य-आिाओं ंके साथ-साथ हनत्य-र्रमाणुओं ं की सत्ता को भी मान्यता दी गयी िै। इसमें आिा तथा दाथप के यथाथप सम्बन्ध के हिषय में कोई हनहियाक हनणपय निीं ंहलया गया िै।

शरीर तथा आत्मा

रीर प्रलय के समय सूक्ष्म तथा सृहष् के समय स्थूल िो िाता िै। काल, दि एिं िन्म की र्रक्तस्थहतयों, ं र्ररार तथा िीिनाहध का हनणापयक अदृष् िै।

ैयक्तिक आिाएँ हनत्य, अनेक, एक-दूसरे से हनत्य-रूर् से रृथक् तथा िरीर, इक्तियों ंएिं मन से हभन्न िैं; हकनु्तु इनमें बुक्तद्ध, प्रयत्न, इच्छा, िेष, सुख, दुःख, धमप तथा अधमप आहद गुण हनिास करते िैं। ये अनन्त, सिपव्यार्ी और चतुहदपक् फैले हुए िैं। मनुष्य का आिा हितना नूयूयाकप में िै, उतना िी बम्बई में भी िै, यद्यहर् िि केिल उसी स्थान र अर्ने बोध, संिेदना तथा हक्रया की िक्तियों ंका उर्योग कर सकता िै ििाँ उसका िरीर िोता िै। आिा तथा मन प्रत्यक्ष ज्ञान के हिषय निीं ंिैं।

मोक्षािस्था में आिा का गुणों ंसे आत्यक्तन्तक सम्बन्ध हिचे्छेद िो िाता िै। इसे अर्ने स्वातन्य की रुनः प्राक्तप्त िो िाती िै।

जन्म, मरण तथा मोक्ष

धमप तथा अधमप िारा आिा के िरीर, इक्तिय तथा िीिन के साथ संयोग को िन्म तथा इनके िारा िरीर तथा मन के हियोग को मरण किते िैं।

िब आिा िरीर से संयोहित निीं ंिोता तथा साथ िी, हकसी सम्भाव्य (potential) िरीर की सत्ता निीं ं ििती एिं र्रणामस्वरूर् रुनिपन्म असम्भि िो िाता िै, तब यि क्तस्थहत मोक्ष किलाती िै।

बन्धन तथा मोक्ष

आिा, इक्तिय, मन तथा हिषयों ंके र्ारस्परिक सहन्नकषप से सुख-दुःख उत्पन्न िोते िैं।

सुख से इच्छा उत्पन्न िोती िै। रुष्प-माला, चन्दन-लेर्, स्त्री तथा अन्य हिषयों ंके भोग से प्राप्त सुख से इसी प्रकार के सुख या इसकी प्राक्तप्त के साधनों ंके प्रहत एक के बाद दूसरा राग उत्पन्न िोता िाता िै। सर्प, िृहिक, कण्टक या इसी प्रकार की अन्य िसुतुओं ंसे उत्पन्न दुःखों ंके कारण इन दुःखों ंया इनके कारणों ंके प्रहत िेष उत्पन्न िि िाता िै।

हनरन्तर अथिा अभ्यास–हनत हिषयानुभि का मन र एक ऐसा गिसि संस्कार र्ड िोता िै हक अर्नी प्रेहमका के हृदय को हिहित करने में असमथप प्रेमी प्रत्येक िस्तु में अर्नी प्रेहमका का िी दिपन करने लगता िै। इसी प्रकार, सर्प-दंि से र्ीहडत रि चुके व्यक्ति को सिपत्र सर्प-दिपन िी िोता िै।

दोष जो बन्धन के कारण िैं

राग, िेष तथा मोि को दोष किा िाता िै; क्योंहक िे उस कमप के अहभप्रेरक िैं िो कताप को संसार के बन्धन में डाल देता िै। गौतम भी किते िैं- "दोष कमप या िागहतक व्यार्ार के हलए उत्प्रेररत करता िै" (न्यायसूत्र : १/१/१८)।

ज्ञान : मोक्ष का साधन

आत्मा के अन्तज्ञापन से हमथ्या ज्ञान का नाि िोता िै। इसके फलस्वरूर् राग, देष, मोि तथा अन्य दोषों की हनिृहत्त िो िाती िै। इस क्तस्थहत में कमप भी समाप्त िो िाता िै। अतः कमप–हनत िन्म भी निीं िोता। इसके र्ररणामस्वरूर् िन्म के कारण उत्पन्न दुःख की भी हनिृहत्त िो िाती िै।

सांख्य

भूडमका

सांख्य-दिपन के प्रितपक, ब्रह्मा के र्ुत्र तथा हिष्णु के अितार श्री कहर्ल मुहन को प्रणाम !

सांख्य िब्द का अथप िै संख्या। दिपन की इस र्द्धहत में िगत् के चौबीस तत्त्वों की र्ररगणना की गयी िै। अतः इसका नाम सिपथा उर्युि िै। सांख्य िब्द का प्रयोग हिचार या आध्याक्तिक हचन्तन के सन्दभप में भी हकया िाता िै।

सांख्य-र्द्धहत में यथाथपरूर्ेण क्तस्थत तथा हिषयों एिं र्दाथों में िगीकृत सत्ता के रूर् में हिश्व की हिश्लेषणात्मक र्ररर्ूच्छा के दिपन निीं िोते। यि दिपन मूलभूत तत्व प्रकृहत, हिससे अन्य समस्त िागहतक र्दाथों का प्रादुभापि िोता िै, का संश्लेषणात्मक हििेचन करता िै।

सांख्य-र्द्धहत में प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आप्त–िाक्-ये तीन प्रमाण िैं। आप्त िब्द का अथप सम्यक् या हनभापन्त िै। इसका प्रयोग िेदों या अर्ौरुषेय ज्ञान प्राप्त गुरुओं के हलए हकया िाता िै। नैयाहयकों को प्रत्यक्ष, अनुमान, उर्मान तथा िब्द, ये चार प्रमाण मान्य िैं और मीमांसक छि प्रमाणों को स्वीकार करते िैं।

र्ुरुष तथा प्रकृडत की िैतवादी अवधारणा

सांख्य का अध्ययन सामान्यतः न्याय के अध्ययन के र्श्चात् िी हकया िाता िै। दिपन की यि एक सुन्दर र्द्धहत िै िो र्ाश्चात्य दािपहनकों िारा भी प्रिंहसत िै। इसका िैतिाद अन्य दिपनों के िैतिाद से अहधक समुपुष् तथा स्पष् िै। इसके मतानुसार िून्य से हकसी िस्तु की उत्पहत्त असम्भि िै। यि र्ुरुष तथा प्रकृहत की यथाथप सत्ता के प्रहत आस्थािान् िै। र्ुरुष ज्ञाता तथा प्रकृहत ज्ञेय िै।

प्रकृहत तथा रुरुष अनाहद तथा अनन्त िैं। इनमें एकत्व-दिपन िन्म-मरण का ितु िै। इनके रूथकत्व के बोध से मुक्ति प्राप्त िोती िै। प्रकृहत तथा रुरुष, दोनों ंसत् िैं। रुरुष असंग िै। िि चेतन, हिभु तथा हनत्य िै। प्रकृहत कताप तथा भोिा िै। रुरुष असंख्य िैं।

ईश्वर के प्रडत अस्वीकृडत

सांख्य को हनरीश्वरिादी सांख्य किा िाता िै। यि नाक्तस्तक दिपन िै। ईश्वर के प्रहत इसकी आस्था निीं ंिै। प्रकृहत िारा आहिभूपत सृहष् की अर्नी एक रूथक् सत्ता िै िो उस रुरुष-हििेष के समस्त सम्बन्धों ंसे स्वतन्त्र िै हिसके साथ िि सम्बद्ध िै। अतः सांख्यमतानुसार संसार को हकसी चेतन स्रष्ा या हनयन्त्रक िक्ति की कोई आिश्यकता निीं ंिै।

यि एक भ्रान्त धारणा िै। िेदान्त के अनुसार, प्रकृहत सदैि र्रमात्मा के हनयन्त्रण में रिती िै। यि स्वयं कुछ कर र्ाने में असमथप िै। यि र्रमात्मा की दृहष्-र्रहध से बािर निीं ंिा र्ाती। एकमात्र इसी के कारण उसमें गहत का संचार िोता िै और िि सृहष् की संरचना का प्रारम्भ करती िै। प्रकृहत अचेतन िै। एकमात्र हकसी चेतन स्रष्ा के र्ास िी ब्रह्माण्ड-सम्बन्धी कोई सुहिचाररत योिना िो सकती िै। प्रकृहत तो हिकारी मात्र िै। यि िेदान्त का हसद्धान्त िै।

हिकास तथा प्रत्याितपन

सांख्य का हसद्धान्त हिकास तथा प्रत्याितपन का हसद्धान्त िै। कारण तथा कायप एक िी तत्त्व की अहिकहसत तथा हिकहसत अिस्थाएँ िैं। आत्यक्तन्तक हिनाि या प्रलय िैसी कोई क्तस्थहत निीं ंिोती। प्रलय में बस इतना िी िोता िै हक कायप कारण मैं हिलीन िो िाता िै।

िून्य से हकसी भी िसुतु का आहिभापि निीं ंिो सकता। िो निीं ंिै, िि उस िसुतु में हिकहसत निीं ंिो सकती, िो िै। अव्यि रूर् में हिसका अक्तस्तत्व निीं ंिै, उसका प्रादुभापि मानि-शृंग की भाँहत एक असम्भािना मात्र िै, क्योंहक हकसी िसुतु के प्रादुभापि के हलए हकसी उर्ादान का िोना अहनिायप िै, क्योंहक प्रत्येक िसुतु का आहिभापि एक िी स्थान में सिपदा निीं ंिो सकता और हकसी भी िसुतु का आहिभापि उसी िसुतु से िो सकता िै िो उसको आहिभूपत करने में सक्षम िो।

हिसका कोई अक्तस्तत्व िी निीं ंिै, उसको हकसी कताप िारा अक्तस्तत्व प्रदान कर र्ाना या अहभव्यि कर देना असम्भि िै। यहद मूँगफली में तेल निीं ंिै, तो उससे तेल हनकालने का प्रयास हनष्फल िोगा। इस युक्ति से रेत या सन्तरे से भी मूँगफली का तेल हनकालना असम्भि िै। तेल की अहभव्यक्ति या इसका प्रादुभापि मूँगफली में तेल की सूक्ष्म-सत्ता का प्रमाण िै। इससे यि भी हसद्ध िो िाता िै हक इस कायप में िि कारण सूक्ष्म-काल में हिद्यमान था हिससे इसका आहिभापि हुआ।

कायप में कारण की सूक्ष्म-सत्ता का िोना असक्तन्दग्ध िै। सांख्य-दिपन की हिहिष्ताओं ंमें इस हसद्धान्त की भी गणना की िाती िै। कायप िि तत्त्व िै िो कारण में अव्यि रूर् से हनहित रिता िै। हिस प्रकार िृक्ष बीि में अहिव्यिािस्था या प्रसुप्तािस्था में सिाांहतः हिद्यमान रिता िै, उसी प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड अव्यि या अव्याकृत प्रकृहत में हिद्यमान रिता िै। हनसगपतः कायप कारण से अहभन्न िै। यि अर्ने कारण या उर्ादान से हभन्न निीं ंिोता।

र्चीस तत्त्वो ंका चतुवपगीय डवभाजन

सांख्य तत्त्वों ंका िणपन उनकी अर्नी-अर्नी रचनिाक क्षमता के आधार र िोता ि ै। ये ि ैं-१. प्रकृहत, २. प्रकृहत तथा हिकृहत, ३. हिकृहत और ४. न प्रकृहत न हिकृहत। इस चतुिपगीय हिभािन में सारे र्चीस तत्त्वों ंका सिािेि िो िाता ि ै। प्रधान या प्रकृहत हिशुद्धतः प्रसिधहमपणी ि ै। यि सबकी मूल ि ै। यि हिकृहत निीं ंि ै। यि एक सिपसात्यक िक्ति ि ै हिससे िस्तुओं ंका आहिभापि तथा हिकास िोता ि ै। बुक्तद्ध, अिंकार तथा र्ंच तन्मात्राएँ-ये प्रकृहत तथा हिकृहत, दोनों ंि ैं। बुक्तद्ध से अिंकार का आहिभापि िोता ि ै, अतः बुक्तद्ध प्रकृहत ि ै; हकन्तु स्वयं प्रकृहत से आहिभूपत िोने के कारण यि हिकृहत भी ि ै। अिंकार हिकृहत ि ै; क्ोंहक इसका प्रादुभापि बुक्तद्ध से िोता ि ै। यि प्रकृहत भी ि ै; क्ोंहक इससे र्ंच तन्मात्राओं ंका आहिभापि िोता ि ै। अिंकार से आहिभूपत िोने के कारण र्ंच तन्मात्राएँ हिकृहत ि ैं; हकन्तु इनसे र्ंच मिाभूतों ंका आहिभापि िोता ि ै, अतः ये प्रकृहत भी ि ैं। दि इक्तियााँ, मन तथा र्ंच मिाभूत हिकृहत मात्र ि ैं। इसका कारण यि ि ै हक इनसे हकसी ऐसे तत्त्व का आहिभापि निीं ंिो सकता िो इनसे मूलतः हभन्न िो। र्ुरुष या आत्मा न तो प्रकृहत ि ै न हिकृहत। यि हनगुपण ि ै।

सांख्य-दशपन का प्रयोजन

इस दािपहनक मत के अनुसन्धान का प्रयोिन आध्याक्तिक, (ज्वराहद व्याहधयााँ) आहधदैहिक, (हिद्युत्-र्ात, िीत, तार् और िषापहद) तथा आहधभौहतक (र्िुओं ं तथा िृ हिकाहद िारा हुई र्ीडा) दुःखों ं के आत्यक्तन्तक उच्छेदन के साधनों ंकी खोि ि ै। दुःख प्रहतबन्धक िोता ि ै। इससे योग-साधना तथा मोक्ष-प्राक्तप्त के मागप में अिरोध उर्क्तस्थत िोता ि ै। कहर्ल मुहन िारा प्रदत्त र्चीस तत्त्वों ंका ज्ञान दुःख का हिनािक ि ै। सांख्य-दिपन के अनुसार
हिसे इन र्चीस तत्त्वों ंका ज्ञान िो िाता ि ै, उसे मोक्ष की प्राक्तप्त िो िाती ि ै। इन हत्रहिध दुःखों ंका अत्यन्ताभाि िी
िीिन का चरम लक्ष्य ि ै।

प्रकृडत

प्रकृहत का अथप प्रधान ि ै। यि सृहष् का मूल तत्त्व ि ै। इस िब्द की हनष्पहत्त 'प्र' अथापत् र्िूप तथा 'कृ' अथापत् कृहत से िोती ि ै। यि िेदान्त की माया के समकक्ष ि ै। यि हिश्व का एकमात्र मूल ि ै। इसे प्रधान इसहलए किा िाता ि ैहक इसमें सारे र्ररणाम या सारी हिकृहतयााँ अव्यि रूर् से अनुसूयूत ि ैं और यि हिश्व तथा इसके हिषयों ंका आहद कारण ि ै।

प्रकृडत के लक्षण

प्रधान या प्रकृहत हनत्य, सिपव्यार्ी तथा अचल ि ै। यि एक ि ै और इसका कोई कारण निीं ंि ै। यि स्वयं समस्त कायों का कारण ि ै। यि स्वतन्त्र तथा अहिकृत ि ै, िब हक अन्य तत्त्व हिकृहत तथा र्रतन्त्र ि ैं। प्रकृहत एकमात्र अर्ने गुणों ंकी सहक्रयता र िी हनभपर ि ै।

प्रकृहत अचेतन ि ै। यि एक हत्रसूत्र की भााँहत ि ै। इसके तीन गुण िी यि हत्रसूत्र ि ैं। यि एक हनिेतन तत्त्व ि ै। इसमें िो िक्ति ि ै, िि इन गुणों ंके िी कारण ि ै।

प्रकृडत का रूर्िरण

मूल दार्थप अव्यि ि◌ोता ि◌ै। मित् अथापत् ि◌ैहश्वक चेतना प्रकहत की प्रथम हिकृहत ि◌ै। बुक्तद्ध या मित् अिंकार के हलए प्रकृहत ि◌ै। अिंकार बुक्तद्ध की हिकृहत ि◌ै। एक ऐसी प्रकृहत ि◌ै। यि एक ए हिससे इक्तियों ◌ं तथा तन्मात्राओं ◌ंका आहिभापि ि◌ोता ि◌ै। प्रकार इक्तियााँ तथा र्ंच तन्मात्राएाँ अिंकार की हिकृहत ि◌ैं। स्थूल भूत र्ंच तन्मात्राओं ◌ं की हिकृहत ि◌ैं।

मित्, अिंकार तथा र्ंच सूक्ष्म तन्मात्राओं ◌ंका आहिभापि प्रकृहत से ि◌ी ि◌ोता ि◌ै। इस प्रकार मित् से ले कर तन्मात्राओं ◌ंतक सारे तत्त्वों ◌ंका आहिभापि प्रकृहत के इर्ान्तरण के फलस्वरूर् ि◌ी ि◌ोता ि◌ै। इन कायों से कारण (प्रकृहत) का अनुमान ि◌ोता ि◌ै। कारण अर्नी सूक्ष्मता से अगोचर ि◌ोता ि◌ै; अतः इसका अनुमान इसके कायों से ि◌ी ि◌िना चाहिए।

प्रकृडत का व्यार्ार

प्रकृहत ि◌सुतुगत सत्ता का मूलाधार ि◌ै। यि अर्ने हलए सृहष् ि◌िीं ◌ंरचती। सारे दार्थप अिा के भोग के हलए ि◌ी ि◌ोते ि◌ैं। हिस प्रकार कोई रुष्प र्ारदी महण-कलि के सम्पकप में आ ि◌ाता ि◌ै, उसी प्रकार प्रकृहत रुरुष के सम्पकप में आ कर ि◌ी सृहष्-रचना करती ि◌ै। प्रत्येक अिा के मोक्ष के हलए ि◌ी यि व्यार्ार सम्पन्न ि◌ोता ि◌ै। हिस प्रकार दुग्ध का कायप बछडे का र्ोषण ि◌ै, उसी प्रकार प्रकृहत का कायप अिा को मोक्ष प्रदान करना ि◌ै।

गुण

सांख्य-दिपन के अनुसार सत्त्व, रिस् तथा तमस्, ये हत्रगुण प्रकृहत के उर्ादान तत्व ि◌ैं। सत्त्व हनमपलता तथा प्रकाि का, रिस् अिेग, प्रिृहत्त तथा गहत का और तमस् ि◌डता, अन्धकार तथा हनक्तियता का द्योतक ि◌ै।

गुण का अथप सूत्र ि◌ोता ि◌ै। ये अिा को बन्ध-त्रय में आबद्ध कर देते ि◌ैं। ये गुण न्याय तथा ि◌ैहषक में हनरूहर्त गुणों ◌ंसे हभन्न ि◌ैं। ये प्रकृहत के ि◌ास्तहिक उर्ादान तत्व ि◌ैं। ये प्रकृहत से आहिभूपत समस्त हिश्व को रूर्ाहयत करते ि◌ैं। ये र्रस्पर सम-रूर् न ि◌ो कर हिषम-रूर् ि◌ोते ि◌ैं। इनमें से हकसी एक या अन्य का आहधक् ता ि◌ै। हिस प्रकार ि◌ेदान्त में सत्-हचत्-आनन्द की हत्ररुटी ि◌ै, उसी प्रकार सांख्य में कुणे की हत्ररुटी ि◌ै।

गुणो ◌ंके अिव्यापर्ार से डवकास

तीनों ◌ंगुण कभी एक-दूसरे से रृथक् ि◌िीं ◌ंि◌ोते। ये एक-दूसरे के सियक तथा र्रस्पर हमहश्रत ि◌ोते ि◌ैं। ज्योहत, तैल तथा दीर्-हिखा में ि◌ो सम्बन्ध ि◌ोता ि◌ै, ि◌िीं ◌ंअन्तरंग सम्बन्ध इन गुणों ◌ंमें भी ि◌ोता ि◌ै। ये प्रकृहत के सार-तत्त्व ि◌ैं। सभी ि◌सुतुओं ◌ंकी सृहष् इन तीन गुणों ◌ंसे ि◌ी ि◌ोती ि◌ै। इनकी एक-दूसरे र्र प्रहतहक्रया ि◌ोती रिती ि◌ै। तभी अहभव्यक्ति या हिकास की प्रहक्रया प्रारम्भ ि◌ोती ि◌ै। नि किेल हतरोभाि ि◌ै।

गुण 'प्रमेय' तथा रुरुष 'साक्षी प्रमाता' ि◌ै। रुरुष से प्रभाहित ि◌ो कर ि◌ी प्रकृहत हिकास की हक्रया में संलग्न ि◌िती ि◌ै। अक्तखल हिश्व का कारण मित् अथापत् बुक्तद्ध प्रकृहत के हिकास की प्रथम हिकृहत ि◌ै। बुक्तद्ध के र्ित् अिंकार का आहिभापि ि◌ोता ि◌ै। कतृपत्व अिंकार का धमप ि◌ै। इस तत्त्व से ि◌ैयक्तिक ि◌ैहभन्य का आहिभापि ि◌ोता ि◌ै। अिंकार से मन उत्पन्न ि◌ोता ि◌ै ि◌ो कमेक्तियों ◌ंके माध्यम से इच्छाओं ◌ंका आज्ञा-र्ालन करता ि◌ै। यि संकल्प-हिकल्प करता ि◌ै। यि इक्तियों ◌ंके व्यार्ार को ज्ञान या बोध में संश्लेहषत करता ि◌ै। यि इक्तिय-प्रत्यक्ष तथा कमप- दोनों ◌ंमें भाग लेता ि◌ै। सांख्य की दृहष्ट में प्राण-तत्त्व का कोई रृथक् अक्तस्तत्व ि◌िीं ◌ंि◌ै, ि◌ब हक ि◌ेदान्त में यि एक

रूथक् तत्त्व ि ै। सांख्य की र्द्रहत के अनुसार मन ि ारा इक्तियों ं से रंच प्राणों ं की उत्पहत्त ि ोती ि ै। प्राण इक्तियों ं का रूर्ान्तरण ि ै। इनके अभि ा में इसकी सत्ता निीं ं रिती।

तीनो ं गुणो ं के लक्षण

सत्त्व समत्व तथा सनुतुलन ि ै। प्रबलता की अिस्था में यि ि ाक्तन्तदायक ि ोता ि ै। रिस् में हक्रयिीलता िीती ि ै। यि स्वयं को रागि्ेष, प्रेेम-घृणा तथा आकषपण-हिकषपण के रूर् में अहभव्यि करता ि ै। तमस् अकमपण्यता, ि डता तथा हिकमप की ओर अहभमुख रिता ि ै। इससे मोि तथा अहिेक उत्पन्न ि ोते ि ैं।

बि सत्त्व की प्रधानता ि ोती ि ै, तब यि रिस् तथा तमस् को कुक्तण्ठत कर देता ि ै। इसी प्रकार ि ब रिस् की प्रधानता ि ोती ि ै, तब यि सत्त्व तथा तमस् को कुक्तण्ठत कर देता ि ै और तमस् अर्नी प्रधानता की अिहध में रिस् तथा सत्त्व को प्रभििूत कर देता ि ै।

तीन गुणो ं का मनुष्य र्र प्रभाव

ये तीन गुण प्रत्ेयेक मनुष्य में ि ैं। कभी-कभी उसमें सत्त्व-गुण की प्रधानता ि ो ि ाती ि ै। इस क्तस्थहत में िि ि ान्ति-हचत्त ि ो कर हचन्तन तथा ध्यान करता ि ै। हकनुतु ि ब उसकी प्रकृहत रिस्-प्रधान ि ोती ि ै, तब िि हिहभन्न िाहहतक कमों में हलप्त ि ो कर ि ासना और हक्रयिीलता से उिहलत ि ो उठता ि ै। तमस् की प्रधानता में िि आलसी, मन्दबुक्तद्ध तथा हनक्तिय ि ो ि ाता ि ै। तमस् से भ्रम उत्पन्न ि ोता ि ै।

हिहभन्न व्यक्तियों ं में सामान्यत: इन तीनों ं में से हकसी एक गुण की प्रधानता ि ोती ि ै। साक्तत्त्वक मनुष्य सदाचारी ि ोता ि ै। िि र्हित्र एिं हनष्कल्मष िीिन व्यतीत करता ि ै। रािहसक मनुष्य में आिेग तथा सहक्रयता की प्रधानता ि ोती ि ै और तामहसक मनुष्य मन्दबुक्तद्ध तथा हनक्तिय ि ोता ि ै।

सत्त्व मनुष्य को हदव्य तथा उदात्त, रिस् सांसाररक तथा स्वाथी और तमसू र्िुित् तथा अज्ञानी बनाता ि ै। साधु-सन्तों ं में सत्त्व तथा सैहनकों, ं रािनहयकों ं और व्यार्ाररयों ं में रिस् अहधक मात्रा में हिद्यमान रिता ि ै।

रुरुष

रुरुष के लक्षण

रुरुष प्रकृहत से र्रे ि ै। यि उससे हनत्य हभन्न या मूलतः रूथक् ि ै। रुरुष अनाहद, अनन्त, हनगुपण तथा हनहििेष ि ै। यि सूक्ष्म, सिपव्यार्ी एिं मन, बुक्तद्ध, इक्तिय, काल, हदक् तथा कायप-कारण-सम्बन्ध के र्रे ि ै। यि हनत्य ि ष्ा, रूणप, अहिकायप तथा हचूर् ि ै ।

रुरुष कताप न ि ो कर साक्षी ि ै। यि स्फहटक-महण की भाँहत ि णपिीन ि ै। यि अर्ने समुमुख प्रसुतुत हकये गये हिहभन्न ि णों के कारण ि ी रंहित प्रतीत ि ोता ि ै। यि भौहतक निीं ं ि ै। हनरियि ि ोने के कारण यि अनश्वर ि ै। सांख्य के अनुसार रुरुष या आिाएँ असंख्य ि ैं। यहद रुरुषों ं की संख्या एक ि ोती, तो एक की मुक्ति से सभी मुि ि ो ि ाते।

मूलतः हिहभन्न रुरुषों ं में स्वभािगत समरूर्ता ि ै। गहतिीनता रुरुष की हनयहत ि ै। मुि ि ोने के र्ित् उसका कोई गन्तव्य निीं ं रि ि ाता।

रुरुषों ंमें िो र्स्पर र्ाथपक् ै, िि हनत्य ै। प्रकृहत के साथ इनके सम्बन्ध में भी इसी र्ाथपक् के दिपन िोते ैं। प्रत्येक रुरुष में एक अर्नी ैयक्तिकता िोती ै िो सभी दिन्तरणों ंमें अर्ररितपनीय बनी रिती ै। प्रत्येक रुरुष एक रृथक् सृहष् का साक्षी िोता ै और इसके प्रहत तटस्थ रिता ै। िि अन्ध-रंगुन्यायानुसार प्रकृहत से संयुि िो कर सृहष् के व्यार्ार का अिलोकन हकया करता ै हिसमें प्रकृहत स्वयं असमथप ै।

रुरुष अथिा आिा साक्षी, िष्ा, मध्यस्थ कैिल्य, अकताप तथा उदासीन ै।

रुरुष की सत्ता का अनुमान

चेतना बुक्तद्ध का धमप निीं ंिो सकती; क्ोंहक बुक्तद्ध भौहतक तथा प्रकृहत का र्रणाम ै िो स्वयं अचेतन ै। यहद कारण में चेतना का अभाि ै, तो िि कायप में स्वयं को अहभव्यि कर र्ाने में असमथप ै। अतः चेतना का एक सुस्पष् तत्त्व िोना िी चाहिए और िि तत्त्व ै रुरुष या आिा।

आिा की सहन्नहध के कारण िड िरीर चेतन तथा आिा कताप प्रतीत िोता ै। हिस प्रकार िीतल िल से रूणप घट िीतल तथा उष्ण िल से रूणप घट उष्ण प्रतीत िोता ै, उसी प्रकार मन आहद भी रुरुष के संयोग से चेतन प्रतीत िोने लगते ैं। धमो का यि र्ारस्परिक स्थानान्तरण अहग्न तथा अयस या सूयप तथा िल की भाँहत ै। प्रकृहत के व्यार्ार के र्यपिेक्षण के हलए प्रकृहत की अर्ेक्षा हकसी उितर तत्त्व की आिश्यकता ै। यि र्यपिेक्षक उितर तत्त्व रुरुष या आिा िी ै। प्रकृहत तथा इसकी हिकृहत भोग के हिषय ैं। इनके भोग के हलए हकसी ऐसे भोिा का िोना अहनिायप ै िो चेतन िो। यि चेतन भोिा रुरुष या आिा िी ै।

हिस प्रकार कुरसी तथा मेि की उर्योहगता हकसी अन्य के हलए ै उसी प्रकार िरीर, इक्तिय तथा मन की उर्योहगता आिा के हलए ै, िो गुणों ंसे असमृपि अथिा हनगुपण िोने के कारण अभौहतक ै। रुरुष गुणों ंका साक्षी तथा गुण हिषय अथिा प्रमेय ैं। रुरुष साक्षी प्रमाता ै। अतः िि सुख, दुःख तथा मोि, िो क्रमिः सत्त्व, रिस् तथा तमस् के धमप ैं, से कुषि निीं ंिोता। यहद दुःख रुरुष का स्वाभाहिक धमप ै और यहद िि गुणत्रय के व्यार्ार से स्वभाितः मुि निीं ंै, तो रुनिपन्म से उसकी मुक्ति सम्भि निीं ंै।

रुरुष तथा प्रकृडत : एक डवरोधाभास

रुरुष तथा प्रकृहत के लक्षण एक-दूसरे से स्वभाितः हभन्न ैं। रुरुष चेतन, हनक्तिय, हनगुपण तथा अहिकायप ै, िब हक प्रकृहत िड, सहक्रय, हत्रगुणािक तथा र्रणामी ै।

डवश्व

िब प्रकृहत की साम्यािस्था में क्षोभ उत्पन्न िोता ै, तब अर्ने हिहभन्न तत्वों ंसे युि इस हिश्व का आहिभापि िोता ै। प्रकृहत र असंख्य रुरुषों ंकी एक यात्तन्त्रक प्रहक्रया िोती ै हिससे प्रकृहत की साम्यािस्था में क्षोभ उत्पन्न िोता ै और उससे उसमें गहतिीलता आ िाती ै। इस प्रकार हिकास की प्रहक्रया प्रारम्भ िो िाती ै।

डवकास तथा प्रत्यावतपन

प्रकृहत संसार का मूल ै। यि प्रकृहत िी संसार का हनहमत्त तथा उर्ादान, दोनों ंकारण ै। प्रकृहत से समहष्गत बुक्तद्ध अथापत् मित् तथा मित् से समहष्गत अिंकार उत्पन्न िोता ै। आिगत र्क्ष में समहष्गत अिंकार

से मन-सहित एकादि इक्तियााँ तथा िसुतुगत क्ष्ं में िब्द, गन्ध, रस, रूर् तथा स्पिप-ये तन्मात्राएाँ उत्पन्न िोती िैं। इन रं्चतन्मात्राओं ंसे रृथ्वी, िल, तैस्, िायु तथा आकिा रं्च स्थूल भूतों ंका आहिभापि िोता िै।

ब्दि, स्पिप, रूर्, रस तथा गन्ध क्रमिः आकिा, िायु, तैस्, अर्स् तथा रृथ्वी के गुण िैं िो क्रमिः कणेक्तिय, त्वचा, नेत्रेक्तिय, रसनेक्तिय तथा घ्राणेक्तिय के हिषय िैं। प्रथम भूत के अहतररि अन्य सभी भूतों ंमें अर्ने गुणों ंके अहतररि अर्ने रूिपिती भूतों ंके गुण भी हिद्यमान रिते िैं।
प्रलयकाल में प्रकृहत की हिकृहतयों ंका प्रत्यािपन हिकास के रूिपिती चरणों ंमें हिर्रीत गहत से िोता िै और अन्ततः इसका अन्तलपयन प्रकृहत में िो िाता िै। रृथ्वी अर्ने कारण िल में, िल तैस् में, तैस् िायु में, िायु आकिा में, आकिा अिंकार में, अिंकार मित् में तथा मित् प्रकृहत में हिलीन िो िाता िै। अन्तलपयन की प्रहक्रया यिी िै। संसार या प्रकृहत की लीला अनन्त िै। हिकास तथा अन्तलपयन के इस चक्र का न आहद िै, न अन्त।

ज्ञान की प्रडक्रया

इक्तियााँ हिषय से उद्दीप्त िोती िैं और मन इक्तिय-हिषय-सहन्नकषप–हनत संिदेनों ंको हनहिपकल्प ज्ञान में व्यिक्तस्थत कर देता िै। इसके रिात् अिंकार इसे आिा को समेप्रेहषत करता िै और बुक्तद्ध इस हनहिपकल्प ज्ञान को एक अिधारणा अथिा सहिकल्प ज्ञान में रूर्ान्तररत कर रुरुष के समक्ष प्रसुतुत कर देती िै। इस प्रकार िसुतु का ज्ञान िोता िै।

हकसी हिषय से सम्बक्तन्धत िोने के रूिप सिपप्रथम आर् उसका अिलोकन तथा उस र् हिचार करते िैं। इसके रिात् उस र् मनन कर इस हनष्कषप र् हुाँचते िैं हक यि आर्को अिश्य िी करना चाहिए। इसके रिात् आर् कतृपत्व के अहभयान में अग्रसर िोते िैं। यि हनिय हक यि कायप मुझसे िी सम्पन्न िोना चाहिए, बुक्तद्ध का संकल्प (अध्यिसाय) िै। बुक्तद्ध एक माध्यम या करण िै िो मन तथा इक्तिय िारा समेप्रेहषत संिदेनों ंको ग्रिण करें इन्ें एक सुहनहित प्रत्यय में रूर्ान्तररत करती और तत्पिात् इन्ें आिा के समक्ष प्रसुतुत कर देती िै। हनिय बुक्तद्ध का व्यार्ार िै।

मन संिदेन तथा हक्रया, दोनों ंका करण िै। इक्तियााँ सामान्य संिदेनों ंको ग्रिण करती िैं और मन तथा इक्तियों ंके रस्पर सियोग से इन संिदेनों ंका प्रत्यक्षीकरण िोने लगता िै। मन मननिील, बुक्तद्ध हनियाक्तिका तथा अिंकार चेतन िो िाता िै।

कतृपत्व अिंकार में िोता िै। अिंकार अिंभाना का स्रष्ा िै िो स्वयं प्रकृहत की एक हिकृहत िै; हकनुतु इसका रुरुष से कोई सम्बन्ध निीं ंिोता िो सदैि एक साक्षी के रूर् में अिक्तस्थत रिता िै।

बुक्तद्ध, अिंकार, मन तथा नेत्र एक िी साथ हकसी िसुतु के आकार को देख कर तत्क्षण कि उठते िैं- "यि घट िै।" इन तीनों ंको हकसी हिषय के रस, गन्ध, िब्द तथा स्पिप का ज्ञान क्रमिः रसना, घ्राण, कणप तथा त्वक् इक्तियों ंसे िोता िै। कभी-कभी यि प्रहक्रया आनुक्रहमक रूर् से भी िोती िै। हकसी मागप र् चलते हुए कोई मनुष्य हकसी दूरस्थ िसुतु को देखता िै, तो उसके मन में यि िंका उत्पन्न िोती िै हक यि कोई स्तम्भ िै या मनुष्य; हकनुतु बि िि उस िसुतु र् हकसी क्षी को बैठे हुए देखता िै तब हिचार या मनन के िारा उसकी िंका की हनिृहत्त िो िाती िै और बुक्तद्ध इस हनहित हनष्कषप र् हुाँच िाती िै हक यि एक स्तम्भ िै। इसके रिात् अिंकार कि उठता िै- "मैं यि हनहित रूर् से कि सकता हाँ हक यि एक स्तम्भ मात्र िै।" इस प्रकार मन, बुक्तद्ध, अिंकार तथा नेत्र के व्यार्ार आनुक्रहमक रूर् से िोते िैं। नेत्रों ंके र्ास देखने के हलए, मन के र्ास हिचार या मनन के हलए, अिंकार के र्ास हक्रयान्वयन के हलए तथा बुक्तद्ध के र्ास हनिय के हलए यापप्त अिंकाि रिता िै। एक अन्य दृष्ान्त से इसे स्पष् हकया िा रिा िै। कान धनुष की प्रत्यंचा का गम्भीर घोष सुनते िैं और मन हिचार करता िै हक यि बाण के

प्रक्षेर्ण का संकेत ि ै। अिकार किता ि ै- "इसका लक्ष्य मैं ि ी हाँ" और बुक्तद्ध किती ि ै-"अब मुझे यिााँ से ि ीघ्र ि ी अन्यत्र चले ि ाना चाहिए।"

बुक्तद्ध, मन तथा अिकार ि ाररल ि ैं, ज्ञानेक्तियााँ ि ार ि ैं और बुक्तद्ध ि ि माध्यम ि ै ि ो इक्तियों ं और आिा के बीच मध्यस्थ ि ै।

बुस्तद्ध तथा इसका व्यारार

प्रकृहत की समस्त हिकृहतयों ं में बुक्तद्ध सिापहधक मित्त्वरूणप हिकृहत ि ै। इक्तियााँ अर्ने हिषयों ं को इसी के समक्ष प्रसुतुत करती ि ैं और तत्पिात् बुक्तद्ध उसे रुरुष को प्रेहषत करती ि ै। यि रुरुष तथा प्रकृहत के रारस्पररक भेद को भी हििेहचत करती ि ै।

बुक्तद्ध आिा तथा इक्तियों ं के बीच सम्बन्ध-स्थार्न का एक माध्यम ि ै। संिदन, मनन तथा चेतना से अहधगत प्रत्ययों ं से आिा के अिगत ि ोने से स्िरूप ि ी उि प्रत्यय मुख्य तथा मिान् कारण बुक्तद्ध में संग्रिीत ि ो ि ाते ि ैं। ि सुतुतः इनका संग्रिण आिा के उर्भोग के हलए ि ी ि ोता ि ै। ये सत्त्व, रिस् तथा तमस् के गुणों ं के आनुराहतक प्रभाि के अनुसार सुख, दु:ख तथा उदासीनता से प्रभाहित प्रत्ययों ं को प्रसुतुत करते रिते ि ैं।

हिस प्रकार एक ग्रामप्रधान ग्रामिाहसयों ं से कर-संग्रि कर हिलाहधकारी को सौंर्ता ि ै, हिस प्रकार स्थानीय हिलाहधकारी इस धन-राहि को मंत्री को सौंर् देता ि ै और हिस प्रकार मन्त्री इस धन का ग्रिण राज्य के उर्योग के हलए करता ि ै उसी उकार मन इन प्रत्ययों ं को बाह्येक्तियों ं से प्राप्त कर अिकार को और अिकार इन्िें बुक्तद्ध को सौंर् देता ि ै ि ो मुख्य अधीक्षक ि ै और ि ो इन प्रत्ययों ं का उर्योग सिपप्रभुतासम्पन्न आिा के हलए करती ि ै।

बुक्तद्ध आिा का मिामात्य ि ै। ि ि रुरुषों ं के समक्ष भोग्य कमप-फलों ं को प्रसुतुत हकया करती ि ै। ि ि अर्ने अत्यन्त हनकटस्थ रुरुष से प्रहतहबक्तम्बत ि ोने के कारण चेतन प्रतीत ि ोती ि ै; हकन्तुतु स्वयं ि ि अचेतन ि ै।

जीव

िीि इक्तियों ं से संयुि आिा ि ै। यि ि रीर ि ारा र्ररक्तच्छन्न ि ै। इसमें अिकार ि ै। बुक्तद्ध में रुरुष का प्रहतहबम्ब अिकार या अनुभिकताप आिा की भााँहत प्रतीत ि ोता ि ै। यि अज्ञान तथा कमप से सम्बद्ध ि ोने के अहतररि सुख, दु:ख तथा इसके फलों ं के अधीन एिं ि न्म-मरण के चक्र में आबद्ध ि ै।

िीि के हलए रुरुष की रूणपता एिं उसकी क्तस्थहत तथा महिमा की सम्प्राक्तप्त अहनिायप ि ै। प्रत्येक ि ीि में उितर रुरुष र्रोक्ष रूर् से हिद्यमान ि ै। उसके हलए इस उितर रुरुष के यथाथप स्वरूर् से र्ररहचत ि ोना हनतान्त आिश्यक ि ै। स्वतन्त्रता अथिा रूणपत्व अर्ने िास्तहिक स्वरूर् की ओर प्रत्यािपन तथा उसके इस यथाथप स्वरूर् को आिृत करने िाले अध्यास की हनिृहत्त ि ै।

मुस्ति

बन्ध का सम्बन्ध प्रकृहत से ि; हकनुतु इसका अध्यारोर् रुरुष र हकया िाता ि। ि सुतुतः रुरुष हनत्य-मुि ि। अहििेक के कारण रुरुष तथा प्रकृहत में एकत्व-दिपन संसार अथिा बन्ध का कारण ि और हििेक िारा रुरुष तथा प्रकृहत में भेद-दिपन मुक्ति ि। मुक्ति हनररे्क्ष सत्ता में अन्तलपयन न िो कर प्रकृहत से र्ाथपक् ि।

प्रकृहत से संयुि िोने के कारण रुरुष या आिा अहिद्या के बन्धन में आबद्ध िो िाता ि। सांख्य-दिपन का प्रयोिन रुरुष को इससे मुि करना ि। सृहष् के अंगांहगभूत चौबीस तत्त्वों तथा आिा से इनके र्ाथपक् के हनधापन्त ज्ञान से मुक्ति प्राप्त िोती ि।

संसार में हिद्यमान िसुतुओं के यथाथप ज्ञान की प्राक्तप्त के हलए सांख्य-दिपन तीन प्रमाणों को स्वीकृत करता ि। ये प्रमाण ि-प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आप्त िचन।

मुक्ति की प्रडक्रया

िब रुण्य-र्ार् आहद के र्ररणामों के फलस्वरूर् आिा का िरीर से सम्बन्ध-हिच्छेद िोता ि और िब प्रकृहत उसके सम्बन्ध में हनतान्त हनक्तिय िो िाती ि, तब अक्तन्तम तथा हनररे्क्ष मुक्ति एिं आत्यक्तन्तक हदव्य प्रकाि-युि सौन्दयप का सूयोदय िोता ि।

िब कमों के र्ररणाम उर्रामािस्था को प्राप्त िो िाते ि और िब स्थूल तथा सूक्ष्म िरीरों का हिघटन िो िाता ि, तब िीि के हलए प्रकृहत अक्तस्तत्विीन िो िाती ि। िीि कैिल्यािस्था को प्राप्त करता ि। इस अिस्था में िि हत्रहिध तार् से मुि िो िाता ि।

बुक्तद्ध, अिंकार, मन, र्ंचज्ञानेक्तियााँ, र्ंचकमेक्तियााँ तथा र्ंचतन्मात्राएाँ हलंगदेि अथिा सूक्ष्म िरीर के संघटक तत्त्व ि। यि सूक्ष्म िरीर आनुक्रहमक िन्मों में एक स्थूल िरीर से दूसरे स्थूल िरीर में रूर्ान्तररत िोता रिता ि। हिहभन्न िन्मों के कमों के संस्कार सूक्ष्म िरीर में संहचत िोते रिते ि। सूक्ष्म िरीर तथा स्थूल िरीर का संयोग िन्म तथा इनका र्ाथपक् मृतुयु ि। रुरुष के ज्ञान से इस सूक्ष्म िरीर या हलंगदेि की हनिृहत्त िो िाती ि।

िब हकसी को रूणप ज्ञान की प्राक्तप्त िो िाती ि, तब रुण्य-र्ार् कारण-अहिद्या–िक्ति से रहित िो िाते ि। हकनुतु हिस प्रकार कुम्भकार िारा चक्र-र्ररचालन की हक्रया के स्थगन के बाद भी चक्र कुछ क्षणों तक गहतिील रिता ि, उसी प्रकार प्रारब्ध के कारण मुि रुरुष का िरीर भी कुछ समय के हलए हिद्यमान रि िाता ि।

मुक्ति िी प्रकृडत के व्यार्ार का समार्न ि

रुरुष-प्रकृहत-संयोग अन्तर-र्ारा, अर्ार िोता ि। एक बार दो व्यक्ति, हिनमें एक नेत्रिीन था तथा दूसरा र्ंगु, अर्ने सियाहत्रयों से हिलग िो गये। इनमें से एक ने मागप-दिपन तथा दूसरे से संचरण का उत्तरदाहयत्व ग्रिण हकयो गये। नेत्रिीन का र्थ-प्रदिपन करता तथा नेत्रिीन उसके संकेतानुसार आगे बढ़ता। आिा उि र्ंगु की भााँहत ि। उसमें दिपन–िक्ति ि; हकनुतु उसमें गहतिीलता का अभाि ि उसके हिर्रीत प्रकृहत में गहतिीलता तो ि; हकनुतु िि दिपन–िक्ति से रहित ि। िि दुसरा नेत्रिीन व्यक्ति की भााँहत ि। िब उि नेत्रिीन तथा र्ंगु व्यक्ति अर्ने गन्तव्य तक र्हुाँच गये, तब िे एक-दूसरे से अलग िो गये। इसी प्रकार प्रकृहत रुरुष की मुक्ति का मागप प्रिस्त कर उर्रामािस्था को प्राप्त िो िाती ि और रुरुष को कैिल्य अथिा िैयक्तिक हदव्य सौन्दयप की प्राक्तप्त िो िाती ि। इसके फलस्वरूर् रुरुष तथा प्रकृहत के हनधापररत प्रयोिनों की हसक्तद्ध िो िाती ि और तत्पात् इनके र्ारस्पररक सम्बन्ध समाप्त िो िाते ि। इस प्रकार रुरुष प्रकृहत के ज्ञान के कारण मुि िो िाता ि।

प्रकृहत का व्यार्ार रुुरुष के लाभाथप तथा भोगाथप िोता िै। प्रकृहत रुुरुष का िाथ एकड कर उसे िागहतक प्ररं्च-दिपन तथा उसके भोग में प्रिृत्त करते हुए अन्ततः उसे मुक्ति-प्राक्तप्त में सियोग प्रदान करती िै।

सिुतुतः आिा न बद्ध िै न मुि। उसका दिेान्तरण भी निीं ंिोता। यि प्रकृहत िो िै िो अनेक रुुरुषों ंके सन्दभप में बद्ध, मुि तथा दिेान्तररत िोती रिती िै।

हिस प्रकार कोई नृत्यांगना दिपकों ंके समक्ष मंच र्र अर्नें नृत्य का प्रदिपन कर उसका समार्न कर देती िै, उसी प्रकार प्रकृहत रुुरुष के समक्ष स्वयं को अनािृत या वय्क्त करने के र्िात् अर्नें व्यार्ार से हनिृत्त िो िाती िै। िब िि इस तथ्य से र्ररहचत िो िाती िै हक रुुरुष उसकी लीला से र्ूणपतः र्ररहचत िो चुका िै, तब िि हनतान्त संकुहचत तथा िालीन िो िाती िै और रुुरुष के समक्ष रुुनः आि-प्रदिपन निीं ंकरती।

योग

भूडमका

दिपन की रियोग-र्द्धहत के प्रहतर्ादक, योग के प्रहिक्षण को सुव्यिक्तस्थत आर् प्रदान करने िाले तथा योग की आहद र्ाठ्य-रुुस्तक 'योगसूत्र' के प्रणेता श्री सिांत मिहषप को प्रणाम !

योग िब्द की हनष्पहत्त यिु् धातु से हुई िै हिसका अथप िै िोडना। योग हचत्तिृहत्त-हनरोध तथा िैयक्तिक आिा का र्रमािा से सम्प्रयोग िै। हिरण्यगभप योग-र्द्धहत के प्रितपक िैं। र्तंहिल मिहषप िारा प्रिहतपत योग सांख्य की एक िाखा अथिा अनुर्ूरक िै। रिस्यिादी तथा मननिील हिद्याहथपयों ंके हलए इसका एक हिहिष् सम्मिोन िै। र्रमािा सत्ता अथापत् ईश्वर के अक्तस्तत्व के प्रहत अर्नी स्पष् आस्था के कारण यि दिपन िास्त्रसम्मतता तथा र्ुरातनता के सम्बन्ध में अर्ना र्क्ष मुख्य सांख्य की अर्ेक्षा प्रबलतर र्ूर् में प्रसुतुत करता िै।

र्तंहिल का ईश्वर क्िेि-कमप-हिर्ाक-आिय-रहित रुुरुष-हििेष िै। िि हनरहतिय सिपज्ञता का बीि-स्वर्ूर् िै। काल से अनिक्तच्छन्न िोने के कारण िि र्ुरातन गुरुओं ंका भी गुरु िै।

र्हित्र अक्षर ॐ ईश्वर का अहभधायक या िाचक िै। ॐ िब्द की आिृहत्त तथा उसकी भािना या उसके ध्यान का अभ्यास करना चाहिए। इससे हिघ्न-बाधाओं ंकी हनिृहत्त तथा ईश्वर-साक्षाकार िोता िै।

योगसूत्र

र्तंहिल का योगसूत्र योग का सिापहधक र्ुरातन ग्रन्थ िै। यि चार अध्यायों ंमें हिभि िै। इसके प्रथम अध्याय 'समाहधर्ाद' में समाहध के स्वर्ूर् तथा उद्देश्य का िणपन िै तथा हितीय अध्याय 'साधनर्ाद' में इसके उद्देश्य की प्राक्तप्त के साधनों ंकी व्याख्या की गयी िै। तृतीय अध्याय 'हिभूहतर्ाद' में योगाभ्यास से प्राप्त अलौहकक िक्तियों ंअथिा हसक्तद्धयों ंका तथा चतुथप अध्याय 'कैिल्यर्ाद' में मुक्ति के स्वर्ूर् का िणपन हकया गया िै।

राजयोग तथा िठयोग

र्तंहिल िारा प्रहतर्ाहदत योग को अष्ांगयोग किते िैं। यि अष्ांगी िै। अष्ांगयोग का सम्बन्ध मन के अनुिासन तथा अतीक्तिय िक्तियों ंसे िै, िब हक िठयोग का सम्बन्ध िारीररक हनयन्त्रण तथा श्वास-प्रश्वास के हनयमन की हिहधयों ंसे िै। िठयोग की र्ररसमाक्तप्त रियोग में िोती िै। िठयोग की र्ुरोगामी साधना साधक को रियोग की हनष्पहत्त की हदिा में अग्रसर िोने के हलए उत्प्रेररत करती िै। िठयोग रियोग के हिहभन्न चरणों ंया

उसके उतिम हिखर तक ले िाने के हलए एक सोर्ान िै। िब कुम्भक के िारा श्वास की गहत अिरुद्ध िो िाती िै, तब मन हनराहश्रत िो िाता िै। िरीरिुक्तद्ध तथा श्वास का हनयन्त्रण िठयोग के अव्यिहित उद्देश्य िैं। षट्कमप
अथापत् िरीरिुक्तद्ध की हक्रयाएँ हनम्नांहकत िैं।

१. धौहत अथापत् आमाियिुक्तद्ध।

२. िक्तस्त अथापत् एहनमा का प्राकृहतक रूर्।

३. नेहत अथापत् नासारन्ध्रों की िुक्तद्ध।

४. त्राटक अथापत् हकसी िस्तु र्र हनहनपमेष दृहष्टपात।

५. नौहल अथापत् उदर को चक्राकार घुमाना।

६. कर्ालभाहत अथापत् प्राणायाम की एक हनहित हिहध से श्लेष्मा का हनराकरण।

आसन, बन्ध तथा मुद्रा के अभ्यास से िरीर स्वस्थ, सुदृढ़ तथा सन्तुहलत रिता िै।

योग : मनोडनग्रि का एक सुव्यवस्तथथत प्रयास

योग कठोर अनुिासन की एक र्द्धहत िै। इसमें आिार, हनिा, संगहत, आचरण, िाणी तथा हिचार के सम्बन्ध में कुछ प्रहतबन्धों की व्यिस्था िै। योगाभ्यास हकसी कुिल तथा प्रबुद्ध योगी के हनदेिन में करना चाहिए।

योग मन के हनयन्त्रण तथा रूणपत्व के अहधगम का एक सुव्यिक्तस्थत प्रयास िै। यि धारणािक्ति को समृद्ध करता िै, मन के इतस्ततः अथपिीन हिचरण को प्रहतबक्तन्धत करता िै और लोकोत्तर चेतना अथापत् हनहिपकल्प समाहध की सम्प्राक्तप्त में योगदान देता िै। योगाभ्यास से मन तथा िरीर की उहिग्नता का हनराकरण िोता िै। यि मानहसक हिकारों को हिनष् कर मन को दृढ़ता प्रदान करता िै। योग का उद्देश्य िमें को उन साधनों की सम्प्राक्तप्त की कला में प्रहिहक्षत करना िै हिनसे िम र्रमात्मा के रूणप सायुज्य को प्राप्त िोता िै। हचत्तिृहत्तयों के हनरोध से िी र्रमात्मा से यि सायुज्य हनष्पन्न िो र्ाता िै। यि क्तस्थहत स्फहटक-महण की भाँहत हनमपल िोती िै; क्योंहक इसमें िागहतक र्दाथों के सम्पकप के कारण मन कलुहषत निीं िरिता।

योग तथा सांख्य

कहर्ल की र्द्धहत में ईश्वर के हलए कोई स्थान निीं िै, अतः इसे हनरीश्वर सांख्य किते िैं; हकन्तु र्तंिहल की र्द्धहत सेश्वर सांख्य िै। िि उस र्ुरुष-हििेष के भहत आस्थािान् िै िो क्लेि, कमप तथा िासनाहद से अर्रामृष् िै। र्तंिहल ने अर्नी

र्द्धहत की संरचना सांख्य की तत्त्वमीमांसा की र्ृष्ठभूहम र्र की। िे सांख्य के र्चीस तत्त्वों को स्वीकृत करते हुए इसके तत्विास्त्रीय दृहष्कोण के प्रहत अर्नी सिमहत व्यि करते िैं; हकन्तु िे र्ुरुष-हििेष अथिा ईश्वर के साथ हनरर्ेक्ष एकत्व के साक्षात्कार के हलए आिानुिासन के व्याििाहरक र्क्ष र्र अहधक बल देते िैं।

सांख्य तत्त्वमीमांसा की और योग र्व्यिाारिक अनुिासन की र्द्धहत ि।ै इन दोनों ंमें रू्लप क्ष अनुसन्धान तथा तकप को और उत्तर क्ष इच्छाि–क्ति की धारणा को अहधक मित्त्व प्रदान करता ि।ै

योग में ििी को अरे्क्षाकृत अहधक स्वतन्त्रता प्राप्त ि।ै उसे ईश्वर की कृर्ा से मुक्ति-लाभ िो सकता ि।ै सांख्य के अनुसार मुक्ति का साधन ज्ञान ि,ै िब हक योग के अनुसार धारणा, ध्यान तथा समाहध से मुक्ति प्राप्त िोती ि।ै योग की मान्यता ि ैहक हचत्त की िृहत्तयों ंकी असादृश्यता का हनरोध तथा स्वयंप्रकाि र्ुरुष र मन की धारणा या एकाग्रता में िी योग की प्रहक्रया हनहित ि।ै

राजयोग के अिवयव

रियोग को अष्ांगयोग के नाम से िाना िाता ि।ै ये अष्ांगि यम, हनयम, आसन, प्राणायाम, प्रत्यािार, धारणा, ध्यान तथा समाहध िैं। इनमें से प्रथम र्ााँच बहिरंगयोग के अन्तगपत तथा िेष तीन अन्तरंगयोग के अन्तगपत आते िैं।

यम और डनयम

नैहतक अनुिासन यम तथा हनयम के अभ्यास में हनहित ि।ै ये योग के हिद्याहथपयों ंके हलए योग के िास्तहिक अभ्यास का मागप प्रिस्त करते िैं। योग के हिद्याथी को यम के र्ंचांगों–अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचयप, अस्तेय तथा अर्ररग्रि-का अभ्यास करना चाहिए। र्ररग्रि हिलाहसता की ओर उन्मुख करता ि।ै योग के हिद्याथी के हलए हनयम के र्ंचांगों–िौच, सन्तोष, तर्, स्वाध्याय तथा ईश्वर-प्रहणधान-का अभ्यास भी आिश्यक ि।ै इनमें अहिंसा का प्रमुख स्थान ि।ै समस्त प्राहणयों ंके प्रहत हििेष का सिपथा तथा सिपदा र्ररत्याग अहिंसा ि।ै इसमें अहिंसा के साथ-साथ अिेष भी हनहित ि।ै यम को मिाव्रत किा िाता ि ैिो िाहत, हदक् तथा काल से अप्रहतबक्तन्धत ि।ै इनका अभ्यास सबको करना चाहिए। इन हसद्धान्तों ंके हलए कोई अर्िाद निीं ंि।ै अहिंसा-व्रत के अभ्यासी के सम्बन्ध में आत्मरक्षा का तकप भी ित्या के औहचत्य की हसक्तद्ध निीं ंकर सकता। यहद उसे योग की अध्यास कठोरतार्ूिपक करना ि,ै तो उसे अर्ने ितुरु की भी ित्या निीं ंकरनी चाहिए।

आसन, प्राणायाम तथा प्रत्यािार

क्तस्थर तथा सुखप्रद मुद्रा को आसन किते िैं। इससे धारणा में िारीररक रूर् से भोगदान प्रास िोता ि।ै आसन में हनष्णात व्यक्ति िन्द्वों के क्षोभ से मुि िो िाता ि ैऔर प्राणायाम से मन की िाक्तन्त तथा क्तस्थरता एिं सुस्वास्थ्य की प्राक्तप्त िोती ि।ै अन्तमुपखता प्रत्यािार का स्वरूर् ि।ै यि इक्तियों ंका उनके हिषयों ंसे प्रत्याितपन ि।ै धमप, हनयम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्यािार योग के सिायक उर्ांग िैं।

धारणा, ध्यान तथा समाडध

धारणा, ध्यान तथा समाहध मानहसक एकाग्रता की उसी प्रहक्रया की तीन अहधक क्तस्थहतयााँ िैं। इस प्रकार ये एक िी अंग के तीन संघटक तत्त्व िैं। हकसी हिषय र मन की सुदृढ़ क्तस्थरता का प्रयास धारणा और हकसी हिषय र मन की अहिक्तच्छन्न िाथा अप्रहतित एकाग्रता ध्यान ि।ै समाहध िि अिस्था ि ैहिसमें मन हकसी हिषय र इन आत्यक्तन्तक तन्मयता के साथ एकाग्र या क्तस्थर िो िाता ि ैहक िि स्वयं बेयि–सुतु के रूर् में र्ररणत िो िाता ि।ै इस क्तस्थहत में मन हिस हिषय र क्तस्थर हुआ रिता ि,ै उसमें िि रू्णपतः हिलीन िो कर उसके तूर् िो िाता ि।ै

संयम अथि धारणा, ध्यान तथा समाहध एक तथा समरूर् िैं हिनसे अतीक्तिय हिषयों ंका बोध िोता िै। हसक्तद्धयााँ संयम का उर्फल िैं। लोकोत्तर िक्तियााँ समाहध या मुक्ति के मागप में िसुतुतः अिरोध उर्त्कस्थत करती िैं।

योग-समाडध तथा इसका स्वरूर्

ध्यान का उद्देश्य समाहध िै और समाहध ध्यान की अहधमात्रता िै। यि योगानुिासन का लक्ष्य िै। इस अिस्था में मन तथा िरीर बाह्य प्रभािों ंके हलए अक्तस्तत्विून्य िो िाते िैं तथा बाह्य िगत् से इनका सम्बन्ध-हिच्छेद िी िाता िै। समाहध में योगी एक ऐसे हदव्य तथा हनःिब्द लोक में प्रहिष् िो िाता िै िो बाह्य ससार के अनिरत कोलािल से सिपथा असमृपि िै। इक्तियों ंका अन्तलपयन मन में िो िाता िै और मन अर्ने व्यार्ार से हिरत िो िाता िै। िब मन की सारी िृहत्तयों ंका हनरोध िो िाता िै, तब िष्ा अथि रुरुष अिस्थ िो िाता िै। र्तंिहल अर्ने योगसूत्र में इस क्तस्थहत का उल्लेख **'स्वरूर्ेऽवथथानम्'** के रूर् में करते िैं।

सम्प्रज्ञात तथा असम्प्रज्ञात-मात्रा-भेद से समाहध के ये दो रूर् िैं। सम्प्रज्ञात-समाहध में ध्यान की क्तस्थरता के हलए एक हनहित हिषय िोता िै और मन इस हिषय से अहभज्ञ रिता िै। सहितकप, हनहिपतकप, सहिचार, हनहिपचार, सानन्द तथा सक्तस्मता सम्प्रज्ञात-समाहध के रूर् िैं। सम्प्रज्ञात-समाहध में ध्याता को ध्येय-हिषय का स्पष् ज्ञान बना रिता िै; हकन्तु असम्प्रज्ञात-समाहध में रृथकता के इस ज्ञान का अहतक्रमण िो िाता िै हिसके फलस्वरूर् यि लुप्त िो िाता िै।

रियोग में सफलता के हलए अर्ेहक्षत माध्यम यम तथा हनयम का मित्त्व

ईश्वर-साक्षात्कार के आकांक्षी को योग के समस्त अष्ाांगों ंका अभ्यास करना चाहिए। अष्ांगयोग के अभ्यास िारा काषाय के हनराकरण के र्ात् हदव्य ज्ञान के उस प्रकाि का आहिभापि िोता िै हिससे भेदमूलक ज्ञान की सम्प्राक्तप्त िोती िै।

समाहध-लाभ के हलए यम-हनयम का अभ्यास एक अहनिायप आिश्यकता िै। योग के हिद्याथी को यम का अभ्यास तथा हनयम का र्ालन साथ-साथ करना चाहिए। यम तथा हनयम के अभाि में सम्यक् ध्यान की सम्प्राक्तप्त असम्भि िै। हमथ्या, छल, हनदपयता तथा िासनाहद की हनिृहत्त के हबना आर्के मन की एकाग्रता सम्भि निीं ंिै और मन की क्तस्थरता के अभाि में ध्यान तथा समाहध का प्रश् िी निीं ंउठता।

र्तंजडल िारा प्रडतर्ाडदत र्द्धडत में डचि की र्ांचभूडमयााँ

र्तंिहल की रियोग-र्द्धहत के अनुसार हक्षप्त, मूढ़, हिहक्षप्त, एकाग्र तथा हनरुद्ध-मन की ये र्ााँच अिस्थाएाँ िैं। हक्षप्तािस्था में मन हिहभन्न इक्तिय हिषयों ंमें हिचरण हकया करता िै। इसमें रिस् र्रिव्याप्त रिता िै। तमस्-प्रधान मूढ़ािस्था में मन हनिा तथा स्त्यान अथि अकमपण्यता की क्तस्थहत में रिता िै। हिहक्षप्तािस्था में सत्त्व की प्रधानता िोती िै। इसमें मन ध्यान तथा हिषयों ंके बीच अहनहितता की क्तस्थहत में डोलता रिता िै। इसमें हचत्तिृहत्तयों ंका िनैःिनैः एकत्रीकरण िोता िै। िब सत्त्व में िृक्तद्ध िोती िै, तब आर्को मुहदता, इक्तिय-िहिय तथा आि-साक्षात्कार के हलए अर्ेहक्षत र्ात्रता की उर्लक्ति िोती िै। एकाग्राािस्था में मन की एकाग्रता तथा ध्यान की गिनता की प्राक्तप्त िोती िै। इसमें सत्त्व रिस् तथा तमस् से मुि िो िाता िै। हनरुद्धािस्था मन के रूणप हनयन्त्रण तथा िृहत्तयों ंके हनराकरण की अिस्था िै।

िृहत्त मन के सरीर में हिचार-तरंगों ंका चक्राित िै। प्रत्येक िृहत्त अर्ने र्ीछे एक संस्कार छोड िाती िै। अिसर प्राप्त िोने र्र यि संस्कार स्वयं को चेतनािस्था में अहभव्यि कर सकता िै। िृहत्तयााँ अर्ने अनुकूल

प्रिहत्तयों ंको िी समृद्ध करती िै। िब समस्त िृहत्तयों ंका हनरोध िो िाता िै, तब मन 'समागहत' अथापत् सनुतुहलत अिस्था में प्रहिष् िो िाता िै।

व्याहध, स्त्यान, संयि, प्रमाद, आलस्य, अहिरहत, भ्राक्तन्त-दिपन, अलि भूहमकत्व अथापत् समाहध में न हुँचना और अनिक्तस्थतत्व अथापत् समाहध-भूहम की प्राक्तप्त र भी उसमें हचत्त का न ठिरना-ये हचत्त के प्रमुख हिक्षेर् िैं।

रंचक्लेश तथा इनकी डनवृडि

तंहिल के अनुसार अहिद्या, अक्तस्मता, राग, िेष तथा अहभहनिेि रंचक्लेि िैं िो मन को कुहषत हकया करते िैं। हनरन्तर योगाभ्यास से इनका उर्मन तो िो िाता िै हकनुतु इनका उवच्छेद निीं ंिो राता। ये प्रच्छन्न रूर् में बीि के रूर् में हिद्यमान रिते िैं। िब उन्ें अनुकूल अिसर तथा प्रहतिि की प्राक्तप्त िोती िै, तब िे रुनः अंकुररत िो उठते िैं। हकनुतु असम्प्रज्ञात-समाहध में इन अन्तरायों ंका रूणप उच्छेद िो िाता िै और से हनबीि िो िाते िैं।

अहिद्या िमारे समस्त दुःखों ंका प्रधान कारण िै। अिकार अहिद्या का िाक्काहलक ररणाम िै। यि िमारे मन में रागिेष की सृहष् कर िमारी आध्याक्तिक तुहि को कुक्तण्ठत कर देता िै। योग-समाहध से अहिद्या का नाि िो िाता िै।

डक्रयायोग का अभ्यास

हक्रयायोग से मन की ररिुक्तद्ध िोती िै। यि रंचक्लेिों ंको क्षीण कर मनुष्य को समाहध में प्रिृत्त करता िै। तर्, स्वाध्याय तथा ईश्वर-प्रहणधान हक्रयायोग के संघटक तत्त्व िैं।

समियस्कों ंके प्रहत हमत्रता (मैत्री), कहनष्ठिनों ंके प्रहत दया (करुणा), बौहष्ठिनों ंके प्रहत प्रफुल्लता (मुहदता) तथा दुष्टिनों ंएिं सुख-दुःख तथा िुभ-अिुभ के प्रहत उदासीनता (उरेक्षा) के अभ्यास से मानहसक िाक्तन्त (हचत्त-प्रसाद) की प्राक्तप्त िोती िै।

ईश्वर-भक्ति से समाहध-लाभ सम्भि िै। इससे स्वातन्य अथापत् मुक्ति की भी िोती िै। योग के हिद्याथी को ईश्वर-प्रहणधान से भगितृकृरा प्राप्त िोती िै।

अभ्यास तथा वैराग्य

मन के हनयन्त्रण तथा उसकी क्तस्थरता में अभ्यास तथा िैराग्य सियक िोते िैं। िब भी कभी मन ऐक्तिय-हिषयों ंकी ओर आकहषपत िो, तब उसे रुनः-रुनः कें की ओर प्रत्यािाररत करना चाहिए। यि अभ्यास योग िै। इसे रूणप श्रद्धा के साथ अनिरत रूर् से हनरन्तर करते रिने से यि क्तस्थर तथा सुदृढ़ िो िाता िै। मन तृष्णाओं ंका भण्डार िै। ये तृष्णाएँ िैराग्य के अभ्यास से नष् िो िाती िैं। िैराग्य मन को हिषयों ंसे हिरत कर देता िै। यि बहिमुपखता को प्रहतबक्तन्धत कर इसकी अन्तमुपखता को समुपुष् करता िै।

कैवल्यावथथा अथवा डनररेक्ष स्वातन्य

प्रकृहत से रुरुष की आत्यक्त्न्तक अथिा हनररे्क्ष रूथकता ि़िीन का लक्ष्य िै। योग में मुक्ति को कैिल्य या हनररे्क्ष स्वातन्य किा गया िै। इसमें आिा या रुरुष प्रकृहत के बन्धनों ंसे मुि िो कर अर्ने यथाथप स्वरूर् को
प्राप्त िो िाता िै। िब आिा इस तथ्य से रूणपतः र्रहचत िो िाता िै हक अब उसे हनररे्क्ष स्वतन्त्रता प्राप्त िो
चुकी िै और िि हकसी भी िागहतक दाथप र हनभपर निीं ंिै, तब िि कैिल्य को प्राप्त िो िाता िै। अब िििहेक-ख्याहत िारा अहिद्या को नष् कर चुका िोता िै और र्ंचक्लेिे ज्ञानाहग्न में हिदग्ध िो चुके िोते िैं। इस क्त्स्थहत में आिा हचत्त के प्रहतबन्धों ंसे अर्रामृष् िो िाता िै, गुण उर्रामािस्था को प्राप्त िो िाते िैं और आिा अर्ने हदव्य सारतत्त्व में क्त्स्थत िो िाता िै; हकन्तुु उसकी मुक्ति के र्िात् भी प्रकृहत तथा उसके हिकार अन्य लोगों ंके
हलए हिद्यमान रि िाते िैं। इस हिषय में योग तथा सांख्य, दोनों ंका एक िी मत िै।

रूपमीमांसा

भूडमका

श्री व्यास भगिान् के हिष्य तथा रूपमीमांसा-र्द्धहत के प्रितपक श्री िैहमहन को प्रणाम !

रूपमीमांसा अथिा कमपमीमांसा िेदों ंके प्रारक्त्म्भक भाग तथा इसकी यज्ञीय हिहधयों ंअथिा इसके मन्त्रों ं तथा ब्राह्मणों ंसे सम्बक्त्न्धत प्रकरणों ंकी अनुसन्धानिाक र्ररृच्छा िै। इसे रूपमीमांसा इसहलए किा िाता िै हक यि उत्तरमीमांसा की अर्ेक्षा कालानुक्रहमकता के दृहष्कोण से भले िी कुछ कम रूपकालीन िो, ताहकपक अथप में अहधक रूपकाहलक िै।

मीमांसा : वेदो ंकी व्याख्या की एक र्द्धडत

श्रीमांसा हकसी दािपहनक र्द्धहत की िाखा निीं ंिै। यि िैहदक हनिपचन की एक उहत िै। इसका दािपहनक ििेचन ब्राह्मणों ंअथिा िेदों ंके आनुष्ठाहनक प्रकरणों ंकी आलोचनािाक हटप्पणी की एक हिधा मात्र िै। यि िेदों ं की िाक्त्ब्दक व्याख्या करता िै। रूपमीमांसा की केक्त्िय समस्या कमपकाण्ड या धाहमपक अनुष्ठान िै। िैहमहन ने रूपमीमांसा के सूत्रों ंको व्यिक्त्स्थत कर अर्नी कृहत में इसकी प्रामाहणकता को समुर्ुष् हकया िै। हिन्दू-हिहध की व्याख्या के हलए इसके सूत्र अत्यन्त मित्त्वरूणप िैं।

िैहमहन के मीमांसा-सूत्रों ंमें हिहभन्न यज्ञों,ं इनके प्रयोिनों ंतथा अरूि के हसद्धांत के अहतररि कहतर्य दािपहनक स्थार्नाओं ंका भी हिसृतृत िणपन प्रसुतुत हकया गया िै। इसमें बारि अध्याय िैं।

िबर िैहमहन के मीमांसा-सूत्र के प्रमुख भाष्यकार िैं। भिभूहत के गुरु कुमाररल ने मुझे तथा भाष्य र िाहत्तपक ग्रन्थों ंकी रचना की। उन्ोंनें िेदों ंके हनत्य-स्वरूर् तथा िैहदक अनुष्ठानों ंकी समीचीनता और क्षमता की हसक्त्द्ध की। प्रभाकर कुमाररल के हिषय थे। उन्ोंनें िाबरभाष्य र एक िाहत्तपक हलखा।

प्रत्यक्ष, अनुमान तथा िब्द–िैहमहन इन तीन प्रमाणों ंको स्वीकार करते िैं। उनके अनुसार िब्द तथा इसके हनहिताथप में अहिक्त्च्छन्न सम्बन्ध िै। िे िब्द को हनत्य मानते िैं।

वेद: डनत्य तथा अर्ौरुषेय

िैहमहन बुक्त्द्धिाद तथा नाक्त्स्तकता के हिरोधी थे। िसुतुतः उन्ोंनें िेद को िी ईश्वर माना था। हनत्य िेद के आधार के हलए हकसी अन्य अहधष्ठान की आिश्यकता िी िै। इसका कोई र्दी उद्घाटक निीं ंिै। िेद स्वतःप्रमाण

ै। यि िमारे धमप-ज्ञान या एकमात्र स्रोत ि। ईश्वर उनके और उनकी र्द्धहत के हलए आिश्यक निीं ंथा। उनके अनुसार िेद स्वतःप्रमाण ि। उन्होंनें अर्ने प्रथम सूत्र में िी धमप को अत्यन्त भािरूणप बताते हुए हलखा ि : **"अथातो धमप-डजज्ञासा ।"** इस सूत्र से उनके कोण उदे्देश्य तथा प्रयोिन स्पष् िो िाते िैं। इस सूत्र के अनुसार यि उदे्देश्य या िम उस धमप या करणीय कमप की हिज्ञासा ि हिससे िेद-हिहित अनुष्ठानों ंका

हनष्पादन एिं यज्ञ समाहिष् िैं। धमप स्वयं रुरस्कार या सुफल प्रदान करता ि। रूिपमीमांसा का उदे्देश्य धमप के स्वरूर् का अनुसन्धान ि।

रूिपमीमांसा अनेक देिताओं ंके प्रहत आस्थािान् ि। उन्ें िहि अहर्पत की िा सकती ि। िैहदक धमप के र्ालन के हलए कोई िसिो सत्ता या ईश्वर अरे्हक्षत निीं ंि। िैहदक धमप को ईश्वर के अक्तस्तत्व की आिश्यकता निीं ं ै। हनत्य एिं स्वयं-क्तस्थत िेद िैहमहन तथा रूिपमीमांसकों ंके प्रयोिनों ंकी हसक्तद्ध स्वयं कर देते िैं। िैहमहन हिस सीमा तक ईश्वर की उरे्क्षा करते िैं, उस सीमा तक उसको अस्वीकृत निीं ंकरते।

वैडदक धमप का र्ालन : आनि-प्राक्ति का साधन

िेदों ंअथापत् शुरुहत में िैहदक धमप के र्ालन के स्पष् हनदेि िैं। इससे आनन्द की प्राक्तप्त िोती ि। यहद किीं ं सूमृहत तथा शुरुहत में सिमहत न िो, तो ििााँ सूमृहत को उरे्क्षणीय समझ लेना चाहिए। शुरुहत के र्श्चात् धाहमपक व्यक्तियों ं के आचरण का स्थान ि। हिन्दू को िैहदक हिहधयों ंके अनुसार िी िििन-यार्न करना चाहिए। मुक्ति-प्राक्तप्त के हलए उसे समुहचत अिसरों ंर्र सन्ध्याहद हनत्य कमप तथा नैहमहत्तक कमप अिश्य करने चाहिए। ये कतपव्य उसके हलए अहनिायप िैं। यहद इन कतपव्यों ंके र्ालन में उससे चूक िोती ि, तो िि प्रत्यिाय-दोष के र्ार् को प्राप्त िोता ै। हकन्हीं ंहिहिष कामनाओं ंकी रूहतप के हलए यि काम्य कमों का हनष्पादन करता ि। यहद िि हनहषद्ध कमों से हिरत रिता ि, तो उसे नरक में निीं ंिाना र्डता। अप्रहतबक्तन्धत कतपव्य-र्ालन से उसे मुक्ति प्राप्त िोती ि।

कुछ उत्तरकालीन मीमांसकों ंका मत ि हक मनुष्य को अर्ने समस्त कमों को ईश्वर अथिा र्रम िाि को िहि के रूर् में समहर्पत कर देना चाहिए। ये समहर्पत कमप िी मुक्ति के साधन िो िाते िैं। यहद यज्ञानुष्ठान हबना श्रद्धा-भक्ति की भािना के यात्रक्तन्त्रक रूर् से हकये िाते िैं, तो िे मुक्ति-प्राक्तप्त में सिायक हसद्ध निीं ंिोते। कोई भले िी अनेक यज्ञ कर ले, यहद उन्ें सम्यक् अहभिृहत्त तथा समुहचत रीहत से सम्पन्न निीं ंहकया िाता, तो उसका हृदय-र्ररितपन असम्भि ि। िो िसुतु यथाथपतः अरे्हक्षत ि, िि और्चाररक यज्ञानुष्ठान न िो कर स्वाथप, अिंकार तथा रागद्वेष की बहल ि।

अरूवप का डसद्धाि

यज्ञ का फल प्रदान करने िाला कोई दयालु ईश्वर निीं, ं बक्तल्क अरूिप ि। यिमान को अरूिप िी यज्ञ-फल प्रदान करता ि। अरूिप कमप तथा कमप-फल के बीच एक आिश्यक माध्यम ि। अरूिप अंदूर ि। यि एक भािनिाक अदृश्य िक्ति ि िो कमपिन्य िोने के साथ-साथ कमप-फल-प्रदाता भी ि। िैहमहन का यिी मत ि। अन्य हचन्तकों ंने इस मत की तीव्र आलोचना करते हुए किा ि हक िड तथा अज्ञ अरूिप कमप-फल प्रदान करने में सिपथा असमथप िैं। मीमांसा की र्द्धहत मेधािी या हिचारिील व्यक्तियों ंको सनुतुष् निीं ंकर सकती। अतः उत्तरितीं ंमीमांसकों ंने ज्ञान। िनैः इसमें ईश्वर को भी समाहिष् कर हलया। उन्होंनें उद्घोहषत कर हदया हक बाहद यज्ञ का सम्पादन र्रमािा के सम्मान में हकया िाता ि, तो इससे हनःशे्रयस् की प्राक्तप्त िोती ि। तब तक ईश्वर या िसिो िाि अरूिप में गहत का संचार निीं ंकरता, तब तक यि हक्रयािील निीं ंिो सकता। िो अरूिप को हक्रयािील बनाता ि, िि ईश्वर ि।

आत्मा तथा इसका स्वरूर्

आिा िरीर, इक्तिय तथा बुक्तद्ध से हभन्न िै। यि अनुभिकताप अथिा भोिा िै। ििीर अनुभिों ंका आिास िै। इक्तियााँ अनुभि के करण िैं। आिा मन से संयुि िो कार िी िष्ा िो र्ाता िै। आन्तररक रूर् से उसे सुख-दु:ख का तथा बाह्य रूर् से िृक्ष, नदी, िनस्पहत आहद हिषयों ंकी उर्क्तस्थहत का अनुभि िोता िै।

आिा इक्तिय निीं ंिै; क्ोंहक इक्तियों ंके आित तथा नष् िोने र भी यि स्वूपित् हिद्यमान रिता िै। रीर भौहतक तत्त्वों ंसे हनहमपत िै। िष्ा िरीर से रृथक् िै। आिा िरीर का हनयमन करता िै। िरीर आिा का दास िै। एक तत्त्व ऐसा िै िो हिहभन्न इक्तियों ंके हक्रयाकलार्ों ंको संयोहित करता िै। आिा िी िि तत्त्व िै। िि सिपव्यार्ी तथा हनत्य िै। आिाओं ंकी संख्या अगहणत िै।

यथाथप आिा िदैिासान के र्ात् भी हिद्यमान रिता िै। यज्ञ करने िाले स्वगप में िाते िैं। िैहमहन को मोक्ष में हिश्वास निीं ंिै। उनका हिश्वास स्वगप के अक्तस्तत्व के प्रहत िै िो कमप या यज्ञ के माध्यम से प्राप्त िोता िै। िेद यिमान को र्रलोक में ि-फल की प्राक्तप्त के हलए आश्वस्त करता िै।

उत्तरिती मीमांसक

प्रभाकर और कुमाररल

िैहमहन ने स्वगप में आनन्द-प्राक्तप्त के हलए लोगों ंका र्थ-प्रदिपन तो हकया; हकन्तु आत्यक्तन्तक मुक्ति की समस्या के हिषय में िे मौन िी बने रिे, लेहकन प्रभाकर तथा कुमाररल िैसे कुछ उत्तरकालीन लेखक अक्तन्तम मुक्ति की इस समस्या के प्रहत उदासीन निीं ंरि सके। इसका कारण यि था हक इस समस्या ने अन्य हिचार-धाराओं ंके हिचारकों ंको अर्ने प्रहत आकृष् कर हलया था। प्रभाकर के अनुसार धमापधमप र्ुनिपन्म के कारण िैं। इनके हनतान्त हतरोभाि से िरीर का आत्यक्तन्तक उच्छेद िो िाता िै। िरीर का यि आत्यक्तन्तक उच्छेद िी मुक्ति िै। मनुष्य हनहषद्ध तथा स्वगापनन्द-प्रदायक कमों का र्ररत्याग कर देता िै। िि स्वूप-संहचत कमों के नाि के हलए आिश्यक प्रयास करता िै। िि आिहनग्रि का अभ्यास और अर्ना हनयमन करता िै। िि स्वयं में सद्गुणों ंका हिकास करता िै और आिज्ञान िारा स्वयं को र्ुनिपन्म से मुि कर लेता िै। कोई ज्ञान मात्र से मुि निीं ंिो सकता; कमप के दाय िो िाने र िी मुक्ति सम्भि िै। ज्ञान से आगामी र्ुण्य-र्ार् की हनिृहत्त िो िाती िै। एकमात्र कमप से िी कोई आत्यक्तन्तक मुक्ति को निीं ंप्राप्त िो सकता। मुक्ति के आकांक्षी को कमों के प्रारम्भक रागिेष को नष् करना िोगा। मोक्ष सुख-दु:ख का हतरोभाि िै। यि हनरहतिय आनन्द की क्तस्थहत निीं ंिै; क्ोंहक हनगुपण आिा को आनन्द का अनुभि भी निीं ंिोता। यि तो आिा का स्वाभाहिक रूर् मात्र िै।

कुमाररल के दृहष्कोण तथा अिैत िेदान्त की मान्यताओं ंमें र्यापप्त साम्य िै। कुमाररल के अनुसार िेद ईश्वर-कृत िै। िे िेद को नाद-ब्रह्म की संज्ञा प्रदान करते िैं। उनके हलए मोक्ष एक भािाक अिस्था िै। यि आिा-साक्षात्कार िै। कुमाररल के मतानुसार मुक्ति के हलए एकमात्र ज्ञान र्यापप्त निीं ंिै। उनकी मान्यता िै हक आत्यक्तन्तक मुक्ति ज्ञान-कमप-समुिय से िी सम्भि िै।

जैडमडन के दशपन का सांडक्षि डववरण

िैहमहन के अनुसार िेद-हिहित कमप स्वगप-प्राक्तप्त के साधन िैं। कमपकाण्ड िेदों ंका प्रमुख भाग िै। हनहषद्ध कमप बन्धन के कारण िैं। आिा िडत्व तथा चेतना का हमहश्रत स्वरूर् िै अथापत् िि िड भी िै और चेतन भी।

िीिाओं ंकी संख्या अगहणत िै। िीिा कताप, भोिा तथा सिपव्यािी िै। िगत् की सृहष्-प्रहक्रया के प्रहत िैहमहन को हिश्वास निीं ंिै। िे स्वगप के आनन्द के हिहभन्न स्तरों ंतथा सदाचार अथापत् 'सत्यं िद' और 'धमप चर' िैसे हिहध-िाक्यों ंमें हिश्वास करते िैं।

जैडमडन के दशपन की समीक्षा

र्ूिपमीमांसा हनरर्ेक्ष सत्ता तथा िीिा और र्दाथप के र्ारस्पररक सम्बन्ध की व्याख्या निीं ंकरता। अतः दिपन की इस र्द्धहत को असन्तोषिनक तथा अर्यापप्त समझा िाता िै। िगत् के प्रहत इसका कोई दािपहनक दृहष्कोण निीं ंिै। इसका केिीय स्वरूर् यज्ञ का अनुष्ठान िै। यि उसका सािपहधक सारगहभपत एिं मौहलक तत्त्व िै। 'िेद-हिहित यज्ञ करो तथा स्वगप के सुखों ंका उर्भोग करो", िैहमहन की हिक्षाओं ंका सार इसी में गहभपत िै; हकन्तु यि उन हिचारकों ंके हलए सन्तोषिनक निीं ंिै िो इस तथ्य से र्ाररहचत िैं हक स्वगप का सुखोर्भोग अहनत्य, अर्ूणप, ऐक्तिय तथा सांसाररक िै।

िेदान्त-दिपन

भूडमका

उत्तरमीमांसा अथापत् दिपन की िेदान्त िाखा के प्रितपक, भगिान् हिष्णु के अितार तथा र्रािर ऋहष के र्ुत्र श्री व्यास को प्रणाम !

व्यास अथापत् बादरायण के उत्तरमीमांसा अथिा िेदान्त को र्रम्परागत षड्दिपनों ंमें अक्तन्तम स्थान हदया गया िै; हकन्तु िस्तुतः उसे सिोर्रर स्थान हदया आना चाहिए।

उत्तरमीमांसा तथा उर्हनषदों ंिारा प्रहतर्ाहदत हसद्धान्तों ंमें अत्यहधक साम्य िै। िेदान्त का िाक्तब्दक अथप िेद का अन्त या इसका सारतत्त्व िै। इसमें िेदों ंके अक्तन्तम भाग में िहणपत हसद्धान्त सहन्नहित िैं। िेदों ंका अक्तन्तम भाग उर्हनषद् िैं िो िेदों ंके मूलभूत कथ्य िैं।

भगवान् व्यास का ब्रह्मसूत्र

श्री व्यास ब्रह्म की व्याख्या करने िाले ग्रन्थ ब्रह्मसूत्र अथिा िेदान्तसूत्र के प्रणेता िैं। ब्रह्मसूत्र को िारीरकसूत्र के नाम से भी िाना िाता िै; क्योंहक यि र्रिीिो तथा हनगुपण ब्रह्म के मूतप रूर् र्र हिचार करता िै। ब्रह्मसूत्र हिन्दू-धमप र्र हलखे गये तीन सिापहधक प्रामाहणक ग्रन्थों ं(प्रस्थात्रयी) के अन्तगपत आता िै। इस प्रस्थानत्रयी के दो अन्य ग्रन्थ िैं उर्हनषद् तथा श्रीमद्भगिद्गीता। व्यास ने िेदान्त के हसद्धान्तों ंको कुव्यिक्तस्थत रूर् दे कर उनमें बाह्य रूर् से प्रतीत िोने िाले हिरोधाभासों ंका र्ररिार हकया। ब्रिसूत्रों ंकी संख्या ५५५ िै। िंकर, रामानुि, मध्व, हनम्बाकप, िल्लभ, भास्कर, यादिप्रकाि, िीकंठ, नीलकण्ठ, बलदेि और हिज्ञानहभक्षु ब्रह्मसूत्र के प्रमुख भाष्यकार िैं। इन्होंने अर्ने-अर्ने दृहष्कोण से अर्ने भाष्यों ंकी रचना की िै और उनमें अर्ने-अर्ने दािपहनक मतों ंकी स्थार्ना की िै। इस दािपहनक हिचारधारा के सिापहधक प्रख्यात आचायप िंकराचायप थे।

श्री व्यास ने िैिेहषक तथा सांख्य-मतों ंकी आलोचना की िै। इसके अहतररि उन्होंने बौद्ध-धमप के कई सम्प्रदायों ंतथा भागित-धमप को भी आलोचनात्मक हिहध से देखा-र्रखा िै।

समन्वय, अहिरोध, साधन तथा फल ब्रह्मसूत्र के चार अध्याय िैं। प्रथम अध्याय में ब्रह्म के स्वरूर् एिं िगत् तथा िीि से इसके सम्बन्ध र्र हिचार हकया गया िै। हितीय अध्याय में सांख्य, योग तथा िैिषक आहद हिरोधी मतों ं की आलोचना की गयी िै। इसमें इस मत के हिरुद्ध प्रसुतुत आर्हत्तयों ंके समुहचत उत्तर भी हदये गये िैं। तृतीय अध्याय में ब्रह्महिद्या की प्राक्तप्त के साधनों ंर्र हिचार हकया गया िै और चतुथप अध्याय में ब्रह्महिद्या की प्राक्तप्त के फलों ंका हनरूर्ण िै। इसमें िीि के दियान-भागप िारा उस ब्रह्म तक र्हुँचने का भी हिरण िै हििाँ से प्रत्यािपन निीं ंिोता। इसके अहतररि इस अध्याय में िीिनुमुि के लक्षणों ंकी भी समीक्षा की गयी िै। प्रत्येक अध्याय में चार र्ाद िैं और कई एक सूत्रों ंसे एक अहधकरण की संरचना हुई िै।

प्रथम अध्याय के प्रथम र्ाँच सूत्र अत्यन्त मित्त्वरूणप िैं। प्रथम सूत्र िै-**"अथातो ब्रह्मडजज्ञासा।"** इसका अथप िै-अतः अब ब्रह्महिषयक हिज्ञासा। इस प्रथम सूत्र में िेदान्त की समूर्णप र्द्धहत के उद्देश्य को एक िब्द **'ब्रह्मडजज्ञासा'** में िी सुस्पष् कर हदया गया िै। हितीय सूत्र िै- **"जन्माद्यस्य यतः।"** इसका अथप िै हक ब्रह्म ििी सत्ता िै िो सृहष्, क्तस्थहत तथा प्रलय का आहद कारण िै। तृतीय सूत्र िै-**"शास्त्रयोडनत्वात्।"** इसका अथप िै हक िास्त्र यथाथप ज्ञान के साधन िैं। िास्त्रों ंका मूल कारण िोने से ब्रह्म की सिपज्ञता की हसक्तद्ध िो िाती िै। चतुथप सूत्र में किा गया िै-**"तु समन्वयात्।"** इससे यि प्रमाहणत िो िाता िै हक ब्रह्मज्ञान हकन्हीं ंअन्य स्वतन्त्र साधनों ंसे निीं,ं बक्तल्क िास्त्रों ंसे िी सम्भि िै; क्ोंहक समस्त िैहदक ग्रन्थों ंका मुख्य अहभप्राय यिी िै। र्ंचम सूत्र में किा गया िै- **"ईक्षतेनापशब्दम्।"** इसका अथप िै हक प्रकृहत अथिा प्रधान में ईक्षण का अभाि िै। अतः िि प्रथम कारण निीं ंिै। प्रधान िास्त्रों ंर्र आधाररत निीं ंिै। चतुथप अध्याय का अक्तन्तम सूत्र िै-**"अनावृडिः शब्दादनावृडिः शब्दात्।"** अथापत् एतत्सम्बन्धी िास्त्रीय अनुिेन के अनुसार िीिात्माओं ंका र्ुनः आगमन निीं ंिोता।

ब्रह्म, माया और जीव

हनरर्ेक्ष ब्रह्म तत्वों ंकी सृहष् के र्श्चात् उनमें प्रहिष् िो िाता िै। यि सूयप में क्तस्थत हिरण्य र्ुरुष तथा आत्मा का प्रकाि िै। यि हनत्य-िुद्ध, स्वयं-प्रकाि, सद-हचत्-आनन्द, अहितीय तथा भूमा (अनन्त तथा हनरुर्ाहधक) िै। आत्मा में क्तस्थत तथा सबका आहद कारण िै। यि मनुष्य की ब्रह्म िगत् का उर्ादान कारण भी िै और हनहमत्त कारण भी। हिस प्रकार घट एहतका से हभन्न निीं ंिै, उसी प्रकार ब्रह्म भी िगत् से हभन्न निीं ंिै। ब्रह्म हिना हकसी हिकार को प्राप्त हुए तथा हबना अर्ने स्वरूर् से चुयुत हुए िगत् में व्याप्त िो िाता िै।

ब्रह्म हनष्कल, हनहिपिेष, अकताप, राग-रहित, अनाहद, अनन्त तथा अहिकायप िै। 'मैं' तथा 'तुम' से सम्बक्तन्धत चेतना से िि रहित िै। िि एकमात्र यथाथप सत्ता िै। बाह्य िगत् से ब्रह्म का ििी सम्बन्ध िै िो सम्बन्ध िस्त्र से तन्तु का, मृहत्तका से घट का तथा मुहिका से स्वणप का िै।

ब्रह्म र्ारमाहथपक सत्य, िगत् व्याििाररक सत्य तथा स्वप्न के हिषय प्राहतभाहसक सत्य िैं।

माया

माया ईश्वर की िक्ति िै और इसका कारण िरीर िै। यि सत् को आिृत कर देती िै। इसके कारण सत् असत् के रूर् में अिभाहसत िोता िै। यि न तो सत् िै, न असत् और न िी सत्-असत्। यि अहनिपचनीय िै। आिरण तथा हिक्षेर् इसकी दो िक्तियाँ िैं। माया की हिक्षेर्-िक्ति के कारण मनुष्य अर्ने यथाथप हदव्य स्वरूर् को हिसृमृत कर चुका िै। माया की हिक्षेर्-िक्ति के कारण िी िगत् अिभाहसत िोता िै।

जीव

ीिी र्ंचकिोों ंमें आबद्ध िैं। ये किो प्यिा की भाााँहत िैं। अन्नमय-किो, प्राणमय-किो, मनोमय-किो हिज्ञानमय किो तथा आनन्दमय-किो-ये र्ंचकिो िैं। प्रथम किो से स्थूल िरीर की, उत्तरिती तीन किोों ंसे
सूक्ष्म िरीर की तथा अक्तन्तम आनन्दमय-किो से कारण िरीर की संरचना िोती िै। िीि को ध्यान िारा अर्ने सभी किोों ंका अहतक्रमण कर उस ििो सत्ता से तादात्म्य स्थाहर्त कर लेना चाहिए िो र्ंचकिोों ंसे र्रे िै।
किेल इसी क्तस्थहत में उसको मुक्ति प्राप्त िो सकती िै।

ाग्रत, स्वप्न तथा सुषुक्तप्तिीी-चेतना की ये तीन अिस्थाएँ िैं। चतुथप अिस्था तुरीयािस्था िै िो
अहधचेतनिाक अिस्था िै। तुरीय ब्रह्म और अिस्था-त्रय का मूक साक्षी िै। िीि को प्रथम तीन अिस्थाओं ंका अहतक्रमण कर चतुथप तुरीयािस्था में समाहित िो िाना चाहिए। तभी िि ििो सत्ता से एकत्व स्थाहर्त कर सकता िै।

अहिद्या िीि का कारण िरीर िै। िीि अहिद्या के कारण स्वयं को िरीर, मन तथा इक्तियों ंमें
अध्यारोहर्त करता िै। हिस प्रकार भ्रम के कारण गोधूहल में रज्जु में सर्प का भास िोता िै, उसी प्रकार हमथ्या ज्ञान के कारण िीि को िरीर में आिा का भास िोता िै। हिस क्षण िीि ििो ब्रह्म के हिषय में िेदान्तप्रिो हिचार,
मनन तथा ध्यान के माध्यम से चरम सत्य के सम्यक् बोध िारा स्वयं आरोहर्त अज्ञान से मुि िो िाता िै, उसी
क्षण उसके अध्यास की हनिृहत्त िो िाती िै। इस क्तस्थहत में िीि तथा िागहतक प्रर्ंच का ब्रह्म के साथ र्ुनः तादात्म्य-स्थार्न िो िाता िै, िीि को अमरत्व तथा िाश्वत आनन्द की सम्प्राक्तप्त िो िाती िै और िि अन्ततः ब्रह्म अथापत् आनन्द-हसन्धु में हिलीन िो िाता िै।

बादरायण िीिन्मुक्ति में हिश्वास करते िैं।

प्रख्यात वेदिा-वाक्य

िेदान्त के प्रख्यात िाक् हनम्नित् िैं :

- **एकमेवाडितीयम्** यथाथप सत्ता एक और अहितीय िै।
- **ब्रह्म सत्यां जगस्तन्मथ्या जीवो ब्रह्मैव नार्रः-** ब्रह्म की र्ारमाहथपक सत्ता िै, िगत् हमथ्या िै, िीि ब्रह्म िी िै।
- **सवं िस्तिदां ब्रह्म-**हनहित रूर् से यि सब-कुछ ब्रह्म िी िै।
- **सत्यां ज्ञानां अनिां ब्रह्म-**ब्रह्म सत्य, ज्ञान और अनन्त िै।
- **ब्रह्मडवद् ब्रह्मैव भवडत -**ब्रह्म का ज्ञाता ब्रह्म िो िाता िै।
- **शिाां डशवां अितम्-**ब्रह्म िान्त, िहि और अहितीय िै।
- **अयम् आत्मा शिाः** यि आिा िान्त िै।
- **असांगो अयम् र्ुरुषः** यि र्ुरुष असंग िै।
- **शिाां अजरां अमृतां अभयां र्रम-**यि ब्रह्म िान्त, अिर, अमर, हनभपय और ििो िै।

आर् सब लोग िेदान्त-दिपन के सत्य से अिगत िों! आर् सब लोगों ंको अभेद के आनन्द का साक्षात्कार िो ! आर् सब लोग िीिन्मुि िों!

ािदि अध्याय

हिन्दू-दिपन-२

(िेदान्त–ािखा)
प्रस्तािना

व्यास का ब्रह्मसूत्र िेदान्त-दिपन का मूलाधार िै। हिहभन्न भाष्यकारों ंने इन सूत्रों ंकी व्याख्या हिहभन्न रूर्ों ं में की िै और इन व्याख्याओं ंके कारण दिपन की कई-एक िाखाओं ंका उद्भि हुआ िै। श्री िंकर का केिलाैत-दिपन, श्री रामानुिाचायप को हिहिष्ाैित-दिपन, श्री मध्वाचायप का िैत-दिपन, श्री हनम्बाकापचायप का भेदाभेद-दिपन, श्री िल्लभाचायप का िुद्धाैत-दिपन, श्री चैतन्य का अहचन्त्य-भेदाभेद-दिपन तथा श्री हमकेन्दर का हसद्धान्त-दिपन िैसी हिचारधाराएँ इन्ीं ंहिहभन्न व्याख्याओं ंसे आहिभूपत हुई िैं।

ईश्वर, िगत् तथा िीि-इस त्रयी का तत्त्वाथप-हनरूर्ण िी दिपन की प्रत्येक िाखा का प्रयोिन िै। दिपन की अनेकानेक हिचारधाराएँ सत्यान्वेषण के हिहभन्न प्रयास िैं।

हिहभन्न मतों ंसे सम्बक्तन्धत हिहभन्न आचायप हिहभन्न सम्प्रदायों ंतथा हिचारधाराओं ंके प्रितपक हुए। इन हिचारधाराओं ंके अनुयाहययों ंने अर्ने हसद्धान्तों ंके अनुरूर् िेदान्त-सूत्रों ंकी व्याख्या के माध्यम से अर्ने मतों ंकी प्रामाहणकता की हसक्तद्ध के प्रयास हकये। अर्ने इस अहभयान में उन्ोंनें अर्नी मान्यताओं ंको र्ुरातन िास्त्रीय र्रम्पराओं ंर्र आधाररत तथा इनसे हिहधित् हिकहसत िोने का दािा प्रस्तुत हकया।

शुरुडत : समि डवचारधाराओ ंका सामान्य आधार

िेदान्त के हसद्धान्त उर्हनषदों ंर्र आधाररत िैं। उर्हनषदों,ं िेदान्तसूत्रों ंतथा भगिद्गीता को प्रामाहणक िास्त्रों ंके रूर् में स्वीकृत हकया िाता िै। उन्ें प्रस्थानत्रयी ग्रन्थ की संज्ञा की गयी िै। ब्रह्म के यथाथप स्वरूर् के हिषय में िेदान्तसूत्रों ंके हिहभन्न आध्यकारों ंके र्ृथक् र्ृथक् मत िैं; हकन्तु िे अर्नी स्थार्नाओं ंको शुरुहतयों ंके िैसे प्रमाणों ंर्र िी प्रहतहष्ठत करते िैं। इन मतों ंमें से हकसी भी मत को अस्वीकार करना स्वयं शुरुहतयों ंको अस्वीकार करना िै।

तत्त्व-डवज्ञान के तीन प्रमुि डसद्धाि िैत, डवडशिैत तथा अिैत

श्री िंकर, श्री रामानुि तथा श्री मध्व िेदान्त-सूत्र के सिापहधक उल्लेखनीय भाष्यकार िैं। इन भाष्यकारों ंने अर्ने-अर्ने स्वतन्त्र मतों ंअिैतिाद, हिहिष्टािैतिाद तथा िैतिाद की स्थार्ना के प्रयास हकये िैं। अर्ने भाष्य की रचना करते समय िंकर के समक्ष हिन्दुत्व र तत्कालीन अन्ध-कमपकाण्ड के हिषाि प्रभाि के हिरुद्ध अर्ने संघषप का प्रयोिन स्पष् था।

िैत, हिहिष्टािैत तथा अिैत तत्त्वमीमांसा की तीन प्रमुख हिचारधाराएँ िैं िो चरम सत्य अथापत् र्रब्रह्म के साक्षात्कार की हिहधयों ंके हिहभन्न चरण िैं। ये योग-रूर्ी सोर्ान की दण्डकाएँ िैं िो र्रस्पर हिरोधी न िो कर एक-दूसरे की अनुरूर्क िैं। इन चरणों ंको आध्याक्तिक अनुभिों ंकी श्रेणीबद्ध शृंखला में समस्वर हिहध से व्यिक्तस्थत हकया गया िै। िैत, हिहिष्टािैत तथा िुद्धािैत का र्यपिसान अन्ततः अिैत–िेदान्त-प्रोि हनरर्ेक्ष सत्ता अथापत् लोकोत्तर हत्रगुणातीत अनन्त ब्रह्म में िी िोता िै।

"मनुष्य ईश्वर का दास िै," मध्व ने अर्नी उद्घोषणा के साथ अर्ने िैत-दिपन की स्थार्ना की और रामानुि के इस कथन के साथ अर्ने हिहिष्टािैत-दिपन का प्रहतर्ादन हकया हक "िीि ईश्वर का सुफुहलंग िै।" िंकर ने किा- "मनुष्य ब्रह्म से अहभन्न अथिा हनत्य िीि िै।" अर्ने इसी हसद्धान्त के आधार र्र उन्होंने केिलािैत-दिपन की स्थार्ना की।

िैती भगिान् का सेिक बन कर उसकी सेिा करना चािता िै। िि उसके साथ खेलना और हमश्री का रसास्वादन करना चािता िै। हिहिष्टािैती भगिान् नारायण के सामीप्य में रि कर हदव्य भाि का अनुभि प्राप्त करना चािता िै। िि स्वयं को भगिान् में हिलीन कर उससे तदूर् िो िाना निीं ंचािता। िि अर्ने-आर्को एक सुफुहलंग के रूर् में िी बनाये रखना चािता िै। ज्ञानी ब्रह्म के साथ तादात्म्य स्थाहर्त कर स्वयं हमश्री िो िाना चािता िै।

लोगों ंकी प्रकृहत तथा क्षमता में िैहभन्य िोता िै; अत हिहभन्न दिपहनक हिचारधाराओं ंका िोना भी आिश्यक िै। अिैत-दिपन सिोच्च सोर्ान िै। िैती या हिहिष्टािैती अन्ततः केिलािैती िो िाते िैं।

ब्रह्म की डवडभि अवधारणाएँ यथाथप सत्ता के सांस्पशप की डवडभि डवडधयाँ

हनम्बाकापचायप िंकर, रामानुि, मध्व तथा अन्य दिपहनकों ंिारा प्रहतर्ाहदत ब्रह्म-सम्बन्धी अिधारणाओं ंमें समन्वय स्थाहर्त करते िैं। िे यि हसद्ध करते िैं हक अर्नी-अर्नी हिहध से ब्रह्म के हिहिष् र्क्षों ंके सम्बन्ध में प्रहतर्ाहदत इन सबकी अिधारणाएँ हनधापन्त िैं। िंकर ने यथाथप का ग्रिण उसके लोकोत्तर र्क्ष के सन्दभप में हकया िै, िब हक रामानुि ने उसे मुख्यतः उसके अन्तयापहमत्व के सन्दभप में ग्रिण हकया िै। हनम्बाकप ने हिहभन्न भाष्यकारों ंके हिहभन्न हिचारों ंमें समायोिन की व्यिस्था की िै।

श्री िंकराचायप, श्री रामानुिाचायप, श्री मध्वाचायप, श्री िल्लभाचायप और श्री हनम्बाकापचायप मिान् र्ुरुष थे। िम यि निीं ंकि सकते हक रामानुि की अर्ेक्षा िंकर या हनम्बाकप की अर्ेक्षा िल्लभ मिान् थे। ये सभी अितार-र्ुरुष थे। इनमें से प्रत्येक एक काल-हििेष तथा हिकास के एक हनहित चरण में हिद्यमान एक हिहिष् िन-

समुदाय के हनहमत्त आिश्यक हसद्धान्तों ंके प्रहिक्षण तथा प्रसार के एक हनहित लक्ष्य की रूूहतप के हलए इस धरा र अितररत हुआ था। दिपन की प्रत्ेयेक हिचारधारा आिश्यक िै। एक हििेष प्रकृहत के लोगों ंके हलए प्रत्ेयेक दिपन अनुकूल तथा उर्युि िोता िै। ब्रह्म-सम्बन्धी हिहभन्न धारणाएँ यथाथप सत्ता के तत्त्वाथपग्रिण की हिहभन्न हिहधयााँ मात्र िैं। बद्ध िीिों के हलए अनन्त अथिा असीम आिा या चरम सत्ता के स्वरूर् के सम्बन्ध में तत्क्षण हकसी हनष्कषप र हुाँच िाना अत्यन्त कहठन िी निीं, ं असम्भि भी िै और इससे भी अहधक दुष्कर िै उर्युि िब्दों ंमें इसकी अहभव्यक्ति।

श्री िंकर के दििो केिलाद्वैत-दिपन का ज्ञान सबके हलए सम्भि निीं ंिै। इसके स्थान हक मन श्री िंकर के अद्वैत िेदान्त के हनहिताथप ग्रिण का एक सक्षम साधन िो िाये, इसे सम्यक् हिहध से अनुिाहसत करना आिश्यक िै।

सभी आचायों को मेरा प्रणाम! उनकी महिमा अक्षुण्ण िो! िम सब लोगों ंके िीिन र उनका आहिष-षिपण िोता रिे!

िंकर का अद्वैत-दिपन

प्रस्तावना

अद्वैत का हिहधित् प्रहतर्ादन सिपप्रथम श्री िंकर के र्रम गुरु गौडर्ाद ने हकया। गोहिन्द गौडर्ाद के तथा िंकर गोहिन्द के हिष्य थे। गौडर्ाद ने अर्ने प्रख्यात ग्रन्थ माण्डूक्यकाररका' में अद्वैत िेदान्त के केिस्थ अनुदिन को व्याख्याहयत हकया िै; हकन्तु यि िंकर िी थे हिन्िोंने अद्वैत-दिपन को एक हनणापयक तथा रमणीय रूर् में हचत्रांहकत करने के र्श्चात् िी अर्नी तूहलका को हिश्राम लेने हदया। मुख्य उर्हनषदों, ं िेदान्त-सूत्र तथा भगिद्गीता के सुहिचाररत अध्ययन से आर्को इनके अद्वैत िेदान्त का स्पष् बोध िो िायेगा। 'िेदान्त-सूत्र' के िंकर-भाष्य को 'िारीररक-भाष्य' किते िैं।

िंकर के उर्देिों ंको एक र्द्य के अधािंि में िी प्रस्तुत हकया िा सकता िै और िि अधािंि िै -"**ब्रह्म सत्यां जगत्तन्मथ्या जीवो ब्रह्मैव नार्रः।**" अथापत् ब्रह्म सत्य िै, जगत् हमथ्या िै और िीि ब्रह्म से अहभन्न िै। यिी उनके दिपन का सारतत्त्व िै।

िंकर िारा अनुदेहित अद्वैत केिलाद्वैत अथापत् हनरर्ेक्ष अद्वैत िै। उनके अनुसार यि सब-कुछ ब्रह्म िी िै। ब्रह्म एक-रस िै, भेद और नानात्व हनतान्त माहयक िैं।

ब्रह्म अद्वितीय िै

आिा स्वतःहसद्ध िै। बाह्य प्रमाणों ंसे इसकी हसक्तद्ध निीं ंिोती। आिा को अस्वीकार निीं ंहकया िा सकता, क्योंहक अस्वीकार हकया िाने िाला आिा स्वयं अस्वीकार करने िाले का िी सारभूत तत्त्व िै। आिा ज्ञान की समस्त हिधाओं, ं रूप-धारणाओं ंतथा प्रमाणों ंका अहधष्ठान िै। आिा आभ्यन्तर भी िै और बाह्य भी, रूप भी िै और र्र भी, दहक्षण भी िै और िाम भी एिं ऊर्ध्प भी िै और अधः भी।

अदृश्य िोने के कारण ब्रह्म र्दाथप या िव्य निीं ंिै, अतः उर्हनषदें उसे 'नेहत नेहत' की उद्घोषणा के माध्यम से िी व्याख्याहयत करती िैं; हकन्तु इसका यि अथप निीं ंिै हक ब्रह्म एक हनषेधाक प्रत्यय या एक

आध्याक्तिक अमूतपता या अनक्तस्तत्व या ररक्ति ि ै। ि ि तो आप्तकाम, अनन्त, अहिकायप, स्वयंक्तस्थत, आनन्दस्वरूर्, भानस्वरूर् तथा भूमास्वरूर् ि ै। ि ि स्वरूर् का सारतत्त्व ि ै। ि ि प्रमाता का सारतत्त्व, दिे, तुरीय एिं साक्षी ि ै।

किर का र्ब्रह्म हनिैयक्तिक, हनगुपण, हनराकार, हनहिपिेष, अहिकायप, हनत्य तथा अकताप ि ै। ि ि प्रयोिनि–्न्य तथा इच्छा-रहित ि ै। ि ि सिपकाहलक साक्षी प्रमाता ि ै। इक्तियातीत ि ोने के कारण ि ि इक्तियों ंका हिषय कदाहर् निीं ंि ो सकता। ि ि अिय एिं अहितीय ि ै। ि ि हनतान्त असंग एिं बहिरंग तथा अन्तरंग भेदों ंसे रहित ि ै। ब्रह्म का हनिपचन असम्भि ि ै; क्ोंहंक हनिपचन की प्रहक्रया में हिभेदीकरण हनहित रिता ि ै। ब्रह्म की तुलना केिल ब्रह्म से ि ी की ि ा सकती ि ै, हकसी अन्य से निीं।ं ब्रह्म में तत्त्विाक या गुणिाक भेद निीं ंि ै। सत्-हचत्-आनन्द उसका गुण न ि ो कर उसका स्वरूर् ि ै।

किर का ब्रह्म हनराकार ि ै। मायाि–क्तच्छन्न ि ो कर ि ी ि ि साकार या सगुण ब्रह्म ि ोता ि ै।

सगुण ब्रह्म तथा हनगुपण ब्रम्ह रृथक् रृथक् दो ब्रह्म निीं ंि ैं। इन दोनों ंके बीच ि ैषम्य, प्रहतिाद तथा हिरोध के दिपन निीं ंि ोते। भि की रािन स्िृ के हलए ि ी हनगुपण ब्रह्म सगुण ब्रह्म की भााँहत प्रतीत ि ोता ि ै। दो दृहष्कोणों ंसे देखा ि ाने िाला यि सत्य एक ि ी ि ै। र्ारमाहथपक दृहष्कोण से देखने र र हनगुपण ब्रह्म र्ब्रह्म तथा व्यािािाररक दृहष्कोण से देखने र सगुण ब्रह्म अर्ब्रह्म ि ै।

जगत् : एक व्याविाररक सिा

किर के मतानुसार ि गत् हमथ्या निीं ंि ै। यि व्यािािाररक सत्ता तथा ब्रह्म र्ारमाहथपक सत्ता ि ै। ि गत् माया या अहिद्या की सृहष् ि ै। माया के कारण अहिकायप ब्रह्म हिकारिील ि गत् प्रतीत ि ोने लगता ि ै। माया ईश्वर की एक रिस्यमयी अहनिपचनीय ि क्ति ि ै ि ो सत् को आिृत्त कर स्वयं को असत् के रूर् में अहभव्यि हकया करती ि ै। माया सत् (भाि-रूर्ा) निीं ंि ै, क्ोंहंक यि हनत्य सत्ता अथापत् ब्रह्म के ज्ञान के र्ात् लुप्त ि ो ि ाती ि ै; हकन्तु यि असत् (अभाि-रूर्ा) भी निीं ंि ै, क्ोंहंक ि ब तक आर्को ज्ञान निीं ंि ो ि ाता तब तक इसकी सत्ता की प्रतीहत ि ोती रिती ि ै। ब्रह्म र र ि गत् का अध्यारोर् अहिद्या के कारण ि ोता ि ै।

जीव का स्वरूर् तथा मोक्ष के साधन

किर का ि ी अथिा ि ैयक्तिक आिा सार्ेक्ष अथापत् व्यािािाररक रूर् से ि ी सत्य ि ै। ि ैयक्तिकता से ि ी तभी तक ग्रस्त रिता ि ै, ि ब तक ि ि अहिद्या के कारण असत् उर्ाहध से सम्प्रयुि रिता ि ै। अहिद्या से सम्मोहित ि ो कर ि ी ि रीर, मन तथा इक्तियों ंसे तादात्म्य स्थाहर्त कर लेता ि ै। इसी अहिद्या या अज्ञान के कारण ि ी हिचार, कमप तथा भोग करता ि ै। यथाथपतः ि ि ब्रह्म अथिा हनरर्ेक्ष सत्ता से हभन्न निीं ंि ैं। "**तत् त्वम् अडस**" अथापत् "तुम ि ी ि ो" यि उर्हनषदों ंकी सुस्पष् उद्घोषणा ि ै। हिस प्रकार ि ल का बुलबुला फूट कर समुि के साथ एक ि ो ि ाता ि ै और हिस प्रकार घट के टूटने र र घटाकाि मिाकाि में हिलीन ि ो ि ाता ि ै, उसी प्रकार ब्रह्मज्ञान की प्राक्तप्त ि ोने र र ि ी अथापत् आनुभहिक आिा ब्रह्म के साथ एकाि ि ो ि ाता ि ै। ि ब ि ी में ज्ञानोदय ि ोता ि ै, तब ि ि अर्ने रृथक् ि ैहिष्ट्य तथा सीहमतता से मुि ि ो कर अर्ने तात्क्तत्त्वक स्वरूर् का साक्षात्कार कर लेता ि ै। ि ि स्वयं को आनन्द-हसनुधु में अन्तलपहयत कर लेता ि ै और ि ीन-सररता का हनरर्ेक्ष सत्ता के हसनुधु में अन्तभापि ि ो ि ाता ि ै। यिी चरम सत्य ि ै।

ि ी तथा ब्रह्म के बीच ि ैहभन्य-दिपन एक भ्रान्त धारणा ि ै। ि ंकर के अनुसार इस भ्रान्त धारणा की हनिृहत्त के र्ात् ि ी का ब्रह्म में आत्यक्तन्तक अन्तलपयन ि ी सांसाररक प्रर्ंच से मुक्ति ि ै। ि ंकर कमप तथा भक्ति को ज्ञान का साधन मानते ि ैं। िे ज्ञान को ि ी मोक्ष की संज्ञा प्रदान करते ि ैं।

डववतपवाद अथापत् अध्यारोर् का डसद्धाि

किर के अनुसार िगत् की किल वि्यिाररक सत्ता िै। उन्िोंने हितिपाद अथापत् आभास अध्यारोर् (अध्यास) के हसद्धान्त का प्रहतर्ादन हकया। हिस प्रकार गोधूहल में रज्जु में सर्प का अध्यास या आभास िोता िै, उसी प्रकार ब्रह्म या र्रमात्मा में संसार एिं दृि का अध्यारोर् िोता िै। रज्जु के ज्ञान से इसमें अध्यस्त सर्प के भ्रम की हनिृहत्त िो िाती िै। इस प्रकार ब्रह्म अथापत् हनत्य सत्ता के ज्ञान से िरीर एिं िगत् के भ्रम की हनिृहत्त िो िाती िै। कायप की उत्पहत्त के हलए कारण को अर्ने स्वरूर् को हिकृत करने की आिश्यकता निीं िोती। रज्जु में सर्प का आभास हमथ्या प्रतीहत मात्र िै। यिााँ रज्जु का सर्प में इस प्रकार रूर्ान्तरण निीं हुआ िै हिस प्रकार दूध का दिी में िोता िै। ब्रह्म हनत्य तथा अहिकायप िै; अतः यि स्वयं को िगत् में रूर्ान्तररत निीं कर सकता। माया ब्रह्म की हिलक्षण तथा रिस्यमयी िक्ति िै। िि इसी माया के संयोग में कारण या स्रष्ा बनता िै।

रज्जु के ज्ञान से आर्के भय की हनिृहत्त िो िाती िै और आर् उस स्थान से र्लाहयत निीं िोते। इसी प्रकार िब आर्को हनत्य तथा हनहिपकार ब्रह्म का ज्ञान िो िाता िै, तब आर् नाम-रूर्ात्मक िगत् से प्रभाहित निीं िोते। िब िाश्वत सत्ता अथापत ब्रह्म के ज्ञान से अहिद्या अथिा अज्ञान का आिरण हिक्तच्छन्न िो िाता िै और िब अहिनािी एिं यथाथप सत्ता के ज्ञान से हमथ्या ज्ञान की हनिृहत्त िो िाती िै, तब आर् अर्नी मूलभूत हदव्य प्रदीक्तप्त तथा गररमा को प्राप्त कर ज्योहतमपय िो उठते िैं।

अिैत : एक अहितीय दिपन

किराचायप का अिैत-दिपन एक उदात्त, भव्य तथा अहितीय दिपन िै। यि सूक्ष्म ताहकपकता तथा हनभीक दिपन की िैचाररक र्ृहत िै। यि अत्यन्त मनोरंिक, प्रेरणाप्रद तथा समुन्नत दिपन िै। हनभीकता, गिनता तथा सूक्ष्म िैचाररकता में इसके समक्ष हकसी भी दिपन का हटक र्ाना असम्भि िै। िंकर का दिपन समृद्ध तथा र्ूणप िै।

किर एक प्रचण्ड तथा चमत्कारर्ूणप मेधा के स्वामी थे। िे तकपिास्त्र में हनष्णात थे। िे उत्कोहट के गम्भीर हचन्तक तथा सन्त थे। उन्िें उत्तम हसक्तद्धयााँ प्राप्त थीं। िे भगिान् हिि के अितार थे। उनका दिपन र्ूणप तथा हिश्व के असंख्य लोगों के हलए सान्त्वना, िाक्तन्त तथा प्रकाि का स्रोत हसद्ध हुआ। र्ाश्चात्य हचन्तक श्री िंकर के चरण-कमलों र्र नतमस्तक िोते िैं। उनका दिपन र्ूणप तथा हिश्व के असंख्य लोगों के हलए सान्त्वना, िाक्तन्त तथा प्रकाि का स्रोत हसद्ध िोता आ रिा िै। साधक सन्तप्त लोगों के सन्तार् तथा उनकी र्ीडाओं का िमन उनके दिपन से हुआ िै। अनेक लोगों को आिा, िषप, सम्बोहध, र्ूणपत्व, स्वातन्त्र्य तथा िाक्तन्त की प्राक्तप्त हुई िै। किर के दिपन ने समस्त संसार से प्रिंसा अहिपत की िै।

श्री रामानुिाचायप का हिहिष्ािैत-दिपन

प्रस्तावना

ब्रह्म के अिैत या एकत्व को एक हिहिष् हिहध से प्रहतर्ाहदत करने के कारण इस दिपन को हिहिष्ािैत किते िैं। इसके अनुसार किल ईश्वर िी सत् िै। यि समस्त दृश्यमान िगत् उसकी अहभव्यक्ति या उसका गुण िै। श्री रामानुि के ईश्वर या भगिान् नारायण एक िहटल तथा व्यक्तिस्थत तत्त्व िैं िो एक िो कर भी हिहिष् िैं। अतः इस दिपन का नाम हिहिष्ािैत िै।

किर के अनुसार समस्त हिकार या प्रर्ंच असत् या अहनत्य िैं। इसका कारण अहिद्या या अज्ञान िै। रामानुि के मतानुसार गुण यथाथप तथा हनत्य िैं; हकनुतु इनका हनयन्त्रण ब्रह्म िारा िोता िै। गुणों ंकी यथाथप सत्ता ब्रह्म के एकत्व की असक्तन्दग्धता को प्रहतबक्तन्धत निीं ंकर सकती; क्ोंहंक गुणों ंकी रृथक् सत्ता निीं ंिै। िे एक िी ब्रा के प्रकार, रूर् तथा हनयम अथापत् हनयक्तन्त्रत र्क्ष िैं।

हिहिष्ाैति के नाम से प्रख्यात रामानुि का दिपन हिहिष् अथापत् सहिहेष अिैत िै। यि नानात्व को स्वीकार करता िै। रामानुि का ब्रह्म अनेक हिदहचद् रूरों ंमें हिद्यमान िै। अतः उनके दिपन को हिहिष्ाैति किते िैं। यि एक िैष्णि-दिपन िै। रामानुि-सम्पदाय को श्री-सम्प्रदाय के नाम से िाना िाता िै। उनके अनुयायी िैष्णि िाते िैं। रामानुि ने िैष्णि-मत के दिपन को एक व्यिक्तस्थत रूर् प्रदान हकया। उनके धाहमपक मत को श्री िैष्णि-गत किा िाता िै; क्ोंहंक श्री अथापत्, दिेी लक्ष्मी को िीिाात्माओं ंकी मुक्ति का मित्वरूणप कायपभार सौंरा गया िै।

श्री िंकर का दिपन बहुसंख्यक िनों ंके हलए अत्यन्त गिन, सूक्ष्म तथा अमूतप िै. हकनुतु हिन लोगों ंमें भक्ति-भाि का प्राधान्य िै, उन लोगों ंके हलए श्री रामानुि का दिपन उर्युि एिं सुहिधािनक िै। श्री रामानुि की दिपन-र्द्धहत में ईश्वर के िीि िगत् अथापत् हचत् तथा अहचत्-ये दो प्रकार िैं। ये उससे उसी प्रकार सम्बद्ध िैं इसे िरीर आिा से सम्बद्ध िै। ईश्वर से रृथक् इनकी कोई सत्ता निीं ंिै। ये उसमें समाहश्रत गुणों ंकी भााँहत हिद्यमान रिते िैं। िगत् तथा िीि उसके िरीरभूत िैं। ईश्वर उनका अन्तयापमी तथा हनयन्त्रक यथाथप तत्त्व िै। हचत् तथा अहचत् अथापत् िीि तथा इनाहत उसका िरीर िैं। ये दोनों ंतत्त्व उसके अधीन िैं। इन्ें हिेषण तथा गुण किा िाता िै। ईश्वर हिेष्य अथिा सहिेष िै।

डवर्डाशौत-मत की डवकास-कथा

हिहिष्ाैति-मत एक रुरातन मत िै। सिपप्रथम बोधायन ने ईसा से चार सौ िषप रूिप रहचत अर्नी िृहत्त में इसका प्रहतर्ादन हकया था। यि रामानुि िारा प्रहतर्ाहदत मत के अनुरूर् िै। रामानुि ने ब्रह्मसूत्रों ंके अर्ने भाष्य में बोधायन का िी अनुसरण हकया।

भक्ति-मागप में िैयक्तिक ईश्वर अथापत् सगुण-साकार ईश्वर की उर्ासना की िाती िै। भिि-न िासुदेि अथापत् नारायण के प्रहत अर्ने भक्ति-भाि को हिकहसत करते िैं। सगुण-साकार ईश्वर के उर्ासकों ंको भागित किा िाता िै। उनके अर्ने िाख िैं हिन्ें र्ांचरात्र-आगम किा िाता िै और हिन्ें िे लोग उर्हनषदों ंके समकक्ष िी मानते िैं। िादि आलिार सन्तों ंकी रचनाओं ंसे दहक्षण भारत में भक्ति-आन्दोलन को र्यापप्त बल हमला। इन आलिार सन्तों ंिारा रहचत चालीस सिस्र स्तोत्रों ंके सकलन को 'नालाहयर प्रबन्धम्' किते िैं।

तदनन्तर नाथमुहन, यामुनाचायप तथा रामानुिाचायप नामक िैष्णि आचायों का आगमन हुआ। ये लोग मिान् र्क्तण्डत थे। इन लोगों ंने अर्नी आस्थाओं ंतथा अर्ने आिरण को एक दािपहनक आधार तथा रंकिता प्रदान की। आलिारों ंके हलए ईश्वर-साक्षात्कार का एकमात्र साधन भक्ति िी थी; हकनुतु भक्ति के साथ उन्ोंनें ज्ञान तथा कमप को भी समक्तन्वत कर हलया। िे ज्ञान तथा कमप को भी ईश्वर-साक्षात्कार का साधन मानते थे। उनका उद्देश्य िेदों,ं उर्हनषदों ंतथा गीता का 'तहमल प्रबन्ध' से सामंस्यि स्थाहर्त करना था। उन्ोंनें तहमल प्रबन्धों ंकी व्याख्या उर्हनषदों ंतथा गीता के र्ररप्रेक्ष्य में िी की। अतः उन्ें उभयि-दान्ती किा िाता िै। रामानुि िेदों,ं उर्हनषदों ंतथा तहमल प्रबन्धों ंको अर्ने दिपन का स्रोत मानते िैं। इसी कारण उनकी दिपन-र्द्धहत को उभयि-दान्त की संज्ञा प्रदान की गयी िै।

नाथ मुहन ने तहमल प्रबन्धों ंको िेदों ंतथा उर्हनषदों ंके स्तर तक समुन्नत हकया और यामुनाचायप ने अर्ने उत्तराहधकारी रामानुि के दिपन की स्थार्ना के हलए आधारहिला प्रदान की। 'ब्रह्मसूत्र' र् रामानुि ने िो भाष्य

हलखा, उसे 'श्री-भाष्य' किते ि ैं। उन्ोंनें भगिद्गीता र भी एक भाष्य की रचना की। इसके अहतररि उन्ोंनें ेदान्त-सार, िेदान्त-संग्रि तथा िेदान्त-दीर् नामक तीन अन्य ग्रन्थों ंकी भी रचना की। दिपन की हिहिष्टाै ति-द्धहत के ये प्रमुख ग्रन्थ माने िाते ि ैं।

रामानुि प्रत्यक्ष, अनुमान तथा शुरुहत को ज्ञान का प्रामाहणक स्रोत मानते ि ैं। ब्रह्मज्ञान के हलए िेद तथा सूमृहतयााँ एकमात्र स्वतन्त्र एिं अहधकृत प्रामाहणक आधार ि ैं। िे सत्कायपिाद तथा र्ररणामिाद के हसद्धान्त का प्रहतर्ादन करते ि ैं हिसके अनुसार कारण से िी कायप की उत्पहत्त िोती ि ै।

रामानुज का ब्रह्म : साकार तथा सगुण ईश्वर

रामानुि के मतानुसार िो-कुछ भी ि ै, ि ि ब्रह्म िी ि ै; हकन्तु ब्रह्म के स्वभाि में सामंस्य तथा एकरसता निीं ंि ै। इसके अन्तगपत अनेकत्व के तत्त्व हनहित ि ैं हिसके फल-स्वरूर् ि ि स्वयं को ि ैहिध्यरूणप िगत् के रूर् में अहभव्यि करता ि ै। रामानुि का ब्रह्म स्वरूर्तः एक सिपव्यार्ी, सिपज्ञ तथा िगहन्नयन्ता ि ैयहक्तक र्रमात्मा ि ै। ि ि िगत् में व्याप्त तथा िगत् उससे अनुप्राहणत ि ै। इस प्रकार र हनगुपण ब्रह्म तथा अर्र सगुण ब्रह्म के बीच एिं ब्रह्म तथा ईश्वर के बीच हकसी प्रकार के भेद के हलए कोई स्थान िी निीं ंरि िाता। रामानुि का ब्रह्म सहिशेष तथा सगुण ब्रह्म ि ै।

रामानुि का ब्रह्म हनगुपण-हनरर्ेक्ष निीं ंि ै। ि ि सिपज्ञता, सिपव्यार्कता, असीम प्रेम आहद गुणों ंसे सम्पन्न ियैहक्तक अथिा सगुण ईश्वर ि ै। ईश्वर सगुण ि ै। िेदों हनगुपण ब्रह्म से तात्पयप ि ै हक ि ि िोक, दुःख, मरणशीलता, हिकार एिं िरा आहद िेय गुणों ंसे सिपथा रहित ि ै।

ईश्वर सभी िस्तुओं ंमें अनुसूयूत ि ै। ि ि आत्मा का सार-तत्त्व ि ै। ि ि अन्तयापमी तथा आत्मा से अहभन्न ि ै। ि ि हिभु, र्रम सत्ता तथा शुभ गुणों ंसे सम्पन्न ि ै। यि सक्तिदानन्द-स्वरूर् ि ै। िगत् तथा आत्मा उस र आधाररत ि ै। ि ि इस हिश्व तथा आत्माओं ंका मूलाधार ि ै। ईश्वर िगत् का हनयंता ि ै। ि िी अथापत् आत्मा हनयम्य अथापत् शेष ि ै।

ईश्वर अन्तयापमी, हिश्वातीत तथा अहिकायप ि ै। प्रलय काल में समस्त हिश्व उसमें हिलीन िो िाता ि ै। सृहष् के समय िगत् का आहिभापि िोता ि ै; हकन्तु इससे उसका यथाथप स्वरूर् प्रभाहित निीं ंिो र्ाता। रामानुि के ब्रह्म में स्वगत-भेद ि ै। र (िासुदेि), व्यूि (संकषपण, प्रद्युम्न तथा अहनरुद्ध), हिभि, अचप तथा अन्तयापमी-ईश्वर के ये र्ंच स्वरूर् ि ैं। ि ि हचद्-अहचद्-हिहिष् एक संक्तश्लष् समग्रता ि ै।

रामानुि का ईश्वर नारायण ि ै िो अर्नी शक्ति अथिा सिधहमपणी के साथ बैकुण्ठ में हनिास करता ि ै। लक्ष्मी समृक्तद्ध की देिी ि ैं। िे हदव्य मातृ-स्वरूर्ा ि ैं। िे अर्ने भिों के समक्ष मनुष्यों ंका र्क्ष-समथपन करती ि ैं। िे उनको भि िनों ंका र्ररचय दे कर उनको मोक्ष प्रदान कराती ि ैं। हिहिष्टाैति-मत में लक्ष्मी को एक हिहिष् स्थान प्राप्त ि ै।

जगत् : ब्रह्म के स्वरूर् का यथाथप अंश

अर्ने हिहिध रूर्ों ंएिं ि ि िीिाओं–सहित िगत् असत् माया न िो कर ब्रह्म िे स्वरूर् का एक यथाथप अंश ि ै। यि ईश्वर का शरीर ि ै। दाथप सत् ि ै। यि अहचत् अथापत् चेतना-शून्य द्रव्य ि ै। यि िास्तहिक र्ररणाम या हिकास को प्राप्त हुआ करता ि ै। प्रलय-काल में ईश्वर के प्रकार के रूर् में सूक्ष्म रूर् में हिद्यमान रिता ि ै। अतः यि हनत्य, हकन्तु र्रतन्त्र ि ै। इसका हनयमन ईश्वरेच्छा िारा िोता ि ै। यि न तो शुभ ि ै, न अशुभ। यि िीिों ंके कमापनुसार सुख-दुःख का कारण हुआ करता ि ै। यि िीिों ंके आनुभहिक हिषयों ंका स्रष्टा ि ै।

सत्व, रिस् तथा तमस्-प्रकृहत में ये तीन गुण िैं; हकनुतु िुद्ध तत्त्व में किेल सत्व िी िै। यि िुद्ध दर्थप िै। यि ईश्वर के िरीर की संरचना का संघटक तत्त्व िै। इसे ईश्वर की हनत्य-हिभूहत कि िाता िै। व्याकृत िगत् उसकी लीला-हिभूहत िै।

आत्मा:एक डवडशि वैयस्तिक सिा

चेतन िोने के कारण आिा दर्थप की अरेक्षा र्रमाा का एक उत्तर रूर् िै। इसमें र्रमाा का सारतत्व हनहित िै। रामानुि के अनुसार र्रमाा, आिा तथा प्रकृहत-ये तीनों ंहनत्य िैं। आिा स्वयं चेतन, हनहिपकार, हनरियि तथा अणु रूर् िै। आिाएँ अनेक िैं। रामानुि का ियक्तिक आिा यथाथपतः ियक्तिक िै। यि रूणपतः यथाथप तथा र्रमाा से सिपथा हभन्न िै। ब्रह्म से उद्भूत एिं ब्रह्म में अन्तहनपहित िोते हुए भी इसकी एक रृथक् ियक्तिक सत्ता िै और यि र्ाथपक् सिपकाहलक िै।

जीवात्मा के तीन वगप

रामानुि के अनुसार आिा के हनत्य, मुि तथा बद्ध-ये तीन िगप िोते िैं। हनत्य िीि सिपदा से मुि रिे िैं। ये हनत्य मुि िीि सिपथा स्वतन्त्र िोते िैं तथा नारायण के साहन्नध्य में िैकुण्ठ में िास करते िैं। िीिाँ तक मुि िीिों ंका सम्बन्ध िै, िे सांसाररकता में हलप्त रिने के र्ाित् अब मुि िो कर नारायण का सामीप्य-लाभ कर चुके िैं। बद्ध िीि िागहतक प्रर्चों ंमें संलग्न रिते हुए मुक्ति के हलए प्रयत्निील रिते िैं। िे िब तक मुि निीं ंिो िाते, तब तक उन्ें अनेक बार िन्म-ग्रिण करना र्डता िै।

र्रमाा अंिी तथा ियक्तिक आिा अथापत् िीि उसका अंि िै िो उस अहग्न-हर्ण्ड का एक सुफुहलंग मात्र िै। िो सम्बन्ध दाहडम के हकसी समग्र फल तथा उसके दानों ंके बीच िै, िीि सम्बन्ध ब्रह्म तथा ियक्तिक आिाओं ंअथापत् िीिों ंके बीच िै।

आत्मा का डवकास तथा उसकी आत्यस्तिक मुस्ति

सांसाररकता में हलप्त रिने के कारण िीिाा का ज्ञान संकुहचत िो िाता िै। िि अर्ने रूप-कमापनुसार िरीर ग्रिण करता और चरम मोक्ष की सम्प्राक्तप्त तक िन्म-मरण के दुष्चक्र में आबद्ध रिता िै। मोक्ष प्राक्तप्त के र्ाित् उसका ज्ञान व्यार्क िो िाता िै। इस क्तस्थहत में उसे रूणप ज्ञान िो चुका िोता िै। रामानुि के उर्दिानुसार आिा के हनतम स्तर को संकुहचत करने िाला प्रत्येक कमप अिुभ एिं इसे व्यार्कता प्रदान करने िाला प्रत्येक कमप िुभ िोता िै। िब तक िीि को नारायण की कृर्ा से आत्यक्तन्तक मुक्ति निीं ंप्राप्त िो िाती, तब तक िि अर्ने िुभ-अिुभ कामों ंके माध्यम से स्वयं को व्यार्क तथा संकुहचत करते हुए इस संसार में हिचरण हकया करता िै। ईश्वरीय कृर्ा का अितरण उन्ीं ंलोगों ंके ऊर्र िोता िै िो इसके हलए, प्रयत्निील तथा हिहिद्ध िोते िैं।

मोक्ष अथापत वैकुण्ठारोिण

रामानुि के मतानुसार मोक्ष का अथप आिा का ऐहिक िीिन के हिक्षोभ से मुक्त िो कर एक ऐसे स्वगप (िैकुण्ठ) में हुँच िाना िै िीिाँ िि ईश्वर के साहनध्य में स्वयं को अप्रहतबक्तन्धत ियक्तिक र्रमानन्द में सिपदा के हलए प्रहतहष्ठत कर लेता िै। मुकताा ईश्वर के स्वरूर् को प्राप्त करता िै; हकनुतु उसके साथ िि तूर्ता को प्राप्त निीं ंिोता। ईश्वर की सेिा या उर्ासना में संलग्न िो कर िि उसकी सहन्नहध में रिता िै। उसके व्यक्तित्व का

हतरोभि र्नीं ंिोता। रामानुि के अनुसार िीिनुमुक्ति िैसी कोई बसुतु र्नीं ंिै। दिे-त्याग के र्ात् िी मोक्ष-लाभ िीता िै।

मुस्ति का साधन भस्ति

आत्यक्तन्तक मुक्ति की सम्प्राक्तप्त भक्ति एिं भगितूकृर्ा िारा तथा भगितूकृर्ा की सम्प्राक्तप्त प्रर्हत्त अथापत् रूणप आि-समर्पण िारा िोती िै। कमप तथा ज्ञान भक्ति के साधन मात्र िैं।

श्री मध्वाचायप का िैत-दिपन

प्राविना

श्री मध्वाचायप ने प्रस्थानत्रय अथापत् उर्हनषद्, भगिद्गीता एिं ब्रह्मसूत्र के आधार र िैत-दिपन को हिकहसत हकया। यि अहिहिष्-िाद िै। रामानुि के िैष्णि-मत से इसके भेद-प्रदिपन के हलए इसे सद्-िष्णि-मत की संज्ञा प्रदान की गयी िै।

मध्व ईश्वर एिं चेतन तथा अचेतन दाथों के बीच आत्यक्तन्तक भेद के समथपक िै। ईश्वर एकमात्र स्वतन्त्र सत्ता िै, िब हक िड तथा चेतन दाथप र्राहश्रत सत्ताएँ िैं। माध्व-िदान्त आत्यक्तन्तक भेदों ंका हसद्धान्त िै। इसे 'अत्यन्त भेद-दिपन' किते िैं। िे हनम्नांहकत र्ाँच भेदों ं(र्ंच-भेद) र बल देते िैं :

१. ईश्वर का िीि से भेद।

२. ईश्वर का दाथप से भेद।

३. िीि का दाथप से भेद।

४. िीि का अन्य िीि से भेद।

५. एक दाथप का हकसी अन्य दाथप से भेद।

मध्व का दिपन भेद का दिपन िै। इस र्ंच-भेद के प्रहत मध्व-प्रहतर्ाहदत मत के अनुयाहययों ंकी सुदृढ़ आस्था अहनिायप िै।

मध्व ने ब्रह्मसूत्र, उर्हनषदों ंतथा भगिद्गीता र भाष्य हलखे िैं। उर्हनषदों ंके मध्वकृत भाष्य को 'अणुव्याख्यान' किते िैं। इन भाष्यों ंके अहतररि इन्ोंनें मिाभारत तथा भागितर्ुराण र संहक्षप्त टीकाएँ भी हलखी िैं। मिाभारत र हलखी इनकी संहक्षप्त टीका को 'भारत-तात्पयप-हनणपय' किते िैं। इन भाष्यों ंतथा संहक्षप्त टीकाओं ंके अध्ययन से मध्वाचायप के दिपन को स्पष् रूर् से हृदयंगम हकया िा सकता िै।

मध्व तथा रामानुि के बीच कई-एक दािपहनक स्थार्नाएँ उभयहनष्ठ िैं। मध्व की दािपहनक मान्यता के अनुसार िरर अथापत् हिष्णु सिोर्रर सत्ता, िगत् यथाथप तथा भेद सत्य िैं। सभी िीि भगिान् िरर के आहश्रत िैं। ियक्तिक िीिों ंमें ऊध्वपहितपता तथा अधोहितपता के अनुसार कई श्रेहणयाँ िैं। िीिों की सिि आनन्दानुभूहत िी मुक्ति िै। इसी को मोक्ष अथिा चरम मुक्ति किते िैं। हनदोष भक्ति मोक्ष-प्राक्तप्त का साधन िै। प्रत्यक्ष, अनुमान

तथा िब्द-ये तीन प्रमाण अथापत् ज्ञान-प्राक्तप्त के साधन िैं। िरर का ज्ञान िेदाध्ययन से िी सम्भि िै। भागितरुराण में हिणपत कृष्णोर्ासना उनके धमप का किेस्थ मन्तव्य िै और यिी िै मध्वाचायप के उर्देिों ंका सार-तत्त्व।

श्रेडणयााँ

माध्वमतानुसार स्वतन्त्र तथा र्रतन्त्र, र्दाथप अथापत् िस्तुगत सत्ता के ये हिहिध रूर् िैं। ईश्वर एकमात्र सिोर्रर सत्ता तथा अप्रहतबक्तन्धत यथाथप िै। िीि तथा िगत् उसके ऊर्र आहश्रत सत्ताएाँ िैं। ईश्वर इनका हनयम करता िै। हिधेयिाक तथा हनषेधिाक-र्रतन्त्र सत्ताओं ंके ये दो भेद िैं। चेतन िीिात्माएाँ एिं र्दाथप तथा काल की भााँहत अचेतन सत्ताएाँ, हिधेयिाक सत्ता के ये दो प्रकार िैं। अचेतन तत्त्व िेदों ंकी भााँहत हनत्य या प्रकृहत, काल तथा दिे की भााँहत हनत्याहनत्य या प्रकृहत से उत्पन्न र्दाथों की भााँहत अहनत्य िैं।

र्रम सिा तथा उसकी र्श्वपवडतपनी

हिष्णु अथिा नारायण र्रम सत्ता िै। िि प्रथम ियक्तिक कारण िै। िि हिश्व को ज्ञान-सम्पन्न हनयन्ता िै। िि अर्नी र्श्वपिहतपनी लक्ष्मी के साथ िैकुण्ठ में बाल करता िै। ये दोनों ंसत्य िैं। ब्रह्मा तथा िायु इसके दो र्ुत्र िैं। िेदाध्ययन से उबाक स्वरूर् का ज्ञान िो सकता िै। िि स्वयं को अनेकहिध व्यूिों ंतथा अितारों ंके मायके िे अहभव्यि करता िै। र्ूिन प्रहतमाओं ंमें िी हिद्यमान िै। िि सभी िीिात्माओं ंश्री अन्तहनपहित हनयन्ता अथापत् अन्तयापमी िै। िि हिश्व का स्रष्टा, र्ोषक एिं संिारक िै।

ईश्वर हनरिद्य अथापत् सिपदोष-रहित िै। िि समस्त मांगहलक गुणों ंसे सम्पन्न िै। िि सिपव्यार्ी और र्रम स्वतन्त्र िै। िि कालातीत तथा दिेातीत िै। िि लक्ष्मी से मिान िै; हकन्तु अन्य कोई लक्ष्मी से मिान् निीं ंिै। अधीनस्थों ंया आहश्रतों ंमें िि सिोर्री िै। लक्ष्मी हिष्णु भगिान् की िक्ति िै। िि उसकी सिृनाक िक्ति का मूतप रूर् िै। अनेक िरीर-धारण के हलए, उसे हकसी प्राकृत िरीर की अर्ेक्षा निीं ंिै। हिष्णु भगिान की भााँहत िि हनत्य और सिपव्यार्ी िै। िि अनन्त काल से अर्ने स्वामी की महिमा का दिपन करती आ रिी िै। िि हनत्य-मुि, िैहिाक एिं मेधािी िै।

प्रकृडत: डवश्व का उर्ादान कारण

ईश्वर िगत् का उर्ादान कारण न िो कर इसका हनहमत्त कारण िै। इसका कारण यि िै हक िि हिश्व के आहदम िड-तत्त्व प्रकृहत से हभन्न िै। दृश्यमान िगत् के का में र्रिहतपत िो िाने िाली यिी प्रकृहत िगत् का उर्ादान कारण िै। सभी िागहतक र्दाथप, िरीर तथा िीिात्माओं ंके संघटक-तत्त्व प्रकृहत िारा हनहमपत िोते िैं। ईश्वर लक्ष्मी के माध्यम से प्रकृहत को िक्ति प्रदान करता िै हिसके फलस्वरूर् िगत् की सृहष्ट िोती िै।

प्रकृहत के क्षि-त्रय का हनयमन तीन िक्तियों–लक्ष्मी, भू तथा दुगाप िारा िोता िै। अहिद्या प्रकृहत का िी एक रूर् िै िो िीि की आध्याक्तिक िक्तियों ंको आिृत का देती िै। यि एक ऐसे आिरण की सृहष्ट करती िै हिससे सिोर्रर सत्ता िीि की दृहष्ट से ओझल िो िाती िै।

मित्, अिंकार, बुक्तद्ध, मन, दि इक्तियााँ, र्ााँच इक्तियों ंके हिषय और र्ंच-मिाभूत प्रकृहत के िी र्रिहतपत रूर् िैं िो अर्ने हिकास के र्ूिप आद्य मूलभूत प्रकृत के अन्तगपत सूक्ष्म रूर्ों ंमें हिद्यमान रिते िैं।

जगत् : ईश्वर से डभि एक यथाथप सिा

मध्व के मतानुसार िगत् भ्राक्तन्त निीं ंिै। दूध से दिी की भााँहत यि ईश्वर का रूर्ान्तरण भी निीं ंिै। िे इसे ईश्वर का िरीर भी निीं ंमानते। ईश्वर तथा हिश्व का र्ारस्पररक भेद हनरर्ेक्ष एिं हनहिपेष िै। अतः मध्व की दिापहनक मान्यता को िैत किा िाता िै।

जीवात्मा : एक रृथक् सिा

िीि अनेक िैं। ये सभी अणु आकार के िैं। समस्त हिश्व िीिों ंअथापत् िैयक्तिक आिाओं ंसे र्ररूणप िै। दिे का प्रत्येक अणु िीिों ंसे व्याप्त िै। मध्व 'तत्त्व-हनणपय' नामक अर्ने ग्रन्थ में किते िैं- "दिे के एक अणु में हनिास करने िाली अनन्त आिाएँ िैं।"

हकन्हीं ंभी दो िीिों ंमें स्वभािगत सादृश्य निीं ंिै। िे एक-दूसरे से तत्त्वतः हभन्न िैं। मोक्ष-प्राक्तप्त के उर्रान्त स्वगप-सुखोर्भोग की क्तस्थहत में भी उनका स्तरगत िैहभन्य बना रिता िै।

जीव और ब्रह्म का तास्तत्त्वक भेद

िीि ईश्वर तथा प्रकृहत दोनों ंसे हभन्न िै। मध्व ब्रह्म और िीि के मध्यगत भेद को यथाथप मानते िैं।

आकार में र्ररहमत िोने र भी िि अर्ने ज्ञान-रूर् गुण के कारण िरीर में व्याप्त रिता िै। िीि सहक्रय कताप िै; हकन्तु िि ईश्वरीय हनदिे र आहश्रत िै। उनके स्वरूप-कमापनुसार ईश्वर उन्हें कमप के हलए प्रेररत करता िै। िे हनत्य और आनन्दस्वरूर् िैं; हकन्तु स्वरूप-कमापनुसार प्राकृत िरीरों ंसे सम्बद्ध िोने के कारण उन्हें दुःख तथा आिागमन के दुष्चक्र में आबद्ध िोना र्डता िै। िब तक कश्मलों ंसे उनकी मुक्ति निीं ंिो िाती, तब तक िे संसार में भटकते रिते िैं और िन्म-मरण की अन्तिीन आिृहत्त िी उनकी हनयहत िो िाती िै। कश्मलों ंसे मुि िोने र उन्हें मोक्ष की प्राक्तप्त िो िाती िै और तब आिा का स्वभािगत आनन्द अहभव्यि िो उठता िै।

मोक्ष से आत्मा ईश्वर के समकक्ष निी ंिो जाता

आिा ईश्वर के समान निीं ंिो िाता। िि केिल उसकी सेिा का अहधकारी िै।

स्वगप में िीिों ंमें तात्तत्त्वक भेद िोते िैं। उस आनन्द-लोक में भी िीिों ंके हिहभन्न िगप तथा स्तर िैं। िे रस्पर समकक्ष निीं ंिोते; हकन्तु उनमें र्ारस्पररक हिसंगहत भी निीं ंिै, क्ोंहक ये सभी ब्रह्मज्ञानी और हनरिद्य िैं।

आत्माओ ंका वगीकरण

मध्व को रामानुि िारा प्रहतर्ाहदत आिाओं ंका हत्रिगीय हिभािन मान्य िै। ये तीन िगप िैं-हनत्य (यथा लक्ष्मी), मुि (यथा दिे, मनुि, ऋहष, सन्त तथा हर्तृगण) और बद्ध। तृतीय िगप (बद्ध) के दो भेद िैं। र्िले िगप में िे लोग आते िैं िो मुक्ति-योग्य िैं और दूसरा िगप उन लोगों ंका िै िो मुक्ति के योग्य निीं ंिैं। हिन लोगों में मुक्ति
की योग्यता निीं ंिै, उन्हें र्ुनः दो िगों में हिभाहित हकया गया िै। र्िले िगप में िे लोग आते िैं िो संसार-चक्र में

अनन्त काल के हलए आबद्ध (**डनत्य-सांसाररण:**) ो चुके रिते ैं और घोर तहमस्रा का अन्धकूर् ी हिनकी हनयहत ै, ि दूसरे गप में आते ैं।

कुछ जीवों का मोक्ष उनकी अन्तहनपहित योग्यता के अनुरूर् स्वरूप-हनधापररत ोता ै और कुछ अन्य भी ऐसे ोते ैं हिनके भाग्य-र्टल र संसार का अन्तीन ररभ्रमण या तमोमय लोक में भी हलहर्बद्ध ो चुका ोता ै। सात्त्विक जीवों को स्वगप प्राप्त ोता ै, रािसिक जीव संसार में चक्रित् भ्रमण करता ै और मोगुणी जीव नरक में हगरता ै।

भक्ति : मुक्ति का साधन

भक्ति मुक्ति का साधन ै। भक्त ी को ईश्वरानुग्रि से मुक्ति प्राप्त ोती ै। भि इस ईश्वरानुग्रि को हिष्णु-सुत्र िायु के माध्यम से ी प्राप्त करते ैं। ईश्वर तक हुँच र्ाने का कोई सुस्पष् मागप नीं ै। उसकी प्राक्तप्त िायु की मध्यस्थता से ी सम्भि ै। भक्ति की तीव्रता के अनुर्ात से ी ईश्वर-कृर्ा की सम्प्राक्तप्त ोती ै।

ईश्वरोर्ासना भगित्कृर्ा की प्राक्तप्त की अहनिायप प्राथहमक आिश्यकता ै। िीित्मा की सुरक्षा उसके इस बोध र हनभपर ै हक ि ईश्वर र आहश्रत तथा उसके हनयन्त्रण में ै। सम्यक् ज्ञान की ररसमाक्तप्त ईश्वरीय प्रेम में ोती ै। भक्ति ईश्वर की महिमा के ज्ञान का ररणाम ै।

अंकन, नामकरण, भजन तथा स्मरण

रीर र भगिान् हिष्णु के प्रतीकों का अंकन, उनके नाम र सुत्र-र्ौत्राहद का नामकरण, उनकी महिमा का गायन और उनके अहिकल स्मरण का अभ्यास उनकी उर्ासना के अंग ैं। मध्य किते ैं- "ईश्वर के स्मरण के दृढ़ अभ्यास से ी मृत्यु के समय तुम्हें उनका अनायास स्मरण ो ायेगा।" ि इस तथ्य के प्रहत संकेत करते ैं हक अितार-ग्रिण के समय ईश्वर ने कोई प्राकृत रीर नीं धारण हकया था। उन्ोंने अर्ने अनुयाहययों को उर्िास-व्रत के कठोरतार्ूिपक र्ालन का हनदेि हदया था।

साधना का अभ्यास

मोक्ष-प्राक्तप्त के हलए हनमपल नैहतक िीिन प्रारक्तम्भक आिश्यकता ै। यहद साधक ईश्वर-साक्षात्कार का इच्छुक ै, तो उसे िेदाध्ययन, इक्तिय-हनग्रि, अनासक्ति तथा र्ूणप आत्म-समर्पण की भािना से सुसम्पन्न रिना चाहिए। त्याग, भक्ति तथा ईश्वर के ध्यान–हनत ज्ञान िारा मुक्ति का मागप प्रिस्त ोता ै। धयन तथा दैिी कृर्ा से भि को ईश्वर की प्रत्यक्ष अिुभूहत ोती ै और ि िन्म-मरण के चक्र से मुि ो ाता ै।

ैतिाद-दिपन के प्रख्यात व्याख्याता श्री मध्वाचायप की ये कुछ मित्त्वर्ूणप हिक्षाएँ ैं।

श्री हनम्बाकप का िैतािैत-दिपन

प्रस्तावना

हनम्बाकापचायप िारा प्रहतर्ाहदत यि दिपन भेदाभेद-दिपन के नाम से भी प्रख्यात िै। इसे उन्ोंनें िी र्ल्लहित-रुक्तष्पत हकया। हनम्बाकप िैष्णि-मतािलम्बी तेलुगु ब्राह्मण थे। इनका िीिन-काल मध्व के र्ूिप तथा रामानुि के र्श्चात् ग्यारििीं ितिताब्दी का माना िाता िै। किा िाता िै हक िे सूयप के अितार थे।

उन्ोंनें ब्रह्मसूत्र र्र 'िेदान्त-र्ाररिातसौरभ' नामक एक संहक्षप्त भाष्य तथा 'दिश्लोकी' नामक ग्रन्थ की रचना की। अर्नें भाष्य में उन्ोंनें ब्रह्मर्ररणामिाद नामक हसद्धान्त को हिकहसत हकया।

हनम्बाकप का मत भास्कर के हिचारों ंसे अत्यहधक प्रभाहित िै। भास्कर का िीिन-काल निीं ितिताब्दी के र्ूिापधप का िै। इन्ोंनें िेदान्त-दिपन की व्याख्या ऐतिैत-मत के आधार र्र की िै। यि हसद्धान्त भास्कर की कोई मौहलक खोि निीं ंथी। इसकी र्ररुहष् वयस-रहचत ब्रह्मसूत्र में उल्लेक्तखत प्राचीन आचायप औडुलोहम िारा इसके र्ूिप िी की िा चुकी थी ।

ईश्वर, आत्मा तथा जगत् भेद में अभेद

हनम्बाकप के मतानुसार ईश्वर का िीि तथा िगत् से भेदाभेद-सम्बन्ध िै। िीि और िगत् ईश्वर से हभन्न िैं, क्ोंहक उनमें िो गुण िैं, िे उन गुणों ंसे हभन्न िैं िो ईश्वर में िै, हकन्तु इसके साथ िी ये र्रस्पर हभन्न भी निीं ंिै, क्ोंहक ईश्वर सिपव्यार्ी िै और ये उस र्र आहश्रत िैं।

हनम्बाकप का दिपन ब्रह्म को र्रम सत्ता मानता िै िो अहितीय िै। िीि और िगत् उसकी िक्ति की आंहिक अहभव्यक्तियााँ िैं।

िीि तथा ब्रह्म आिचेतन िैं। हकन्तु िीि र्ररक्तच्छन्न और ईश्वर अर्ररक्तच्छन्न िै। ईश्वर स्वतन्त्र सत्ता िै। िीि तथा प्रकृहत की सत्ता र्रतन्त्र िै। िीि भोिा, िगत् भोग्य और ब्रह्म सिोर्रर हनयन्ता िै।

िीि और िगत् ईश्वर से हनतान्त हभन्न निीं ंिैं। यहद र्रम सत्ता िैयक्तिक आिा तथा िगत् से हनतान्त हभन्न िो, तो िि सिपव्यार्ी निीं ंिो सकती। इस क्तस्थहत में िि िैयक्तिक आिा और िगत् की भााँहत िी र्ररक्तच्छन्न िो िायेगी और तब उसे उनके हनयंता की संज्ञा निीं ंप्रदान की िा सकेगी। हनम्बाकप के मतानुसार भेद तथा अभेद, दोनी सत्य िैं। िीि और िगत् ब्रह्म से इसहलए हभन्न िैं हक इनके गुण तथा स्वरूर् ब्रह्म के गुण तथा स्वरूर् से हभन्न िैं; हकन्तु इसके साथ िी िे उससे अहभन्न भी िैं, क्ोंहक िे स्वयं-क्तस्थत न िो कर र्ूणपतः ब्रह्म र्र आहश्रत िैं। इस प्रकार का सम्बन्ध सूयप तथा उसकी हकरणों ंऔर अहग्न तथा उसके स्फुहलंगों ंमें र्ाया िाता िै। िीि और िगत् ईश्वर से हभन्न िैं; हकन्तु उनमें िैसा िी घहनष्ठ सम्बन्ध िै िैसा लिरों ंका िल से और रस्सी का उसकी गााँठों ंसे िोता िै। ये दोनों ंब्रह्म से हभन्न भी िैं और अहभन्न भी।

र्रम सिा तथा उसके लक्षण

इस मत के अनुसार ब्रह्म िगत् का हनहमत्त तथा उर्ादान, दोनों ंकारण िै। िि हनगुपण भी िै और सगुण भी; क्ोंहक िि सृहष् में हनःिेष न िो कर इसका अहतक्रमण भी कर िाता िै।

र्रम सिा के चार रूर्

र्रम सत्ता चार रूर्ों ंमें हिद्यमान िै। अर्ने आद्य रूर् में िि अप्रहतबक्तन्धत तथा हनहिपकार र्रम ब्रह्म िै और अर्ने हितीय रूर् में हिश्व का अहधर्हत ईश्वर िै। तृतीय रूर् में उसे िीि अथिा िैयक्तिक आिा के नाम से

अहभहित हकया ि◌ाता ि◌ै और चतुथप रूर् में ि◌ि◌ स्वयं को नामरूर्ात्मक ि◌गत् के रूर् में अहभव्यि करता ि◌ै। दृश्यमान ि◌गत् ब्रह्म का एक अंि◌ि◌ै। इसका ब्रह्म से कोई रृथक् और स्वतन्त्र अक्तस्तत्व निीं ि◌ि◌ै। हिश्व और ब्रह्म के बीच भेदाभेद-सम्बन्ध ि◌ै। ि◌गत् ब्रह्म से हभन्न निीं ि◌ि◌ै।

कृष्ण-सवोर्रर सिा

र्रम सत्ता समस्त दोषों ि◌से रहित ि◌ै। हदव्य दिेधारी इस सत्ता में समस्त मांगहलक गुण हिद्यमान ि◌ैं। ि◌ि◌ सौन्दयप, प्ेरेम, माधुयप तथा लाहलत्य से ओत-प्रोत ि◌ै।

हनम्बाकप र्रम ब्रह्म तथा कृष्ण को अहभन्न मानते ि◌ैं। ि◌ि◌ समस्त मांगहलक गुणों ि◌से सम्पन्न और अिम्मन्यता, अज्ञान, ि◌ासना तथा आसक्ति से मुि ि◌ै। ि◌ासुदिे, संकषपण, प्रद्युम्न और अहनरुद्ध उसके चार स्वरूर् (वूयूि) ि◌ैं। ि◌ि◌ स्वयं को अितारों ि◌के रूर् में प्रकट हकया करता ि◌ै। हनम्बाकप के मतानुसार कृष्ण तथा राधा नारायण तथा लक्ष्मी के रूर् में प्रहतहष्ठत ि◌ैं। राधा गोहर्यों ि◌में प्रमुख ि◌ोने के साथ-साथ भगिान् कृष्ण की र्ाश्वपिहतपनी अथिा ि◌क्ति भी ि◌ैं।

ब्रह्म जगत् का उर्ादान एवां डनडमि कारण डकस प्रकार ि◌ै

ब्रह्म ि◌गत् का उर्ादान एिं हनहमत्त कारण ि◌ै। उसकी सूक्ष्मरूहर्णी हचत्- अहचत् ि◌क्तियााँ स्वयं को सृहष् के रूर् में अहभव्यि करती ि◌ैं; अतः ि◌ि◌ उर्ादान कारण ि◌ै। रुनः ि◌ि◌ ि◌ि◌ि◌ीिाओं ि◌को उनके कमों तथा फलों ि◌के साथ संयुि करता तथा अनुभि-प्राक्तप्त के हलए उनके हलए समुहचत साधनों ि◌की व्यिस्था करता ि◌ै; अतः ि◌ि◌ हनहमत्त कारण ि◌ै।

ब्रह्म को सृहष्-रचना के हलए हकसी बाह्य सामग्री, साधनों ि◌और उर्करणों ि◌की आिश्यकता निीं ि◌ि◌ोती। उसे िाथों ि◌या अन्य हकन्हीं ि◌उर्करणों ि◌की भी आिश्यकता निीं ि◌ि◌ोती। ि◌ि◌ सिपिक्तिमान् तथा अर्ने संकल्प मात्र से सृहष्-रचना में समथप ि◌ै। उसका सत्-संकल्प ि◌ी ि◌गत् के रूर् में र्ररणत ि◌ो ि◌ाता ि◌ै। हिस प्रकार कोई मकडा अर्ने ि◌रीरस्थ तन्तुओं ि◌से ि◌ाला बुन लेता ि◌ै, उसी प्रकार ब्रह्म ने स्वयं से ि◌ी सृहष् की रचना की ि◌ै। उर्हनषदों ि◌की यिी उद्घोषणा ि◌ै। इस प्रकार सृहष् की संरचना में ब्रह्म उर्ादान कारण भी ि◌ै और हनहमत्त कारण भी। सिपिक्तिमान् ि◌ोने के कारण ि◌ि◌ र्ररणमन एिं उसके साथ ि◌ी स्ियं को इससे असम्र्क्त या र्ृ रिने देना रूणपत: उसकी ि◌क्ति में ि◌ै । यि तथ्य उर्हनषदों ि◌तथा ब्रह्मसूत्र ि◌ारा भी समहथपत ि◌ै । ब्रह्म ने अर्ने तात्त्वक स्िरूर् को प्रभाहित रखते हुए स्ियं को ि◌गत के रूर् में र्ररणत हकया ि◌ै । ब्रह्म के स्िरूर् से अन्पभूत रिस्यमयी सिनात्मक ि◌क्ति ि◌ी इसका कारण ि◌ै ।

वर्यआत्मा और समडि आत्मा का र्ारस्परिक सम्वन्ध उ र्ाडधगत भेद तथातास्तत्त्वकएकरूर् ता

ियक्तिक आत्या र्रम सत्ता का एक अंि◌ि◌ै; हकन्तु ि◌ि◌ र्रमिाा से अहभन्न भी ि◌ै । हिस प्रकार एक तरंग समुि का एक अंि◌ि◌ोने के कारण उससे हभन्न और दोनों ि◌के ि◌ल ि◌ोने के कारण उससे अहभन्न ि◌ै, उसी प्रकार ि◌ैयक्तिक आिा र्रमिाा का एक ि◌ोने के कारण उससे हभन्न और दोनों ि◌के हचन्मय-स्वरूर् ि◌ोने के कारण उससे अहभन्न भी ि◌ै। ि◌ैयक्तिक आिा अथापत् ि◌ि◌ी तथा र्रमिाा अथापत् ब्रि के र्ारस्पररक में उर्ाहधगत भेद और तात्त्वक तादात्म्य, दोनों ि◌अन्तहनपहित ि◌ैं। ि◌ि◌ी और ि◌ि भेद स्वरूर्गत न ि◌ो कर मात्रागत ि◌ै। प्रहतभाहसकता के सन्दभप में ि◌ि◌ी ब्रह्म से हकन्तु तत्वतः ि◌ि◌ उससे अहभन्न तथा अहिभाज्य ि◌ै। इसी को भेदाभेद किा गया ि◌ै ।

प्रबल िायु के िारा समिु के उिहेलत िोने र तरंग उठने लगती िै। तरंग समिु एक अं ि िोने र भी उससे हभन्न िै। हकन्तु िायु के िान्त िोने र तरंग भी िान्त िोकर समिु से अहभन्न िो िाती िै। इसी प्रकार एषणाओं ंसे हिकुषि मन इक्तियों–सहित हिषयोन्मुखी िो कर स्वयं में एक हभन्न व्यक्तित्व का आरोर्ण कर बैठता ै। इस अिभि-ग्रस्त र्रक्तच्छन्न िीि को प्रर्ंचाक िगत् के सम्पकप के अनेकहिध अनुभि प्राप्त िोते िैं; हकन्तु एषणाओं ंके उन्मूलन के र्ित् िब स्र्णपतः िान्त िो िाता िै, तब उसके हलए कुछ भी करणीय निीं ंरि िाता और उसकी समस्त िृहत्तयों ंका उर्मन िो िाता िै। इस क्तस्थहत में प्राहतभाहसक िगत् का हनषेध िो िाता िै और र्रक्तच्छन्न आिा अर्रक्तच्छन्न आिा अथापत् ब्रह्म का कार कर लेती िै।

जीव तथा उसके गुण

आिाएँ, असंख्य तथा अणु आकार की िैं। िीि आणहिक एिं ज्ञानस्वरूर् िै। िीि के प्रहत यि अिधारणा िंकर की अिधारणा के अनुरूर् निीं ंिै। हिस स्रूप प्रकाि तथा प्रकाि का स्रोत-दोनों ंिै, उसी प्रकार आिा ज्ञान भी िै और ज्ञाता भी। आिा का अर्ने गुणों ंके साथ धमी-धमप-सम्बन्ध िै। इसे भेदाभेद-सम्बन्ध किते ैं।

अणु आकार का िोते हुए भी िीि अर्ने ज्ञान के सिपव्यार्ी गुणों ंके कारण दैहिक सुख-दुःख का अनुभि करता िै। िि हनत्य िै। सुषुक्तप्त तथा मुक्ति की उितम अिस्था में भी इसका अक्तस्तत्व अकुषुण्ण रिता िै। प्रलय काल में िगत् तथा िैयक्तिक आिाएँ सूक्ष्म रूर् में ईश्वर में हिलीन िो िाती िैं। िन्म-मरण का सम्बन्ध केिल रीर से िै। आिा इससे अप्रभाहित रिती िै।

ैयक्तिक आिा कताप िै। इसमें न तो स्वतन्त्र ज्ञान िै, न स्वतन्त्र कतृपत्व। िैयक्तिक आिाएँ तथा िगत् आि-हनभपर निीं ंिैं। इनका मागपदिपन, धारण तथा हनयमन ईश्वर िारा िोता िै। प्रत्येक आिा ब्रह्म के व्यहष्गत स्वरूर् की एक हकरण िै। िैयक्तिक आिा प्रत्येक अिस्था में आनन्द से सम्बद्ध रिती िै।

जीवो ंकी श्रेडणयाँ

िीिों ंकी दो श्रेहणयाँ िैं। हिनको सिपव्यार्ी अन्तरािा अथापत् र्रमािा का ज्ञान एिं दृश्यमान िागहतक प्रर्ंच तथा ब्रह्म की अहभन्नता का सिपतोभािेन बोध िो चुका िै, िे प्रथम श्रेणी में आते िैं। उनको मुिाा किा िाता िै। िे अज्ञान-रहित िोते िैं। हकन्तु िो केिल इस दृश्यमान िगत् को िी देख र्ाते िैं और हिन्ें नामरूर्ाक िगत् के अहधष्ठान सिपव्यार्ी अन्तरािा अथापत् र्रमािा का ज्ञान निीं ंिै, उनकी गणना हितीय श्रेणी में की िाती िै। इन्ें बद्ध िीि किा िाता िै।

जगत् : ब्रह्म की यथाथप अडभव्यस्ि

हनम्बाकप के अनुसार िगत् एक भ्रान्त प्रतीहत निीं ंिै। यि ईश्वर में अहधहष्ठत सूक्ष्म-रूहर्णी िक्ति का र्रणाम िै।

गित् असत् या भ्राक्तन्त न िो कर ब्रह्म की एक यथाथप अहभव्यक्ति या इसका र्रणाम िै। उसे केिल इसी अथप में असत् किा िा सकता िै हक िि अक्तस्तत्व की ितपमान क्तस्थहत में 'स्वतन्त्र सत्ता-भाि' से िून्य िै और ब्रह्म से हिलग उसका कोई र्ृथक् अक्तस्तत्व निीं ंिै। हिस प्रकार िल से तरंग या बुलबुला हभन्न तथा अहभन्न-दोनों ंिै, उसी प्रकार िगत् भी ब्रह्म से हभन्नाहभन्न िै।

मुख्य तत्त्वों ंकी संख्या तीन िै : (१) अप्रकृहत-इसका आहिभापि आद्य प्रकृहत से निीं ंहुआ िै। यि ईश्वर के हदव्य िरीर का उर्ादान (रामानिु के िब्दों ंमें िुद्ध सत्त्व) तथा उसकी हनत्य हिभूहत की आधार-हभहत्त िै। (२) हत्रगुणिाक प्रकृहत-सत्व, रिस् एिं तमस् से समक्तन्वत यि हत्रगुणिाक तत्त्व िै। (३) काल। ये तीन तत्त्व भी िीिाोओं ंकी भााँहत हनत्य िैं।

हनम्बाकप के अनुसार ब्रह्म की िक्ति िगत् का उर्ादान कारण िै। िक्तिगत र्ररितपन से ब्रह्म की अखण्डता प्रभाहित निीं ंिोती। रामानिु हिसे 'ब्रह्म का िरीर' किते िैं, उसे हनम्बाकप ने 'िक्ति' के नाम से अहभहित हकया िै।

मोक्ष

अहिद्या अनाहद िै। कमप अहिद्या का र्ररणाम िै हिससे िीि की िुहचता आिृत िो िाती िै। ईश्वर की कृर्ा से अहिद्या की हनिृहत्त सम्भि िै।

शुद्ध भस्ति तथा यथाथप ज्ञान मोक्ष के साधन

प्रर्हत्त अथापत् ईश्वर के प्रहत रू्णप आि-समर्पण मोक्ष का साधन िै। िो प्रर्न्न िै, उस र ईश्वर की कृर्ा-िृहष् िोती िै। इस कृर्ा–िृहष् के कारण िि अर्न अिस्था को प्राप्त कर ब्रह्म-साक्षात्कार में समथप िो िाते िैं। ईश्वर उनके भीतर भक्ति का सबार करता िै िो ईश्वर-साक्षात्कार में र्रणत िो िाती िै।

भक्ति के अन्तगपत ब्रह्म का ज्ञान, िीिाा का स्वरूर् तथा ईश्वर-कृर्ा का सुफल अथापत् मुक्ति-ये सभी सहन्नहित िैं। इसके अहतररि इसमें आि से िरीर, इक्तन्दय-समुदाय तथा मन के तादात्म्य की भ्रान्त अिधारणा िैसे प्रहतबन्धकों ंके स्वरूर् का भी सिमिो िै िो ईश्वर-साक्षात्कार में बाधक िैं।

मोक्ष की प्राक्तप्त यथाथप ज्ञान तथा िुद्ध भक्ति से िोती िै। यथाथप ज्ञान से ब्रह्म का सत्य-स्वरूर् अनािृत िो िाता िै और िुद्ध भक्ति ईश्वर के प्रहत रू्णप आि-समर्पण के हलए प्रेररत करती िै। हदव्य भोगों ंके समय िीि अर्नी िैयक्तिक सत्ता को अकुषुण्ण रखने में समथप िै। हकन्तु उसकी इच्छा ब्रह्म के संकल्प की िििहतपनी िै। मोक्ष के समय भी िीि की िैयक्तिकता का हतरोभाि निीं ंिोता। िि इस क्तस्थहत में भी ब्रह्म से हभन्न भी िै और अहभन्न भी। इसी को भेद में अभेद अथापत् भेदाभेद किते िैं।

मोक्ष :र्रमात्मा से एकत्व-बोध की एक स्तथथडत

ब्रह्म िीिाोओं ंके समक्ष स्वयं को अर्ने महिमा-मक्तण्डत आद्य स्वरूर् में उलट करता िै; हकन्तु ऐसा िि हकसी दिे-हिहेष के रूर् में निीं ंकरता। िीि को इस सत्य का बोध िो िाता िै हक िि ब्रह्म का एक अहिभाज्य अंग िै। अर्नी िृद्धािस्था में से अर्ने रृथक् अक्तस्तत्व का िो भान हुआ करता था, िि अब नष् िो िाता िै।

िि अर्ने स्लूप-बन्धनों ंसे मुि िो कर अर्ने सत्य-स्वरूर् अथापत् ब्रह्म में प्रहतहष्ठत िो िाता िै। अब उसे ब्रह्म के साथ अर्ने एकत्व का बोध िो चुका िै। अब संसार में उसका रु्नरागमन निीं ंिोगा; क्योंहक िि िन्म-मरण के चक्र से एक िो चुका िै। ब्रह्म से एकाकता के कारण अब उसे उसकी समकक्षता की प्राक्तप्त िो चुकी िै; हकन्तु िि सृहष् की रचना, उसके र्ालन तथा उसके संिार की िक्ति से िंहचत िै।

श्री िल्लभ का िुद्धैत-दिपन

प्रािना

ल्लिभ को िंकर िारा प्रहतर्ाहदत माया का हसद्धान्त मान्य निीं ंिै। उनके मतानुसार यि िड-चेतन गित् सत्य और ईश्वर का िी सूक्ष्म रूर् िै। यिी कारण िै हक उनके दिपहनक हसद्धान्त को िुद्धैत किा िाता ि। िो लोग िगत् की व्याख्या माया के माध्यम से करते िैं, िे िुिुद्ध अथों में िेदान्ती निीं ंिैं; क्योंहक िे ब्रह्म के अहतरर एक अन्य सत्ता को भी स्वीकार कर लेते िैं। िल्लभ के मान्यतानुसार ब्रह्म माया िैसे तत्त्वों ंसे असम्बद्ध रि कर भी सृहष्-रचना में समथप िै; हकन्तु िंकर माया की िक्ति को हिश्व तथा ब्रह्म के बीच एक संयोिक तत्त्व के रूर् में रेखांहकत करते िैं। अतः िल्लभ के दिपहनक हसद्धान्त को िुद्धैत किा िाता िै। िल्लभ ने ब्रह्मसूत्रों ंर स्व-रहचत अर्ने 'अणुभाष्य' में अर्नी इस दिपहनक प्रणाली का प्रहतर्ादन हकया िै। िंकर के केिलाद्धैत तथा रामानुि के हिहिष्ाद्धैत के हिर्रीत उन्ोंने अर्ने मत को िुद्धैत के नाम से अहभहित हकया। िल्लभ दहक्षण भारत के तेलुगु ब्राह्मण थे। उन्ोंने उत्तर भारत में आ कर हिषुणु स्वामी के दिपहनक मत को हिकहसत हकया। हिषुणु स्वामी का िीिन-काल तेरििीं ंिताब्दी था। उनके मत को ब्रह्मिाद किते िैं।

ल्लिभ का किना िै हक समस्त िगत् यथाथप तथा सूक्ष्म रूर् से ब्रह्म िै। िैयक्तिक आत्माएँ तथा िड गित् ताक्तत्त्वक रूर् से ब्रह्म से अहभन्न िैं। िीि, काल तथा प्रकृहत अथिा माया हनत्य तत्त्व िैं; हकन्तु ब्रह्म से अलग उनकी कोई रृथक् सत्ता निीं ंिै।

ल्लिभ संसृकृत के प्रकाण्ड र्क्तण्डत थे। सिपप्रथम िे मथुरा में आये और तत्पिात् िाराणसी में। उन्ोंने िैष्णि-मत तथा दिपन का प्रचार अत्यन्त लगन तथा उत्साि के साथ हकया। उन्ोंने रािस्थान तथा गुिरात में िैष्णि-मठों ंकी स्थार्ना की। नाथिारा में उनके बहुसंख्यक अनुयायी र्ाये िाते िैं।

वलल्भ की प्रमुि रचनाऍं

ल्लिभ केिल उर्हनषदों,ं भगिद्गीता तथा ब्रह्मसूत्रों ंको िी निीं;ं अहर्तु भागितर्ुराण की प्रामाहणकता को भी स्वीकार करते िैं। 'व्याससूत्रभाष्य (अणुभाष्य), 'िैहमहनसूत्रभास्य', 'भागित-टीका-सुबोहधनी', 'र्ुहष्प्रिाहमयापदा' तथा 'हसद्धान्तरिस्य' उनके प्रमुख ग्रन्थ िैं। उन्ोंने व्रिभाषा में भी कई ग्रन्थों ंकी रचना की िै। उनके मतानुसार िास्त्र िी अक्तन्तम प्रमाण िैं।

उर्ासना तथा भगवतृकृर्ा र बल

ल्लिभ के मत में कृष्ण के रूर् में हिषुणु की उर्ासना िी धमप िै। चैतन्य की उर्ासना-र्द्धहत के उद्भि का स्रोत भी मुख्यतः रामानुि िारा प्रहतर्ाहदत िैष्णि-दिपन िी िै। यि सक्तिदानन्द ईश्वर के सगुण एिं हितकारी स्वरूर् की अिधारणा र केक्तित िै। भगिान् कृष्ण िसिो ब्रह्म िैं। उनका हिग्रि सत्-हचत्-आनन्द से युि िै। उन्ें र्ुरुषोत्तम किा िाता िै।

ल्लिभ के अनुयायी बाल-कृष्ण की उर्ासना करते िैं। उनके प्रहत उनमें िात्सल्य-भाि रिता िै। िल्लभ र्ुहष् तथा भक्ति र अत्यहधक बल देते िैं। िार्ुहष् ईश्वर की िमिती कृर्ा अथिा अनुग्रि िै िो भगित्प्राक्तप्त में भिों ंके हलए सिायक हसद्ध िोती िै।

ईश्वर : एकमात्र सिा

ल्लिभ के अनुसार ईश्वर हनररे्क्ष सत्ता अथिा रुुरुषोत्तम िै। िि रूूणप तथा सक्तिदानन्द िै। िि असीम, हनत्य, सिपव्यारी्, सिपज्ञ तथा सिपिक्तिमान् िै। िि समस्त मांगहलक गुणों ंका आगार िै। शुरुहतयााँ उसे हनगुपण किती िैं; हकनुतु इसका तात्पयप मात्र इतना िी िै हक उसमें साधारण गुण निीं ंिैं।

ईश्वर यथाथप िै। उसके अहतररि अन्य कोई यथाथप सत्ता निीं ंिै। िि एकमात्र यथाथप सत्ता िै। िि िगत् एिं िीिाओं ंका मूल स्रोत िै। िि प्रथम एिं एकमात्र कारण िै। ईश्वर सृहष् का उर्ादान कारण भी िै और हनहमत्त कारण भी। िि मात्र अर्नी इच्छा–िक्ति से सृहष् की रचना करता िै। ब्रह्म स्िेच्छा से स्वयं को िीिाओं ं तथा िगत् के रूर् में प्रकट करता िै; हकनुतु इससे उसके तात्त्त्वक स्वरूर् में कोई हिकार निीं ंआता। अहग्न से सुफुहलंगों ंके सुफुरण की भााँहत अक्षर ब्रह्म (सत्-हचत्-आनन्द) से िागहतक प्रर्ंच का प्रादुभापि िोता िै। ब्रह्म स्रष्ा तथा सृहष्-दोनों ंिै।

ज्ञान तथा कमप-इन दो गुणों ंसे समक्तन्वत ईश्वर कृष्ण का रूर् ग्रिण कर लेता िै। अर्ने भिों ंकी प्रसन्नता के हलए, िि स्वयं को नानाहिध रूर्ों ंमें प्रकट करता िै।

प्राकृत जगत् तथा डमथ्या सांसार

गित् ब्रह्म की अहभव्यक्ति िै। यि ब्रह्म का र्ररणाम तथा उसी के सदृि हनत्य तथा सत्य िै। िड िगत् ब्रह्ममय िै। िगत् भ्रान्त प्रतीहत निीं ंिै। तत्त्वतः यि ब्रह्म से अहभन्न िै।

गित् प्राकृत िै। यि माहयक न िो कर यथाथप िै। यि ईश्वर का िी समहष्गत रूर् िै। हकनुतु संसार का यि क्षणस्थायी प्रर्ंच माहयक िै। िैयक्तिक आत्मा अर्ने चतुहदपक् व्याप्त **'अिं'** तथा **'मम'** की अिधारणा से इसकी सृहष् कर लेती िै। अि-भाि के कारण ईश्वर से हियुि िीि को अर्ना मूल, सत्य तथा हदव्य स्वरूप हिसृमृत िो िाता िै। संसार िीिाा की कल्पना तथा उसके कमप का र्ररणाम िै िो उसके **'अिं'** तथा **'मम'** के चतुहदपक् हक्रयािील रिता िै। अर्ने स्वाथप के कारण िि िीिाओं ंतथा िसुतुर्क हिश्व से भ्राक्तन्तिन्य सम्बन्ध स्थाहर्त कर लेता िै। िि अर्ने हलए स्वयं एक िाल बुन कर उसमें उलझ िाता िै। यि एक भ्रम िै; क्ोंहक यि िाल यथाथप निीं ंिै। िीि िारा रहचत हमथ्या सम्बन्धों ंका यि संसार मात्र माया िै। इस संसार अथिा माया के प्रादुभापि का कारण यि िै हक आत्मा िो ईश्वर से अहिभि िै. स्वयं को एक स्वतन्त्र सत्ता या इकाई के रूर् में स्थाहर्त करने का प्रयत्न करने लगती िै। ईश्वर से हियुि आत्मा, इसका िरीर तथा इसका संसार-ये सभी माहयक िैं। इसी को संसार की संज्ञा प्रदान की गयी िै। यि प्राकृत िगत् से हनतान्त हभन्न िै।

जीव तथा ब्रह्म अडि तथा सुफुडलांग का सम्बन्ध

िीि ब्रह्म का र्ररणाम न िो कर उसके अंि िैं। अहग्न के सुफुहलंग की भााँहत िे उससे स्वतः प्रादुभूपत िोते िैं। ब्रह्म रूूणप तथा िीि अंि िैं; हकनुतु ब्रह्म तथा िीि अथापत् िैयक्तिक आत्मा में कोई तात्त्त्वक भेद निीं ंिै, क्ोंहक दोनों ंके अन्तहनपहित तत्त्वों ंमें समरूर्ता िै। िीि ब्रह्म से अहभन्न और ब्रह्म के िी सदृि यथाथप तथा हनत्य िै।

िीिात्मा अहिद्या से आिृत ब्रह्म निीं ंिै। िि स्वयं ब्रह्म िै; हकनुतु उसका गुण 'आनन्द' 'आच्छाहदत' या 'अव्यि' िै। अचेतन िगत् या िड र्दाथप में भी आनन्द आच्छाहदत या अव्यिािस्था में हिद्यमान रिता िै; हकनुतु

बि आिा को हदव्य आनन्द की तथा िगत् को चेतना तथा हदव्य आनन्द-दोनों ंकी िी सम्प्राक्तप्त िो िाती िै, तब ब्रह्म से इनका भेद समाप्त िो िाता िै।

आिा कताप भी िै और भोिा भी। यि अणु आकार का िै। हकन्तु हिस प्रकार चन्दन अर्नी सुगन्ध से उस स्थान को भी आप्लाहित कर देता िै ििााँ िि स्वयं क्तस्थत निीं ंरिता या हिस प्रकार हकसी कक्ष के एक स्थान-हििेष र्र रखा हुआ दीर् समूपूणप कक्ष को आलोहकत कर देता िै, उसी प्रकार आिा अर्ने ज्ञान-रूर् गुण के कारण समग्र िरीर में व्याप्त रिता िै।

जीवात्माओ ंका वगीकरण

ुद्धि, संसारी तथा मुि-ये िीिािाओं ंके तीन प्रकार िैं। िुद्ध िीिािाओं ंके ऐश्वयापहद हदव्य गुण अहिद्या के कारण महलन निीं ंिोने र्ाते। संसारी िीि अहिद्या या अज्ञान के र्ि में आबद्ध रिते िैं। सूक्ष्म तथा स्थूल िरीर से सम्बन्ध रिने के कारण उन्ें िन्म-मरण का अनुभि प्राप्त हुआ करता िै। मुि िीि हिद्या या ज्ञान के कारण सांसाररक बन्धनों ंसे मुि रिते िैं। िब आिा को मोक्ष प्राप्त िो िाता िै, तब उसे अर्ने अव्यि गुण र्ुनः प्राप्त िो िाते िैं और िि ईश्वर या ब्रह्म के साथ समरूर् िो िाता िै। हिसे सत्य या ब्रह्म का साक्षात्कार िो िाता िै, उसके हलए समग्र िगत् ब्रह्मित् िो िाता िै।

आिाओं ंका िगीकरण एक अन्य हिहध से भी हुआ िै। इस िगीकरण के अनुसार र्ुहष्, मयापदा तथा प्रिाहिकािीिािाओं ंके ये तीन प्रकार िोते िैं। अर्नी उत्पहत्त, प्रकृहत तथा अर्नी अक्तन्तम दिा के सन्दभप में ये र्रस्पर हभन्न िैं; हकन्तु अर्ने र्ारस्पररक िैहभन्य के साथ-साथ ये सभी ईश्वर से िी प्रादुभूपत िोते िैं।

ईश्वर की आनन्द-काया से प्रादुभूपत िोने के कारण र्ुहष् िीि िसो िैं। िे ईश्वर के अंि िोते िैं। ईश्वर अंिी अथापत् र्ूणप इकाई िै। िे भगितूकृर्ा प्राप्त िीि िैं। उनमें दैिी बिी अन्तहनपहित रिते िैं िो अन्ततः सुफल प्रदान करते िैं। ईश्वरानुग्रि से उन्ें अन्ततोगत्वा लक्ष्य-प्राक्तप्त िोती िै। उन्ें भगिान् कृष्ण के घहनष्ठतम नैकट्य एिं उनके प्रहत सख्य-भाि का प्रसाद हमलता िै। भगितूकृर्ा से उनमें भक्ति का हिकास िोता िै। भक्ति स्वयं में िी साधन तथा साध्य हिहिध-रूर्ा िै।

मयापदा िीिों ंका प्रादुभापि िाक् अथापत् ईश्वर-प्रोि िब्द से िोता िै। इनका हनयमन भगितूकृर्ा से न िो कर हिहध-हिधान से िोता िै। सिपप्रथम इनके कमपकाण्डीय अनुष्ठान स्वाथप से उत्प्रेररत िोते िैं; हकन्तु िनैःिनैः उनमें हनष्काम भाि हिकहसत िोता िाता िै और उनके उि अनुष्ठान हनष्काम भाि से िोने लगते िैं। इससे उनकी हचत्तिुक्तद्ध िोती िै हिसके फलस्वरूर् िे उस अक्षर तक र्हुँच िाते िैं िो एक प्रकार से ईश्वर के र्रम धाम का मुख्य िार िै। इसके र्श्चात् उन्ें र्रम धाम की प्राक्तप्त िो िाती िै।

प्रिाहिका िीिों ंका प्रादुभापि ईश्वर के मन से िोता िै। िे सांसाररक िीि िोते िैं। उनका सम्बन्ध न तो भगितूकृर्ा से िोता िै, न हिहध-हिधान से। प्रिाि अथापत् सतत संसरण िी इनकी हनयहत िै।

इस हत्रिगीय हिभािन में एक उर्-हिभािन भी िै हिसके अनुसार िीि समुदाय र्ुहष्-र्ुहष्, र्ुहष्-मयापदा, र्ुहष्-प्रिाहिका, मयापदा-मयापदा, मयापदा-र्ुहष् मयापदा-प्रिाहिका, प्रिाहिका-प्रिाहिका, प्रिाहिका-र्ुहष् तथा प्रिाहिका-मयापदा में हिभि िै।

र्ुहि-मागप अथवा भगवतूकृर्ा का मागप

ीिनिचयाप एिं मोक्ष के सम्बन्ध में िल्लभ िारा उर्हदष् मागप को रु्हष्-मागप- किा िाता िै। मनुष्य का अन्त करण र्ार् से महलन िो गया िै; अतः अर्ने उन्न्यन एिं मोक्ष के हलए उसे भगितूकृर्ा की अत्यहधक आिश्यकता िै। ििी को भगितकृर्ा से रुष् तथा र्ोषण की सम्प्राक्तप्त िोती िै; अतः इसे रु्हष्-मागप किा िाता िै। ीि को भगितूकृर्ा से िी आत्यक्तन्तक मुक्ति की प्राक्तप्त िोती िै। भक्ति मोक्ष-प्राक्तप्त का प्रमुख साधन िै। ज्ञान भी उर्योगी िै। मिारुहष् प्रहतन्यक हिघ्नों ंके व्याघात तथा ईश्वर-प्राक्तप्त में सियक हसद्ध िोती िै। ििेष कृर्ा से प्रादुभूपत भक्ति को रुहष्-भक्ति किते िैं।

चतुडवपध भस्ति

ीिप्रा-रुहष्-भक्ति, मयापदा-रुहष्-भक्ति, रुहष्-रुहष्-भक्ति तथा िुद्धा-रुहष्-भक्ति-रुहष्-भक्ति के ये चार प्रकार िोते िैं। ीिप्रा-भक्ति-मागी िन सांसाररकता में संलग्न रिते हुए भगित्प्राक्तप्त के साधन हिहित कमप करते रिते िैं । सांसाररकता की तुलना सररत-ीिप्रा से की गयी िै। मयापदा-भक्ति उन लोगों ंका मागप िै िो भगितूकृर्ा से उर्ासना के हलए उर्युि ज्ञान की सम्प्राक्तप्त के अहधकारी िो चुके रिते िैं। िे भागित हिहध-हिधान से रूणपतः अहभज्ञ और ज्ञान-प्राक्तप्त के हलए स अर्ने िी प्रयत्नों ंर् हनभपर रिते िैं। रुहष्-भक्ति में भि िन आि-हनग्रि का ीिनि व्यतीत करते िैं। िे भगित्कथा का श्रिण, कीतपन, प्रभु का प्रिक्तस्त-गायन और मन्त्र िर् करते िैं।

शुद्धा-रुडि-भस्ति अथवा भस्ति का डवशुद्धतम रूर्

ुद्धि-रुहष्-भक्ति-मागी भि कीतपन तथा भगिन्नाम का गायन करते िैं। िे ईश्वर का गुणगान करते िैं। इन सबके हलए उनके अन्तगपत एक प्रबल सींग का हिकास िो चुका रिता िै। इस प्रकार की भक्ति स्वयं प्रभु से ीि हनःसृत िोती िै। भिों ंर् प्रभु की कृर्ा-दृहष् के फलस्वरूर् उनमें प्रभु के प्रहत पे्रम का सुफुरण िोता िै और यिी पे्रम पे्रमा-भक्ति में र्रणत िो िाता िै। इस क्तस्थहत में भिों ंको ईश्वर का ज्ञान िोता िै और तब उनमें ईश्वर के प्रहत आसक्ति का उदय िोता िै। तत्पिात् िे ईश्वर-प्राक्तप्त के हलए स्वयं में एक प्रबल सींग हिकहसत कर लेते िैं। यि पे्रम तथा आसक्ति की र्रर्क्िािस्था िै हिसे व्यसन किा िाता िै। यि व्यसन भिों ंको ीिसो आनन्द की सम्प्राक्तप्त की हदिा में उनुमुख करता िै।

बि श्रीकृष्ण के प्रहत भि का पे्रम गिनतम िो िाता िै, तब िि सिपत्र उनका दिपन करने लगता िै। अतः प्रत्येक िसुतु उसके पे्रम का र्ात्र िो िाती िै और प्रत्येक िसुतु के साथ उसका तादात्म्य स्थाहर्त िो िाता िै। गोहर्यों ंको यि भाि प्राप्त था। िे सिपत्र कृष्ण का दिपन करती थीं,ं यिााँ तक हक िे स्वयं को िी कृष्ण समझती थीं।ं यि ीिसो अथाि र्ा-भक्ति िै िो िेदाक्तन्तयों ंअथापत् ज्ञाहनयों ंके ज्ञान के समकक्ष िै। इस प्रकार के भिों ंके हलए समस्त आन्तररक तथा बाह्य िगत् कृष्णमय अथाि रुरुषोत्तममय िो िाता िै। इस भक्ति के फलस्वरूर् भि श्रीकृष्ण की हनत्य लीला में प्रहिष् िो िाता िै।

मुक्ति ीिसो लक्ष्य निीं ंिै। भगिान् कृष्ण की हनत्य सेिा एिं हदव्य िृन्दािन में उनकी लीला में सक्तम्महलत िोना िी चरम लक्ष्य िै। हिनमें व्यसन अथापत् ईश्वर के प्रहत तीव्रतम अनुराग िै, िे चतुहिपध मुक्ति को िेय समझ कर उनका र्रत्याग कर देते िैं। मयापदा-भक्ति-माहगपयों ंको सायुज्य-मुक्ति प्राप्त िोती िै अथापत् िे श्रीकृष्ण के साथ एकाकार िो िाते िैं। रुहष्-भक्ति-मागी भि मुक्ति को अस्वीकार कर श्रीकृष्ण की लीला में सिभागी बनते िैं। उनके हलए श्रीकृष्ण की हनत्य सेिा िी अभीष् िोती िै हिसमें उन्ें आत्यक्तन्तक आनन्द की प्राक्तप्त िोती िै। भि गौ, र्क्षी, िृक्ष तथा नहदयों ंका रूर् ग्रिण कर श्रीकृष्ण के सािचयप–हनत असीम आनन्द में मग्न रिते िैं। श्रीकृष्ण ने िी लीलाएाँ व्रि तथा िृन्दािन में की थीं ंिैसी िी लीलाएाँ ये भी िैं। कुछ भि हदव्य िृन्दािन-धाम में गोर् तथा गोहर्यों ंके रूर् में इन लीलाओं ंमें सक्तम्महलत िोते िैं।

डवडभि प्रकार के मिु जीव

मिु िीी हिहभन्न प्रकार के िोते िैं। इनमें से कुछ सनक की भााँहत मिु िैं, कुछ ईश्वर के नगर में रिते हुए भगितूकृर्ा से मुक्ति प्राप्त करते िैं और कुछ स्वयं में रूूणप प्ेरेम हिकहसत कर ईश्वर का सािचयप-लाभ करते िैं।

श्री चैतन्य का अहचन्त्य-भेदाभेद-दिपन

प्रिावना

श्री चैतन्य अथापत् गौरांगदिे को हनस्सन्ेदिे उत्तर भारत का मिानतम िैष्णि आचायप किा िा सकता िै। उन्िोंनें िैष्णि-धमप को एक नया रूर् प्रदान हकया। उनका िन्म बंगाल में सन् १४८६ में हुआ था।

चैतन्य उिाल-हृदय थे। उन्िोंनें इसलाममतािलक्तम्बयों ंको भी उदारतारूूिपक अर्नाया। उनके हिष्य रिरदास एक मुसलमान फकीर थे। हनत्यानन्द ने चैतन्य-मत का प्रचार-प्रसार सुदूर भूखण्डों ंतक हकया। कनापटक में मिाराा के िंिधर रूर्, सनातन तथा उनके भ्रातृ िीि गोस्वामी, िो िीिाँ से आ कर बंगाल में बस गये थे, संसूकृत के उद्भट हििान् थे। िसुतुतः यिी तीन व्यक्ति चैतन्य-मत के आन्दोलन के िन्मदाता थे। िीि गोस्वामी और बलदिे ने इस मत को दािपहनक आधार प्रदान हकया। िीि गोस्वामीकृत 'सत्सन्दभप' और इस र्र स्वयं-रहचत उनका भाष्य 'सिपसंिाहिदनी' तथा ब्रह्मसूत्र र्र बलदिेकृत 'गोहिन्दभाष्य' इस मत के दािपहनक िास्त्रीय ग्रन्थ िैं। बलदिे का 'प्रमेय-रत्निाली' भी एक लोकहप्रय ग्रन्थ िै। िीि गोस्वामी और बलदिे रामानिु तथा मध्व के हिचारों ंसे अत्यहधक प्रभाहित थे। उन्िें ईश्वर, िीि, माया अथापत् प्रकृहत, िुद्ध सत्त्व तथा काल की सत्ता मान्य िै।

िीि तथा िगत् ईश्वर से रूथक् िोते हुए भी उस र्र आहश्रत िैं। िे न तो उससे अहभन्न िैं, न हभन्न। इनके र्ारस्पररक सम्बन्ध को अहचन्त्य-भेदाभेद किा िाता िै।

चैतन्य ईश्वरत्व के एकत्व र्र बल देते िैं िो लोक-प्रचहलत उर्ासना के हलए प्रयिु अनेक हिग्रिों ंमें सहन्नहित िै।

र्रम सिा

हिष्णु र्रम तत्त्व िै। िि प्ेरेम तथा अनुग्रि का ईश्वर िै। िि अहितीय और सत्-हचत्-आनन्द िै। माया के गुणों ंसे रहित िोने के कारण िि हनगुपण तथा सिपव्यार्ी और सिपज्ञ िोने के कारण सगुण िै। िि िगत् का उर्ादान तथा हनहमत्त कारण िै। िि िगत् का सृष्ा, धारक तथा संिारक िै। अर्नी र्राक्ति के कारण िि िगत् का हनहमत्त कारण तथा अर्रा एिं आद्य िक्ति के कारण उर्ादान कारण िै।

ईश्वर की रिस्यमयी तथा अडचन्त्य शस्तियााँ

हिस प्रकार सूयप में प्रकाि तथा अहग्न में तार् हनहित िै, उसी प्रकार भगिान् कृष्ण में रिस्यमयी तथा अहचन्त्य िक्तियााँ हनहित िैं। इन िक्तियों ंका कोई स्वतन्त्र अक्तस्तत्व निीं ंिै। ये ईश्वराहश्रत िैं। ईश्वर तथा उसकी िक्तियों ंमें भेदाभेद-सम्बन्ध िै। हचत्–िक्ति, िीि–िक्ति तथा माया–िक्ति-ईश्वर की ये तीन िक्तियााँ िैं। इन्िें

क्रमिः अन्तरंग, तटस्थ तथा बहिरंग भी किा िाता िै। हचत्–क्ति तथा मायां–क्ति की मध्यिहतपनी िोने के कारण िीिी–क्ति को तटस्थ–क्ति भी किा िाता िै।

सृडि-प्रडक्रया

िैकुण्ठ का उद्भि हचत्–क्ति से हुआ िै। िैकुण्ठ में किेल िुद्ध सत्त्व िै। यिाँ माया का प्रिेि असम्भि िै और काल यिाँ अर्नी संिारक िक्ति के प्रयोग में सिपथा अक्षम िै।

िीिों की सृहष् ईश्वर की तटस्थ–क्ति अथापत् िीि–क्ति से िोती िै। उसकी िीि–क्ति उसकी स्वरूर्-िक्ति र अिलक्तम्बत िै।

ईश्वर मित् तत्त्व से िगत् की संरचना करता िै। अप्रकट िेदों को प्रकट कर िि ब्रह्मा में इनके ज्ञान को संक्रहमत कर देता िै और सृहष् के अन्य चरणों का भार उसको सौंर् देता िै। िीि गोस्वामी तथा बलदेि के मतानुसार िीि तथा प्रकृहत ईश्वर की िी िक्तियों की अहभव्यक्ति िैं। ईश्वर के दृहष्रात मात्र से माया स्पक्तन्दत िो उठती िै।

डवडभि रूर्ो ंमें अडभव्यि प्रभु

र्रब्रह्म भगिान् कृष्ण स्वयं को ज्ञाहनयों के समक्ष ब्रह्म, योहगयों के समक्ष र्रमािा तथा भिों के समक्ष अर्नी समस्त हिभूहतयों, सौन्दयप, माधुयप एिं समस्त हिहिष्ताओं से यिु भगिान् के रूर् में प्रकट करते िैं। भगिान् कृष्ण अिाओं की अिा तथा िो कुछ भी यिाँ अक्तस्तत्विान् िै, उसके स्वामी िैं। किेल हकसी भि के हलए िी समस्त दैिी गुणों से यिु सिोर्रर सगुण र्रमेश्वर का रूूणप ज्ञान सम्भि िै। भगिान् कृष्ण का रूर् अहितीय िै। िे अनन्त रूर् धारण करते िैं।

मत्स्य, कूमप, िारि, नृहसंि, िामन, गय तथा कृष्ण लीलाितार िै। इनके अहतररि गुणाितार तथा मन्वन्तराितार भी िैं। सनकाहद चार कुमार, नारद, रृथु र्रिुराम, ब्रह्मा और बैकुण्ठ में िेष तथा अनन्त िो रृथ्वी को धारण करते िैं प्रमुख िीिाितार िैं। िे ईश्वर की प्रत्यक्ष िक्ति से सम्पत्र िैं। सनक में ज्ञान–क्ति, नारद में भक्ति–क्ति, ब्रह्मा में सृिन–क्ति, अनन्त में रृथ्वी को धारण करने की िक्ति िेष में भगित्सेिा की िक्ति, रृथु में संसार की र्ोषण–क्ति तथा र्रिुराम में दुष्ों के संिार की िक्ति हनहित िै।

राधा-कृष्ण

र्रम तत्त्व तथा अितार अहभन्न िैं। िैयक्तिक अिा की भाँहत िे अंि निीं िैं। र्रमािा असंख्य रूर् धारण करता िै हिसमें कृष्ण सिपप्रमुख िैं। राधा कृष्ण की अह्लाहदनी–क्ति िैं। र्रमािा समस्त अिाओं का हनयन्ता तथा सिपव्यार्ी िै।

जीव

िीि अणु आकार का िै। िि ईश्वर का हनत्य सेिक िै। ईश्वर से उसका ििी सम्बन्ध िै िो रक्तश्मयों का सूयप से और सुफुहलंग का अर्ने स्रोत अहग्न-र्ुंि से िै हकनुतु सूयप से हिकीणप एिं उसका एक अंि िोने र भी रक्तश्म

सूयप निीं ंिोती। इसी प्रकार िीि िो अर्ने चेतन स्वरूर् के कारण अंतिः ईश्वर-सदृ तथा अर्नी िैहिक प्रकृहत तथा माया के प्रभाि के प्रहत अर्नी संिेदनीलता के कारण उससे हभत्र िै. ईश्वर निीं िै।

िीि माया के िक्ति-र्ा में आबद्ध िै। माया के कारण उसे अर्ने मूलभूत तथा हदव्य स्वरूर् का हिस्मरण िो िाता िै। मायाग्रस्त िीि को स्वभाि भगिान् कृष्ण का ज्ञान निीं ंिो र्ाता। अतः भगिान् कृष्ण ने अर्नी अनन्त करणा के िीभूत िो कर िेदों ंकी सृहष् की िै। िि िास्त्रों,ं गुरु तथा अन्तज्ञापन के माध्यम से स्वयं को िीिों ंके समक्ष प्रकट करता िै और तब िीि को हिश्वास िो िाता िै हक भगिान् कृष्ण उसके स्वामी तथा रक्षक िैं।

भगिान् कृष्ण के प्रहत हदव्य प्रे्रम िारा िीि को ईश्वरानुभूहत िो सकती िै। भक्ति से कमप-हिर्ाक का क्षय िी िोता िै। यि चरम मोक्ष का साधन िै। िीि भक्ति रूूणप ईश्वर के सदृ िो सकता िै; हकनुतु िि उसमें हतरोहित निीं ंिो सकता। िन्म-मरण के चक्र से मुि िो िाता िै।

भस्ति की सांसूकृडत

चैतन्य के उर्देनुसार उत्कट तथा आत्यक्तन्तक प्रे्रम से िी ईश्वर की प्राक्तप्त सम्भि िै। कमप में व्यस्त रिने िाले व्यक्ति की मोक्ष प्राक्तप्त की सम्भािना के सम्बन्ध में रािा के एक मन्त्री िारा हलखे गये एक र्त्र के उत्तर में उन्ोंनें हलखा था- "हिस प्रकार एक भ्रष् नारी अर्ने घर में रिते हुए भी अर्ने िार के हचन्तन में हनरन्तर लीन रिती िै, उसी प्रकार आर् भी अर्ने हिहित कमों को करते हुए मौन-भाि से हनरन्तर भगिान् का ध्यान हकया करें।"

चैतन्य के मतानुसार भक्ति के संस्कार से तन्मयता का उदय िोता िै और तन्मयता की गिनता िी प्रे्रम िै।

रुहच से आसक्ति और आसक्ति से कृष्ण के प्रहत रहत-भाि का आिीरोर्ण िोता िै और िब इस संिग में तीव्रता आती िै, तब यि प्रे्रम का रूर् ग्रिण कर लेता िै। कृष्ण-भक्ति का यि स्थायी स्वरूर् िै।

हिस प्रकार दिी में चीनी, कालीहमचप और कर्ूर हमला देने से अत्यन्त सुस्वादु रसाल तैयार िो िाता िै, उसी प्रकार स्थायी-भाि में रस के हमश्रण से िि हिभाि, अनुभाि, साक्तत्त्वक-भाि तथा व्यहभचारी-भाि में र्ररणत िी िोता िै। आलम्बन तथा उद्दीर्न हिभाि के ये दो प्रकार िैं। आलम्बन कृष्ण आहद से तथा उद्दीर्न उनकी िंिी-ध्वहन आहद से उद्दीप्त िोता िै। मुस्कान, नृत्य तथा संगीत अनुभाि को उद्दीप्त करते िैं। मूच्छाप एिं अन्य संिेदनाएँ साक्तत्त्वक-भाि के अन्तगपत आती िैं। िषप, उल्लास आहद व्यहभचारी-भाि तैंतीस प्रकार के िोते िैं।

िान्ति, दास्य, सख्य, िात्सल्य तथा माधुयप-ये रस के र्ाँच प्रकार िैं। िान्त तथा दास्य रस में रहत क्रमिः प्रे्रम तथा राग के स्तर तक िी र्हुँचती िै और सख्य तथा िात्सल्य अनुराग की क्तस्थहत को प्राप्त कर लेते िैं।

कृष्ण-प्रे्रम : सवोच्च उर्लस्ति

हिस भाि में प्रे्रम का हिकास िो चुका िोता िै, िि कृष्ण के साथ संलार् की क्तस्थहत में रिता िै। सांसाररक दुःख या क्लेि उसे कुहषि निीं ंकर र्ाते। लौहकक हिषयों ंके प्रहत िि आसि निीं ंिोता। िि हनभपय, भौहतक सफलताओं ंके प्रहत हनहलपप्त तथा भगिान् कृष्ण के सामीप्य-लाभ के हलए लालाहयत रिता िै।

कृष्ण-प्रेम िसो प्राप्तव्य और भक्ति इसकी प्राक्तप्त का मुख्य साधन िै। िसुतुतः कृष्ण-प्रेम िीन की सिोर्रर उर्लक्ति ै। इससे भि कृष्ण की हनष्काम सिा में संलग्भ्न िोते और उसके रस के आनन्द का उर्भोग करते िैं। भक्ति कृष्ण-प्राक्तप्त का एकमात्र साधन िै; इसीहलए इसे अहभधेय या साधन कि िोता िै। हिस प्रकार
धन से सुख की प्राक्तप्त िोती िै और सुखोर्भोग से सांसाररक दैन्य स्वयं िी समाप्त िो िाते िैं, उसी प्रकार भक्ति से
कृष्ण-प्रेम का उद्भि िोता िै और इस प्रेमानुभूहत से िन्म-मरण के चक्र से मुक्ति प्राप्त िो िाती िै। दुःख-हनिृहत्त
तथा रुनिपन्म से मुक्ति प्रेम का र्ररणाम निीं ंिै। आत्यक्तन्तक रमणीयता अथापत् मोक्ष प्रेम िारा िी सृहित िै। अतः
इस प्रेम को िसो उर्लक्ति की संज्ञा प्रदान की गयी िै।

श्री चैतन्य के अन्य उर्देश

गुरु-भक्ति श्री चैतन्य के उर्देिों ंकी मूलभूत हिहिष्ता िै। िेदों ंतथा भागितरु्राण आहद ग्रन्थों ंका स्वाध्याय तथा उनकी हिक्षाओं ंको हृदयंगम करना चाहिए। नैहतकता का अभ्यास तथा िीिों ंके प्रहत दया, हिनम्रता, हचत्तिु्िक्तद्ध, ऐहिक इच्छाओं ंसे मुक्ति, िाक्तन्त तथा सत्य िैसे गुणों ंका हिकास अहनिायप िै। िाहत-भेद की भािना उर्ेक्षणीय िै। कोई भी व्यक्ति भगित्कृर्ा का अहधकारी िो सकता िै।

करुणा, सत्य, साधुता, सरलता, दान, सज्जनता, िुिद्धता, हनिैर, हिनम्रता, िाक्तन्त, कोमलता, मैत्री तथा मौन िैसे गुणों ंसे अलंकृत व्यक्ति िैष्णि िोता िै। िि सिप–न-हितैषी तथा भगिान् कृष्ण के ऊर्र आहश्रत िोता ै। िि हनष्काम, हमतािारी तथा िाहनग्री िोता िै। िि षहडररु्ओं ंको हिहित कर चुका िोता िै। िि दूसरों ंका सम्मान करता िै; हकनु्तु उसे दूसरों ंसे सम्मान की अर्ेक्षा निीं ंिोती।

सांकीतपन : रामबाण औषडध

इस कहलयुग में नाम-संकीतपन रामबाण औषहध िै। यि िैहदक यज्ञ के समकक्ष िै। हनष्िािान् यिमान कृष्ण के चरणों ंके दिपन से रु्रसृकृत िोता िै। संकीतपन र्ार्-नाि तथा हिश्व-िहिय की िक्ति प्रदान करता िै। इससे िािा की र्ररिुक्तद्ध और भक्ति की समस्त हिधाओं ंका उद्भि िोता िै। दिे तथा काल इसे प्रहतबक्तन्धत निीं ं कर र्ाते। इसका सुफल सिपत्र प्राप्त िोता िै। यि सिपिक्ति का र्यापय िै।

िरर-नाम-कीतपन उस व्यक्ति िारा िोना चाहिए िो हनहित रूर् से र्द-महदपत दूिप-र्त्र से भी अहधक हिनम्र िो और उस िृक्ष की भााँहत धैयपिान्, सहिष्णु तथा उदार िो िो अर्ने उच्छेद के समय भी क्रन्दन निीं ंकरता और तृहषत िोने र्र भी िल की याचना निीं ंकरता; अहर्तु इसके हिर्रीत िो याचक के समक्ष अर्ने कोष को अनािृत कर देता िै और िो ग्रीष्म तथा िषाप को सिन करते हुए भी िरणागतों ंको ग्रीष्म तथा िषाप से सुरक्षा प्रदान करता िै। िसुतुतः िरर-नाम-संकीतपन का िी अहधकारी िै िो सम्मान का अहधकारी िोते हुए भी समस्त प्राहणयों ं में भगिान् को व्याप्त िान कर सबको सम्माहनत करता िै। इस प्रकार िो कृष्ण का नाम िर् करता िै, उसे कृष्ण के हदव्य प्रेम की सम्प्राक्तप्त िोती िै।

त्रयोदि अधयय

(िै-हसद्धान्त तथा िा-मत)

ीं-हिसद्धान्त-दिपन

प्रावना

हिन ग्रन्थों ंमें िै-मत की ीहिचना की गयी ि, उनमें नकुिली रिुर्त, िै, प्रत्यहभज्ञा तथा रसेश्वर-इन चार सम्प्रदायों ंका उले्लेख हमलता िै।

ीं-हिसद्धान्त दाहक्षणात्यीि-मत का दिपन िै। इसके प्रणयन का श्रे्रेय हकसी एक प्रणेता को र्नीं ंहदया ाा सिकता। यि हसद्धान्त िंकर के अिैत तथा रामानिु के हिहिष्ीाति का मध्यिेती हसद्धान्त िै। अट्ठाइस ििैागम, 'हतरुमूरै' नामक िै-स्तोत्रों ंका संकलन, िै-सन्तों ंके िीन-चररत्र का 'रे्ररयरुराणम्' नामक संकलन, मेकण्डर का 'हिहि-ज्ञान-बोधम्', अरुलनन्दीकृत 'हिहि-ज्ञान-हसक्तद्धयार' तथा उमार्हत की कृहतयाँ इस साहित्य के प्रमुख ग्रन्थ ीं। हितरुमूलर के ग्रन्थ 'हतरुमक्तन्तरम्' की र्नीं र िी िै-हसद्धान्त-दिपन का र्रिती प्रासाद हनहमपत हुआ।

ीं-दिपन के कीय हसद्धान्त के अनुसार ीहि यथाथप सत्ता ि तथा ीहि और िी में तत्त्वगत समानता ीते हुए भी इनमें एकरूर्ता नीं ंि। र्हत, र्ु, रा तथा छत्तीस तत्त्व हिश्व के संघटक तत्त्व ि ो यथाथप ि।

ीं-हिसद्धान्त िदान्त का ीहुिद्ध या र्ररमाहिपत तत्त्व ि। दहक्षण में इसका प्रचार-प्रसार ईसा रूिप भी था। हतरुनेले्वेली और मदुरै ीि-मत के के ि। दहक्षण में ीि-मत आि भी अत्यन्त लोकहप्रय ि। यि िष्णि-मत का हिरोधी ि।

सवोच्च सिा के लक्षण

ीहि को यथाथप सत्ता का िाता ि। ीि असीम चेतना ि। ीि हनत्य, हनरंनि, हनराकार, स्वतन्त्र, सिपव्यार्ी, सिपक्तिमान्, सिपज्ञ, अिय, अनाहद, अकारण, अनिद्य, स्वयंक्तस्थत, हचरस्वतन्त्र, हनत्य िुद्ध तथा रूणप ी। ीि कालातीत ि। ीि भूमा तथा अर्ररहमत प्रज्ञा ि। ीि सिपदोषून्य, सिपकताप और सिपज्ञाता ि।

भगिान् ीहि पे्रम के ईश्वर ि। उनकी कृर्ा अर्ररमेय एिं उनका पे्रम असीम ि। ि रक्षक तथा गुरु ि। ि ीीिाओं ंको भौहतकता की दासता से मुि करने में सतत संलग्भ्न रिते ि। मनुष्य िहत के प्रहत अर्ने उत्कट पे्रम के कारण ि गुरु का रूर् धारण करते ि। उनकी इच्छा ि हक सभी लोग उनका ज्ञान प्राप्त कर आनन्दप्रद ीहि-र्द प्राप्त करें। ि ीीिाओं ंकी गहतहिहध का र्यपिेक्षण करते हुए उनकी प्रगहत में सिायक िोते ि। ि उन्ें र्ा-मुि करते ि।

भगवान् के र्ांच-कृत्य

सृहष्, क्तस्थहत, संिार, हतरोभाि एिं अनुग्रि-भगिान् की र्ंच-हक्रयाएँ ि ो क्रमिः ब्रह्मा, हिष्णु,रुि, मिेश्वर तथा सदाीहि िारा सम्पन्न की िाती ि।

डशव, शस्ति और माया

भगिान् ीहि अर्नी िक्ति के माध्यम से समस्त िगत् में र्रव्याप्त ि। अर्नी िक्ति से ि अर्ने व्यार्ार का सम्पादन करते ि। िक्ति भगिान् ीहि की चेतन िक्ति तथा उनकी दिे ि। कुम्भकार कुम्भ का प्रथम कारण, दण्ड तथा चक्र इसके उर्करण तथा मृहत्तका इसका उर्ादान कारण ि। इसी प्रकार भगिान् ीहि िगत् के आहद कारण, िक्ति इसका उर्करण तथा माया उर्ादान कारण ि।

चैतन्य-स्वरूर् िोने के कारण िक्ति िगत् का उर्ादान कारण नीं ंि। ीहि ीहुिद्ध चेतना ि; हकनुतु प्रकृहत सिपथा अचेतन ि। िक्ति इनके मध्य का संयोिन-सूत्र ि।

िक्ति ीहि का प्रहतहबम्ब ि। इसका कोई स्वतन्त्र अक्तस्तत्व नीं ंि। मनुष्य–िहत के प्रहत अर्ने पे्रम की अहतियता के कारण ीहि यि स्वरूर् धारण करते ि। ि सिप–न-जे्ञेय ि,ं यि उनकी अभीा ि।

शुद्ध माया से तत्त्वो ंका डवकास

ागिहतक हिकास के मूल में ीीिाओं ंका कल्याण हनहित ि। उनकी मुक्ति िी सृहष् की प्रते्येक प्रहक्रया का उदे्देश्य ि। िगत् यथाथप एिं हनत्य ि। िड िगत् तथा आिाएँ भगिान् ीहि की दिे के संघटक तत्त्व ि।

र्ी-हिसद्धान्त सांख्य के र्चीस तत्त्वों ंके हिर्रीत हिश्व का हिश्लेषण छत्तीस तत्त्वों ंमें करता िै। इन छत्तीस तत्त्वों ंका प्रादुभापि माया से िोता िै िो िगत् का उर्ादान कारण िै। िुद्ध माया अर्नी आद्यािस्था में माया िै। इससे र्ाँच िुद्ध तत्र्ी–ीहि-तत्व, िक्ति-तत्व,ीहिसदाीहि तत्वों ंऔर तत्व तथा िुद हिद्या-तत्त्व का प्रादुभापि िोता ी। ीहि इन र्ाँच तत्त्वों ंिारा अर्ने व्यार्ार में प्रिृत िोते िैं।

माया का हिकास सिपप्रथम सूक्ष्म तत्त्वों ंमें और तत्पिात् स्थूल तत्त्वों ंमें िोता िै। ीहि-तत्त्व समग्र चेतना तथा हक्रया का अहधष्ठान िै। यि हनष्कल िै। अर्नी िक्ति के हक्रयािील िोने र ीहि भिोा िो िाते िैं और तब उन्ें सदाीहि और सदाख्य के नाम से अहभहित हकया िाता िै, िो िसुतुतः ीहि से हभन्न निीं ंिै। िुद्धाहिद्या ज्ञान का िेतु िै।

आत्मा को आबद्ध करने वाले र्ाश आणव, कमप तथा माया

आिाएँ (र्ुि) भगिान् ीहि (र्हत) की भााँहत स्वभाितः असीम, सिपव्यार्ी, हनत्य तथा सिपज्ञ िैं; हकनुतु िे अर्ने को सान्त, सीहमत, अल्पज्ञ एिं नश्वर समझाती िैं। ऐसा उनके र्ाि, हिन्ें आणि, कमप तथा माया किते िैं, के कारण िोता िै। इन्ें मल-त्रय किते िैं। आणि िि कषाय िै िो सिपव्यार्ी िी को स्वयं को अणु समझाने के हलए ीहि करता िै। इससे र्रक्तच्छन्नता की भ्रान्त धारणा का प्रादुभापि िोता िै। दूसरा मल या र्ाि कमप िै। आिा अर्नी सीमाओं ंके कारण एक ीहिष रूर् में सहक्रय िो कर िुभ तथा अिुभ कमों का सम्पादन करती िै। कमप के कारण आिा का दिे से संयोग िोता िै। संसार में अर्ने कमों के फल भोगने र्डते िैं। कमप-फल-भोग तथा ज्ञान की सम्प्राक्तप्त के हलए संसार तथा िरीर का अक्तस्तत्व आिश्यक िै। तृतीय मल अथिा र्ाि माया िै िो इन उर्करणों ंकी आरूहतप करती िै। माया िगत् का उर्ादान कारण िै। इससे अनुभि तथा सीहमत ज्ञान की प्राक्तप्त िोती िै।

आिा को दीघप अनुभि से यि ज्ञान िोता िै हक संसार दुःखमय तथा नश्वर िै और उसे ीहित्व या ीहि के साथ एकरूर्ता के माध्यम से िी िाश्वत आनन्द तथा अमरत्व की उर्लक्ति िो सकती िै। तब उसमें िैराग्य तथा हनत्याहनत्य-ीहिेक का हिकास िोता िै।

जीवो ंके तीन क्रम

र्ी-हिसद्धान्त के प्रितपकों ंने िीों ंतथा र्ुिओं ंको तीन श्रेहणयों ंमें हिभाहित हकया िै। इनको हिज्ञानाकल, प्रलयाकल तथा सकल किते िैं। हिज्ञानाकल िीों ंमें केिल आणि मल रिता िै। ये माया तथा कमप की महलनता से मुि िो चुके िोते िैं।

प्रलयाकल िी प्रलय के समय केिल माया से मुि रिते िैं और सकल िीों ंमें आणि, कमप तथा माया- ये तीनों ंमल हिद्यमान रिते िैं। मल-त्रय से केिल िी प्रभाहित िोते िैं। ीहि इनके प्रभाि से सिपथा

असमूपृि रिते िैं। िो इन मलों ंसे मुि िैं, उन्ें ीहित्व तथा ीहि की सादृश्यता की सम्प्राक्तप्त िोती िै और उन्ें हसद्ध अथिा रूणपत्व-प्राप्त िी किा िाता िै।

डशवत्व अथापत् ईश्वर-साक्षात्कार का मागप

यहद आर् मुक्ति प्राप्त करना चािते िैं, तो आर्के हलए सिपर्ामूलामाया, र्ुनिपन्म के कारण-भूत कमप तथा िािी की र्ररक्तच्छन्नता की भ्राक्तन्तिन्य अिधारणा का प्रिाण एक अहनिायप आिश्यकता िै।

कठोर तर्, समुहचत अनुिासन तथा गुरु कृर्ा से र्ाि-त्रय का प्रिाण सम्भि िै; हकन्तु इसके हलए सािपहधक अर्ेहक्षत िै ििि का अनुग्रि। चयाप, हक्रया तथा योग (यम-हनयमाहद) अनुिासन के संघटक तत्त्व िैं। िब साधक चयाप, हक्रया तथा योग का हनष्ठार्ूिपक अभ्यास करता िै, तब उसे ििि-कृर्ा की प्राक्तप्त िोती िै। भगिान् ििि तब उसे उद्बुद्ध करते तथा उसके समक्ष स्वयं को अनािृत करते हुए उसे ज्योहतमपय कर देते िैं। इसके फल-स्वरूर् आिा को ििि के साथ तादात्म्य अथापत् ििित्व का र्ूणप बोध िो िाता िै।

अनुिासन तथा अनुग्रि की र्ररणहत ज्ञान में िोती िै। ज्ञान मुक्ति अथिा हदव्य सौन्दयप की प्राक्तप्त का ििसे साधन िै। कमप तथा अन्य मागप इसके सिायक तथा र्ूरक मात्र िैं।

ििित्व की सम्प्राक्तप्त का अथप िािी का ििि में आत्यक्तन्तक हतरोभाि निीं ंिै। मुि आिा अर्ने र्ृथक् व्यक्तित्व से िंहचत निीं ंिोता। िि भगिान् में अन्तभूपत आिा के रूर् में सतत हिद्यमान रिता िै। भेद के साथ-साथ तात्त्विक एकत्व की मिासम्बोहध िी ििित्व िै। आिा को ििि का स्वरूर् तो प्राप्त िो िाता िै; हकन्तु िि स्वयं ििि निीं ंिो र्ाता।

िक्ति-योग-दिपन

प्रािना

िक्ति-योग-दिपन में ििि सिपव्यार्ी, हनिैयक्तिक तथा हनक्तिय िैं। िे िुद्ध चैतन्य िैं। िक्ति गत्याक्तिका िै। ििि तथा िक्ति प्रकाि तथा हिमिप की भाँहत र्रस्पर संयुि िैं। िक्ति अथिा हिमिप िुद्ध चैतन्य में अन्तभूपत िक्ति िै। हिमिप से भेदमूलक संसार की उत्पहत्त िोती िै। ििि हचत् तथा िक्ति हचद्रूहर्णी िै। ब्रम्िा, हिष्णु तथा ििि िक्ति के आदेिानुसार अर्ने-अर्ने कायप क्रमिः सृहष्, क्तस्थहत तथा संिार में प्रिृत्त िोते िैं। िक्ति इच्छा, ज्ञान तथा हक्रया से सम्पन्न िै। ििि तथा िहक एक िैं। िक्ति-तत्त्व तथा ििि-तत्त्व अहिभाज्य िैं। ििि तथा िक्ति में हनत्य सम्बन्ध िै।

डशव-तत्त्व तथा शक्ति-तत्त्व

र्रम ििि का सृिनािक र्क्ष ििि-तत्त्व िै। िक्ति-तत्त्व ििि का संकल्प िै। िि समस्त िगत् का बीि तथा गभापिय िै।

ििि के दो र्क्ष िैं। प्रथम र्क्ष में िि ििसे तथा अर्ररितपनीय सक्तिदानन्द िै। िि र्रा संहित् िै। हनष्कल ििि हनगुपण ििि िै। िि सृिनािक िक्ति से सम्बद्ध निीं ंिै। अर्ने हितीय र्क्ष में िि िगत् के रूर् में र्ररणत िो िाता िै। इस र्ररितपन का कारण ििि-तत्त्व िै। िक्ति-तत्त्व ब्रह्म का प्रथम गत्यािक स्वरूर् िै। ििि-तत्व तथा िक्ति-तत्त्व र्रस्पर अहिभाज्य िैं।

शक्ति : माया की डनयाडमका

माया अथिा प्रकृहत िक्ति के गभप में क्तस्थत ै। माया िगत् का गभापिय ै। प्रलय-काल में माया प्रच्छन्न रूर् में हिद्यमान रिती ै; हकनुतु सृिन में िि गत्याक ो ोती ै। िक्ति से हनदेहित माया अनेक भौहतक तत्त्वों ं तथा चेतन प्राहणयों ंके भौहतक अिियों ंके रूर् में प्रादुभूपत ोती ै।

िि-दिपन में छत्तीस तत्त्वों ंका उले्लेख ै।

शस्ति : सवपव्यार्ी ब्रह्म का सडक्रय स्वरूर्

िक्ति सिापन्तयापमी ईश्वर का हक्रयिाक स्वरूर् ै। िहि या ब्रह्म अर्रररितपनीय चेतना ै। िक्ति उसका र्रररितपनील क्ष ै ो मन तथा दाथप के रूर् में अहभव्यि ोता ै। ि इस क्ष की मूतप रूर् तथा ागहतक प्रर्ंच की संचाहलका ै। ईश्वरीय लीला उसी के संचालन में सम्पन्न ोती ै। ि िगत् की धाररका ै। यि संसार उसी िसो िक्ति र् आहश्रत ै। ि ब्रह्माण्ड की िननी ै। ि िगन्माता, दुगाप, लक्ष्मी, सरस्वती, काली, चण्डी, चामुण्डी, हत्ररुरसुन्दरी और रािरीश्वरी ै। उसे लहलता, कुण्डहलनी और र्ापती भी किते ैं, हिस प्रकार अहध तथा उसकी दाहिका–िक्ति में कोई भेद निीं ंै, उसी प्रकार ईश्वर तथा उसकी िक्ति में भी कोई भेद निीं ंै।

दिी भगिान् िहि की िक्ति ै। ि िड–िक्ति तथा हचत्–िक्ति ै। प्रकृहत िड–िक्ति और िुद्ध माया हचत्–िक्ति ै। नाद, हबन्दु तथा अन्य तत्त्व िक्ति के हिहभन्न क्षों ंके नाम ैं। िक्ति की प्रकृहत, माया, मिामाया तथा श्रीहिद्या ै। िक्ति स्वयं ी ब्रह्म ै। ि स्वयं को िहि के समक्ष दि मिाहिद्याओं–काली, बगलामुखी, हछन्नमस्ता, भुिनेश्वरी, मातंगी, षोडिी, धूमािती, हत्ररुरसुन्दरी, तारा और भैरिी - के रूर् में अहभव्यि करती ै।

िक्ति हचरूहर्णी ै। ि िहिुद्ध तथा आनन्दमयी चेतना ै। ि प्रकृहत की िननी ै। ि िगज्जननी, सृहष् की उद्भाहिका, महिषासुरमहदपनी, भ्राक्तन्त-नाहिनी, अहिद्या-नाहिनी तथा दाररद्र्य-नाहिनी ै।

िगत् िक्ति की अहभव्यक्ति ै। असंख्य ब्रह्माण्ड हदव्य माता की मात्र चरण-धूहल ैं। उसकी महिमा अर्ार, उसकी हदव्य दीक्तप्त अिणपनीय तथा उसकी मिानता अर्रमेय ै। ि अर्ने हनष्ठािान् भिों ंर कृर्ा–ृहष् करती ै। ि ैयक्तिक िीिा को एक चक्र से दूसरे चक्र तथा एक भूहमका से दूसरी भूहमका की ओर उन्मुख कर उसे सिस्रार में भगिान् िहि के सायुज्य से कृताथप करती ै।

डदव्य माता की अडभव्यस्तियाँ

िसो अहधर्हत स्वयं को िहि के रूर् में तथा अर्नी िक्ति को अर्नी र्ाश्वपिहतपनी दुगाप या काली के रूर् में प्रकट करता ै। हिस प्रकार हत-र्त्नी र्रिार के कुिल-क्षेम के हलए प्रयत्निील रिते ैं, उसी प्रकार भगिान् िहि तथा िक्ति िगत् के र्ररक्षण में संलग्न रिते ैं।

हदव्य माता सिपत्र हत्रगुणमयी ैं। े तीन गुणों–सत्त्व, रिस् और तमस् से सम्पन्न ैं। े स्वयं को इच्छा-िक्ति, हक्रया–िक्ति तथा ज्ञान–िक्ति के रूर् में अहभव्यि करती ैं। े ब्रह्मा के संयोग से ब्रह्मा–िक्ति सरस्वती, हिष्णु के संयोग से हिष्णु–िक्ति लक्ष्मी तथा िहि के संयोग से िहि–िक्ति गौरी ैं। अतः उन्ें हत्ररुरसुन्दरी किा िाता ै।

राधा, दुगाप, लक्ष्मी, सरस्वती और साहित्री-प्रकृहत अथिा दिी के ये र्ाँच आद्य रूर् ैं। दुगाप ने हिष्णु के माध्यम से मधु और कैटभ का, मिालक्ष्मी के रूर् में महिषासुर का और सरस्वती के रूर् में िुम्भ तथा हनिुम्भ का उनके सिकहमपयों ंधूमलोचन, चण्ड, मुण्ड तथा रिबीि सहित संार हकया।

डदव्य माता का धाम

श्रीनगर हदव्य माता हत्ररुरसुन्दरी का धाम िै। महणीर् नामक यि भव्य धाम र्चीस र्कोटों ंसे र्रिृत िै ि र्चीस तत्त्वों ंके प्रतीक िैं। दीक्तप्तमान् हचन्तामहण रिभिन मध्य में क्तस्थत िै। हदव्य माता उस अद्भुत हदव्य भिन में श्रीचक्र-क्तस्थत हबन्दु-र्ीठ में हिरिमान् िैं। उनके हलए एक ऐसा िी धाम ििी के िरीर में भी िैं।

दि िक्ति िै। दि की आिश्यकताएँ िक्ति की आिश्यकताएँ िैं। ििी के सुख-भोग को िक्ति स्वयं उसी के माध्यम से भोगती िै। यि उसके नेत्रों ंसे देखती, उसके िाथों ंसे कायप करती तथा उसकी कणेक्तियों ंसे श्रिण करती िै। िरीर, मन, प्राण, अिं, बुक्तद्ध, अंग तथा सारे व्यार्ार उसी की अहभव्यक्तियाँ िैं।

अक्तखल ब्रह्माण्ड उसका िरीर िै। र्िपत उसकी अक्तस्थयाँ, नहदयाँ उसकी हिराएँ, समुि उसका मूत्रािय, सूयप-चि उसके नेत्र, िायु उसकी साँस तथा अहग्न उसका मुख िै।

देवी की अवणपनीय मडिमा यक्ष की कथा

केनोर्हनषद् में किा गया िै हक दिेता असुरों र्र हिजय प्राप्त कर अिंकार-ग्रस्त िो गये। उन्िोंने भ्राक्तन्ति इस सफलता को अर्नी िी र्ौरुष तथा िक्ति या र्ररणाम मान हलया। भगिान् ने उनके भ्रम-हनिारण के हलए उन्िें एक सीख देने का हनिय हकया। िे उनके समक्ष एक मिाकाय यक्ष, हिसका आहद-अन्त अज्ञेय था, के रूर् में प्रकट हुए। दिेताओं ंने उस यक्ष का र्ररचय प्राप्त करने के हलए उसके र्ास अहग्न को भेिा। यक्ष ने अहग्न से र्ूछा- "तुम्हारा नाम और तुम्हारी िक्ति क्या िै?" अहग्न ने उत्तर हदया- "मैं िातिेदा अहग्न हाँ और अक्तखल ब्रह्माण्ड को एक क्षण में भस्म कर सकता हाँ।" यक्ष ने उसके समक्ष एक िुष्क तृण रख कर उसे िलाने को किा; हकन्तु अहग्न उसे िला निीं ंसका और लक्तज्जत िो कर ििाँ से चला गया। इसके र्िात् दिेताओं ंने उसके र्ास िायु को भेिा। यक्ष ने उससे र्ूछा- "तुम कौन िो और तुम्हारी िक्ति क्या िै?" िायु ने किा- "मैं िायु दिे हाँ और इस ब्रह्माण्ड को एक क्षण में उडा सकता हाँ।" तब यक्ष ने उसके सम्मुख एक िुष्क तृण रखते हुए उसे उडाने की चुनौती दी। हकन्तु, िायु उसे एक इंच भी निीं ंहिला सका और िि भी लक्तज्जत िो कर ििाँ से चला गया। अन्त में स्वयं इि आये हिन्िें देखते िी यक्ष अन्तधापन िो गया।

तत्पिात् इि के सम्मुख उमा प्रकट हुई और उन्िें यक्ष का यथाथप र्ररचय देते हुए किा - "दिेताओं ंको हिजय-श्री अर्नी िक्ति से निीं, ं हदव्य माता की िक्ति से प्राप्त हुई िै। दिेताओं ंकी िक्ति का स्रोत उमा अथिा कृष्ण की सिोदरा िैमिती िै।" िक्ति ज्ञान का मिान् गुरु िै। िि अर्ने भिों ंको ज्ञान से समृद्ध करती िै।

देवताओ ंकी रृष्ठभूडम में देवी

हिष्णु तथा मिादिे िारा अनेक असुरों ंके संिार के मूल में दिेी की िी िक्ति हनहित थी। ब्रह्मा, हिष्णु तथा रुि को अर्ने-अर्ने व्यार्ार क्रमिः सृहष्, र्ोषण तथा संिार में प्रिृत्त िोने के हलए दिेी ने िी िक्ति प्रदान की थी। िि ब्रह्माण्डीय िीिन के केि में क्तस्थत िै। उसकी अिक्तस्थहत िमारे िरीरस्थ मूलाधार चक्र में िै। िि सुषुम्ना के माध्यम से िरीर को समुर्ुहष् प्रदान करती िै। मेरु र्िपत के हिखर र्र हिरािमान हदव्य माता से अक्तखल हिश्व को संिीिनी िक्ति की सम्प्राक्तप्त िोती िै।

माता का सांरक्षक रूर्

ि्ति उस तत्त्व का र्यापय ि ि हिश्व में िमारे अक्तस्तत्व का कारण ि। इस संसार में बालक की समस्त आिश्यकताओं ंकी रूहतप माता ि करती ि। बालक की संक्तिद्ध, उसके हिकास तथा उसके र्ोषण की व्यिस्था ि करती ि। इसी प्रकार ििन की समस्त आिश्यकताओं, ं इसके कायपकलार् तथा इनके कायापन्वयन की क्षमता के हलए िम िगज्जननी ि्ति माता र ि हनभपर ि।

सद्योित ििु के मुख से प्रथम हनःसृत िब्द हप्रय िननी का नाम, माँ ि िोता ि। क्ा कोई ऐसा बालक ि सकता ि िो अर्नी माता िारा प्राप्त सेिने के हलए उसका ऋणी न िो? आर्को माता से ि सुरक्षा, सान्त्वना, िषप तथा र्रचयाप की सम्प्राक्तप्त िोती ि। ििन-र्यपन्त ि आर्की हमत्र, िुभ-हचन्तक, गुरु तथा र्थ-प्रदहिपका ि। समस्त क्तस्त्रयाँ हदव्य माता का प्रकट स्वरूर् ि।

शि-मत के ग्रन्थ

ऋग्वेद का दिीसू, श्रीसू, दुगापसू, भूसू, नीलासू तथा िा-मत का अनुमोदन करने िाले हत्ररुरसुन्दरी उर्हनषद्, सीतोर्हनषद्, दिी उर्हनषद्, सौभाग्योर्हनषद्, सरस्वती उर्हनषद् र्रमेश्वर के मातृस्वरूर् की दृढ़तारूिपक उद्घोषणा करते ि।

शि-मत : एक सावपजनीन मत

ईश्वर को मातृ-रूर् मान कर िो सृहष्कत्री, र्ालनकत्री तथा संिारकत्री ि्ति की उर्ासना करता ि, िि ििा ि।

ि्ति की उर्ासना अथिा ििा-मत संसार के प्राचीनतम तथा सिापहधक व्यार्क धमों में ि। संसार के प्रत्येक व्यक्ति में प्रभुता अथिा ि्ति की अभीिा ि। ि्ति-प्राक्तप्त से ि उल्लहसत िो उठता ि। उसमें दूसरों ं को र्राभूत करने की कामना िाग्रत िो िाती ि। युद्ध प्रभुता की लोलुर्ता के र्रणाम ि। िैज्ञाहनक ििा-मत के अनुयायी ि। िो कोई भी इच्छा–ि्ति के हिकास तथा आकषपक व्यक्तित्व का आकांक्षी ि, िि ििा-मत का अनुयायी ि। िसुतुतः इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति ििामतािलम्बी ि।

आधुहनक िैज्ञाहनकों ंके कथनानुसार प्रत्येक िसुतु मात्र ऊिाप ि िो दािथप के समस्त प्रारूर्ों ंका भौहतक सारतत्त्व ि; हकनुतु ििा-दिपन के अनुयाहययों ंने ऐसा बहुत र्िले ि कि हदया था। इसके साथ-साथ उन्ोंने यि भी कि था हक ऊिाप असीम तथा िसो ि्ति अथापत् ि्ति की सीहमत अहभव्यक्ति ि।

वेदि तथा शस्तिवाद

िि-मत िेद र आधाररत ि। ििा-मत के अनुसार ब्रह्म के अनुभिातीत एिं अतीक्तिय स्वरूर् िसे हिषयों ंका मूल स्रोत तथा प्रमाण िेद ि। ि्तिाद या ििा-दिपन अिैताद का ि एक प्रारूर् ि। ििा-मत िेदान्त ि ि। ििों ंतथा िेदाक्तन्तयों ंकी आध्याक्तिक अनुभूहतयों ंमें साम्य के दिपन िोते ि।

ििि ंकी आस्था ब्रह्म के मूतप एिं अमूतप, दोनों ंरूर्ों ंके प्रहत ि। ब्रह्म हनष्कल अथापत् प्रकृहत से असमूपि ि; हकनुतु इसके साथ ि िि सकल अथापत् प्रकृहत से समूपि भी ि। िेदान्ती भी हनरुर्ाहधक अथापत् माया-हिरहित िुद्ध हनगुपण ब्रह्म के साथ-साथ सोर्ाहधक अथापत् माया-हिहिष् सगुण ब्रह्म के प्रहत भी अर्नी आस्था व्यि करते ि। बात एक ि ि। भेद केिल नाम का ि और यि नामान्तर िब्द–िाल मात्र ि। लोग िब्दों ंके प्रश् र िागुयुद्ध करते, बाल की खाल हनकालते एिं तकप-हितकप तथा बौक्तद्धक व्यायाम का प्रदिपन करते ि। यथाथपतः सारभूत तत्त्व

एक ि◌ी ि◌ै। मृहत्तका ि◌ी सत्य ि◌ै। उससे हनहमपत घटाहद नाम-रूर् मात्र ि◌ैं। हनगुपण ब्रह्म में ि◌क्ति प्रच्छन्न और सगुण ब्रि◌ा में गत्याक ि◌ै।

शस्तियोग-साधना

ि◌ि◌ादि एक हसद्धान्त या दिपन मात्र निीं ◌ं ि◌ै। इसमें साधक की प्रकृहत, क्षमता और उसके हिकास के स्तर के अनुरूर् हनयहमत अनुिासन तथा योग-साधना को एक व्यिक्तस्थत रूर् में प्रसुतुत हकया गया ि◌ै। ि◌क्ति का उन्मेष साधना का प्राप्तव्य ि◌ै। ि◌ि◌ा-साधना कुण्डहलनी की ि◌ाग्रहत एिं ि◌क्ति के साथ ि◌िि के सायुज्य तथा तज्जहनत ि◌िसो आनन्द अथिा हनहिपकल्प समाहध की प्राक्तप्त में साधक को योगदान देती ि◌ै। यि ि◌रीरस्थ ि◌क्तियों ◌ं को ि◌ाग्रत कर ि◌िि–ि◌क्ति-सायुज्य में सियक हसद्ध ि◌ोती ि◌ै। ि◌ब साधक षड्चक्र-भेदन तथा कुण्डहलनी को ि◌ाग्रत करने में समथप ि◌ोता ि◌ै, तब उसे हसक्तद्ध-प्राक्तप्त ि◌ो ि◌ाती ि◌ै। साधन-हिहध साधक की मनोिृहत्तयों ◌ं तथा क्षमता र्र हनभपर ि◌ै।

भाव अथवा प्रवृडि

साधक सोचता ि◌ै हक हिश्व तथा हदव्य माता में एकरूर्ता ि◌ै। ि◌ि स्वयं को ि◌क्ति-स्वरूर् मान कर सिपत्र एकरूर्ता का दिपन करने लगता ि◌ै। उसे हदव्य माँ अथापत् ि◌क्ति तथा ब्रह्म की एकाकता की अनुभूहत ि◌ोने लगती ि◌ै।

उिस्तरीय साधक को अनुभि ि◌ोता ि◌ै हक ि◌ि दिी ि◌ै और दिी उसमें ि◌ै। ि◌ि हकसी बाह्य हिषय की उर्ासना के स्थान र्र स्वयं को दिी मान कर अर्नी ि◌ी उर्ासना करता ि◌ै। ि◌ि कि उठता ि◌ै-**"सो ऽहम्"** अथापत् मैं ि◌ी ि◌ि (दिी) हाँ।

कुण्डडलनी की जागृडत

ि◌क्ति की ि◌ागृहत के हलए ध्यान, भि◌, ि◌र् तथा मन्त्र–ि◌क्ति अहनिायप ि◌ै। र्चास अक्षरों ◌ं की मूतप-स्वरूर्ा माता हिहभन्न चक्रों ◌ं में हिहभन्न अक्षरों ◌ं में हिद्यमान ि◌ै। ि◌ाद्ययन्त्रों ◌ं को ताल-सुर की समस्वरता के साथ बिाने र्र मधुर संगीत की सृहष् ि◌ोती ि◌ै। इसी प्रकार अक्षरों ◌ं के तारों ◌ं र्र क्रहमक आघात से षड्चक्रों ◌ं में हिद्यमान दिी, ि◌ो अक्षरों ◌ं का सारतत्त्व ि◌ै, ि◌ाग्रत ि◌ो ि◌ाती ि◌ै। उसकी ि◌ागृहत के फलस्वरूर् साधक को ि◌िस ि◌ी हसक्तद्ध प्राप्त ि◌ो ि◌ाती ि◌ै। यि किना कहठन ि◌ै हक ि◌ि कब, कैसे और हकस साधक को दिपन देती ि◌ै।

ि◌ि को कुण्डहलनी की सुप्तािस्था में संसार का आभास हुआ करता ि◌ै। उसमें ि◌सुतुगत चेतना हिद्यमान रिती ि◌ै; हकन्तु कुण्डहलनी के ि◌ाग्रत ि◌ोने र्र ि◌ि◌ी सुक्तिस्था को प्राप्त ि◌ो ि◌ाता ि◌ै। उसकी ि◌ागहतक चेतना सि ि◌ि ि◌ाती ि◌ै और ि◌ि सुर्ार के साथ तादात्तय-सम्बन्ध स्थाहर्त कर लेता ि◌ै। समाहधस्थ साधक के ि◌रीर का र्ररक्षण सिसार में ि◌िि–ि◌क्ति-सायुज्य से हनःसृत अमृत से ि◌ोता ि◌ै।

र्शु-भाव तथा डदव्य भाव

स्त्री के साथ ि◌ारीररक सम्बन्ध स्थूल मैथुन ि◌ै। इसका कारण र्िु-भि◌ अथापत् र्ाहिक प्रिृहत्त ि◌ै। हनहिपकल्प समाहध में माँ कुण्डहलनी ि◌क्ति सिस्रार में ि◌िि के साथ िूर् ि◌ो ि◌ाती ि◌ै। यिी यथाथप मैथुन अथापत्

आनन्दमय सायुज्य ि ि ो हदव्य भिा की र्रणहत ि ै। सत्संग, गुरु-सेिा, त्याग, ि ैराग्य, ि ि ेक, ि ि र् तथा ध्यान के माध्यम से रिु-भिा से हदव्य भिा की ओर आरोिण आर्की अहनिायप आिश्यकता ि ै।

गुरु के डदशा-डनदेश तथा दैवी कृर्ा की अर्ररिायपता

ि क्ति-योग-साधना हकसी हसद्ध गुरु के हदशा-हनदेश में रूणप तथा तत्परता के साथ हिहधरूिपक करनी चाहिए। ि क्ति-साधना के हलए गुरु आिश्यक ि ै। ि े साधक को दीहक्षत कर उसमें हदव्य ि क्ति का संचार करते ि ैं।

दिेी कृर्ा से ि ंहचत हकसी भी व्यक्ति के हलए मानहसक तथा ि ागहतक प्रर्ंच-रि से मुि ि ोना असम्भि ि ै। माया के बन्धन को हिक्तच्छन्न करना अत्यन्त दुष्कर ि ै। यहद आर् ि क्ति की उर्ासना हदव्य माता के रूर् में करते ि ैं, तो आर् उसके अनुग्रि तथा आहिष से प्रकृहत से अत्यन्त सरलतारूिपक असमृपि ि ो सकते ि ैं। ि ि आर्के मागप के समस्त व्याघातों ंको हिनष् कर आर्को सुरहक्षत रूर् में अन्तिीन आनन्द के ज्योहतमपय लोक में र्हुँचा देगी, हिसके फल-स्वरूर् आर् रूणपतः रि-मुि ि ो ि ायेंगे। ि ब ि ि प्रसन्न ि ो कर आर्को अर्नी कृर्ा से कृतकृत्य करेगी, तभी आर्को इस भयिा भि-बन्धन से मुक्ति प्राप्त ि ो सकेगी।

शस्ति का ज्ञान मुस्ति की ओर उन्मुि करता ि ै

ि क्ति के ज्ञान से मुक्ति प्राप्त ि ोती ि ै। ि ि दिेी से किते ि ैं: "**शस्तिज्ञानां डवना देडव डनवापणां नैव जायते-** ि े दिेी, ि क्ति के ज्ञान के हबना मुक्ति की सम्प्राक्तप्त असम्भि ि ै।" मायाग्रस्त ि ि ी स्वयं को कताप तथा भोिा मान कर ि रीर से अर्ना तादात्म्य स्थाहर्त कर लेता ि ै। ि क्ति के अनुग्रि तथा साधना अथापत् आि-संसृकहत के माध्यम से ि ि ीिा स्वयं को सिप-रि-मुि कर आध्याक्तिक अन्तदृपहष् प्राप्त करता और अर्ने को सिोर्रर सत्ता में हिलीन कर देता ि ै।

दिेी की कृर्ा की प्राक्तप्त के हलए उसकी उर्ासना, उत्कट आस्था, रूणप भक्ति तथा आि-समर्पण आर्के हलए सिायक हसद्ध ि ोंगे। उसकी कृर्ा से ि ी आर्को उस ि ाश्वत सत्ता का ज्ञान प्राप्त ि ो सकता ि ै।

ि गज्जननी हत्ररुरसुन्दरी की ि य ि ो ! ि ि ी रािरािेश्वरी तथा लहलतादिेी ि ैं। आर् सबको उनका आहिष प्राप्त ि ो! आर् सब ि क्ति अथापत् ि गज्जननी का अनुग्रि प्राप्त कर आत्यक्तन्तक मुक्ति के अन्तिीन आनन्द का रसास्वादन करें!

चतुदपि अध्याय

उर्सांरि

मनुष्य अर्नी हदव्य प्रकृहत को हिसूमृत कर चुका िै। स्वाथप, व्यसन तथा लोभ के कारण िि अधोगहत को प्राप्त िो चुका िै। प्रे्रेम तथा घृणा के अन्तिपन्द ने उसे र्थ-भ्रान्त कर हदया िै।

हत्रगुण-सारे्क्ष यि संसार संघषप तथा कलि का युद्ध-क्षेत्र िै। यिााँ िुभ-अिुभ, सुर-असुर तथा सत्त्व-तमस् में हनरन्तर संघषप चल रिा िै। अतः िन-संगठन ितपमान युग की सिोर्रर मााँग बन गया िै। संगठन में िमारी िक्ति हनहित िै। लोगों ंको अर्ने तुच्छ हििादों ंका र्ररत्याग कर राष्ट्र तथा हिश्व के िक्ति-संधिपन के हलए मानहसक, िाहदपक तथा आक्तिक एकता के सूत्र में सम्बद्ध िो िाना चाहिए।

एकता: एक तात्काहलक आिश्यकता

हमत्रो, आर् सब िक्तििीन िैं। आर् लोगों ंमें न एकता िै, न संगठन। नदी के हकनारे हबखरे हुए कंकडों ं की भााँहत आर् लोग भी हबखरे हुए िैं। यिााँ असंख्य उर्िाहतयााँ एिं अगहणत सम्प्रदाय तथा मत-मतान्तर िैं। दिे की िन-संख्या में इनका बाहुल्य आर् लोगों ंके हलए सिायक हसद्ध निीं ंिोगा। अहधकांि लोग स्वाथी िैं। उनमें सेिा तथा आि-बहलदान की भािना निीं ंिै। यि एक िोचनीय क्तस्थहत िै। संगठन से िी आर्की या हकसी अन्य राष्ट्र की िक्ति तथा सुरक्षा सम्भि िै।

हमत्रो, आर् लोग हसकता तथा र्ारद-कणों ंकी भााँहत इतस्ततः हबखरे हुए िैं। सम्बद्धता से िी आर् लोगों ं को आि-रक्षा तथा दिे के कल्याण के हलए समुहचत िक्ति प्राप्त िो सकेगी। संगठन में आर् लोगों ंका उत्थान तथा हिभािन में र्तन हनहित िै। आाँखें खोहलए और िैहथल्य, समूमूढ़ता तथा उदासीनता का र्ररत्याग कीहिए। संगहठत िो कर कमप करने के हलए आर् लोगों ंका आह्वान िो रिा िै। एक क्षण भी प्रतीक्षा मत कीहिए। उहठए और स्विालम्बी िो िाइए।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई-आर् ो भी ों, ं अर्ने मत के प्रहत हनष्कर्ट भि से आस्थिान् रहिए। अर्नी जाति को प्रेमाक्तप्त से उद्दीप्त कीहिए। कहटबद्ध ो कर अर्नी िाि में िक्ति का संचार कीहिए और एकि ो िाइए।

क्या आर्को एक िृद्ध और उसके लकहडयों ंके गट्ठर की किानी याद ै? उसके रुत्र उस रूरे गडर को तो तोड र्ाने में असमथप रिे; हकनु्तु एक-एक लकडी के उसके टुकडे-टुकडे कर हदये। इसी प्रकार संगहठत ो कर आर् लोग भी ििक्तिाली और अिेय बन सकते ैं। आर् लोगों ंमें अर्ने कृत्य से लोगों ंको चमत्कृत कर देने की िक्ति ै।

आर् लोग अर्ना सिपस्व बहलदान करने के हलए उद्यत ो िाइए। आर् लोग अर्नी िाणी और अर्नी आकांक्षाओं ंमें समस्वरता की सृहष् कीहिए, एकता के सूत्र में रूणपतः आबद्ध ो िाइए और अर्ने धमप के प्रहत स्वयं में अरररहचत प्रेम िाग्रत कीहिए। आर्का हृदय प्रेम की ज्वाला से हनरन्तर प्रोज्ज्वल रिना चाहिए। सबको अर्ना प्यार दीहिए। प्रेम से मिान् कोई धमप निीं ं ै।

धमप की सेिा का सुयोग्य अहधकारी कौन ै?

धमप-सेिा के आकांक्षी िनों ंको सेिा, दया, सरलता, सहिषुणुता, अनुकूलन की िक्ति, आत्म-हनग्रि, हिश्व-प्रेम, समदृहष्, हिनम्रता, मानहसक सनु्तुलन, सत्य, धैयप, िाक्तन्त, क्षमा, आहद आहद गुणों ंसे सम्पन्न िोना चाहिए। उनके हलए इन गुणों ंको हिकहसत करते रिना आिश्यक ै। उन्ें कमपयोग का ज्ञान िोना चाहिए। उनके हलए गीता के हितीय तथा तृतीय अध्याय का रुनः रुनः अध्ययन आिश्यक ै। उनमें कमप-फल की फलाि निीं ं िोनी चाहिए। उन्ें अर्ने समस्त कमप भगिान् को अहर्पत कर देने चाहिए। उन्ें कतृपत्व-भाि से सिपथा मुि रिना चाहिए। उन्ें इस सत्य से सुरररहचत ो िाना चाहिए हक भगिान् ी उनके माध्यम से कमप कर रिा ै। तभी उनकी हचत्त-िुक्तद्ध सम्भि ै। ईश्वर समि का मूलाधार ै। यि िगत् उसी र अहधहष्ठत ै। उसके हबना कोई भी अणु गहतिील निीं ं ो सकता। िमारी क्तस्थहत, िमारी गहत और िमारा अक्तस्तत्व उसी र हनभपर ै। ो युिक अर्ना िीिन धमप की सेिा में उत्सगप कर देना चािते ैं, उनके हलए ब्रह्मचयप व्रत का र्ालन अत्यािश्यक ै। इसके फल-स्वरूर् धमप की सेिा समुहचत हिहध से ो सकेगी और युिक भी स्वाथपरता से मुि रि सकेंगे। भगिान् को नूतन रुष्पों ंके साथ-साथ स्वस्थ, सबल तथा हनष्कलुष िरीर एिं मन भी अहर्पत करना चाहिए।

आर् रूछ सकते ैं-"मुझे कमपयोग तथा आत्म-हनग्रि का अभ्यास क्यों ंकरना चाहिए? मैं अर्ने अिंकार को हिनष् क्यों ंकरूँ? मैं स्वयं में त्याग तथा िैराग्य के भाि का हिकास क्यों ंकरूँ? मुझे मन को हनयक्तन्त्रत क्यों ं करना चाहिए?" इन प्रश्नों ंके उत्तर में मुझे यिी किना ै हक इससे आर्को स्वातन्त्र्य तथा रूणपता की सम्प्राक्तप्त में योगदान प्राप्त िोगा और आर्को कष्, दुःख तथा मृत्युु से मुक्ति प्राप्त िोगी।

हिक्षा तथा राष्ट्र-हनमापण

िमारे सामने मिान् आदिप की सम्प्राक्तप्त का लक्ष्य ै। हकनु्तु ऋहषयों ंतथा सन्तों ंकी र्ािन भूहम भारत आि भी अज्ञान के र्ंक से ग्रस्त ै। िनसंख्या का अहधकांि हनरक्षर ै। प्राध्यार्कों, ं अध्यार्कों ंतथा हिद्याहथपयों ंको अिकाि के समय गाँिों ंमें िा कर लोगों ंमें हिक्षा का प्रसार करना चाहिए। इन्ें इनके हलए राहत्र-र्ाठिालाओं ं की व्यिस्था करनी चाहिए। आहथपक दृहष् से सम्पन्न व्यक्तियों ंको चाहिए हक िे इस कायप मैं अहधकाहधक सिायता

और सियोग दें। अमेररका तथा यूरोर् से भारत की तुलना कीहिए। हकसी भी सभ्य दिे की अरे्क्षा भारत में हनरक्षरों ंकी संख्या अहधक िै।

आध्यास्त्तमक मूल्यग्रिाडवक डशक्षा का आधार

युिकों ंतथा युिहतयों ंके हलए राष्रीय हिद्यालयों, ं मिाहिद्यालयों ंऔर हिश्वहिद्यालयों ंकी स्थार्ना एक अहनिायप आिश्यकता िै। बालक-बाहलकाओं ंके हलए उर्युि हिक्षा की व्यिस्था िोनी चाहिए। राष्रीय भािना को इसी हिहध से िीहित रखा िा सकेगा। िो हिक्षा आर्को सत्य तथा धमापचरण के मागप र्र अग्रसर करती िै, िो आर्के चररत्र के रूर्ान्तरण में समथप िै, िो स्वातन्त्र्य, रूणपता तथा आिज्ञान की प्राक्तप्त में आर्की सिायका हसद्ध िोती िै और इसके साथ िी िो आर्को हनष्कर्ट िीहिकोर्ापिन के योग्य बनाती िै, उसी को आदिप हिक्षा किा िा सकता िै।

शरीर-डवज्ञान का मित्त्व

दिे के कोने-कोने में सिेा दलों, ं सभा-समहहतयों ंतथा व्यायामिालाओं ंकी स्थार्ना िोनी चाहिए। उनका संगठन समुहचत हिहध से िोना चाहिए। इन संस्थाओं ंकी अकृहत्रम सिेा आर्का कतपव्य िै। इससे आर्के अन्तगपत हनष्कलुष भािनाएँ हिकहसत िोंगी और िीघ्र िी आर्का हृदय हििुद्धता को प्राप्त िो िायेगा।

संसार को स्वस्थ माताओं ंतथा स्वस्थ बालक-बाहलकाओं ंकी आिश्यकता िै। हकन्तु, आिकल िम भारत में क्या देख रिे िैं? भारत-भूहम ने भीष्म, िोण, भीम, अिुपन, अश्वत्थामा, कृर्ाचायप, र्रिुराम तथा असंख्य िीर योद्धाओं ंको िन्म हदया िै। यि भूहम अदम्य सािस, अहितीय िैयप तथा अप्रहतम िक्ति से सम्पन्न अगहणत रिरूत सामन्तों ंकी िननी रिी िै; हकन्तु आि यि ऐसे नर्ुंसकों ंका िास-स्थान बन कर रि गयी िै िो अर्ने भरण-र्ोषण के हलए ितर्-त बाह्य तत्त्वों ंके मुखार्ेक्षी िैं। इन लोगों ंको कहतर्य उन िीर नायकों ंएिं मेिािी मिार्ुरुषों ंका अनुकरण करना चाहिए िो आि भी भारत की मुकुटमहण िैं। भारत को नैहतक तथा आध्याक्तिक गुणों ंसे सम्पन्न ऐसे असंख्य िीर सैहनकों ंकी आिश्यकता िै हिनमें र्ंच-सद्गुण-अहिंसा, सत्य, असे्तेय, ब्रह्मचयप तथा अर्ररग्रि-हिद्यमान िैं। िो लोग उि गुणों ंसे सम्पन्न िोने के साथ-साथ स्वस्थ, सबल तथा आिहिद् िैं, ििी लोग सब लोगों ंकी िास्तहिक स्वतन्त्रता की सुरक्षा में समथप िो सकते िैं।

बाल-डववाि : एक सामाडजक अडभशार्

बाल-हििाि एक मिान् सामाहिक अहभिार् िै। इसके र्ररणाम-स्वरूर् बालक िी बालक का हर्ता बन िाता िै। फलतः भारत क्रिकाय व्यक्तियों ंका दिे िो गया िै। हििीन-यार्न की उिर हिहधयों ंसे अहभज्ञ िो कर बाल-हििाि की प्रथा को समाप्त कर देना चाहिए।

कतपव्य तथा अनुशासन र्र बल की आवश्यकता

भौहतक िरीर संसार का सिापहधक आियपप्रद यन्त्र िै। इसका संगठन हिहभन्न प्रणाहलयों ंतथा अियिों ंिारा हुआ िै। इन प्रणाहलयों ंतथा अियिों ंकी समस्वरता एिं समुर्युहष्ट र्र िी आर्का उत्तम स्वास्थ्य अिलक्तम्बत िै। यहद इनमें से एक भी प्रणाली या एक भी अिियि हिकृत िो िाता िै, तो असामंिस्य की क्तस्थहत उत्पन्न िो िाती िै और आर् रोगग्रस्त िो िाते िैं। इसके र्ररणाम स्वरूर् एक दुिक्र की सृहष्ट िो िाती िै। इसी प्रकार एक समाि या राष्र का हनमापण हिहभन्न समुदायों ंतथा व्यक्तियों ंसे िोता िै। प्रत्ेयेक व्यक्ति को अर्ना कतपव्य र्ालन समुहचत

हिहध से करना चाहिए। अर्ने कतपव्य-र्ालन के हलए उसका स्वस्थ तथा सबल िोना हनतान्त आिश्यक िै। इसके अभाि में समाि या राष्ट्र िीर्यिीन िो कर र्तन और अधोगहत को प्राप्त िो िायेगा।

केिल हकिोर-सुलभ उत्साि से कुछ निीं िोगा। इससे हकसी उद्देश्य की रूहतप असम्भि िै। आर् लोगों में अकृहत्रम प्रेम की प्राण-प्रहतष्ठा अत्याियक िै। आर्की नस-नस में िहुद्ध प्रेम का स्पन्दन िोना चाहिए। यहद आर्में इस प्रिृहत्त का अभाि िै, तो आर्को इसे मानिता की सेिा के माध्यम से चरम सीमा तक हिकहसत करना िोगा। आर्को उन मिान् साधु-सन्तों के िीिन-चररत्र का र्ुनः र्ुनः अध्ययन करना चाहिए हिन्िोंने धमप के हलए अर्ना िीिन अहर्पत कर हदया था। आर् कुछ हदनों के हलए हकसी आचायप की िरण में िाइए। ििााँ रि कर आर् उनका आदर-सत्कार तथा आदेि-र्ालन कीहिए। यहद प्रत्येक व्यहक्त नेता बन कर नेतृत्व-ग्रिण करना चािेगा, तो आन्दोलन समाप्त िो िायेगा। सेिा तथा आज्ञा-र्ालन के माध्यम से आर् धमप और समाि की सेिा सम्यक् हिहध से कर सकेंगे।

औद्योडगक डवकास तथा आडथपक स्वावलम्बन

स्विेिी िस्तुओं का प्रयोग कर औद्योहगक हिकास का र्थ प्रिस्त कीहिए। इससे िमें आहथपक स्वतन्त्रता प्राप्त िोगी िो िमारे हलए एक अहनिायप आिश्यकता िै।

ििािोत्सि तथा अन्य समारोिों में धन का अर्व्यय हकया िाता िै। इस धन को बचा कर इसका उर्योग राष्ट्र-हनमापण में कीहिए। इस हदिा में हुए एक-एक र्ैसे के उर्योग को समुहचत व्यय किा िायेगा। सामाहिक रूहढ़यों का दास मत बहनए। ये प्रगहत के मागप में अिरोध उत्र्न्न करती िैं हिससे राष्ट्र िीर्यिीन िोता िै।

िमारे युिा स्नातकों को उद्योग तथा कृहष के क्षेत्र को नगण्य निीं समझना चाहिए। उन्िें अर्नी कृहष की देख-रेख करते हुए इसकी उत्पादन-िहक्त में िृहद्ध करनी चाहिए। इस हदिा में करने को बहुत कुछ िै। इससे िे स्वतन्त्र रूर् से िीहिकोर्ािपन कर सकते िैं। इसके अहतररक्त िे लोगों को स्वास्थ्यिधपक िहुद्ध दूध-मक्खन तथा खाद्यान्न की आर्ूहतप कर र्यापप्त मात्रा में धनोर्ािपन भी कर सकते िैं।

श्रमसाध्य सडक्रय जीवन तथा सिन-शस्ति से डनःसृत िोने वाली शस्ति

धैयपिील बहनए। दृढ़तार्ूिपक श्रम में संलग्न िो िाइए। कुछ ऐसा करते रहिए िो व्याििाररक िो। सफलता का रिस्य इसी में हनहित िै। अथपिीन प्रलार् से कोई लाभ निीं। प्रत्येक िुभ हिचार हक्रयाहन्ित कर दीहिए। मंच र्र भाषण दे देने मात्र से क्षहणक ििािािी तथा अथपिीन उत्साि के अहतररक्त और कुछ भी िाथ निीं आयेगा। इस प्रकार का अहभयान अहधक लाभप्रद निीं िोता। िस्तुओं को सम्यक् हिहध से संयोहित कीहिए।

िीिन में सिनिीलता को स्थान दीहिए; अर्मान, अभाि तथा कष्ट सिन कीहिए; िस्त्र-प्रक्षालन कीहिए; लकहडयााँ काहटए तथा र्ानी लाया कीहिए। िारीररक श्रम आिश्यक िै। अर्ने िरीर तथा इसकी मांस-र्ेहियों को सुदृढ़ बनाइए, दण्ड-बैठक कीहिए. मल्लयुद्ध तथा आसन-प्राणायाम कीहिए, मुक्त िायु में दौड लगाइए और िारीररक िहक्त तथा स्वास्थ्य की रक्षा करते रहिए। सरल तथा नैसहगपक िीिन-यार्न कीहिए, िीयप की रक्षा कीहिए, ििाहित िोते हुए भी ब्रह्मचयप व्रत का र्ालन कीहिए और इहन्िय-हनग्रि का र्ाठ र्हढ़ए।

हिलास तथा ऐहिक सुख अहभिार् िैं। इनसे आर्की िहक्त क्षीण िोगी। प्रहतहदन तीन या चार मील दौड लगाइए। युिा र्ीढ़ी की दिा िोचनीय िै। िे आधा मील भी निीं दौड सकते। उनका स्वास्थ्य सन्तोषिनक निीं िै। िे रक्ताभाि, अिीणप, कोष्ठबद्धता, दौबपल्य आहद रोगों से ग्रस्त िैं। हिर्हत्त के समय िे अर्ने र्ररिार की रक्षा निीं कर सकते। िे िीर्यिीन, भीरु तथा र्ुंसत्विीन िो चुके िैं। क्या यि र्ररहस्थहत िोचनीय निीं िै?

अर्ने उत्तरदाहयत्व को समहझए। कष् तथा कहठनाइयों ंसे िूझते हुए सुदृढ़ रि कर िीिन-यार्न कीहिए। सािसी तथा प्रसन्नहचत्त बने रहिए। अमत्यप आिा के हनयहमत ध्यान के माध्यम से अर्ने अन्ततपम से िक्ति तथा सािस प्राप्त कीहिए। एकान्त में बैठ कर कुछ समय के हलए अर्ने भीतर झााँहकए। हिलास तथा अकमपण्यता को हतलांहिल दे डाहलए। कठोर श्रम कीहिए और िहिय-माला धारण कर बािर आइए। मिान् रुरुषों ंने धमप की रक्षा तथा सन्मागप र र अहिचहलत बने रिने के हलए अनेक कष् सिन हकये िैं। िमारे हृदय में िे आि भी िीहित िैं। उनका महिमा-मक्तण्डत िीिन िमारे हलए प्रेरणा का स्रोत िै।

राष्ट्र के संगठन के हलए आह्वान

मेरे हसख बन्धुओ! आर् लोग िूरिीर योद्धा और सािसी िैं। आर् लोगों ंकी नसों ंमें गुरु गोहिन्दहसंि का रि प्रिाहित िो रिा िै। आर् लोग िक्तिमान् तथा हृष्-रुष् िरीर के स्वामी िैं। यि सब प्रभु की कृर्ा का फल िै। आर् सब िमारे राष्ट्र के क्षहत्रय िैं।

हिन्दुओ, हसखो, मराठो तथा रािरूतो! हिस प्रकार अथाि अन्ध मिासागर में असंख्य रत्न गहभपत िैं, उसी प्रकार आर् लोगों ंमें भी अनेक रत्न हछर्े िैं। आर् लोगों ंमें अनेक रणिीतहसंि, अनेक हििािी और अनेक राणाप्रतार् िैं। अर्नी प्रसुप्त िक्तियों ंको िाग्रत कीहिए और अर्ने रूिपिों ंकी िक्ति तथा उनके गौरि का स्मरण करते हुए आगे बहढ़ए। अर्ने स्वभािगत िैयप तथा अदम्य उत्साि का प्रदिपन कीहिए और समग्र राष्ट्र के संगठन में संलग्न िो िाइए।

साधु-सांन्याडसयो ंसे डनवेदन

हसद्ध साधुओ, संन्याहसयो, योहगयो तथा ब्रह्मचाररयो! आर् लोगों ंसे मेरी िाहदपक प्राथपना िै हक आर् लोग अर्ने एकान्त आश्रमों ंसे बािर आ कर मानिता की सेिा कीहिए। आर् लोगों ंको हकसी भी आन्दोलन में सहक्रय भाग लेने की आिश्यकता निीं ंिै। आर् लोगों ंको ििी करना िै िो समथप रामदास ने हकया था। रामदास हििािी को सम्यक् र्रामिप हदया करते थे। हििािी अर्ने गुरु से प्रेरणा ग्रिण करते थे। उन्ोंने गैररक ध्वि फिराते हुए बहुत कुछ कर हदखाया। रामदास की उर्क्तस्थहत हििािी के हलए प्रेरणा-स्रोत थी। इसी प्रकार आर् लोग भी लोगों ं को नैहतक उर्देि तथा सत्परामिप दे सकते िैं। आर् लोग उनका र्थ-प्रदिपन तथा उन्ें अर्ने प्रिचनों ंसे प्रोत्साहित कर सकते िैं। आर् लोग िैसा सभी कुछ कर र्ाने में समथप िैं िो राष्ट्रीय एकता के हित में सिायक उर्योगी िै। हकसी के साथ आर् लोगों ंका रागिाक सम्बन्ध निीं ंिै और आर् लोग आध्याक्तिक िक्ति से सम्पन्न िैं। अतः आर् लोग अर्ने कमप से लोगों ंको चमत्कृत कर सकते िैं। आर् लोग अर्ने प्रिचनों ंमें 'िसुधैि कुटुम्बकम्' की बात हकया करते िैं। आर् लोग इसे कायप-रूर् में र्ररणत करने की कृर्ा कीहिए और िेदान्त को व्यििार-भूहम र र उताररए। धमप सिपदा के हलए सुरहक्षत रिे! सभी नागररक हिशुद्ध प्रेम के बन्धन में आबद्ध िो कर संगहठत िों! ं देि के कल्याण तथा उसकी सुदृढ़ता के हलए आर् सब हमल कर काम करें! सभी लोग आध्याक्तिक एिं भौहतक दृहष् से महिमाक्तन्वत तथा समृद्ध िों! ं

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

र्रहिष्-१

हिि-हलंग

(एक प्रतीक जो डकसीअनुडमडतकीओर सांकेत करता ि ै)

हिदेहियों ंमें यि धारणा सामान्य रूर् से व्याप्त िै हक हिि-हलंग िननेक्तिय एिं प्रिननर्–क्ति अथिा सन्तहत-िृद्धि-सम्बन्धी प्राकृहतक हसद्धान्त का द्योतक िै; हकन्तु यि एक िोचनीय तथा सामान्य भूल न िो कर एक अत्यहधक भ्राक्तन्तरूणप अिधारणा िै। उत्तर िैहदक काल में हलंग भगिान् हिि की प्रिननर्–क्ति का प्रतीक बन गया। हलंग एक हिहिष् हचह्न िै। यि असक्तन्दग्ध रूर् से किा िा सकता िै हक यि काम से सम्बद्ध कोई हचह्न निीं ंै।

हलंगरुराण में आया िै :

प्रधानां प्रकृडतां तच्च यदाहडलंगमिुमम् ।
गन्ध-वणप-रसैिीनाां शब्द-स्पशापडद-वडजपतम्।

"अग्रिती हलंग िो आद्य एिं गन्धर्–णप-रस-स्पिप-रहित िै, उसको प्रकृहत किा िाता िै।"

संस्कृत में हलंग को हचह्न किते िैं। यि एक ऐसा प्रतीक िै िो हकसी अनुहमहत की ओर संकेत करता िै। िब आर् नदी में भयंकर बाढ़ देखते िैं, तब आर् अनुमान कर लेते िैं हक हर्छले हदन मूसलाधार िषाप हुई िै और िब आर्को धूम दृहष्गत िोता िै, तब ििाँ आर्को अहग्न का अनुमान िोता िै। अनेक रूर्ों ंसे समक्तन्वत यि हिराट् हिश्व सिपव्यार्ी भगिान् का हलंग िै। हिि-हलंग भगिान् हिि का प्रतीक िै। हलंग-दिपन के समय आर्का मन तत्क्षण ऊध्वपमुखी िो िाता िै और आर् भगिक्तिन्तन में लीन िो िाते िैं।

भगिान् हिि हनहित रूर् से हनराकार िैं। उनका अर्ना कोई रूर् निीं ंिै; अहर्तु सभी रूर् उन्हीं ंके रूर् िैं। िे सभी रूर्ों ंमें व्याप्त िैं। सभी रूर् भगिान् हिि का रूर् अथापत् उनका हलंग िैं।

मन की एकाग्रता का एक सशि माध्यम

मन की एकाग्रता के हलए हलंग में एक रिस्यमयी अथापत् अिणपनीय िक्ति िै। हिस प्रकार मन स्फहटक-महण र सरलतार्ूिपक केक्तित िो िाता िै, उसी प्रकार हलंग-दिपन से मन एकाग्र िो िाता िै। यिी कारण िै हक भारत के प्राचीन ऋहषयों ंतथा िष्ा मनीहषयों ंने हिि-मक्तन्दर में हलंग की प्राण-प्रहतष्ठा के हनदेि हदये थे।

डलांग डनराकार डशव का प्रतीक

हिि-हलंग आर्से मौन की हनभापन्त भाषा में िाताप लार् करता िै- "मैं अद्य एिं हनराकार हाँ।" इस भाषा को हििुद्ध-हृदय िन िी समझ सकते िैं। एक कौतूिल-हप्रय, दुभापि-प्रिण, अहििेत्र तथा अल्पज्ञ हिदेिी व्यंग्िाक स्वरों ंमें प्रलार् करता िै- "ओ! ये हिन्दू िननेक्तिय का र्ूिन करते िैं। ये लोग अज्ञानी िैं और इनका कोई दिपन-िास्त्र निीं ंिै।" िब कोई हिदेिी तहमल या हिन्दी भाषा सीखने का प्रयत्न करता िै, तब िि सिपप्रथम कुछ

अश्लील अौभन िब्दों ंका िी चयन करता िै। यिी उनकी कौतूिलमयी प्रकृहत िै। इसी प्रकार कुछ कौतूिल- हप्रय हिदिी प्रतीकोर्ासना में मीन-मेख हनकालने लगते िैं। हलंग हनराकार सत्ता भगिान् हिि का केिल बाह्य प्रतीक मात्र िै िी अहिभाज्य, सिपव्यािी, िाश्वत, िुभ, हनत्य िुद्ध तथा इस हिराट् हिश्व के अमत्यप सारतत्त्व िैं और िो आर्के अन्तयापमी, अन्ततपम अािा एिं िंसिो ब्रह्म से अहभन्न िैं।

स्फडटक-डलांग डनगुपण ब्रह्म का प्रतीक

स्फहटक-हलंग भी भगिान् हिि का प्रतीक िै। भगिान् हिि के आराधन-र्ूिन के हलए इसे उर्युि
माना गया िै। यि स्फहटक-महण से हनहमपत िोता िै। यि स्वयं िणपिीन िोता िै; हकन्तु यि हिस हकसी भी िस्तु के सम्पकप में आता िै, उसी का िणप ग्रिण कर लेता िै। यि हनगुपण तथा अलक्षण अािा अथापत् हनराकार तथा हनगुपण हिि का द्योतक िै।

डशलाि–ण्ड में डनडित रिस्यमयी शस्ति

हकसी हनष्कर्ट भि के हलए हलंग एक हिला-खण्ड न िो कर एक प्रदीप्त तेिस् तथा चेतन तत्त्व िै। िि
उसके साथ िातापलार् करता, उसके नेत्रों ंको भािाश्रु-र्ूररत करता और उसके मन को रोमांहचत करता िै। इससे उसका हृदय हिहित िो उठता िै और िि उसकी सिायता से देिाध्यास से ऊर्ध्पोन्मुख िो कर भगिान् से तादात्म्य स्थाहर्त कर लेता िै हिसके फल-स्वरूर् उसे हनहिपकल्प-समाहध की प्राक्तप्त िो िाती िै। भगिान् राम ने रामेश्वरम् में हिि-हलंग का र्ूिन हकया था और मािकण्डेय ऋहर् ने स्वणप-हनहमपत हिि-हलंग की र्ूिा की थी। इस हलंग में हकतनी रिस्यमयी िक्ति हनहित िै!

िी भगिान् हिि का प्रतीक िै, िो मन की एकाग्रता में सिायक हसद्ध िोता िै और िो प्रारम्भ में नि-दीहक्षतों ंके मन के आलम्बन के हलए एक साधन का उत्तरदाहयत्व ििन करता िै, उस हलंग के र्ूिन के माध्यम से आर्को हनराकार हिि की प्राक्तप्त िो!

र्ररहिष्-२

भगिद्गीता : भारतीय संस्कृहत की आधारहिला

अनासस्ति का उर्देशामृत

आध्याक्तिक मूल्य तथा िीिन के प्रहत आध्याक्तिक दृहष्कोण सम्यक् संस्कृहत की आधारहिला िैं। मानि की मूलभूत हदव्य चेतना के प्रहत आिग्रिीलता भारतीय संस्कृहत का सारतत्त्व िै। भारतीय सभ्यता आन्तररक
हििुक्तद्ध तथा मनुष्य में अन्तहनपहित आध्याक्तिक प्रकाि र्र अहधहष्ठत िै। भारत अध्याि की भूहम िै और प्रत्येक
सिा भारतीय अाि-स्वराज्य अथापत् आन्तररक एिं बाह्य प्रकृहत र्र हििय िारा उर्लब्ध अािा की िंसिो
हदव्यता में हनहित स्वातन्त्र्य का अभीप्सु िै। भारतीयों ंका अक्तन्तम प्राप्तव्य अाि-साक्षात्कार िै। भगिद्गीता एक सािपभौम धमपग्रन्थ एिं भारतीय र्रम्परा की समीचीन तथा सुस्पष् अहभव्यक्ति िै। गीता अनासक्ति, अािा के अमरत्व तथा हनरर्ेक्ष सत्ता में अािा के स्वातन्त्र्य का धमोर्देि िै। यि अाि-तत्त्व की सिपग्रािी आन्तररकता का र्ािन प्रहिक्षण िै। अनासक्ति की अर्ररिायपता ब्रह्माण्डीय एकत्व के बोध की अनुिहतपनी िै। श्रीकृष्ण की साहधकार उद्घोषणा के अनुसार उनके अहतररि हिश्व में अन्य हकसी भी िस्तु का अक्तस्तत्व निीं िै (७-७)। सत्य

ीिनि की अहिभाज्यता में हनहित ि। अतः नाम-रूर्ों ंके प्रहत आसक्ति हमथ्या के प्रहत आकषपण तथा सत्य का समहतक्रम ि हिसका अर्ररियप र्रणाम दु:ख ि। गीता (५-२२) में भगिान् किते ि हक इक्तियों ंतथा हिषयों ंके सम्बन्ध में उत्पन्न िो भोग ि, ि दु:ख के कारण ि। अनासक्ति सम्यक् िराग्य की भिाना तथा िुभ कमप की द्योतक ि िो कताप को फलिाा से मुि कर देती ि। सम्यक् संसूकृहत िमें स्वतन्त्रता की ओर अहभमुख करती ि और यि
भारतीय िष्‍ऋहषयों ंके हलए गौरि की बात ि हक उन्िोंने अर्नी गिन प्रज्ञा–क्ति िारा मनुष्य में अन्तहनपहित िाश्वित आिा के स्वातन्य का साक्षात्कार कर हलया था तथा समूपूणप िगत् के समक्ष इस सत्य की उद्घोषणा भी कर दी थी।
हनसूपृिता तथा आन्तररक िाक्तन्त भारतीय संसूकृहत के मुख्य लक्षण ि। हिस ज्ञान से सम्यक् संसूकृहत को अहभलहक्षत हकया िाता ि, िि िाक्तब्दक र्ाक्तण्डत्य न िो कर नैहतक रूष्ठभूहम र अहधहष्ठत िाहुिुद्ध प्रज्ञा ि। हकसी व्यक्ति के नैहतक अनुिासन के मार्दण्ड से िी उसके ज्ञान का मूल्य हनधापरण हकया िाता ि। ज्ञान का र्यपिसाय सामान्य ज्ञान में न िो कर िीिन के गिनतम सत्य के साक्षात्कार में िोता ि। स्िािपिगिीनता एिं काहयक तथा िाचिरक अनासक्ति के अभिा में इस प्रकार का सुसंसूकृत िीिन असम्भि ि। गीता (३-२५) में भगिान् श्रीकृष्ण किते ि, "हिस प्रकार कमों में आसि अज्ञानी िन कमप करते ि, उसी प्रकार तत्त्विेत्ता िहिान् रुरुष को भी लोक-संग्रि के हलए कमप करना चाहिए।" िागहतक िसुतुओं ंके साथ सामान्य एिं सतत सम्पकप के कारण मनुष्य उनसे रागिाक सम्बन्ध स्थाहर्त करने के हलए िािहि िो िाता ि; हकनुतु ये िसुतुएँ तत्त्वतः हमथ्या िोती ि और इनके हमथ्या स्वरूर् की अहभज्ञता के अभिा में रूणप अनासक्ति असम्भि ि। भारतीय मनीषा ने मन तथा इक्तियों ं के आदिेों ंके समुमुख नतमस्तक िोने िाले व्यक्तियों ंिारा मान्य िीिन के प्रहत गहिपत दृहष्कोण में हनहित भ्राक्तन्तयों ं को अनािृत कर हिषयिाक ऐहिक िीिन की क्षणभंगुरता के तथ्य को सुस्पष् हकया था। दु:ख तथा क्िेि की अनुभूहत एिं ऐक्तिक िगत् में िीिन की अर्यापप्तता सभी दिपनों ंका प्रारम्भ हबन्दु ि। िहिकिील रुरुष में भौहतक िीिन के बन्धनों ंसे मुक्ति की कामना हिद्यमान रिती ि। िि नश्वर िसुतुओं ंके प्रहत आस्थािान् निीं ंिोता। गीता के अनुसार यि संसार **'अडनत्यम्', 'असिुम्', 'दु:ालियम्'** तथा **'अशाश्वतम्'** ि। िब हकसी व्यक्ति में यि िहिेक िाग्रत िोता ि, तब िि हनसूपृि िो िाता ि और हकसी िसुतु के प्रहत उसकी आसक्ति निीं ंरि िाती। अन्तरतः ईश्वरमय िो िाने के कारण बहिरंग िीिन की कुहिता अनािृत िो िाती ि और तब रूणपता का िि अन्िेषी अहनत्य प्रतीहतयों ंके प्रहत आकहषपत निीं ंिोता। भारतीय संसूकृहत धाहमपक एिं आध्याक्तिक चेतना की िक्ति की समृक्तद्ध का र्यापय ि हिसके अभिा में मनुष्य उस रिु की अर्ेक्षा कुछ िी अहधक श्रेष्ठतर िोता ि हिसमें केिल नैसहगपक प्रिहत्तयाँ िी हिद्यमान ि। गीता बाह्य रूर्ों ंके प्रहत आस्था तथा इनकी आकांक्षा के र्ररत्याग का उर्दिे और इस बात र बल देती ि हक िो व्यक्ति िाश्वत िाक्तन्त के प्रहत आिािील ि, उसके हिचार तथा कमप में स्वाथपर्रता और हकसी हिहिष भौहतक लक्ष्य की सम्प्राक्तप्त के हलए कोई स्थान निीं ंिोना चाहिए। गीता (२-४८) में श्रीकृष्ण अिुपन से किते ि- "तुम योग में क्तस्थत िो कर अनासि भिा से कमप करो।" गीता की आिािीलता इस तथ्य के प्रहत ि हक हनसंसंग तथा ईश्वर में लीन रिते हुए कमप करते रिना सम्यक् िीिन-यार्न की कला एिं इिलोक तथा र्रलोक में िाक्तन्त-प्राक्तप्त का उत्तम साधन ि। इस लक्ष्य की सम्प्राक्तप्त के हलए हकये गये प्रत्येक प्रयत्न का फल अनश्वर िोता ि। गीता (२-४०) में श्रीकृष्ण किते ि-"इसमें न तो अहभक्रम का नाि िोता ि, न इससे हकसी प्रत्यिाय दोष की उत्पहत्त िोती ि। इस धमप का अत्यल्प अनुष्ठान भी मिान् भय से रक्षा करता ि।" इस हदिा में हकया गया कोई भी प्रयत्न व्यथप निीं ंिोता। प्रत्येक प्रयत्न से उनके अनुरूर् फल की हसक्तद्ध िो िाती ि; क्योंहक आिा अर्ने ताक्तत्त्वक स्वरूर् में हनत्य ि।

आत्मा का अमरत्व

भारतीय हिस मिान् सत्य के प्रहत आस्थािान् ि और िो उनके हलए अहिस्मरणीय तथा हिश्वसनीय ि, िि ि आिा का अमरत्व तथा िीिन का सतत प्रिाि। गीता (२/१७-१८) प्रारम्भ में िी किती ि- "यि सब-कुछ हिससे

व्याप्त ि ै, उसे तू अहिनिाी िान। उस अव्यय के हिनाि में कोई भी समथप निीं ंि ै। िि अि तथा अमत्यप ि ै। िि अभाि को निीं ंप्राप्त िोता। िि अि, हनत्य, िाश्वत तथा रुरातन ि ै। िरीर-नाि के र्ात् भी उसका नाि निीं ं िोता।" इस िसिो सत्य की अहभज्ञता से अहधक अन्य कोई भी िसुतु गौररिरूणप निीं ंि ै। यि प्राणदायक ज्ञान भारतीयों ंकी राष्ट्रीय संजीिनी िक्ति, मानि-िाहत के हलए सान्त्वना तथा श्रीकृष्ण के रूर् में हनरर्ेक्ष ब्रह्म िारा मानिता के साक्षात् प्रहतहनहध अिुपन को हदया गया उर्दिे ि ै। भारतीय संसूकृहत मनुष्य में अन्तहनपहित आिा की अनश्वरता एिं हदव्यता के प्रहत असक्तन्दग्ध आस्था से रूणपतः प्रभाहित एिं सिाांगतः र्ररव्याप्त ि ै। हिन्दुओं ंके हलए इक्तियि-ग्राह्य अनुभिों ंका संसार यथाथप निीं ंि ै। उनके हलए िो यथाथप ि ै, िि ि ै ब्रह्म या आिा। उनका रूणप हिश्वास
स्थैयपिीन िगत् के प्रहत न िो कर िाश्वत सत्ता के प्रहत ि ै। ईश्वर िी उनका लक्ष्य ि ै और संसार इस लक्ष्य-

हसक्तद्ध का
एक मागप या साधन मात्र ि ै। यि उनके अनुभिों ंकी इहतश्री निीं ंि ै। गीता उस अनुभिातीत िीिन का सन्देि ि ै हिसमें समूरूणप िगत् समाहित ि ै िो एक अहभनि प्रकाि में दृहष्गत िोता ि ै। प्रत्येक व्यक्ति इस अनुभि का अहधकारी ि ै। दुष् तथा र्ार्ी िन के हलए भी इसके िार मुि ि ैं। गीता (९/३०-३२) में भगिान् कृष्ण कहते ि ैं-
"यहद कोई अहतिय कुक्तत्सत आचरण िाला मनुष्य भी मुझे अनन्य भाि से भिता ि ै, तो उसे भी साधु िी समझना चाहिए; क्योंहक िि यथाथपतः हनिययुि िो चुका िोता ि ै। िो र्ार्-योहन िाले ि ैं, िे भी मेरी िरण में आ कर उत्तम
गहत को प्राप्त िोते ि ैं।" मनुष्य में आद्य या अन्तिापत र्ार् िैसी कोई िसुतु निीं ंि ै; क्योंहक आिा अमत्यप ि ै

और
"हिस प्रकार प्रज्वहलत अहग्न में काष्ठ-समूि भस्मीभूत िो िाता ि ै, उसी प्रकार ज्ञानाहग्न में सारे कमप दग्ध िो िाते
ि ैं" (गीता : ४-३७) । यिाँ ज्ञान से तात्पयप अव्यय आिा के साक्षात्कार से ि ै। मनुष्य अर्नी इच्छाओं ंतथा अर्ने कमों के अनुसार एक िन्म से दूसरे िन्म तथा एक िरीर से दूसरे िरीर में उस समय तक संक्रमण करता रिता ि ै, िब तक िि अर्नी इच्छाओं ंतथा अर्ने कमप से उद्भूत संस्कारों ंको नष् कर ईश्वर से तादात्म्य-लाभ निीं ंकर लेता। इसका कारण यि ि ै हक ईश्वर से एकिाता िी मनुष्य की हनयहत ि ै। िब तक आि-साक्षात्कार के प्रसाद की सम्प्राक्तप्त निीं ंिो र्ाती, तब तक रुनिपन्म की प्रहक्रया में कोई अन्तराय निीं ंउर्क्तस्थत िो सकता; क्योंहक अमत्यप आिा आि-साक्षात्कार के हलए प्रहत क्षण हनियिाक रूर् से आिग्रिील रिा करता ि ै। आि-साक्षात्कार के अहतररि अन्य हकसी भी िसुतु से मनुष्य को िाक्तन्त निीं ंप्राप्त िो सकती और िब तक सारे कमप ज्ञानाहम

में
दग्ध या हनबिी निीं ंिो िाते, तब तक आि-साक्षात्कार असम्भि ि ै। रुनिपन्म तथा आिा के अमरत्व का हिन्दू-

सामाहजक जीवन का आदशप

हसद्धान्त हिश्व के धाहमपक इहतिास में एक अहितीय हसद्धान्त और िीिन की अथपित्ता की एकमात्र िैज्ञाहनक तथा सन्तोषप्रद व्याख्या ि ै। अमत्यप आिा के प्रहत मूलभूत सिमहत के अभाि में हकसी भी अनुभि का बोध या इसकी तात्पयपसाम्यिाथ ि ै। कमप हसद्धान्त तो उसे मूलभूत हसद्धान्त का एक उर्हसद्धान्त मात्र ि ै। हिि र्ीिन तथा र्ार्ीिन के हित रिनाि
धमपगुणों के हिहिन्न स्तरों र्रररक िहभन्य के दिपन िोते ि ैं और उनके धमप तथा आचरण उनके िैयक्तिक हिकास के इन्हीं ंस्तरों ंर्र अहधहष्ठत िोते ि ैं। गीता व्यक्तियों ंके स्वभािगत िैषम्य तथा तज्जहनत कतपव्यों ंके िगीकरण के प्रहत अर्नी सिमहत व्यि करती ि ै। उनके ये हिहभन्न कमप उनके हिकासगत स्तरों ंके अनुरूर् िोते ि ैं हिनसे उनके कमों का हनधापरण िोता ि ै। सभी दिेों ंमें दािपहनक, आध्याक्तिक, हक्रयािक, युयुत्सु एिं व्यािसाहयक प्रिृहत्त के लोग रिते ि ैं। इनके अहतररि दैहनक र्ारश्रहमक से िीहिकोर्ािपन करने िाले और िारीररक कमप में रुहच रखने िाले कुछ सामान्य िन भी रिते ि ैं। इस रूथक्करण की सृहष् हकसी अहभिृहत्त-हििेष से उत्प्रेररत िो कर कृहत्रम रूर् से निीं ंहुई ि ै। िसुतुतः यि मनुष्य की आन्तररक अहभव्यक्तियों ंके अनिािरण के माध्यम से बाह्य सामाहिक व्यिस्था को हनरूहर्त करती ि ै। मनुष्य हिकास के हिस चरण में र्हुँच चुका िोता ि ै, उसी के अनुरूर् उसके 'स्वधमप' या कतपव्य का हनधापरण िोता ि ै। उसकी इस क्तस्थहत का
उत्तरदाहयत्व अन्य लोगों ंर्र न िो कर स्वयं उसी के आन्तररक तथा स्वभािगत िैहिष्ट्य र्र िोता ि ै हिसे िि

अर्ने दैनक्तन्दन आचरण तथा कमप के माध्यम से अहभव्यि हकया करता िै। चतुहिपध सामाहिक िगीकरण का उद्देश्य उन सभी लोगों ंमें सुखद एिं मधुर सम्बन्ध को सुहनहित करना िै िो अर्नी अन्तहनपष्ठ प्रिृहत्तयों ंके कारण अर्नी क्षमता का प्रदिपन रृथक् रृथक् अध्यिसायों ंमें हकया करते िैं और हिनके हिचार तथा कमप में साम्य के दिपन निीं िोते। लोगों ंमें हिचार तथा कमप की सादृश्यता असम्भि िै। मानिीिीिन के अन्तरतम में इस प्रकार के साम्य का रेखांकन हुआ िी निीं ंिै। िीिन प्राहणयों ंके रृथक् रृथक् िाहतगत समिूों ंका प्रदिपन-कक्ष िै और व्यक्तियों ंका चतुहिपध िगीकरण ज्ञान तथा कमप के हलए मानहसक हिन्यास तथा क्षमता का एक बृिद् हिभािन िै। सामाहिक कल्याण समाि के समुहचत हनयमन र्र हनभपर करता िै; हकन्तु यि िासक की िक्ति के माध्यम से न िो कर उसके र्द के िाहिकरूपणप बोध के माध्यम से िोना चाहिए। उसे इस प्रहक्रया में स्वयं को अर्ने उस हिहिष् र्द के अनुरूर् ढालना चाहिए िो स्वयं उसी के हलए सृहित हकया गया िै और िो उसके स्वभाि का हनयमन करने िाले आन्तररक हिधान के अनुरूर् िै। समाि के सदस्य र्रस्पराहश्रत िोते िैं। उनका कल्याण उनके गुण- कमप के अनुरूर् सामाहिक िगीकरण से िी सम्भि िै। भारत की रुरातन संसृ्कहत के र्ररक्षण का श्रेय प्राकृहतक हिधान एिं मनुष्य की आन्तररक प्रकृहत की उत्प्रेरणा र्र अहधहष्ठत इस िाहिकरूपणप र्ररयोिना को िी िै।

हनस्सन्देि गीता सामाहिक एिं हिश्विनीन बनुधुत्व के आदिप का प्रहतर्ादक एिं मिान् ग्रन्थ िै। हफर भी इस सम्बन्ध में उसके संकेतानुसार व्यक्तिगत िीिन, र्ारस्पररक िीिन, सामाहिक िीिन, िैहश्वक िीिन तथा हदव्य िीिन को अन्ततः एक-दूसरे से रृथक् निीं ंहकया िा सकता। ये केिल हदव्य रूपणपता के बोध की ओर अग्रसर व्यक्ति के हिकास के हिहभन्न चरणों ंके द्योतक िैं। एकिाकता की आधार-भूहम र्र अहधहष्ठत िोने के र्िात् िी बनुधुत्व की साथपकता की हसक्तद्ध सम्भि िै। समाि के कल्याण का हनधापरण धमप िारा िोता िै और हिश्व मानि िाहत का एक बृिद् समाि िै हिसमें इसके हभन्न-हभन्न अंग समाहिष् िैं। सामाहिक कल्याण के अन्वेषी के हलए इस तथ्य का हिस्मरण असम्भि िै हक समाि हिश्व में िी अिक्तस्थत िै िो एक समग्र इकाई और व्यक्तिगत तथा सामाहिक कल्याण के हलए आिश्यक हिधान की समुपुहष् िै। यि हिश्व भी अर्ने-आर्में कोई स्वयं-िाहित सत्य न िो कर िािो हदव्य सत्ता में अन्तहनपहित सामंिस्य तथा यथाथप की अहभव्यक्ति िै। गीता (१३-३०) में भगिान् कृष्ण किते िैं- "िब कोई भूतों ंके रृथक् रृथक् भाि को एक र्रमाि में िी क्तस्थत तथा उस र्रमाि से िी समूपुणप भूतों ंका हिस्तार देखता िै, तब िि ब्रह्म को प्राप्त िो िाता िै।" इस यथाथप सत्य का धमप िी मानदण्ड िै हिससे हिश्व, समाि, र्ररिार तथा व्यक्ति के धमप को हनधापररत हकया िाता िै। ब्रह्म की

िास्तिहिकता अगोचर िै। अतः साििपभौम प्रेम एिं स्वाथप तथा आसक्ति का र्ररत्याग अक्तखल हिश्व एिं इनके अियिों ंका धमप िो िाता िै। सभी प्राहणयों ंसे हनष्पक्ष तथा हिरासि भाि से प्रेम करना चाहिए; क्ोंहक सिपभूतों ंकी सत्ता इस हनरर्ेक्ष आिा में िी हनहित िै। गीता में, हििेषतः इसके तेरििें तथा सोलििें अध्यायों ंमें हिन गिणीय गुणों ंकी र्ररगणना की गयी िै, िे व्यक्ति तथा समाि-दोनों ंके सुखद, कल्याणकर, श्रेयस्कर तथा आध्याक्तिक िीिन-यार्न के हलए अहनिायप िैं। दैिी-सम्पदा, नैहतक बल तथा आन्तररक आध्याक्तिक िक्ति िारा मनुष्य की र्ािहिक प्रिृहत्तयााँ र्राभूत िो िाती िैं और अन्तभूपत िाश्वत हसद्धान्त अनािृत िो उठता िै। लोक-संग्रि अथापत् हिश्व का कल्याण तथा इसकी सुदृढ़ता गीता के सामाहिक नीहतिास्त्र का आदिप िै। अनासक्ति तथा आि-समर्पण की भािना और हनहिपकार आिा के स्वभाि के ज्ञान से उत्प्रेररत िो कर स्वधमप के र्ालन से इसका आचरण प्रत्येक व्यक्ति के हलए सम्भि िै। सिपभूत-हित स्वधमप का लक्ष्य िै। समाि के तनुतु-हिन्यास का प्रयोिन इसके सदस्यों ंको िीिन के िािो आदिप के बोध में सियोग प्रदान करना िै। िीिन एक समग्र इकाई िै और इसमें सभी प्राहणयों ंकी साझेदारी िै िो इसके अिि िैं। अतः इस िीिन के साथ उनकी समस्वरता र्र िी उनका हिकास हनभपर िै। अिि की रूपणपता समग्रता का एकत्व िै। र्ारस्पररक प्रेम तथा समग्र के प्रहत हनष्ठारूपिक कतपव्य-र्ालन से व्यक्ति और समाि, दोनों ंकृतकृत्य िोते िैं। िब प्रत्येक व्यक्ति हबना अरुहच एिं आसक्ति के अर्ना कतपव्य र्ालन करता िै, तब समाि का कल्याण सुहनहित िो िाता िै; क्ोंहक िािाँ कमप का तादात्म्य इस दृश्यमान िगत् के मूल में हनहित दैिी प्रयोिन के ज्ञान से िोता िै िािाँ श्री, हििय, हिभूहत तथा अहिचल नीहत का

प्रादुभापि िोता िै (गीता : १८-७८)। गीता के अनुसार मानिीय आचरण के िास्त्र को िी प्रमाण मानना चाहिए। िास्त्रों ंके माध्यम से िी िम इस सत्य से रररहचत िो र्ाते िैं हक समि िाश्वत हसद्धान्तों ंतथा आध्याक्तिकता के
आधार र िी अिलक्तम्बत िै।
मूलतः िीिन एक उर्ासना िै। इस संसार में कमप यथाथपतः हिराट् ईश्वर के हिश्व-रूर् की स्िूहत िै। मनुष्य दैिी हिधान के हनष्पादन का हनहमत्त अथापत् माध्यम मात्र िै। िीिन एक यज्ञ या हित्र आिाहुहत िै और संसार िो धमपक्षेत्र िै, िि िेदी िै हिस र मनुष्य स्वयं को ईश्वर को समहर्पत कर देता िै। धमप व्यक्ति का हनयमन करने िाला आचारगत मूल्य िै। िि उसे मोक्ष के हलए उत्प्रेररत करता रिता िै और मोक्ष 'अर्ररमेय मूल्य' तथा िीिन का लक्ष्य िै। प्रत्येक व्यक्ति को धमप का अनुमोदन करना चाहिए िो िीिन का रक्षक िै। धमप उस व्यक्ति की रक्षा करता िै िो अनासक्ति या हनष्काम आचरण िारा स्वयं उसकी रक्षा करता िै। ईश्वर स्वयं 'िाश्वत धमप-गोप्ता' अथापत् सनातन धमप का रक्षक िै। धमप भौहतक तथा आध्याक्तिक मंगल का मूल स्रोत िै। धमप का अनुर्ालन अथप, काम तथा मोक्ष का अहधष्ठान िै। ईश्वर का साक्षात्कार सभी लोगों ंका सिो धमप िै। अन्य सभी धमप उसके अनुिती मात्र िैं। ईश्वर में इन सबके चरम एकत्व का साक्षात्कार समूपूणप हिश्व में करना चाहिए (६/२९-३०)। समूपूणप ब्रह्माण्ड ईश्वर का एक िीिन्त सत्य िै िो इसके बाह्याभ्यन्तर में ररव्याप्त िै और हिसकी सादृश्यता में कोई भी िस्तु कभी सक्षम निीं ंिो सकती (९/४-५)। इस हनररेक्ष आदिप की समुपुहष् सभी हिचारों ंएिं कमों से िोनी चाहिए। हिसकी सम्प्राक्तप्त अन्यत्र न िो कर केिल ईश्वर से िी िो र्ाती िै, इस सिापिीन एिं सिो कल्याण के प्रहत आि-समर्पण की श्रेष्ठ भािना से रररूररत िो कर िीिन-यार्न से िी समि की सुरक्षा सम्भि िै। इस लक्ष्य के हिस्मरण से िीिन दुःखमय िो िाता िै। दैिी सम्पदा, ज्ञान तथा सिो चेतना र अहधहष्ठत िीिन हदव्य िीिन िो िाता िै।

सुसांसूकृत व्यस्ति

सुसंसूकृत व्यक्ति का गीतोि आदिप िि व्यक्ति िै िो क्तस्थतप्रज्ञ, भागित अथिा गुणातीत िै। िि संसूकृहत के सुन्दर र्ुष्प का ररकर्व फल िै। िो इक्तियों ंके आदेि का अनुर्ालन निीं ंकरता, िो मन में क्तस्थत समस्त कामनाओं ंका ररत्याग कर देता िै और िो आि से आि में िी सनुतुष् रिता िै, िि रूणप मानि िै (२-५५)। िो राग-िेष से ऊर्र उठ चुका िोता िै, आि-साक्षात्कार के कारण हिसकी कामनाएँ नष् िो चुकी िोती िैं, हिसका हदन अज्ञाहनयों ंके हलए रात िै, हिसमें सभी भोग उसी प्रकार समा िाते िैं हिस प्रकार सभी िल सब ओर से ररूरूणप अचल प्रहतष्ठा िाले हनहिपकार समुि में समा िाते िैं और िो र्रम िाक्तन्त को प्राप्त कर ब्राह्मी-क्तस्थहत में प्रहतहष्ठत िो िाता िै, िि क्तस्थतप्रज्ञ ज्ञानी िै (२/५५, ५७, ५९, ६९, ७० और ७२)। उसका आनन्द, उसकी िाक्तन्त और उसका प्रकाि-ये सभी उसके अन्तरतम में हनहित रिते िैं। िि सिपभूतों ंमें ईश्वर को और ईश्वर में सिपभूतों ं को देखता िै। उसकी समबुक्तद्ध श्रेष्ठ तथा हनकृष् में हकसी भेद का दिपन निीं ंकरती। उसे ईश्वर के हदव्य साहन्नध्य का भान सिपदा िोता रिता िै और िि उससे कभी हिलग निीं ंिोता। उसके हलए कोई भी प्राप्तव्य िेष निीं ंरि िाता; हकनुतु िि अन्य लोगों ंके समुमुख एक दृष्ान्त प्रसुतुत करने के हलए संसार के हिताथप कमप करता रिता िै। संसूकृहत के लक्ष्य का अनुमान उस क्तस्थतप्रज्ञ र्ुरुष के भव्य दृष्ान्त से हकया िा सकता िै हिसके िैहिष्ट्य का िणपन गीता के दूसरे, र्ाँचिें, छठे, बारििें तथा चौदििें अध्याय में हकया गया िै और िो स्वयं को उस प्रहतमान के रूर् में प्रसुतुत करता िै

हिसके अनुरूर् प्रत्येक सुसंसूकृत व्यक्ति 'समन्ब्रह्म' में अर्नी रूणपता तथा कृतकृत्यता की सम्प्राक्तप्त की हदिा में अग्रसरण का अभीिु िोता िै।

गीता का सिेश

गीता आिा, सान्त्वना, िाक्तन्त तथा इन सबसे अहधक मनुष्य में अन्तभूपत हदव्य तत्त्व का सन्ेदि िै। यि प्रत्ेयेक व्यक्ति की समस्याओं ंका समाधान प्रसुतुत करती िै और उसे अभय प्रदान करती िै। यि उसे दुःख-दाररिय के रसातल से ऊर्र उठा कर अमरता तथा िाश्वत आनन्द के हिखर र् प्रहतहष्ठत कर देती िै। यि िमारे समक्ष िीिन के प्रहत हिन्दू-दृहष्कोण की संहक्षप्त रूर्रेखा प्रसुतुत करती िै। मानििीिन के बाह्य क्षे र् रेखांहकत उिलनों ंके िोते हुए भी भारत के अन्तरतम में समस्वरता और एकता का रुझान हिद्यमान िै। भारतीय िाक्तन्तहप्रय तथा िैष्णिन िोते िैं। भारतीय संसूकृहत के ज्योहत-स्तम्भ साधु-सन्त तथा अितार िी भारत के मिान् रुुरुष िैं। मानि-चररत्र को सम्यक् हदिा प्रदान करने िाले भव्य धाहमपक आदिों, लोगों ंको िीिो रूूणपता के उतुंतुंग हिखर र् अहधहष्ठत करने िाले आचारिास्त्र तथा नैहतकता के उदात्त हसद्धान्तों ंऔर मनुष्य को देित्व के स्तर तक हुाँचाने िाले तथा राष्ट्रों ंके आध्याक्तिक िीिन का हनदेिन करने िाले आध्याक्तिक और उतूकृष्तम सत्य का प्रादुभापि भारत में िी हुआ था। इहतिास में िमारा राष्ट्र भारत िब कभी भी आर्ईत्तयों ंसे आक्रान्त हुआ, तब भारतीय संसूकृहत ने िी इसके अक्तस्तत्व-रक्षण का उत्तरदाहयत्व िीन हकया िै। भगिद्गीता, िो उर्हनषदों ंके उर्देिामृत का सारतत्त्व िै, भारतीय िीिन का िव्यािाररक अनुिाद िै और सिपभूतों ंकी संहित के हलए भारत यि प्रदेिन हिश्व को प्रदान करता िै। श्रीकृष्ण रूूणप मानि के आदिप, सगुण ईश्वर, साक्षात् सक्तिदानन्द, रूूणापितार एिं संसूकृहत, ज्ञान, िक्ति तथा आनन्द के हिरोहबन्दु िैं। िे गीता के माध्यम से हिश्व को उितम संसूकृहत तथा आध्याक्तिक ज्ञान का सन्ेदि प्रदान करते िैं। यि भारत तथा हिश्व के हलए गौरि की बात िै हक गीता आिाहुहत, अनासक्ति और ईश्वर के प्रहत आि-समर्पण की भािना से गृिस्थाश्रम में रि कर कमप करते हुए लोगों ंको भी व्यक्ति तथा ईश्वर के तादात्म्य के उदात्त आदिप से अनुप्राहणत हकया करती िै।